# ब्रज-विनोद

## (लाल बलबीर-हजारा)



महादेवी ज्ञानकेन्द्र

5.2

# ब्रज-विनोद

(लाल बलबीर — हजारा)

ब्रजभाषा-लालित्य की रससिक्त रचना

# ब्रज-विनोद

कथ्य-शिल्प का अद्भुत संगम है।

*राधेश्याम गुप्ता*

# ब्रज-विनोद

(लाल बलबीर — हजारा)

(उत्तर रीतिकालीन दुर्लभ ग्रंथ)

*संपादक :*

**डॉ. पूरनचंद टंडन**

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

*प्रकाशक :*

**महादेवी ज्ञानकेन्द्र**

ए-4, रिंग रोड, साउथ एक्सटेंशन, भाग-1

नई दिल्ली-110049

प्रकाशक:

**राधेश्याम गुप्ता**

**महादेवी ज्ञानकेन्द्र**

ए-4, रिंग रोड़, साउथ एक्सटेन्शन, भाग-1, नई दिल्ली-110049
दूरभाष : 24636010, 30 फैक्स : (91-11) 24636011
ई-मेल : neetabooks@vsnl.com
URL : www.neetaprakashan.com



प्रथम संस्करण 2007

मुद्रक : हरिओम ऑफसेट प्रैस, दिल्ली-32.

श्री गुरुशरणम्

।। श्री रमणविहारिणे नमः ।। ॐ ।। श्री गुरुकार्ष्णिभ्यो नमः



# श्री उदासीन कार्ष्णि आश्रम

श्री रमणरेती, पत्रालय–महावन २८१३०५, जिला–मथुरा (उ. प्र.)

दूरभाष : (०५६६१) ६२२२५, ६२०६५

---

हिन्दी साहित्य भारतीय संस्कृति की अद्‌भुत धरोहर है। अनवरत रूप से तरंगित काव्य त्रिवेणी से न केवल मन आह्लादित होता है, बल्कि असीम शांति प्राप्त होती है। इसी क्रम में भक्ति की पीयूष धारा का शुचि प्रवाह इस काव्य में मणिकांचन की तरह घुल-मिल गया है। योगिराज श्री कृष्ण की बाल एवं अन्य लीलाओं की छवि से समस्त हिन्दी साहित्य आलोकित है। समय-समय पर विभिन्न कविवृन्द लेखनी के माध्यम से श्री कृष्ण विषयक रचनाएं कर धन्य हुए हैं।

श्रीमद्‌भागवत में स्पष्ट है –

**श्रवणं कीर्तनं विष्णोः स्मरणं पादसेवनम्।**
**अर्चनं वन्दनं दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम्॥**

भगवान् के गुण-लीला नाम आदि का श्रवण, उन्हीं का कीर्तन, उनके नाम की सेवा, पूजा-अर्चा, वन्दन, दास्य, सख्य और आत्मनिवेदन; आदि नव प्रकार की भक्ति प्रभु-प्राप्ति का सहज मार्ग एवं उपाय है।

ईश्वर पर जिसकी कृपा होती है, उसी का अन्तःकरण पवित्र होता है, और सदैव प्रभु का चिन्तन मनन ही उसका

विषय हो जाता है। ऐसे ही कृपा-पात्र थे श्री बद्रीदास जी उपनाम "लाल बलबीर" जिनका कि जन्म संवत् 1886 विक्रमी में वृन्दावन में लाला रामजीलाल अग्रवाल के यहां हुआ था। प्रभु कृपा से ही उन्होंने अपनी लेखनी का सम्बल योगीराज श्री कृष्ण को बनाया। उनका काव्य सार 'ब्रज-विनोद' 'बलबीर हजारा' आदि ग्रंथों में संगृहीत है। ब्रज प्रदेश के गौरव, अद्‌भुत प्रतिभा के धनी इस कविवर के मोल को श्री राधेश्याम गुप्ता (नीता प्रकाशन) ने पहिचाना और एक श्रेष्ठ कृति के रूप में उसे प्रस्फुटित किया।

भक्ति रस की मधुर धारा से साहित्य मधुर होता है, उसे पढ़ने, समझने, प्रकाशित करने वाले ईश्वरीय कृपा के अधिकारी होते हैं। गुप्ता जी ने इस कार्य को करके न केवल स्व. लाल बलबीर के यश-शरीर को ही अमर किया है, बल्कि मानव समाज को एक अमूल्य निधि भी सौंपी है। इस शुचि कृत्य के लिए मेरा साधुवाद।

सम्पादन एवं प्रकाशन मण्डल के समस्त सदस्य तथा इस शुभकार्य में संलग्न सभी सुधीजन साधुवाद के पात्र हैं।

नारायण स्मृति सहित।

प्रभु चरण शरण

श्री कृष्णो ... ।

(स्वामी कार्ष्णि गुरुशरणानन्द)

# वेदन कौ सार, सार सबही पुरानन कौ

वेदों, उपनिषदों, पुराणों तथा स्मृति आदि ग्रंथों ने बार-बार 'वृन्दावन' की महिमा का गान-बखान किया है। श्रीकृष्ण और राधा मध्यकालीन कृष्ण साहित्य के ही नहीं अपितु विश्व साहित्य के 'सत्य', 'शिव' और 'सुन्दर' है। संस्कृत वाङ्मय से लेकर आज तक किसी न किसी रूप में समस्त भारतीय भाषाओं में स्थान पाने वाले कृष्ण-राधा भाव-भक्ति, कर्म-शक्ति एवं शील-सौन्दर्य के आदर्श प्रतिमान बने हुए हैं। सभी कृष्ण-काव्य सर्जकों और एक से बढ़कर एक कृष्ण-भक्त कवियों की रचनात्मक कल्पना शक्ति ने, उनके भावालोक की व्यापकता ने तथा कृष्ण-राधा के रूप एवं यौवन की सुन्दरता से अभिभूत दृष्टि ने, पूरे भारतीय साहित्य को समृद्ध एवं उपकृत किया है। क्षण-प्रतिक्षण नवीनता तथा नूतनता धारण करने वाला कृष्ण-राधा का सौन्दर्य कवियों-लेखकों को सृजन के लिए सदैव प्रेरित करता रहा है—

**"क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति तदेव रूपं रमणीयतायाः।"**

*—माघ कवि, शिशुपालवध*

हिन्दी साहित्य का मध्यकाल भी कृष्ण भक्ति एवं कृष्ण-राधा सौन्दर्य की विकास गाथा का परिचायक है। भक्तिकाल में अष्टछाप के प्रतिष्ठित कृष्ण-भक्त आठों कवि हों या स्वतंत्र रूप से कृष्ण की लीलाओं का, सौन्दर्य का तथा क्रीड़ाओं का मनोहारी वर्णन करने वाले रसखान, रहीम तथा मीरा आदि विश्वविख्यात कवि, सभी के काव्य में कृष्ण-कथा प्रधान रही। भक्ति एवं दर्शन-संप्रदायों से सम्बद्ध भक्त एवं कवियों ने भी कृष्ण की मधुर-स्निग्ध लीलाओं तथा लीला-प्रसंगों को ही वर्णन का विषय बनाया। रीतिकाल में एक तरफ तो "और कवि रीझैं तो कविताई, नहीं तौ राधिका कन्हाई सुमिरन कौ बहाना है" की दुहाई देकर राधा-कृष्ण की स्मृति-भक्ति करने वाले अनेक कवि भी थे तो दूसरी तरफ विशुद्ध कृष्ण भक्ति करने वाले रीतिकालीन अन्य कवि उपलब्ध थे। बिहारी जैसा कवि मंगलाचरण में ही लिखता है—

मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरी सोय।
जा तन की झांई परे, स्याम हरित द्युति होय॥

कुल मिलाकर यदि ईमानदारी से दृष्टि डालें और विचार करें तो लगभग 1375 विक्रमी से लेकर 1900 विक्रमी तक के 525 वर्षों तक कृष्ण-भक्ति, कृष्ण-प्रेम, कृष्ण-लीला, कृष्ण-कथा आदि से सम्बद्ध कविता लिखी जाती रही। इससे पूर्व विद्यापति जैसे कृष्ण भक्त कवि को भी विस्मृत नहीं किया जा सकता। भक्ति और रीतिकाल के यदि कृष्ण भक्त कवियों की चर्चा की जाए तो संख्या लगभग 200 से ऊपर जाएगी। आधुनिक काल में आकर भी कृष्ण भक्ति परक काव्य तथा अनेक गद्य रचनाएँ लिखी गईं जिनमें कहानी, नाटक, उपन्यास तथा एकांकी आदि भी लिखे जाते रहे। जगन्नाथदास रत्नाकर के 'उद्धवशतक' को भला कौन भूल सकता है? अयोध्या सिंह उपाध्याय का महाकाव्य 'प्रियप्रवास' मैथिलीशरण गुप्त विरचित 'द्वापर' तथा 'जयद्रथ वध' भी इसी क्रम की श्रेष्ठ रचनाएँ मानी गईं। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का कृष्ण भक्ति साहित्य भी कम विलक्षण नहीं।

कुल मिलाकर कृष्ण कथा साहित्य जिसने हमें उदात्त प्रेम, भक्ति, आस्था, श्रद्धा, विश्वास, शक्ति, शील, सौन्दर्य, संवेदना, लोकमंगल, लोकरंजन, परिपक्व चिंतन, सर्वांगीण जीवनदर्शन, कलात्मक दृष्टि, निःस्वार्थ समर्पण, कर्त्तव्य परायणता, कर्मचेतना तथा धर्मपरायणता जैसे अनेक मूल्य प्रदान किए, जीवन के प्रति एक सकारात्मक एवं रचनात्मक दर्शन प्रदान किया, उसी श्रृंखला में यह दुर्लभ ग्रंथ भी शामिल है। मध्यकालीन साहित्य की ऐसी अनेक दुर्लभ रचनाएँ अभी शेष हैं जो या तो अप्रकाशित हैं या अनुपलब्ध हैं। उसी अनुपलब्ध, अप्रकाशित तथा अज्ञात काव्य को प्रकाशित एवं सहज-उपलब्ध कराने का हमारा यह विनम्र प्रयास है। रीतिकालीन साहित्य के अंतिम दौर के कवियों में कवि 'लाल बलबीर' तथा उनके अनुयायी अनुज 'श्री प्रेमसखी' जी की कविताओं का संकलन-संपादन 'ब्रज-विनोद' के नाम से आपके समक्ष उपस्थित है। लगभग 125 वर्ष पूर्व ब्रजभाषा में लिखित इस पुस्तक की सामग्री को उपलब्ध कराने तथा इसका

परिष्कृत प्रकाशन करने में पंडित उमाशंकर दीक्षित जी तथा दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में वरिष्ठ रीडर के पद पर कार्यरत मध्यकालीन साहित्य के प्रकाण्ड विद्वान प्रियवर डॉ. पूरनचंद टंडन का अविस्मरणीय योगदान है। दोनों ही ब्रजभाषा के स्थापित विद्वान हैं। डॉ. टंडन ने तो ब्रजभाषा साहित्य में एम.फिल, पी.एच.डी. एवं डी.लिट् की उपाधि प्राप्त की है। 'मध्यकालीन कृष्ण काव्य में सौन्दर्य-चेतना' जैसे गंभीर-गहन एवं विस्तृत विषय पर डी.लिट्, करने वाले डॉ. टंडन ने इस रचना के संपादन में पूरी निष्ठा तथा गंभीरता का परिचय दिया है। अत्यन्त मधुर एवं सरस भाषा न जाने क्यों अब ब्रज प्रदेश में भी उपेक्षित हो रही है। डॉ. टंडन ब्रजभाषा-सेवा की धूनी दिल्ली विश्वविद्यालय में तथा ब्रजभाषा प्रेमियों एवं साहित्यकारों में अभी भी रमाए हुए हैं। कवि लाल बलबीर तथा प्रेमसखी जी के वंशजों में श्री लाला बद्रीदास एवं श्री प्रियदास जी ने विशिष्ट आग्रह पर हमें काव्य रचना उपलब्ध कराई हम उनके प्रति हृदय से आभारी हैं। हम श्री मोहन स्वरूप भाटिया जी के प्रति भी हृदय से आभार व्यक्त करते हैं जिनकी प्रेरणा इस पुस्तक के प्रकाशन में रही है। श्री अनिल कुमार अग्रवाल एवं श्री विष्णु प्रसाद अग्रवाल के प्रति भी हम आभारी हैं जिन्होंने इस रचना के प्रकाशन की अनुमति प्रदान की। मैं दीक्षित जी तथा डॉ. टंडन जी इन दोनों विद्वानों के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। भविष्य में भी इनका रचनात्मक सहयोग इसी प्रकार मिलता रहेगा, ऐसा मेरा विश्वास है। श्री मोहन स्वरूप भाटिया का भी सहयोग इस पुस्तक के प्रकाशन में रहा है। 'ब्रज-विनोद' शीर्षक से प्रकाशित इस लगभग 450 पृष्ठों की काव्य रचना से पाठकों को ब्रजभाषा के साहित्य का, काव्य के मर्म का तथा कृष्ण भक्ति का पूरा आस्वाद मिलेगा, ऐसा हमारा विश्वास है। 'मौजीराम स्मृति न्यास' इस महत्वपूर्ण एवं दुर्लभ पुस्तक का प्रकाशन कर अपने को गौरवान्वित समझता है। आप सभी को ढेरों शुभकामनाओं तथा हार्दिक बधाई के साथ यह पुस्तक समर्पित है।

— राधेश्याम गुप्ता

# ब्रजभाषा की प्रभुता और लालित्य

माधुर्यमयी ब्रजभाषा के इस रसमय काव्य-ग्रन्थ 'ब्रज विनोद' के रचयिता रससिद्ध कवि लाल बलवीर की गणना ब्रज भाषा के मूर्धन्य कवियों में की जाती है। वे अपने समय के प्रख्यात कवि थे। उनका जन्म का नाम लाला बद्रीदास था और वे मित्तल-गोत्रीय वैश्य थे। इनके पिता का नाम लाला रामजीलाल अग्रवाल था। श्रीधाम वृन्दावन में वनखण्डी महादेव के निकट व्यास घेरा में इनका निवास स्थान था। ये पाँच भाई थे। लाला बद्रीदास उनमें सबसे बड़े थे। बद्रीदास के अनुजों में प्रियादास (प्रेमसखी) भी ब्रजभाषा के श्रेष्ठ कवि थे· और वे निम्बार्क सम्प्रदाय के तत्कालीन प्रसिद्ध और वयोवृद्ध महात्मा श्री कृष्णदास जी (कृष्ण अलिजी) से दीक्षा लेकर विरक्त हो गये थे। बद्रीदास जी के दो अन्य भ्राता गोकुलप्रसाद और छीतरियामल ने भी शादी नहीं की। अवशिष्ट अनुज द्वारिका प्रसाद के मनोहरलाल और प्यारेलाल दो पुत्र और एक पुत्री भगवानदेवी हुए। मनोहरलाल के क्रमशः सीताराम, राधेश्याम, रामगोपाल, रमेशचन्द्र, सुरेशचन्द्र पाँच पुत्र तथा प्रेम और निर्मला दो सुताएँ—ये सात संतानें हुईं जो बाद में मथुरा में जाकर अपना-अपना व्यवसाय करने लगे। प्यारेलाल के भी गोपीनाथ, कृष्णगोपाल, श्रीगोपाल, रमेश, विष्णु नामक पाँच पुत्र और लच्छो-आशा दो पुत्रियाँ हुईं। इस प्रकार लाला रामजीलाल का परिवार वृद्धि को प्राप्त हुआ।

लाला बद्रीदास (लाल बलबीर) का विवाह मथुरा में धूसरवाली (भार्गव) गली के श्री चम्पालाल हलवाई की पुत्री चन्दादेवी से हुआ। उनके सन्तलाल, लड़ैतीलाल, बाँकेलाल, रामस्वरूप और पूरनचन्द पाँच पुत्र एवं भगवानदेवी नाम की पुत्री हुई।

कवि 'लाल बलबीर' के जन्म सम्वत् के विषय में यद्यपि

निश्चित रूप से कोई स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता है, परंतु अनुसंधान द्वारा यह निश्चित मत सामने आता है कि वि0 सं0 1977 श्रावण कृष्णा अमावस्या को उनका गोलोकवास हुआ था क्योंकि इसी दिन उनका वार्षिक श्राद्ध और स्मृति दिवस मनाया जाता था। अनेक प्रत्यक्षदर्शी वृन्दावन-मथुरा के लोगों के कथनानुसार मृत्यु के समय उनकी आयु 80-82 वर्ष की थी। अत: उनका जन्म संभवत: सम्वत् 1886 और 1895 के मध्य हुआ होगा।

अपने अनुज प्रियादास (प्रेमसखी) की भाँति लाल बलबीर भी निम्बार्क सम्प्रदाय में दीक्षित थे। उन्होंने भी श्री कृष्णदास महात्मा से ही गुरु दीक्षा ग्रहण की थी। प्रेमसखी की भाँति लाल बलबीर ने भी अपने गुरु कृष्णअलि जी की तथा निम्बार्क सम्प्रदाय के पूर्ववर्ती आचार्यों की अपने काव्यों में वन्दना की है। अपने राधा शतक में वे स्पष्ट लिखते हैं-

**'कृष्ण अली पद कमल रज मम उर करौ निवास'**

इसी प्रकार 'शिख-नख' पुस्तक की समाप्ति पर अपने गुरुदेव श्री 'कृष्ण अली' को श्री रंगदेवी (निम्बार्काचार्य जी) के यूथान्तर्गत भी उन्होंने लिखा है-

**'श्री रंगदेवी की सखी कृष्णअली सु सुजान।**
**तिनहिं कृपा शिखनख कथ्यौ, अपनी मति अनुमान।''**

और अन्त में 'कृष्ण अली की कृपा दृष्टि पाय राधा ठकुराइन के पायन की चाकरी' लिखकर अपने गुरु का स्मरण किया है। इस सबसे प्रमाणित है कि श्री लाल बलबीर भी अपने अनुज प्रेम सखी जी की भाँति ही कृष्णदास (कृष्णअली) के ही शिष्य थे।

'लाल बलबीर' अपने समय के रस सिद्ध और अखाड़े के कवि थे। श्री वृन्दावन में भी वसन्त पंचमी को प्रतिवर्ष रंगजी के बगीचा में वसन्तोत्सव पर विशाल कवि सम्मेलन होता था। उसमें जमकर कविता पाठ चलता था। उनके द्वारा लिखे और गाये

कवित्त, सवैया और अमृत ध्वनि छंदों की रसमयी वर्षा होती थी। बहुत से प्रेमीजन उन्हें लिख भी लिया करते थे। बुन्देलखण्ड के समथर, पन्ना, दतिया-झाँसी में लाल बलबीर की कविताओं को बड़े आदर से सुना जाता था। गोवर्धन, नन्दगाँव, बरसाना की कवि गोष्ठियों में उन्हें बड़े आदर के साथ आमन्त्रित किया जाता था। बरसाने में जब वे श्रीजी के मंदिर में किशोरी जी का नख-शिख का वर्णन सुनाते थे तो श्रोतागण समाधिस्थ की भाँति प्रेमावस्थित हो जाया करते थे।

यहाँ पर लाल बलबीर के काव्य की प्रशंसा में कुछ कहना सूर्य को दीपक दिखाने जैसा ही होगा। उनके काव्य कौशल का प्रत्यक्ष प्रमाण तो यह ग्रन्थ स्वयं ही है। पाठक इसको पढ़कर इसके काव्य सौष्ठव और कवि के बहुविध ज्ञान से स्वयं परिचित होंगे।

कविवर लाल बलबीर की वनखण्डी पर ही तम्बाकू की दुकान थी। वे तम्बाकू कूट-कूट कर बेचा करते थे। लगभग एक मन तम्बाकू एक ही बार में कूट कर तैयार कर लेते थे। जब लंगोट कसकर तम्बाकू कूटते थे तो पसीने में नहा जाते थे। उस समय सस्ते का जमाना था। दूध की मलाई दो आने सेर बिकती थी। जिस किसी दुकानदार की मलाई एक दो दिन की बच जाया करती, वह और भी सस्ती मिल जाती थी। ऐसी ही मलाई दो-तीन सेर खरीदकर मितव्ययी बद्रीदास जी तम्बाकू कूटने के पश्चात् नहा-धोकर चढ़ा लेते थे, जिससे थकान दूर हो जाती थी। 'लाल बलबीर' को पहलवानी और कविता करना– दो ही प्रमुख शौक थे। वे दंगलों में कुश्ती लड़ने भी जाया करते थे।

उनकी दुकान पर सर्वदा दस पाँच व्यक्ति बने ही रहते थे और अग्निकुंड कभी बुझता नहीं था। दुकान पर जब कविता पाठ चलता था तो मार्ग चलते लोगों की भीड़ कविता सुनने के लिए एकत्रित हो जाया करती थी। इस प्रकार कवि अपने जीवनकाल में ही अत्यन्त प्रसिद्धि प्राप्त कर चुके थे।

ब्रज विनोद (हजारा) का प्रकाशन यद्यपि उनके जीवन-काल में ही सं0 1950 विक्रमी में श्यामकाशी प्रेस मथुरा से हो चुका था परन्तु वह जब अप्राप्य हो गया तो इसका पुनः प्रकाशन सं0 2026 वि0 (अप्रैल 1969) में अधिकारी श्री व्रजवल्लभशरण वेदान्ताचार्य ने श्रीजी की कुंज वृन्दावन से किया। उस पुस्तक में अधिकारी जी ने लाल बलबीर के अनुज प्रेमसखी जी की कविताओं को भी सम्मिलित किया था।

'ब्रज विनोद' (लाल बलबीर हजारा) के इस नवीन संस्करण में लाल बलबीर की निम्न रचनाओं को संकलित किया गया है। 'षडंऋतु शतक' वि. सं. 1947 मार्गशीर्ष कृष्ण रविवार को पूर्ण हुआ था। 'शिखनख वर्णन' वि. सं. 1947 की फाल्गुन कृष्ण 3 गुरुवार को सम्पन्न हुआ। 'वृन्दावनशतक' वि. सं. भाद्रपद कृष्णपक्ष में गुरुवार को पूर्ण हुआ इसमें तिथि वर्णित नहीं है। इसी प्रकार नख-शिख वर्णन की रचना सं. 1949 में माघ शुक्ल पक्ष में शुक्रवार को किसी तिथि को सम्पन्न हुई।

उपर्युक्त रचनाओं के अतिरिक्त कवि की निम्न रचनाएँ भी इस संस्करण में संकलित हैं जिनके समय का कोई उल्लेख रचनाकार ने नहीं किया है। ये रचनाएं हैं-

पावस पच्चीसी, गिरिराजाष्टक, होरी कीर्तन, राधाशतक, फुटकर कवित्त, प्रेम पचासा, कालिय वचन, उद्धवगोपी सम्बाद, दानलीला, कालीदह के कवित्त, दावानल पान, अघासुर वध, वच्छहरण, अन्तर्लापिका, बहिर्लापिका, ब्रह्मचारी लीला, मनिहारी लीला, जोगिनीलीला एवं जयपुरी, अंग्रेजी, बंगला आदि भाषाओं के छन्द तथा व्यंजनाबंध आदि के कवित्त।

इस ग्रन्थ के प्रकाशक परम आदरणीय श्री राधेश्याम गुप्ता जी, मौजीराम स्मृति न्यास दिल्ली का मैं विशेष आभारी हूँ जिन्होंने इसे इतने अल्प समय में और इतने आकर्षक रूप में प्रकाशित

कर सारस्वत श्रम को सफलता प्रदान की। इस सुष्ठु प्रकाशन के लिए मैं उनका हृदय से कृतज्ञ हूँ।

अंत में, ब्रजभाषा साहित्य विश्व का श्रेष्ठ साहित्य है। उसे, उसकी पहचान तथा आस्वाद को जीवित रखना हम सभी का दायित्व है। उस दायित्व का निर्वाह हम इस पुस्तक के संपादन-प्रकाशन से पूरा कर रहे हैं। आशा है इस श्रृंखला को आगे भी जारी रखा जाएगा। आप सभी सुधी पाठकों के सुझावों का सदा-सर्वदा स्वागत रहेगा।

साभार।

14 जनवरी 2007
महासंक्रान्ति

**डॉ. पूरनचंद टंडन**

## विषय-सूची

# व्रज-राज की जय

जय मंजुल कुञ्ज निकुञ्जन की,
रस पुञ्ज विचित्र समाज की जै।
यमुनातट की मुरलीवट की,
गिरिजेश्वर की गिरिराज की जै॥
व्रज गोपिन गोपकुमारन की,
विपिनेश्वरि की सुख-साज की जै।
व्रज के सब संतन-भक्तन की,
व्रजमण्डल की व्रजराज की जै॥

श्री राधासर्वेश्वरो विजयतेतराम्

# वृन्दावन-शतक

## दोहा

गोरी मन भोरी अहो, श्रीराधे सुख रास।
चरन कमल बंदन करौं, पुजवौ जन की आस ॥1॥

श्रीराधे राधे रटौं, राधे कौ उर ध्यान।
मम कुल देवी देवता, राधा रमण सुजान ॥2॥

श्री गुरु चरन सरोज जुग, मम उर करहु निवास।
कछु छवि वरनन चहत हौं, वृन्दाविपिन विलास ॥3॥

जै जै श्री वृन्दाविपिन, जै जै श्रीसुखरास।
जै जै रसिकन प्रान-धन, मम उर करहु निवास ॥4॥

ब्रह्म सनातन शुद्ध हरि, हरन सकल जग फन्द।
सो वृन्दावन चन्द में, फँस्यो प्रेम के फन्द ॥5॥

जे मन मोहन लाड़ले, मोहे सुर मुनि वृन्द।
सो छवि लखि मोहित रहे, श्रीवृन्दावन-चन्द ॥6॥

श्रीवृन्दावन चन्द छवि, कापर बरनी जाय।
काकी समता दीजिये, रही गिरा सिरनाय ॥7॥

तीन लोक ते सरस है, वृन्दावन सुख कन्द।
जहँ निस दिन विहरत रहैं, श्रीराधागोविन्द ॥8॥

तजो गेह सुख देह के, और जगत के फन्द।
जुगल चरन सों प्रीति कर, बस वृन्दावन चन्द ॥9॥

## कुण्डलिया

(10)

श्रीराधा राधा रटौ, त्याग जगत की आस।
ब्रज वीथिन विचरत रहौ, कर वृन्दावन वास॥
कर वृन्दावन वास रसिकजन संगति कीजै।
प्रेम पंथ मन ढरौ त्याग विष अमृत पीजै॥
कहैं 'लाल बलबीर' होय आनन्द अगाधा।
निश्चै करिके चित्त कहौ श्रीराधा राधा॥

## दोहा

नमो नमो वृषभानुजा, नमो नमो सुखरास।
नमो नमो असरन सरन, मम उर करौ निवास॥11॥

जद्यपि अधम मलीन हौं, तदपि तिहारी आस।
सदा कृपा करि दीजिए, श्रीवनराज निवास॥12॥

श्रीवृषभानु-कुमारि जू, विनय करौं सुनि कान।
देहु निरन्तर आपने, चरन कमल कौ ध्यान॥13॥

हृदै सरोवर प्रेमजल, तुम पद हृद अरविन्द।
मन मिलिंद चाहत प्रिये, सदा सदा मकरन्द॥14॥

अब कछु बरनन चहत हौं, वृन्दाविपिन विलास।
कृपा दृष्टि करि स्वामिनी, पुजवहु जन मन आस॥15॥

## कवित्त

(16)

प्यारी श्री विहारी जू की रूप उजियारी राधे,
इनके सदाँई पद-पद्म सिरनाऊँ मैं।
कृष्ण अली आप हौ जुगल रङ्ग रली भली,
दीजै बुध ये जु तुम्है विनती सुनाऊँ मैं॥
'लाल बलबीर' रहौं पासी जू खवासी माँहि,
कृपा की कटाक्ष होय दासी भाव पाऊँ मैं।
अति ललचाऊँ हिय मोद माहिं छाऊँ,
कहूँ वृन्दावन-चन्द कौ सुजस वर गाऊँ मैं॥

(17)

जाकौं नेत नेत कहि वेदन बखान्यौ,
ईश ध्यान में न आनौं अचरज सुखदानी है।
और कौन पावै मति शारदा की सकुचावै,
याके देखिबे कौं कमला सी ललचानी हैं॥
'लाल बलबीर' भुज मेलि करैं केलि दोऊ,
हिये सुख झेल सेवैं सखी गुनखानी हैं।
चौथेहु भुवन परयन्त थाने जाने यहाँ,
स्यामा-स्याम राजा बनराज राजधानी हैं॥

(18)

गोप हूँ ते गोप महा राजत हैं वृन्दाटवी,
तिनकी झलक उर कैसे झलकाय हैं।

ललिता विशाखा रंगदेवी श्रीसुदेवी आदि,
अली श्री किशोरीजी की तिनैं सिरनाय हैं॥
'लाल बलबीर' दासी भाव भावना में पाय,
हियैं उतसाह सौं सदा ही जस गाय हैं।
लैंहे पद पद्मन की रेनु तनु धार जबै,
स्यामा-स्यामा जू की राजधानी रस पाय हैं॥

## दोहा

श्यामा जू की सहचरी, हाहा श्री ललितादि।
चरन कमल वन्दन करौं, पूजौ मन अहलादि॥19॥

मैं मति हीन मलीन हौं, और न कछू उपाय।
कृष्ण अली पद कमल बल, जो कछु बरन्यौ जाय॥20॥

## कवित्त

(21)

यमुना की कूल पै रही हैं द्रुमबेली झूल,
द्रवें मकरन्द फूल सुषमा दिमानी जू।
तिन पै मुदित मन कूकैं पिक सारी कीर,
सबतें इकन्त रावरी ये राजधानी जू॥
इनकी छबीली छवि ये जू सुख रासि कछू,
'लाल बलबीर' मुख चहत बखानी जू।
दोऊ कर जोर जोर कहूँ बार बार राधे,
कीजिये सुदृष्टि मोपै वृन्दावन रानी जू॥

(22)

वृथा ही जनम हाय लाखन लुकाय गये,
सदा भ्रमना के मांहि मति भरमाइये।
दारा सुत देह गेह ही में अति नेह रह्यौ,
सत्संग को न रंग छई जड़ताइये॥
'लाल बलबीर' अबै लागी आस तेरी वीर,
तू ही जग जीवन की जीवन बताइये।
हाहा सुख साधे करौ करुना अगाधे,
मेरी मेटौ मन बाधे वृन्दावन में बसाइये॥

(23)

ये हो मन मित्र सीख येती चित धार मेरी,
झूँठे सुत वाम धाम नेह बिसराइयै।
कठिन कराल काल व्याल कौ है ख्याल जाल,
परौ ताके गाल वासौं कौंन उबराइयें॥
'लाल बलबीर' हरिदासन कौ दास हूजै,
प्रेम रस पीजै सदा सुख बीच छाइयै।
छोड़ जग फन्द धन्ध लखौ विवि चन्द छैल,
वृन्दावन-चन्द कौ गुनानुवाद गाइयै॥

(24)

अति सुकुमार छवि सार श्री लड़ैती लाल,
प्रेम उर माल रति पति कौं लजावें हैं।
कालिन्दी के कूल झूल रहे द्रुम बेली फूल,
बीन अंग भूषन नवीन लै सजावें हैं॥

नाना रस रेल खेल ही कौ सुख झेल झेल,
दोऊ मुसिक्यावैं दोऊ दोऊ कौं रिझावें हैं।
सुख बरसावें अली गनन रिझावें हेर,
'लाल बलबीर' मुख बांसुरी बजावें हैं॥

(25)

बड़े बड़े मुनी ज्ञानी वास हेत ललचानी मती,
वेदहू नें नेत नेत कह गायौ है।
मोहन के प्यारे भारे ध्यान धर धर हारे,
तिनहूँ कौं याकौ ना प्रभाव दरसायौ है॥
'लाल बलबीर' राजधानी श्रीकिशोरी जू की,
चौधेहू भुवन में अखण्ड तेज छायौ है।
राधिका की दासी सुखरासी जौलों होय नहीं,
तौलों बनराज जू कौं कौनें रस पायो है॥

(26)

फूले हैं फलें हैं फल फूल वर रस मूल,
झूम झूम भूमि झुकि रहीं तरु डाली हैं।
कुन्दन सी बेल लपटानी हैं द्रुमन घन,
राधा मन-मोहन सुदिष्टि कर पाली हैं॥
'लाल बलबीर' कीर कोयल किलोलें बोलें,
लेत मन मोलें तान गावत निराली हैं।
वृन्दावनचन्द जू को सुखमा कहाँलौं कहूँ,
चारों ओर जहाँ रंग-रंग की बहाली हैं॥

(27)

सोभित हैं पाँती मन भाँती द्रुम वेलिन की,
सरस सजीली लचकीली बहुतन की।
द्रवें मकरन्द अलि वृन्द वृन्द रस लेत,
अति सुख देत पूर करें चाह मन की॥
'लाल बलबीर' संग कढ़ बढ़ चलीं डारी,
परम विचित्रनी सुवरन वरन की।
राधा मन मोहन की मोहनी विहार भूमि,
वर्नत बनेन देख छवि वृन्दावन की॥

(28)

हरी हरी भरी फल फूलन सों बेली भेली,
नाना रंगरेली तरु कंठ लपटानी हैं।
कोऊ द्रुत मुक्त लसें कोऊ हीर ही कों कसैं,
मानिक पिरोजा करें नीलम-लजानी हैं॥
लाल बलबीर दिव्य द्रव्य द्रवें मकरन्द (वृन्द),
जुगल सनेह दृष्टि पोखसों बढानी हैं।
सहित अलीन वनराज कों निहारें रानी,
राधिका जू संग मनमोहन गुमानी हैं॥

(29)

वरन वरन खग राजैं वनराज जू मैं,
जुगल विलोकत आनन्द उर बढ़े हैं।
नाचत हैं संग संग छवि सों अनेक ढंग,
होत मति पंगु अनुरागन में मढ़े हैं॥

कहत 'बलबीर' उड़ धावें नभ आवत,
उतर द्रुम डारन पै पपीहा चढ़ै हैं।
कबहू किलक कू कू कूक कैं सजीले सुर,
राधा घनस्याम के विमल जस पढ़ै हैं॥

(30)

खेलत हँसत वनराज मैं विहारी प्यारी,
नाना खग मण्डली की सोभा मन भावे हैं।
निरत दिखावें केते गगन उड़ावें लखि,
लाडली बुलावें तिनें सीघ्र फिरि आवैं हैं।
कोमल मधुर तोड़ तोड़ फल लावें सो सो,
सबै बनरानी जू की भेंट लै चढ़ावैं हैं।
'लाल बलबीर' उर दम्पति बढावैं सुख,
अति ही सजीले सुर राधा गुन गावै हैं॥

(31)

काहे कों सुजान मन धावत कुठौर ठौर,
वृथाँ जगवादन में कहा सुख पावै है।
सांचों कर मानत है दारा सुत तात मोरा,
इन को समूह बौरा छिन में बिलाबै है॥
याते 'बलबीर' सब जानियें असार यार,
बाजीगर कौ सौ खेल प्रगट दिखावै है।
वृन्दावनचन्द राजैं राधा नन्दलाल सार,
छवि उजिआर प्रीति तिन सों न लावै है॥

(32)

नवल निकुंजन में खेलत हैं छविपुँज,
नाना विधि ही के रचें साज सुख दानी जू।
लावत सुमन कली गुहत नवीन आली,
माल पहिरावें रङ्ग-रली मन मानी जू॥
लाल 'बलबीर' अंग सुखमा निहारें भली,
प्रांन धन बारें बिनै करैं मृदु बानी जू।
वृन्दावनचन्द जू में राजत सदैव दोऊ,
राधा मनमोहन के संग सुख दानी जू॥

(33)

कुण्डला अकार यामैं यमुना तरंगे लेत,
बहत सुहौनी धार सुखमा बिलन्द की।
फूले अरविंद तहाँ गुंजत अलिन्द वृन्द,
पावत अनन्द धूम उड़त सुगन्ध की॥
'लाल बलबीर' सुक सारौ केकी कोकिलादि,
बैठे द्रुम डार तान रटत अनन्द की।
दोऊ व्रजचन्द मिलि राधिकागुविन्द आली,
निरखें छबीली छबि वृन्दावनचन्द की॥

(34)

वृन्दावन चन्द जू कौ नाम रसना तें लेत,
कोटि-कोटि केलि के कलेस पुंज खोवत हैं।
सुभग सजीली यहाँ कालिन्दी तरंगे लेत,
नीलमणि माल याके कण्ठ मनों सोहत हैं॥

'लाल बलबीर' मनमोहन रसिकराय,
राधिका छबीली लै छबीली छबि जोहत हैं।
करत विलास सुख रास नये नये हास,
लता ओट ललितादिक हेर मन मोहत हैं॥

(35)

बने हैं सुघाट घाट अष्टा पद हीरन के,
सीढ़िन में मणिन की प्रभा सरसात हैं।
चित्रित विचित्र जगमगत तिवारी जारी,
बैठिक सुढारी हेर नैन अरुझात हैं॥
'लाल बलबीर' कूल दोऊ सम तूल झूल,
रहीं द्रुम डार मध्य यमुना सुहात हैं।
वृन्दावनचन्द जू के राजा श्रीविहारी प्यारी,
करैं जलकेलि भुज मेल कें अन्हात हैं॥

(36)

परौ आय द्वार सुनि सुजस अपार चारु,
कबहू तौ कृपा की कटाक्ष सों तकाऔगी।
सहचरि संग पाऊँ सेवा रुख ओर धाऊं,
पद सहराऊँ तबै हेर सचु पाऔगी॥
'लाल बलबीर' दासी जानकैं सदैव पासी,
राखौ सुखरासी चाह चित की पुजाऔगी।
दोऊ कर जोरी करूँ विनती करोरी गोरी,
हा हा श्रीकिसोरी ऐसें कब अपनाऔगी॥

(37)

परम रुचिर भूमि साखा द्रुम रहीं झूमि,
खिलत प्रसून हेर लागत न पलकैं।
गुंजत अलिन्द मकरन्द पान करैं खग,
मोद मन भरें बैठे डारन पै मलकैं॥
'लाल बलबीर' भुज अंसन पै मेल स्यामा-स्याम,
करैं केलि पन्थ धरें पग हलकैं।
प्रेम लपटानी मुख बानी कहैं राजरानी,
कैसी सुख दानी बनराज छबि छलकैं॥

(38)

उद्धव-से सखा मनमोहन सों बार बार,
बिनती करत हिय ये ही भाव भरि हैं।
वृन्दावन बास सुखरास दीजै सामरे जू,
गुलम लता हैकें सदाँ अनन्द करि हैं॥
'लाल बलबीर' वर रावरी विहार भूमि,
झूम झूम लूम लूम ताकी ओर ढरि हैं।
गोर्धन गुआल गोपी रज पाद पंकज की,
आय आय हमरे तबै ही सीस परि हैं॥

(39)

लाड़लौ ललन लै प्रसून कौं सुंघावैं तुमैं,
लै लै कैं सुबास रास तास ओर हर्षेगी।
परम प्रवीन रसलीन जू नवीन प्यारी,
चिबुक रंगीन कर कञ्जन सौं पर्सेगी॥

'लाल बलबीर' दासी जान सुखरासी ये जू,
मेरे हिय गेह रस रूप घटा वर्षेगी।
वृन्दावन रानी सुखदानी ये छबीली राधे,
दूर होंय बाधे कब ऐसी विधि दर्शेगी॥

(40)

वृन्दावनचन्द में सदैव फल नाना भांति,
रंग रस भरे द्रुम बेलिन में दर्सें हैं।
सीताफल अंबु सेव संतरा अनार चारु,
झूमत हैं बात सों छबीली छबि वर्षें हैं॥
'लाल बलबीर' तहाँ खेलें श्रीविहारी प्यारी,
भये तुष्ट पुष्ट दृष्टि ही सों ओर पर्सें हैं।
कर सों उतार सुकमार देत लाड़ली कौं,
खात औ खवावत में मनहिं मन हर्षें हैं॥

(41)

आयौ कर संतन की संगत में बार बार,
सदाँ पद पंकज में सीस कौं नवायौ कर।
न्हायौ कर प्यारे मारतण्ड तनया में जाय,
रज कों लगाय अंग अंग हुलसायौ कर॥
पायौ कर प्रभु के प्रसाद कों प्रसन्न है कैं,
नेम वनराज जू की परिक्रमा जायौ कर।
लायौ कर ध्यान मन मगन होय हृदै बीच,
बैठकैं निकुंजन में राधा गुन गायौ कर॥

(42)

कोटि कोटि अण्डन में धन्य ब्रह्म मण्डल है,
यामैं उन्नचास कोटि भूमि सुखकन्द है।
तामें सप्तद्वीप सप्तद्वीपन में जम्बूद्वीप,
तामें नव खंड भर्तखण्ड में अनन्द है॥
तामें चार धाम नीके सप्तपुरी मध्य देस,
तामें ब्रजमण्डल की छाई मकरन्द है।
चौधें हू भुवन बैकुण्ठ पर्यंत जेते,
तातें सरबोपरि श्रीवृन्दावन चन्द है।।

(43)

दाऊजी कौ माखन औ मिसरी अनोखी खीर,
गोकुल की लोटी सो सवाद बन्दवाने की।
चन्द्रमा की चन्द्रकला चहुँ ओर जाहिर है,
दही औ बतासे वृन्दादेवी मन माने की॥
मथुरा के पेड़ा वर टेंटी व्रज मण्डल की,
गोवरधन अन्नकूट सोभा सरसाने की।
दूध औ महेरी हेरी प्यारे नन्दगाम ही की,
अतिसै सुगन्ध नीकी बीरी बरसाने की॥

(44)

वनराज बेली अलबेली भाँति सोभित हैं,
छई कल पल्लव सों अंगन अथोरे हैं।
फूले नव फूल भरे सौरभ अतूल अलि,
लेत रस मूल फूल फूल चहुँ ओरे हैं॥

'लाल बलबीर' स्यामा स्याम रूप राँचे साँचे,
पंछी गुन गावें अनुरागन में बोरे हैं।
चित्र के लिखे से जुग मित्र कों निहारें मन,
प्रेम के समुद्र पर लै रहे झकोरे हैं॥

(45)

रसिक विहारी सुकमारी प्रान प्यारी जू कों,
सुखमा सजीली वनराज की दिखावें हैं।
कैसे द्रुम बेली रंगरेली फल पल्लव सों,
झुक-झुक झूम-झूम भूम चूम जावें हैं॥
सहित सुवास फल फूलकें झरें अतूल,
चारों दिसि ही में मनो इन्द्र झर लावें हैं।
डारन पै बैठे अनुरागन सों सारो सुक,
सुभग सजीली रसना सों तान गावें हैं॥

(46)

प्रीतम की प्यारी प्रिया प्रिया प्रान प्यारौ पीयु,
दोउन की दोऊ छवि-सिन्धु में तरावें हैं।
दोऊ नव करें खेल दोऊ भुज अंस मेल,
दोऊ सुख झेल झेल मन्द मुसिक्यावें हैं॥
'लाल बलबीर' वनराज के विलासी दोऊ,
सखिन चकोरन के लोचन सिरावें हैं।
गावें राग रागिनी रसीले चटकीले मुख,
मधुर मधुर वर बाँसुरी बजावें हैं॥

(47)

देखत हैं शोभा लोभा बढ़े प्रेम गोभा वन,
लाड़ली ललन मन अति हरषावैं हैं।
लटकत धावें द्रुम बेलिन के पास दोऊ,
दोउन के दोऊ नाम हित सों बतावैं हैं॥
सारो पिक कीर केकी कोयल किलोल करैं,
मधुरे सुरन सों सजीली तान गावैं हैं।
लावत हैं मिष्ट फल 'लाल बलबीर' दासी,
हित वनराज के विलासी कों पवावैं हैं॥

(48)

जाने को जतन सों मिली है रे मनुष्य देह,
याकौ सार ये ही सतसंगत में पोय जा।
दारा सुत भ्रातन के गेह सों सनेह तोर,
मोर मुख दास हरिदासन कौ होय जा॥
'लाल बलबीर' द्रुम बेली रंगरेली भेली,
झूमत नवेली मन इनहीं कौं जोय जा।
सोयजा सकल जग फन्दन के धन्दन सों,
वृन्दावन-चन्द जू के रस माहिं भोय जा॥

(49)

ग्वालन के संग श्रीगुपाल जू चरावैं गाय,
गावैं राग रागिनी उमंग भरे मन में।
बाँसुरी बजावें हाव भावन जनावें,
मित्र-मण्डली रिझावै हैं भरे हैं प्रेम-पन में॥

'लाल बलबीर' जू की अंग अंग माधुरी,
निहारत बने हैं ना बनें हैं बरनन में।
विविध विलास कौ प्रकास जहाँ राजत है,
याते मन मेरो सदाँ बसे वृन्दावन में॥

(50)

जानें को जतन सों बनौ यहै दाव तेरौ,
याकौ सुख हेरौ पग बाहर न दीजियै।
चौधेहु भुवन ते इकन्त ये विहार भूमि,
लाड़ली लला की रज अंग धार लीजियै॥
'लाल बलबीर' द्रुम बेली रंग रेलिन में,
संतन के संग बैठ प्रेम रस पीजियै।
कृपा कौं विचारो राधे नाम कौं उचारौ,
ऐसौ वृन्दावन-चन्द में सदाँ ही बास कीजियै॥

(51)

कोऊ है न अपनो ये जान जग सपनो सौ,
बिन सतसंगत वृथा ही तन तपनों।
छोड़ कटु वादन कों भ्रमना विषादन कों,
नार मिठ नादन कों जान विष कपनों॥
'लाल बलबीर' वनराज जू कौ साज हेर,
कीजिये न झेर दृढ़ ही सों बास थपनों।
छिन छिन घरी घरी रैन दिन आठौं जाम,
साँचौ सुखधाम स्यामा-स्याम नाम जपनों॥

(52)

झूम रहे सरस सजीले तरु ठौर ठौर,
फूल रहे फ़ूल धुंध छई मकरन्द की।
सीतल सुहौनी लौनी पवन झकोरे लेत,
गूँज रहीं चारों दिसि अवली अलिन्द की॥
'लाल बलबीर' जहाँ प्रेम भरे स्यामा स्याम,
खेलत हँसत तान गावत पसन्द की।
दुरें दुख दुन्द बढ़ें उर में अनन्द,
प्यारे लीजिये विलोकि छवि वृन्दावन-चन्द की॥

## पद

(53)

मेरी टेर सुनो सुकुमारी।
अखिल लोक चूड़ामणि सुन्दर मनमोहन की प्यारी॥
परम उदार दयानिधि नागरि दीनन ओर निहारी।
दासी जानि कीजिये स्वामिनि महत टहल अधिकारी॥

(54)

किसोरी मोकौं दै श्रीवृन्दावन वास।
चाहे सो कीजै श्रीसुन्दरि पूजौ मन की आस॥
खग मृग लता रेनु द्रुम बेली निरखों रास विलास।
दासी जान आन उर स्वामिनि कीजै रूप प्रकास॥

(55)

भजौ मन श्रीवृन्दावन-चन्द।
हरित नील दुति द्रुमन लिपट रहीं हेम बेलि सुख कन्द॥

फूले सुमन समूह लेत अलि झूम झूम मकरन्द।
दासी निरखि जहाँ विहरत मिल श्रीराधा गोविन्द॥

(56)

किसोरी राधे विनती करों करजोर।
कीजै दया दयानिधि नागरि राखौ चरनन ओर॥
द्वारे परी दीन हौं टेरत अब ना बनै मुख मोर।
दासी जान न टार विपुन तें छवि निरखों निसिभोर॥

(57)

श्रीराधा मोरी एक अरज चित लावौ।
तुम सरबज्ञ सुजान सिरोमणि करुणासिंधु कहावौ॥
और न कोउ हितू मो जग में जाके पास भ्रमावो।
दासी दीन परी द्वारे पै श्रीबनराज बसावौ॥

(58)

श्रीराधे जू निबाहे बनेंगी।
मो सम नहीं दीन या जग में दया दृष्टि सों तकाये बनेंगी॥
औगुन भरी परी द्वारे पै सैनन माँहि बुलाये बनेंगी।
दासी जानि चरन की स्वामिनि श्रीबनराज बसाये बनेंगी॥

(59)

मन रे तू चल श्रीवृन्दावन हेर।
घर के धूमर धूमते कढ़बढ़ क्यों कर राखी देर॥
भूलौ भ्रमत बहुत दिन बीते अब सब कष्ट निबेर।
स्यामा स्याम जहाँ मिल खेलत उन चरनन सिर गेर॥

(60)

दीजै मोकों श्रीवृन्दावन बास।
कुमर किसोरी गोरी भोरी करुनानिधि सुख रास॥
सैन बैन रस दैन जुगल वर लखौं परसपर हास।
दासी दीन परी द्वारे पै पूजौ मन की आस॥

## कवित्त

(61)

श्रीवन समान नहीं सुखमा बिलोकी आन,
फरत सदैव फल फूलन सों बेली हैं।
जहाँ स्यामा स्याम विहरत रहैं सुखधाम,
तहाँ आठौ जाम संग सोहत सहेली हैं॥
'लाल बलबीर' लता झूम झुकि रहीं भूमि,
केतकी गुलाब गुल-दावदी कुएली हैं।
जुगल सरोज मकरन्द की गहन विन्द,
गरबगहेली पांय परत चमेली हैं॥

(62)

कदम अनार अंबु जंबु औ असोक थोक,
झूम झूम झोटा लेत सुखमा अनन्द की।
प्रफुलित सुमन समूह कुञ्ज कुञ्जन में,
गुंजत मधुप धूम छाई मकरन्द की॥
'लाल बलबीर' जहां यमुना तरंगे लेत,
खेलन की भूमि ये ही प्यारी-नँदनन्द की।
दुरें दुख दुंद बढ़ें उर में अनन्द प्यारे,
लीजिये विलोकि छवि वृन्दावन चन्द की॥

(63)

अमल अमोल है अनूपम हैं रेनु याकी,
सिद्धि कामना की देन वारी हैं अनन्द की।
जाकौं अङ्ग लाय लाय सार वस्तु पाय पाय,
गाय गाय बानी सुधा सानी प्रेम फन्द की॥
'लाल बलबीर' याकी महिमा कहाँ लौं कहूँ,
और लोक लोक की बड़ाई सबै मन्द की।
फन्द की हरैया है करैया आनन्द सदां,
लीजिये विलोकि छवि वृन्दावन-चन्द की॥

(64)

कासी औ प्रयाग द्वारावती कौं निहार आये,
ब्रज माँहि आयौ जब आयबौ कहा रह्यौ।
गंगा सिन्धु सरस्वती सरजू में न्हाय आयौ,
जमुना में न्हायौ जब न्हायबो कहा रह्यौ॥
'लाल बलबीर' ब्रजराज की रंगीली छबि,
हिये माँहि लायो जब लायबो कहा रह्यौ।
प्रभु प्रसाद पायो सीस संतन कूँ नायो,
श्रीवृन्दावन पायो जब पायबो कहा रह्यौ॥

(65)

आनन्द के कन्द नन्दनन्द श्रीगोविन्द जू के,
पद उर लायौ जब लायबो कहा रह्यौ।
हरषि हरषि मारतण्ड तनया में जाय,
बार बार न्हायौ जब न्हायबो कहा रह्यौ॥

'लाल बलबीर' वृषभानु की कुमारी जू कौ,
सदा गुन गायौ जब गायबौ कहा रह्यौ।
प्रभु-प्रसाद पायौ सीस संतन कूँ नायौ,
श्रीवृन्दावन पायौ जब पायबौ कहा रह्यौ॥

(66)

बनो दाव तेरो बैन मान ले तू मेरौ,
सुख पाय है घनेरौ नेह कीजै रसिकन में।
रज अंग धारौ स्यामा स्याम कौ उचारौ,
जग सीस छार डारौ सदा बिचरौ लतन में॥
'लाल बलबीर' हारौ माया मद मोह द्रोह,
पोह मन अब तौ किसोरी के चरन में।
और फरफन्द जेते छोड़ दे जगत के ते,
सदाँ ही मगन ह्वै कै बस वृन्दावन में॥

(67)

एरे मन मेरे तो सों विनती करत ह्वौं रे,
काहे कौं भ्रमत ब्रजभूमि पंथ गह रे।
लता द्रुम बेलिन में राधा राधा धुन होय,
तहाँ जाय काम क्रोध लोभ मोह दह रे॥
'लाल बलबीर' जन जुगल उपासी सबै,
उनहीं की पद रज सीस धार लह रे।
और की न आस कीजै वृन्दावन वास सदाँ,
राधे स्याम स्याम-स्याम राधे स्याम कह रे॥

(68)

छूटी बेलि बेलि पै लपट रंग रेल मेल़,
चित्रन में चित्र जे विचित्र दरसत हैं।
चहचही चटकीली चमचमात चारों ओर,
लहलही लाँबी लोनी कारे सरसत हैं॥
लाल बलबीर स्यामा स्याम के रिझायबे कौं,
रची हैं सखीन छबि हेर हरषत हैं।
वृन्दावन-चन्द जू की देखौ कुञ्ज कुञ्जन में,
साँझिन में कैसे रंग रूप बरसत हैं॥

(69)

कहूँ राधा बाग रचौ गहवर निकुंज वन,
लूम रहीं लता लौनी भूमि परसावनी।
कहुँ चीरघाट नन्दघाट औ विहारघाट,
जमुना तरंगें लेत हिये हुलसावनी॥
'लाल बलबीर' रचौ कहुँ रास मण्डल,
अखण्ड रूप जगमगात आभा ससि दावनी।
कैसी मन भावनी रिझावनी रची है वीर,
देखौ चलि साँझी वृन्दावन की सुहावनी॥

(70)

कोऊ रची सखिन अवधपुरी मधुपुरी,
कोऊ रची कासी सुखरासी मन भावनी।
रचत प्रयाग तिरबेंनी सुख देनी कोऊ,
कोऊ जगदीसपुरी मोद उपजावनी॥

'लाल बलबीर' चहचही चटकीली हेर,
झमझमात आभा सुरपुर की दबावनी।
कैसी मनभवनी रिझावनी रची है वीर,
देखौ चलि साँझी वृन्दावन की सुहावनी॥

(71)

जान देरी कीरति लली के सँग कानन ते,
जलज खिले हैं ताके दलन लै आन दे।
आना देरी जान चाली सकल सहेली तहाँ,
रचना रचेंगी जिन जिय तरसान दे॥
स्यान देरी छाँड़ हिय हरषि रजायसु दे,
दास कहैं जस नीके हरि गुण गान दे॥
गान दै री गीत रस रंग ढरें आनद के,
नाहिन तें साँझी के दरस हेत जान दे॥

(72)

कल्पतरु लतिका सरस पारिजात फूल,
चिंतामणि भूमि है हरैया दुख दंद है।
सेवत रसिक जाकौं सदाँ ही उमंग भरे,
और जग वासना सों भई मति मन्द है॥
'लाल बलबीर' स्यामा स्याम की विहार थली,
देख रंग-रली भयौ उर में अनन्द है।
कोट कोट अण्डन कौ खण्डन प्रलै में होत,
सबसों नियारौ प्यारौ वृन्दावन-चन्द है॥

(73)

वृन्दावन चाहै दास दास ह्वै किसोरी जू कौ,
ढूंकै जिन दूजी ओर चित ना डुलावैगो।
मनिक महल में विराजें प्रिया प्रीतम जू,
तिनकौं सदैव हित ही सों गुन गावैगो॥
'लाल बलबीर' लैगौ रसिकन संग रंग,
होयगौ अभंग तन ताप कौं नसावैगो।
प्रानन समान बनराज कौं गिनैगो तबै,
जबै रस रीति प्रीति ही की रीति पावैगो॥

(74)

देखन विपुन सोभा रसिक विहारी प्यारी,
हरषि हरषि निज कुंज ही सों आये हैं।
मोरछलि केलि हेत माल माधुरी की बेल,
कदम कनेर लाल देख सुख पाये हैं।।
छूट चले सुमन नवाड़े रायबेलिन के,
करी ना झमेल हस्त कंज झर लाये हैं।
लाल बलबीर दासी गोप सुखमा प्रकासी,
कौन भाग जागे ऐसे रूप दरसाये हैं॥

(75)

कोमल कमल हू सों रेनु बनराज जू की,
सीतल सुगन्ध मन्द ब्यार लगै प्यारी जू।
चंपक चमेली रायबेली द्रुम बेली मेली,
झूमि झूमि भूमि झुकि रहीं सबै डारी जू॥

'लाल बलबीर' कीर कोयल कलोल करें,
गुंजत मधुप मोर सोर करें भारी जू।
लीने संग प्यारी खिली चन्द की उजारी आज,
बन में विहार करैं बाँकड़े विहारी जू॥

(76)

गोपीनाथ करिहैं सनाथ प्यारे गोविन्द जू,
जुगल किसोर चितचोर उर धरिये।
श्री मदनमोहन जू बाँकड़े विहारी प्यारी,
छबि उजियारी ताय चित्त तें न टरिये॥
'लाल बलबीर' राधा-बल्लभ निकुंज हेर,
राधिकारमन जू कौ मोद उर धरिये।
दीजै परदक्षिना हिये में भाव रक्ष ऐसे,
वृन्दावन-चन्द में सदैव वास करिये॥

(77)

वृन्दावनवारी प्यारी अरज हमारी ये ही,
दया की निधान एती बिनै कान कीजिये।
और जग लाल के न ख्याल में बिहाल करौ,
उर प्रतिपाल नेह कुंज में ढरीजिये॥
'लाल बलबीर' दासी आपनी खवासी जान,
कछू सुखरासी जू टहल माहिं लीजिये।
चरन सरोजन सों नेह रहै आठौं जाम,
और सों न काम बास वृन्दावनं दीजिये॥

(78)

खेलन किसोरी चितचोरी गोरी भोरी आई,
लाल बलबीर संग आपने विपन में।
फूले फूल भेली रायबेली चंपक चमेली,
चाँदनी कुयेली जुही जाफरा लतन में॥
मोतिया मदन बान मालती गुलाब गेंदी,
झूम झूम परें प्रिया-प्यारे के पगन में।
सुख होय तन में बढ़त मोद मन में,
सु निरखें जुगल छबि आज वृन्दावन में॥

(79)

सोनजुही केतकी कनेर कुन्द मोरछली,
माधवी अनूप जुही फरी है लतन में।
फूले हैं अनार कचनारन दिनेसमुखी,
लाड़ली ललन हेर लेत हैं करन में॥
'लाल बलबीर' वर सेवती गुलाब चीनी,
कदम कतार छबि छाई लटकन में।
सुख होय तन में बढ़त मोद मन में,
सुनिरखें सुमन छबि आज वृन्दावन में॥

(80)

ग्रीषम निसा में घनस्याम बाम यूथ मध्य,
प्रफुलित सोभा बनराज की निहारी जू।
फूलीं द्रुम बेल अलबेली तें निहार लीजै,
गुंजत मधुप बाय मन्द लगै प्यारी जू,

'लाल बलबीर' छबि देखबे ही लायक है,
चलौ री सहेली सौंह खाऊँ मैं तिहारी जू।
लीने संग प्यारी खिली चन्द की उजारी,
आज वन में विहार करैं बाँकड़े बिहारी जू॥

(81)

छोड़ जग नेह कों सनेह करि प्रीतम सों,
छिन-भंग देह कौ गुमान कहा मन में।
झूठे धन धाम बाम एकहुँ न आवै काम,
रटौ स्यामा-स्याम हरषित होय तन में॥
'लाल बलबीर' पीऊ-प्यारी कौ मधुर रस,
रसिकन संग पान कीजै करनन में।
बिचरौ पुलिन में निहारौ लतकन ही में,
लाड़ली लला कौं करि बास वृन्दावन में॥

(82)

श्रीबन सुहावने की सुखमा कहाँ लौं कहूँ,
हेम-मई भूमि प्रभा पन्नन लतन में।
दीरघ न लघुताई गहे सबै समताई,
दीये गलबाहीं सी दिखाई हरषन में॥
'लाल बलबीर' फूले सुमन मनीन कांति,
गुंजत मधुप पाँत सौरभ लगन में।
लाड़ली ललन में लगावैं चित मित्त नित्त,
सोई नर पावैं ऐसे बास वृन्दावन में॥

(83)

फूले हैं फले हैं द्रुम बेलि बहु भाँतिन सों,
होत ना निपात पात गात में अगन में।
तिनपै विहंग राजैं दिव्य बहु भाँति गाजैं,
सुजस किसोरी को उमंग भरे मन में॥
'लाल बलबीर' छबि पाई तिन ही नें,
जिन उर पुर राजे हैं अभंग प्रेम पन में।
वे ही बड़भागी अनुरागी पिया प्यारी जू के,
धन्य भाग जाके करै बास वृन्दावन में॥

(84)

कंचन अवनि कोट कुंज पुंज कमनीय,
कोविद कहत कवि काँति न अथोरी के।
कदम कनेर केर कुञ्ज कमरख हेर,
कमला कतार हैं कठैर चहुँ ओरी के॥
'लाल बलबीर' कञ्ज केतकी कमोद कुंद,
केवड़ा कलीन पंख कमल करोरी के।
कूक कूक केकी कल कोकिला कपोत कीर,
कानन किलोल करें कीरति किसोरी के॥

(85)

बाबा बनखण्डी महादेव व्रज जाहिर हैं,
व्यास जू कौ घेरौ सो अनूप छबि छायौ है।
चारों ओर सदन बने हैं लाल लाड़िली के,
चन्द ते दुचन्द रूप ऐसौ दरसायौ है॥

सदाँ ब्रजवासी रूप माधुरी निहारौ करें,
और सों न काम स्याम स्यामा गुन गायौ है।
'लाल बलबीर' नाम लै लै सब टेर करें,
राधिका कृपा तें बास वृन्दावन पायौ है॥

(86)

चंपक बरन मृगलोचनी सलोनी राधे,
और की न आस मेरें तुही है उपास री।
मेटौ जग त्रास कीजै कुमति को नास,
मोहि जान निज दास करौ हिये मैं प्रकास री॥
'लाल बलबीर' जन धीरज-धरैनी मन,
तोसी तौ तुही हैं और काकी करौं आस री।
पूरी कर आस मेरी एहो, सुखरास मोकौं,
कृपा करि दीजै सदाँ वृन्दावन बास री॥

(87)

छबीली रंगीली रस आगरी किसोरी गोरी,
राख निज ओरी मति मोरी यह धीजिये।
नागरी उजागरी जू सदां रूप आगरी जू,
'लाल बलबीर' दया दासन पै कीजिये॥
कीरति दुलारी मनमोहन की प्रान प्यारी,
करूँ मनुहारी बिनै एती सुन लीजिये।
मेरी यह आस पूरी कीजै सुखरास सदां,
हिय में हुलास बास वृन्दावन दीजिये॥

# वृन्दावन-अष्टक

## दोहा

लोक चतुर्दस मुकटमणि सदाँ सर्व सुखकन्द।
श्रीवृषभानु कुमारि कौ श्रीवृन्दावनचन्द ॥1॥

## कवित्त

(2)

चाहत हैं जाकी रज संभु चतुरानन से,
करें गुनगान उतसाह बास ही कौ है।
धर धर ध्यान हारे सामल सुजान ही कौ,
स्वामिनी कृपा बिना न मिलत घरी कौ है॥
करत खवासी हरिदासी हरिवंसी व्यासी,
जिही जो दिवावें होय दासी भाव जी कौ है।
'लाल बलबीर' नीकौ लागे प्रान पीकौ प्यारौ,
वृन्दावन-चन्द वृषभानु नन्दनी कौ है॥

(3)

राजत लतान ही में नवन छबीले खग,
करें रस गुन गान प्यारी लालजी कौ है।
मधु भरे झूमें फल वृन्द बहु भाँतिन के,
तिन में मधुर स्वाद सरस अमी कौ है॥
ठौर ठौर वापी कूप सरिता सलिल भरे,
पैरें कल हंस बंस रूप हित ही कौ है।

'लाल बलबीर' नीकौ लागे प्रान पीकौ प्यारौ,
वृन्दावन-चन्द वृषभानु नन्दनी कौ है॥

(4)

मंडित मुकर वृन्द मानिक महल राजैं,
तिनमें प्रकास सूर सहस ससी कौ है।
करत विहार जहाँ रसिक बिहारी प्यारी,
सुखी सुखमा री काज करै हित ही कौ है॥
मधुर मधुर कल अलि कुल गुंजत हैं,
करैं रस पान फूले कंज सब ही कौ है।
'लाल बलबीर' नीकौ लागे प्रान पीकौ प्यारो,
वृन्दावन-चन्द वृषभानु नन्दनी कौ है॥

(5)

खेलत हैं जामें रस भरे छैल स्यामा स्याम,
मधुर मधुर सब्द होत बाँसुरी कौ है।
किंकनी कनक पग नूपुर झनकत हैं,
तैसौ ही सजीलो सुर सरस सिखी कौ है।।
सीतल सुगन्ध ही सों चलत समीर धीर,
जाकौ बास दास कौ सदाँ अनन्द ही कौ है।
'लाल बलबीर' नीकौ लागे प्रान पीकौ प्यारौ,
वृन्दावन-चन्द वृषभानु नन्दनी कौ है।।

(6)

झूम रहीं लता लोनी फल फूल पल्लव सों,
तिनमें सरस सुख कल्प तर ही कौ है।

चारों ओर तरनि तनूजा जू तरंगें लेत,
तीर करें ध्यान संत प्यारी लालजी कौ है॥
मधुर मधुर सुर कोकिला मराल मोर,
गुंजत हरत सोर सक्र दुंदुभी कौ है।
'लाल बलबीर' नीकौ लागे प्रान पीकौ प्यारौ,
वृन्दावन-चन्द वृषभानु नन्दनी कौ है॥

(7)

छोड़ छोड़ राज काज सकल समाज साज,
दारा सुत चित्त वित्त जान सब फीकौ है।
परम प्रवीन भावना में जे भरे हैं संत,
तिनकों अनन्द देन हारौ हित ही कौ है॥
चार फल दायक सकल लोक नायक है,
महिमा अनन्त राजै सुखमा भरी कौ है।
'लाल बलबीर' नीकौ लागे प्रान पीकौ प्यारौ,
वृन्दावन-चन्द वृषभानु नन्दनी कौ है॥

(8)

ठौर ठौर विपिन में कीरतन होय जहाँ,
गावें रस भरे संत राग हित ही कौ है।
देत परदक्षिना निकुंज प्रेमलक्षना सों,
झूम गिरें हत सुध देह की गती कौ है॥
जुगल निहारें छबि ढारें दृग बार धार,
करत सुजान पान रूप माधुरी कौ है।
'लाल बलबीर' नीकौ लागे प्रान पीकौ प्यारौ,
वृन्दावन-चन्द वृषभानु नन्दनी कौ है॥

(9)

झूम रहे सरस सजीले तरु ठौर ठौर,
फूलि रहे फूल भार पत्र फल ही कौ है।
गूंज रहीं अवली अलिन्द मकरन्दन कों,
करें रस पान खान मोद अति जी कौ है॥
चित्रित विचित्र खग नाना विधि सोभित हैं,
निरख भुलानों मन रति के पती कौ है।
'लाल बलबीर' नीकौ लागे प्रान पीकौ प्यारौ,
वृन्दावन-चन्द वृषभानु नन्दनी कौ है॥

(10)

नवल निकुंजन में नवल छबीले छैल,
खेलें नव ख्यालन अनेक हरषन में।
तोड़ तोड़ सुमन नवीन नव बेलिन तें,
गूंथ गूंथ भूषन नवीन साज तन में॥
'लाल बलबीर' रस रास में रंगीले दोऊ,
नाचत मदन भरे गोपिन के गन में।
विविध विलास कौ प्रकास जहाँ राजत हैं,
ताते मन मेरौ सदाँ बसै वृन्दावन में॥

(11)

बैठे द्रुम बेलिन पैं नवल छबीले खग,
राधा गुन गामैं प्रेम प्रीति की लगन में।
फूलें हैं सुमन पुंज अलि कुल करें गुंज,
पीवैं मकरन्दन कों विहरें मगन में॥

'लाल बलबीर' चलैं सीतल समीर धीर,
हरैं मग पीर कौं लगे हैं आय तन में।
विविध विलास कौ प्रकास जहाँ राजत है,
ताते मन मेरौ सदाँ बसै वृन्दावन में॥

(12)

सदाँ ही सरद रितु होति रस रास वर,
सदाँ ही बसंत फूलें सुमन लतन में।
सदाँ साँझी होरी डोल ग्रीष्म हैं जल विहार,
पावस बहार हरे रङ्गन घटन में॥
'लाल बलबीर' सदाँ नवल निकुंजन में,
झूलत हिंडोले लाल-लाड़ली मगन में।
विविध विलास कौ प्रकास जहाँ राजत हैं,
ताते मन मेरौ सदाँ बसै वृन्दावन में॥

(13)

स्याम सेत हरित गुलाबी लाल नीले पीत,
नाना रङ्ग फूले कंज मंजुल सरन में।
दमदमात लता लोनी भूमि परसत झूमि,
तिनमें छबीले खग गूंजत सघन में॥
'लाल बलबीर' दोऊ खेलत लड़ैती लाल,
सुखमा बिसाल हेर होत हैं मगन में।
बिबिध बिलास कौ प्रकास जहाँ राजत हैं,
ताते मन मेरौ सदाँ बसै वृन्दावन में॥

(14)

झूमि झूमि लतिका रही हैं छिति चूमि चूमि,
फरैं फल फूल रस मूल तन तन में।
गूँज रही अवली अलिंदन की जोर भरी,
ढरी चहुँ ओर मधु लेत हैं मगन में॥
'लाल बलबीर' खग तिन पैं लड़ैती लाल,
सुखमा बिसाल हेर गहत करन में।
बिबिध बिलास कौ प्रकास जहाँ राजत है,
ताते मन मेरौ सदाँ बसै वृन्दावन में॥

(15)

मंजुल अमल भल सूरज सुता कौ नीर,
ताकौं पान कीयें आवें लाल प्यारी मन में।
तीर तीर राजत हैं संत प्रेम नेम भरे,
दरस किये ते ना रहत तन तन में॥
'लाल बलबीर' लतिकान में रंगीले छैल,
राधा राधा गान करें पंछी हरषन में।
बिबिध बिलास कौ प्रकसा जहाँ राजत है,
ताते मन मेरौ सदाँ बसै वृन्दावन में॥

(16)

गामैं जस सेस याकें रसना हजारन ते,
चार चतुरानन सदाँई हरषन में।
उद्धव से प्यारे भारे चाहैं सुखरास बास,
गुलम लता ह्वै रज धारे तन तन में।

'लाल बलबीर' महादेव मुनि नारद से,
इनहीं कौ ध्यान धरें भरे भाव पन में।
बिबिध बिलास कौ प्रकास जहाँ राजत है,
ताते मन मेरौ सदाँ बसै वृन्दावन में॥

(17)

खेलत हैं यामें लाल-लाड़िली रसिक बर,
राजत रंगीले छैल गोपिन के मन में।
ठुमक ठुमक ताता थेई कर नाचैं कभी,
झुनर मुनर बाजैं नूपुर पगन में॥
'लाल बलबीर' सजैं चीर नव रंग नीके,
भूषन जड़ाऊ जगमगे तन तन में।
बिबिध बिलास कौ प्रकास जहाँ राजत है,
ताते मन मेरौ सदाँ बसै वृन्दावन में॥

(18)

हरी हरी लतिका ललित लहराय रहीं,
कालिन्दी तरंगे लेत दृगन लखाइये।
खिले कंज सरस सजीले रँग रंगन के,
लेन हित गंध के अलिन्द रास धाइये॥
गाय रहै केकी तान तान के रसीली तान,
जिनकी रनन आगें रागनी लजाइये।
दास कहैं चेत रे अचेत चित्त लाड़ले तें,
लाड़ली के कानन के सदाँ जस गाइये॥

(19)

हीरन सी जगमगात रेनुका सजीली सेत,
अंगन लगाये ते कलेस जग जाय रे।
सीतल सजल जल कालिन्दी तरंगे लेत,
तनक अन्हाये ते अनन्द अधिकाय रे॥
रहिये जहाँई दृढ़ गहिये अचल है कै,
ध्यान लै धरैये नीकैं संत सत लाय रे।
दास कहैं चेत रे अचेत चित्त लाड़ले तें,
राधिका के कानन के सदाँ जस गाइये॥

## अमृतछन्द

(20)

श्रीवृन्दावन-चन्द में, खेलत लाड़ली लाल।
सदाँ लालबलबीर कह, गुंजत मोर मराल॥
मोर मरालहि। कुंज तमालहि। अमित विसालहि।
सहचरि जालहि। रचि रचि ख्यालहि। नव नव आलहि।
करत खुस्यालहि। जुगल कृपालहि। बहुविध मन मन।
जानि परम धन। सेवत निसि दिन। श्री वृन्दावन॥

(21)

राजहिं स्यामा स्याम जू, श्री वृन्दावन-चन्द।
सदाँ लाल बलबीर कह, सेवत सहचरि वृन्द॥
सहचरि वृन्दहि। करत अनन्दहि। लख विवि चन्दहि।
दरस अमंदहि। आनन्द कन्दहि। हरिजन फन्दहि।
पिय हित काजहिं। सब सुख साजहिं। मिल सुर गाजहिं।
रागनी लाजहिं। लखि छबि छाजहिं। दोउ सँग राजहिं॥

(22)

कुंजन कुंजन जुगल सँग, विहरत स्यामा बाल।
तहाँ लालबलबीर द्रुम, निरखहिं ताल तमाल॥
ताल तमालहि। किंसुक जालहि। अमित विसालहि।
कमरख लालहि। झूमत डालहि। सुभग रसालहि।
हारसिंगारहि। फरत गुलाबहि। पुंजन पुंजन।
छबि छबि लुंजन। अलि कुल गुंजन। कुंजन कुंजन॥

(23)

श्रीवृन्दावन-चन्द हरि, विहरत लाड़िली संग।
तहाँ लालबलबीर वर, जमुना लेहि तरंग॥
लेहिं तरंगहि। सामल रंगहि। कांति अभंगहि।
लख गति दंगहि। उपमा पंगहि। लगत न संगहि।
प्रफुलित कमलहि। मंजुल दलनहि। अलि कुल गुंजन।
जस रस पुंजन। कुंजन कुंजन। श्रीवृन्दावन॥

(24)

सिव विधि उद्धव से करैं, ये बलबीरहि आस।
देहिं लाड़िली लाल कब, वृन्दाविपिनहि बास॥
विपिन निवासहि। ये मन आसहि। रज सिर लावहिं।
विवि गुन गावहिं। ध्यान धरावहिं। हिय हरषावहिं।
अति ललचावहिं। टेर सुनावहिं। होय कृपा कब।
बिनै करत सब। दीजिये कहें अब। सिव बिधि उद्धव॥

(25)

श्रीवृन्दावन-चन्द वर, सुखमा भरो अनंत।
सेवत हैं बलबीर सँग, लै रितु सदाँ बसंत॥
सदा बसंतहि। राधिका कंतहि। सुमन अनंतहि।
द्रुम बिकसंतहि। हिय हरषावहिं। झुकि महि आवहिं।
मधुकर गावहिं। अति रस पावहिं। धारत यह प्रण।
तजत नहीं क्षण। जान परम धन। श्रीवृन्दावन॥

(26)

कीजिय ये दृढ़ चित्त में, तज दारा सुत वित्त।
कहैं लालबलबीर जू, बस वृन्दावन नित्त॥
नित वृन्दावन। है आनन्द घन। रसिकन कौ धन।
आयुस छिन छिन। जाय समझ मन। लोभ कहा तन।
विवि गुन गाइय। धनी रिझाइय। छबि लखि लीजिय।
हँस रस पीजिय। लख लख जीजिय। विलम न कीजिय॥

(27)

राजहिं स्यामा स्याम जँह, जमुना लेय तरंग।
तीर तीर बलबीर लख, झूमहिं ललित लवंग॥
ललित लवंगहि। मालती संगहि। बड़हर बेलहि।
अंब अनारहि। हार सिंहारहि। श्रीफल केलहि।
चंप चमेलिय। लटकन रेलिय। अति छबि छाजहिं।
अलिगन गाजहिं। रस वर काजहिं। सँग सँग राजहिं॥

(28)

लाड़ली कानन की छटा, लीजिये लाल निरक्ष।
ललित लता तर दास कह, खिले कंज कल लक्ष॥
लक्षन रंग। सजे कल संग। अनेक तरंगहिं।
चल सारंगहिं। अँग लग हीलहिं। गिरत धरन नहिं।
अलि रस लहहिं। सरस जस कहंहिं। हरषित आनन।
संत चित्त चहहिं। यह दृढ़ गहहिं। लाड़ली कानन॥

(29)

राजहिं कानन दास कहि, निसि दिन लाड़ली लाल।
सँग सँग अलिगन लै सदाँ, खेलत नये नये ख्याल॥
नये नये ख्यालहि। करतर भालहि। अति रस जालहि।
देकर तालहि। नृत्यत हालहि। कइ कइ चालहि।
निरख निहालहि। सजन रिझालहि। हरषित आनन।
सखिगन गानन। हित रस तानन। राजहिं कानन॥

(30)

कंचन के सदन जड़े हैं मनि हीरन के,
तैसी ही झलक रही चाँदनी जरी की है।
लता लता हरित-हरित दल कंजन तें,
तैसे ही अलिंदन की रास हित ही की है॥
दास कहैं सरिता तरत कल हंस हंस,
चातक रटन कीर ललित सिखी की है।
जगजगात देखरी निसाकर दिनन्द ही तें,
लाड़ली के कानन की कांति अति नीकी है॥

(31)

ललित लतान की छटान की घटा हैं दीह,
तीर श्रीकलिंदजा के राजें रस सार हैं।
देख अली केला हैं कठैर खट्टा खिरनी हैं,
नारियल चन्दन हैं नारंगी अनार हैं॥
गेंदा गेंदी लटकन चाँदनी कनेर जुही,
केतकी अनेक कंज कचनार डार हैं।
दास लाल लाड़ली के कानन के ध्यान धरें,
टारें ना छिनक जे दृगन ते निहार हैं॥



# पावस बत्तीसी

(1)

कारी-कारी-कारी आई दै दै दीह अंधियारी,
छरर-छरर जल धारन झराती हैं।
सीरी सीरी सीरी आली सारंग सरस धाई,
अति ही सजीली चञ्चला जे तड़तड़ाती हैं॥
दास कहैं केकी कीर चात्रिक चटकदार,
रसना रसीली तान नीकी तान गाती हैं।
नैसिक निहार देख लाड़ली छटा तें आय,
कनक अटा तें घटा घिस घिस जाती हैं॥

(2)

कारी लीली हरित जँगाली रंग रंग हाली,
सरस सजीली दिस दिसन तें आती हैं।
गहर गहर गहराय जल डारत हैं,
सरर-सरर सीर धनंजय सिधाती हैं॥
दास कहैं लहर-लहर लतिकान डारी,
दलन सहित कंजही कौ लहराती हैं।
नैसिक निहार देख लाड़ली छटा तें आन,
कंचन अटा तें घटा घिस घिस जाती हैं॥

(3)

गरजे हैं केकिन की हर्ष-हर्ष नाचत हैं,
चात्रिक रटान तें अनंग जंग सरजे हैं।

सरजे हैं अहंकार कंथ तज अरजे हैं,
तेहदार चंचला चटकदार तरजे हैं॥
तरजे हैं लेहैं रस सरस अनन्त कंत,
चलरी रंगीली जिय जानि निज हरजे हैं।
हरजे हैं कहा तज ठाड़े छल-बलन हैं,
दास कहैं देख घन कैसे आज गरजे हैं॥

(4)

कीजै का जतन आली लाड़िली रिस्यानी आज,
आई घन गर्ज घटा इनैं नैक टार दै।
केकी कीर चात्रिक चिचाय करें काँय-काँय,
जान ही की हान जान लै लै जल गार दै॥
दास कहैं दरस कराइये दया करिकें,
हा हा हे दियाली हेली धीर हिये धार दै।
सरर-सरर हरी सरसी लगें हैं दीह,
तड़िता तरज्जें याहि अग्न धर जार दै॥

(5)

काहें तें रिस्यानी है सियानी नन्दनन्दरानी,
रीति है अयानी जैसी हठ जिय लाई है।
रसिक रसीली रस रीति तें गरल घाली,
हरी की जंगाली तान चात्रिक जनाई है॥
कीजिये निहाली जी दयाली छैल सीघ्र हाली,
दास दरसन हेसी अखियाँ-सिहाई हैं।
नेंक ही निकस आली गेह तजि देख चाली,
काली-काली-काली घन गर्ज घटा आई हैं॥

(6)

सीरी सीरी सर सी सिधानी है धनंजै दीह,
लाड़ली रिसानी नहीं जानै तन हरजैं।
काँय काँय केकी कीर कैसे ये कसाई आली,
चात्रिक चिकार करैं हिये आन दरजैं॥
दास कहैं कैसे धीर धारैं ना निहारें छिन,
तड़िता तड़ड्-तड़ड् तड़ड़ड़ तरजैं।
धाय धाय दिसन तें दै दै अंधियारी देख,
घिर-घिर गहरे गहर घन गरजैं॥

(7)

गर जैं हैं अहंकार कंत तज अर जै हैं,
अरजै हैं एती जान तेरी जिये हरजे हैं।
हरजे हैं ऐहें नाह नैंक री न लरजे हैं,
लरजे हैं लैहें ते अनंग रंग सरजे हैं॥
सरजे हैं एती नेह दास लख तरजे हैं,
तरजे हैं चंचला अंधेरी निस दरजे हैं।
दरजे हैं लाल हिय हेरती न ढर जै हैं,
ढर जै हैं नैन जल कारे घन गरजे हैं॥

(8)

सरर-सरर सीरी चलत धनंजै दीह,
अरर-अरर जाँय लतिका लरज कैं।
तेहदार सीखी सान धरीसी सटाक आली,
तड़ता रही हैं तेज तरज तरज कैं॥

दास कहै लाड़ली लगत लाल अंगन,
अनंग की रही है घटा सरज सरज कैं।
कारे कारे गिरि से सजे लै री दिसान ही तें,
आये ये रंगीले धन गरज गरज कैं॥

(9)

कंचन अटान चढ़ राजत रंगीले आज,
अंग अंग हरित सजीले चीर धारे हैं।
कंज की कली के नीके केते हित ही के जीके,
लै लै निज करन सिंगारन सिंगारे हैं॥
दास कहैं आली रस रंग ही कें रंग रंगे,
अरे रहैं चित हित छिनक न टारे हैं।
अंस कर डारे रस कंत नेह गारे छैल,
धारा धर धारन की झरन निहारे हैं॥

(10)

कनक अटारी चढ़ निरखैं घटा री दीह,
तड़ता छटा री ये अनन्द देन हारी हैं।
अलि गन गानन तें लता कंज कानन तें,
केकी की रटान ये अनंग की जगारी हैं॥
दास कहैं छरर-छरर जल झारें घन,
सरर-सरर चलें हरी हितकारी हैं।
देख देख आली नैन कीजिये निहाली कैसें,
राजत रंगीले संग राधा गिरधारी हैं॥

(11)

आइ ये रंगीली तीज रीझ रीझ साजन के,
कर रस रंग अंग अंग ते लगाइये।
गाइये सजीली तान तान तान केकी कीर,
राजत लतान हेर चित ललचाइये॥
चाइये सरस खिले कंज कल केतकी के,
दास रस हेत ये अलिंद रास छाइये।
छाइये दिसान दिस घिर घिर अंधेरी दै दै,
लाड़िली निहार घन गर्ज घटा आइये॥

(12)

कारे हैं अखण्ड घन हरी के हठीले दल,
धड़ड़-धड़ड़ धड़ गाजत नगारे हैं।
गारे हैं अहंकार सजन तज अंत जैहैं,
आज गति चंचला के तेग कर धारे हैं॥
धारे हैं अनत जलधर सर सान धरे,
सक्र धनु साज साज तेह कर झारे हैं।
झारे हैं अनंत नैन नीर लाल दास कहैं,
चल री हठीली आये केकी हलकारे हैं॥

(13)

आंदी हैं गहर घिर घिर के दिसान सेती,
छरर-छरर जल धार छिरकाँदी हैं।
लांदी हैं तरेर दार तीषी तीषी सथ्थ-सथ्थ,
तड़ड़-तड़ड़ तड़ता जें तड़ तड़ादी हैं॥

गांदी हैं अलिन्दन दीं रास हित कंजन दें,
दास कहैं केकी तान तान ले जनादी हैं।
छांदी हैं अनंग सेन अंगन जगाँदी लख,
लाड़िली अटातें घटा काली दरसादी हैं॥

(14)

छड्डु दिती सक्र सीरी धनंजै जनन हित,
दरखताँदी डालियाँ लहर लहरांदी है।
नाचर्दी हैं कानन कतार केकी लक्ख लीजै,
लाडिली न निकी साडी गल्लैं चित्त लांदी हैं॥
घिन्नदी हैं अलनदी असगध कंजन दी,
दास कहैं कियां ये सजीली तान गांदी हैं।
आंदी हैं गरज घिर घिर दे अंधेरी चंगी,
कंचन अटादें नाल घटा घिस जांदी है॥

(15)

राधाए कन्हाई ताकी कानन थाकिये छिले,
हरस हरस रस रस गानए करीयेचे।
सीतल गंधेए हरी से खाने आछेसि यदी,
ए गाछे ओ गाछे (केने) कंज दले ए हालीये चे॥
दास दिस दिसन ते काली ए घटाए येई,
झिल्ली ए केकी ए कीर चात्रिक डाकिये चे।
तडड-तडड तड तार तरजीये जदी,
झिझक रायेर लाल गाये के लागीये चे॥

(16)

गाछे गाछे तले तले केकीरा करीचे गान,
राधा ए कन्हई राधा राधा ए डाकीये चे।
सकल साजीले साज गाये के 'राई ए लाल',
ए तीर अनंगे कांति से खाने ढाकीये चे॥
दास कहैं सारङ्ग चली छे गंध सीतल कै,
कानन के राज ही ये अटाए थाकीये।
गरज गरज येइ जल धार के ढालीये,
काली काली कैंने लाल घटाए थाकिये चे॥

(17)

आई छै रंगीली तीज जान कें रंगीले छैल,
हरि तन रंगी लाल चीर अंग धारैं हैं।
लागे अंग अंगनें सजीला साज साजैं छैं जु,
सहित अनंग रंग नेह गन गारैं छैं॥
दास कहैं केकी कीर ररैंछें रंगीले जस,
छरर-छरर घन गर्ज नीर ढारैं छैं।
कंचन अटान चढ़े राजैं छैं लड़ैती लाल,
काली काली कैयां राज घटान निहारैं छैं॥

(18)

कानन निहारन सिधाये छैं लड़ैती लाल,
रसिक रसीले अंस अंस कर घालैं छैं।
साजैं छैं सिंगार अलिंकार नग हीरन के,
अंगन निकाई ते अनंग रंग टालै छैं॥

दास कहैं सीरी सीरी सारंग चलैं छैं भली,
लतिका दलन तें सरस कंज हालैं छैं।
चालो चालो हाली कीजै अखियाँ निहाली कैयाँ,
छरर-छरर घन धरा नीर ढालैं छैं॥

(19)

सरर-सरर सीरी धाई हैं धनंजै दीह,
तरर-तरर तरु डार लहराती हैं।
छरर-छरर नीर छिरकैं धरनि घन,
झिल्ली गन चात्रक सजीली तान गाती हैं॥
दास कहैं देखरी गगन की निराली गत,
काली लीली ललित जँगाली दरसाती है।
गरज गरज घिर घिर कें दिसान सेती,
कैसी ये अदां से आली घटा चली आती हैं॥

(20)

केकी गन हंकन की झींगुर झनंकन की,
हरी की हनंकन सरस सरसाती हैं।
सारंग की चालन की नीर घन ढालन की,
नदी नद तालन की कांति अधिकाती हैं॥
दास कहैं लाडली निहारिये रंगीली गत,
हरी हरी लतिका ललित लहराती हैं।
कारी कारी दिसन तें दै दै दीह अन्धियारी,
गहर गहर घटा घिर घिर आती हैं॥

## अमृत-ध्वनि

(21)

गर्ज्जहिं घन धड़ड़ड़ धड़ड़, तर्जहिं तड़ितहि संग।
ड़रत लाड़िली दास कह, लागत लालहि अंग॥
अंगहि लगत अनंगहि जगत ररत केकिय गन।
संगहि रसत सरस गत सजत हरक्षहिं तन तन॥
सररर चलत हरिय चित हरत करत गल सज्जहिं।
छररर झरत धरन जल तड़त धड़ड़ घन गज्जहिं॥

## अमृतछन्द

(22)

घिर घिर घहरत दिसन तें, जलधर दास गरज्ज।
निरख लाड़िली लाल कहँ, तड़ड़ड़ तड़ित तरज्ज॥
तड़ित तरज्जहिं। अति गति सज्जहिं। दिनकर लज्जहिं।
सररर तज्जहिं। चलत घनज्जहिं। सखि गन गज्जहिं।
तरल दलहि लहि। कंज कलि रलति। ढिलति छिति तिरति।
अलि रस लहति। हरिस चित चहति। घन घहरत घिरघिर॥

(23)

सज सज सकल सिंगार तन, राजत कनक अटान।
हरषत अति हिय दास कह, निरखहिं असित घटान॥
असित घटानहिं। तड़ित छटानहिं। अधिक सिहानहिं।
अलिगन गानहिं। चात्रक तानहिं। सिखिन रटानहिं।
सरित तड़ानहिं। सारस आनहिं। नृत्तत गज गज।
लाल ललन अज। छिनक न संग तज। त्रिंसत सज सज॥

(24)

हरि हरि लतिका ललित अति, राजत दलन सहत्त।
खिले कंज कल दास कह, अलिगन रसहि लहत्त॥
रसन लहतहिं। अलिन सहतहिं। सरस चहतहिं।
हरस गहतहिं। त्रिसा दहतहिं। राग कहतहिं।
तड़ित तरज्जहिं। जलघर गज्जहिं। अति जल झर झर।
सरितन चल ढरि। धरन करत तरि। राजत हरि हरि॥

(25)

कारिय लालिय लाड़िली, घटनहिं रंग निरक्ष।
झर-झर जे जल गगन तें, दरसत दास धनक्ष॥
दरस धनक्षहिं। रंगन लक्षहिं। हरित हि धानिय।
सारद रँगीय। कासिनी संगिय। केसरि तानिय।
लख रसखानिय। संदलि खालिय। चंदनि तालिय।
सरस जंगालिय। अत हरतालिय। अगर इकालिय॥

(26)

आये हैं लालन लाड़िली, नैंक दृगन्न निहारि।
अति अधीन चरनन चितै, दास कलेसहि टारि॥
टार कलेसहिं। राख न लेसहिं। अंग सँग लीजिये।
दया करीजिये। छिन छिन छीजिये। चित हँसि दीजिये।
नाहिक खीजिये। कहा गनीजिये। ते तन ताये हैं।
सिषि हरिषाये हैं। चात्रक गाये हैं। घिर घन आये हैं॥

(27)

आइ ये घिर घिर कें घटा, असितहि गगन निहार।
दास ललन तें लाड़िली, दीजिये तें रिस टार॥
तें रिस टारिये। दृगन निहारिये। सिख हितकारिये।
का जिय धारिये। नेह न गारिये। रीति अनारिये।
सिखि हरषाइये। चात्रक धाइये। टेर लगाइये।
तें न लजाइये। संक न लाइये। लै रस प्याइये॥

(28)

सँग सँग राजत चंचला, गरजत घनहिं हरक्ष।
दास लाल कहँ लाड़िली, यह गत सरस निरक्ष॥
सरस निरक्षिये। रंगन लक्षिये। घिर घिर गहरत।
सररर हल्लिये। सारंग चल्लिये। तरगन लहरत।
झिल्लि झनंकहिं। हरी दनंकहिं। किलकत अँग अँग।
शिखिगन रट्टहिं। छिनकन हट्टहिं। राजत सँग सँग॥

## कवित्त

(29)

हरित मनीन वर बँगला में ठाड़े लाल,
सामल घटा की झर प्यारी को लखावैं हैं।
झूमि रहीं लतिका अवनि पर लूमि रही,
विविध बिहंग रंग रंग दरसावै हैं॥
नाचत सिखीन बाल अति ही बिसाल चाल,
गहत कृपाल छूटै दौर दौर धावैं हैं।

'लाल बलबीर' दास कूक फिर आय आय,
सुभग सजीली सुर राधा गुन गावे हैं॥

(30)

निकस निकुंजन तें आये छवि-पुंज प्यारे,
रूप उजियारे बन हेर हेर हरषैं।
झूम झूम द्रुम अंब जंबुन को भेंट करैं,
लूम लूम लूम चूम चूम पग परसैं॥
'लाल बलबीर' दासी खासी संग सुख रासी,
चीर नवरंग अंग अंगन में दरसैं।
उमड़ उमड़ घन घिर घिर आये घूम,
छूम छूम छोटी बूँदन सौं बरसैं॥

(31)

कदम धरैन कचनार ह्वै रह्यौ है मन,
कुंद किसमिस बनातार दीये घरसैं।
अरनी असोख री अनारस न हूजै लीजै,
जायफल माधुरी है मिट्ठा बोल हरसैं॥
'लाल बलबीर' जू सों लवली रहौ ना चीड़
ताई कों बिसार तिही नैन लख तरषैं।
पाँपरी तिहारे बेर कीजै अब तू न हेर,
कूकत हैं मोर-छली घोर घन बरसैं॥

(32)

केकी कूक कूक कें किलोल करें कुञ्जन में,
कोकला कपोत री कदम्ब चढ़ हरसैं।

कुमर किसोर जू सों कुमरि किसोरी केलैं,
को विध करी है कहौ कहा सुख सरसैं॥
'लाल बलबीर' कान्ह कूल श्रीकलिन्दजा के,
कून्द कर हाय रहे देख किमि तरसैं।
कैसी कारी घटा घन काम की कटारी लै लै
कर कर कोप कों कठिन नीर बरसै॥

(33)

बिज्जू तन दमदमाय दसहूँ दिसान दीह,
स्याम घन सारी साज ढरी मनौं साँचे हैं।
मधुर मधुर कल झिंगुर झिंगार करें,
नूपुर कनक किंकिनी के सोर माचे हैं॥
बग पाँत मोती माल केकी जन देहिं ताल,
इन्द्र की बधून कर-म्हैंदी बूँद राचे हैं।
'लाल बलबीर' स्यामा स्याम के रिझायबे कौं,
पावस प्रपंच कचनी सी बन नाचे हैं॥



# गिरिराज-अष्टक

(1)

चारों दिसि सोभित सदाँ, जाके संत समाज।
सब देवन कौ मुकट मनि, राजा श्रीगिरिराज॥

(2)

कोमल अमल मंजु अङ्ग हैं अनूप याको,
दरसन किये तें सकल भ्रम भाज हैं।
याकी लै सरन संत सेवत हैं स्यामा स्याम,
रटैं आठौं जाम जिनें दूसरे न काज हैं॥
'लाल बलबीर' मान इन्द्र को गरैया व्रज-जन
कौ सहैया रहे जग जस गाज हैं।
पूजैं सुभ काज राखै दासन की लाज सदाँ,
सर्व सुख साज गिरिराज महाराज हैं॥

(3)

झूमि रहीं लतिका सुहौनी लोनी ठौर ठौर,
फूल रहे कंज अलि पुंज गुंज गाज हैं।
कोकिला मराल बाल बोलत चकोर मोर,
सदाँ ही बसंत रितु ही की दुति छाज हैं॥
'लाल बलबीर' मनमोहन रसिक राय,
जू ने कर धारे भारे सुखमा जहाज हैं।

पूजैं सब काज राखैं दासन की लाज सदाँ,
सर्व सुख साज गिरिराज महाराज हैं॥

(4)

तीर तीर सोभित सरोवर मनीन कांति,
अमल सुजल पूर मिष्ट सुभ साज हैं।
तिनपै मुदित मन बिहरैं मराल बाल,
सुखमा विशाल उपमा की गति लाज हैं॥
लाल बलबीर संत भावना भरें हैं जेते,
राजत गुफान ध्यान लावैं जस गाज हैं।
पूजैं सुभ काज राखैं दासन की लाज सदाँ,
सर्व सुख साज गिरिराज महाराज हैं॥

(5)

सेवत हैं संत सांति भरे जे अनन्त आय,
सरन लहत छांड़ि जग के समाज हैं।
परस किये ते परसत ब्रजचन्द मानौं,
दरस किये ते कोटि-कोटि अघ भाज हैं॥
'लाल बलबीर' जान कीजिये निवास प्यारे,
याके सुख आगें सुर पुर ही कौ लाज हैं।
पूजैं सब काज राखैं दासन की लाज सदाँ,
सर्व सुख साज गिरिराज महाराज हैं॥

(6)

झूमि रहीं लतिका सजीली फल पल्लव सों,
इनकों विलोकि देत काम आन सैठी हैं।

खेलें लाल लाड़िली सदांई मन मोद भरे,
लीने संग सखिन की मण्डली इखैठी हैं॥
'लाल बलबीर' सर्व सुख की रहत भीर,
दुख को न लेस बेस सुखमा समैठी हैं।
ऐंठी ऐंठी फिरें मति काहे कों निहार चलि,
सब सों सरस गिरिराज की तरैठी हैं॥

(7)

इन्द्र जज्ञ ही कौं माँचौ घर घर जोर सोर,
मोद भरी डोलें गोपी सर्व सुख साज की।
पापर पकौरी दधि दूध पकवान बहु,
करेंगी सकल भेंट भूमि सिरताज की॥
'लाल बलबीर' हँसि कह्यौ नन्द जू सों जाय,
जनम भगौरा याकी सेवा कौन काज की।
राखैं जन लाल पूजैं सदाँ सुभ काज ऐसौ,
न जग दूजौ पूजा कीजै गिरिराज की॥

(8)

गरज गरज आये सक्र के सिखाये धाये,
घिर घिर गगन अनंत जल ढारे हैं।
तड़ड़ तड़ड़ तेज तड़िता तरज्जे घन,
कारे कारे गिरि से दिखात ये डरारे हैं॥
दास कहैं नन्दलाल टारिये कराल जाल,
राखिये दयाल त्रास जात ना सहारे हैं।
करुना निधान कान्ह जानिकें जनन हानि,
सीघ्र कर तान गिरिराज करधारे हैं॥

(9)

तेरी सीख लीनी जग्य गिरि ही की कीनी चित्त,
ऐसी नायँ चीनी त्रास हैं जे घनेरे हैं।
सक्र रिस आये घन सेना साज लाये जल,
अति ही झराये लाय धाय धाय घेरे हैं॥
दास दीन कहाँ जाइ कैसी करै कासों कहैं,
सकना सहाय कीये जतन घनेरे हैं।
हा हा लाल लाड़ले सरन जन जानि लीजै,
देर जिन कीजै आज लाज हाथ तेरे हैं॥

(10)

छाये हैं गगन आन अति ही डरारे दीह,
गरज गरज गरजत कारे कारे हैं।
कर कर जतन अनेक हारे कहाँ जायँ,
धर धार ही तें धारा धार जल ढारे हैं॥
दास कहैं करुनानिधान जन जान हानि,
लागी ना छिनक लैं कलेस दर डारे हैं।
अहंकार गारे सक्र करें जन जै जै कारे,
खेलत ही लाल गिरिराज कर धारे हैं॥

(11)

आये हैं हठीले घन गरज गरज कारे,
खण्डत हैं धरा दीह जल धार ढारे हैं।
तेहदार तीखी तेज तड़ता तड़तड़ात,
धड़धड़ात हेर हिया अधिक डरारे हैं॥

दास कहैं कीजिये सनाथ जी अनाथ जान,
सकल सियान ज्ञान आन दल डारे हैं।
अहंकार गारे सक्र करैं जै जैकारे जन,
खेलत ही लाल गिरिराज कर धारे हैं॥

(12)

देख जज्ञ हानी सक्र हीय रिस ठानी,
रीति करें हैं अयानी खल सीघ्र इन्हैं डंडिये।
तृन धन धान्य खायँ केतें हित हीके जीके,
सकल सजीले साज दीये हैं अखण्डिये॥
दास घन टेरिकैं सिखाये चित लाये हाल,
जाय जल काल तें कराल धार छांटिये।
गैयन सहित नर नारी धरानन्द नन्द,
कीजिये निकन्द गिरिराज आज खण्डिये॥

(13)

चले हरषाय धाय राज की रजाइस लै,
तड़ड़-तड़ड़ तड़ता के गन तरजें।
धारा-धार ही तें धर धार लैं ढरन लागे,
अति ही डराने जन जान जान हरजैं॥
दास कहैं कारे कारे देख कें डरारे दीह,
गह गह चरन करन लागे अरजैं।
हा हा लाल लाडिले सरन राखि लीजैं आज,
काल तें कराल ये हठीले घन गरजैं॥

(9)

तेरी सीख लीनी जग्य गिरि ही की कीनी चित्त,
ऐसी नायँ चीनी त्रास हैं जे घनेरे हैं।
सक्र रिस आये घन सेना साज लाये जल,
अति ही झराये लाय धाय धाय घेरे हैं॥
दास दीन कहाँ जाइ कैसी करै कासों कहैं,
सकना सहाय कीये जतन घनेरे हैं।
हा हा लाल लाड़ले सरन जन जानि लीजै,
देर जिन कीजै आज लाज हाथ तेरे हैं॥

(10)

छाये हैं गगन आन अति ही डरारे दीह,
गरज गरज गरजत कारे कारे हैं।
कर कर जतन अनेक हारे कहाँ जायँ,
धर धार ही तें धारा धार जल ढारे हैं॥
दास कहैं करुनानिधान जन जान हानि,
लागी ना छिनक लैं कलेस दर डारे हैं।
अहंकार गारे सक्र करें जन जै जै कारे,
खेलत ही लाल गिरिराज कर धारे हैं॥

(11)

आये हैं हठीले घन गरज गरज कारे,
खण्डत हैं धरा दीह जल धार ढारे हैं।
तेहदार तीखी तेज तड़ता तड़तड़ात,
धड़धड़ात हेर हिया अधिक डरारे हैं॥

दास कहैं कीजिये सनाथ जी अनाथ जान,
सकल सियान ज्ञान आन दल डारे हैं।
अहंकार गारे सक्र करैं जै जैकारे जन,
खेलत ही लाल गिरिराज कर धारे हैं॥

(12)

देख जज्ञ हानी सक्र हीय रिस ठानी,
रीति करें हैं अयानी खल सीघ्र इन्हैं डंडिये।
तृन धन धान्य खायँ केतें हित हीके जीके,
सकल सजीले साज दीये हैं अखण्डिये॥
दास घन टेरिकैं सिखाये चित लाये हाल,
जाय जल काल तें कराल धार छांटिये।
गैयन सहित नर नारी धरानन्द नन्द,
कीजिये निकन्द गिरिराज आज खण्डिये॥

(13)

चले हरषाय धाय राज की रजाइस लै,
तड़ड़-तड़ड़ तड़ता के गन तरजें।
धारा-धार ही तें धर धार लैं ढरन लागे,
अति ही डराने जन जान जान हरजैं॥
दास कहैं कारे कारे देख कें डरारे दीह,
गह गह चरन करन लागे अरजैं।
हा हा लाल लाडिले सरन राखि लीजैं आज,
काल तें कराल ये हठीले घन गरजैं॥

(14)

कारे कारे गगन ते आये ये डरारे आज,
छंड़ें जल खण्डें धरा करें जन हरजैं।
तैसी ही जरैया दीह अग्नि कीसी दैया आय,
चंचला चिराय रही तड़तड़ाय तरजैं॥
दास कहैं कीजिये सनाथ जी अनाथ जान,
कासों कहैं करे डारैं हिये धाय दरजैं।
हा हा लाल लाड़ले सरन राखि लीजै आज,
काल तें कराल ये हठीले घन गरजैं॥

(15)

तेरे ही कहे तें जाय गिरि की सरन लीनी,
तेरे ही कहे ते सक्र जज्ञ लै नसाये हैं।
देत रहे साज जन सदाँ सदाँ हर्ष ही तें,
तैंने ही हठीले काज नये ये कराये हैं॥
दास कहैं नन्दलाल कीजै जी जतन हाल,
थर्थरात गात जन अधिक डराये हैं।
याई ते रिसाये राज दलन सजाय दीने,
काल ते कराल घन गर्ज गर्ज आये हैं॥

(16)

कागा धेनुका से तिरना से खल डारे हन,
अधिक कराली काली अहंकार गाइये।
केते डर आये तिनें खेलत टराये तरु,
देखत गिराये जन हीकें हितकारिये॥

'दास' कहैं करुनानिधान नन्दलाल हाल,
एती जी अरज आज सीघ्र हिये धारिये।
सक्र रिस आये साज सेना चढ़ लाये घन,
गर्ज रहे कारे देख त्रास दास टारिये॥

(17)

आये हैं गरज कारे कारे ये डरारे घन,
सखन कहेतें लाल झड़क निहारे हैं।
तड़ड़ तड़ड़ तेज तड़िता तरज्जें आज,
तैसे ही हठीले दीह जल धार ढारे हैं॥
दास कही लाल हाल इनकी सरन लीजै,
जिनने तिहारे खीर खाँड़ खाय डारे हैं।
करुनानिधान कान जानिकें जनन हानि,
खेलत ही लाल गिरिराज कर धारे हैं॥

(18)

राज के कहेतें घन आय धाय केते,
कर कर तेह देह जल ढरकाये हैं।
सात दिन सात रात कीनी दीह दीह घात,
जाय जाय लाय लाय सिन्धु लै रिताये हैं॥
दृगन निहारैं खल आय आय राजी जन,
कृष्णचन्द्रजी नें चक्र गगन तनाये हैं।
सजन रिझाये सक्र दल लै हराये लाल,
लाडिले ललन कर गिरि ले धराये हैं॥

(19)

चले खिसियाय घन सेन कही राजन तें,
सात दिन-राति जल ढार हार आये हैं।
रंचक न जाय जर जाय हाय राह ही तें,
सहस दिनेस कांति चक्र लै तनाये हैं॥
दास कहैं तहाँ छल सकल हिराय किये,
जतन अनेक किये चले ना चलाये हैं।
जायकें लजाये नहीं कार्ज एक सार आये,
नाथ कर कृष्ण गिरिराज लै धराये हैं॥

(20)

लाखन धृकार चित धनी तें करी रे रार,
कैंसे निसतार जाय तहाँ कहा कैहै रे।
जिनहीं के दीने राज सकल सजीले साज,
तिनके रिस्याये जाय काकी छाँह लैहै रे॥
'दास' त्रास ही तें छिन छिन तन छीजत है,
ये ही है जतन नाथ चर्न जाय गेहै रे।
करुना निधान नहीं त्यागें जन दीन जान,
सरन लहे ते हाल संसै दाह दैहै रे॥

(21)

लैकें सँग साथी गाय सकुचत आये जहाँ,
तहाँ नन्दलाल नख गिरिधर राखे हैं।
दीन दीन दीनं कह सर्न नाथ राख लीजै,
गिरे थहराय धाय चर्न सिर नाखे हैं॥

दास कृष्ण हृदैं लाय कही धीर धारिये जी,
धन्य करिकें ढिठाई दर्स रस चाखे हैं।
धरा धर दीजै गिरि दया दृष्टि कीजै जन,
अति ही अजान कीने निष्ट दीह साखे हैं॥

## अमृतछन्द

(22)

धर चित लालन सिक्ष तेहि, दास हरषि गल गज्ज।
चले सकट लद खान हित, खीर खंड जन सज्ज॥
सज्ज सकल जन। हर्षहिं तन तन। लग्गहिं चरनन।
जल सिर ढारहिं। चीरन धारहिं। कहें लखि धन धन।
अग्गहिं धर धर। आनन दैकर। खान कहत हर।
सक्रहिं रिस जल। छांडहि घन जल। हरि नख गिरिधर॥

(23)

कर कर अकरन दास जिन, दीनिहँ जज्ञ नसाय।
कहैं सक्र यह घनन सन, देखिय यहि क्षण जाय॥
देखिय यहि क्षन। धाय सकल जन। कहत झटक्कर।
आज हटक्क्कर। तड़ित चटक्कर। लटक लटक्कर।
दीजिये कह डर। गरज गरज कर। छंड़िय जल धर।

(24)

घहरत आये दिसन तें, अति अखंड दल सज्ज।
कारे कारे दास यह, करत जनन्य हरज्ज॥
करत हरज्जहिं। लख जिय लज्जहिं। गग् गग् गज्जहिं।

अति कल अज्जहिं। जांकित तज्जहिं। तड़ित तरज्जहिं।
देत अंधेरिय। कठिन घनेरिय। हरि गन लहरत।
लग तन थहरत। तें ललक हरत। घिर गन गहरत॥

(25)

गग्गन राजहिं दिसन तें, हिय रिस धरहिं अखंड।
लै लै जल घन दास कह, धाये धरनहिं खंड॥
खंडत धरनहिं। जन कर डर नहिं। गगनहिं अड़ अड़।
छंडत झड़ड़ड़। अति जल सड़ड़ड़। दिसनहिं धड़ड़ड़।
असित घटानहिं। तड़ित छटानहिं। तत्त तरजहिं।
गिरि चट्टानहिं। अधिक सिहानहिं। गग्ग गरजहिं॥

(26)

तेरे हि कहबे ते ललन, गिरि कीने सिरतजज।
चढ़े सक्र रिस कर कठिन, राख दास जन लज्ज॥
राखिये लज्जहिं। कर जन कज्जहिं। नास अकज्जहिं।
लै दल सज्जहिं। अति घन गज्जहिं। करत हरज्जहिं।
तज तज डेरहिं। आये हैं नेरहिं। लख निसचेरहिं।
जतन घनेरहिं। कर कर हेरहिं। हस्तन तेरहिं॥

(27)

धारे गिरि कर लाड़िले, अचरज ख्याल रसाल।
दास चरन सिरनाय कह, जै जै जै नन्दलाल॥
जै नन्दलालहि। हर जन जालहि। कठिन करालहि।
अरि तन सालहि। लै ततकालहि। लै हन डालहि।

नइ नइ चालहि। दै कर तालहि। छिन छिन जारहि।
जहाँ निहारहिं। तहाँ सिधारहिं। कइ तन धारहिं॥

(28)

डारहिं झर झर सात दिन, दास कहैं घन सक्र।
धारहिं। गिरिधर गिरिहि कर, दिये गगन धर चक्र॥
चक्र तनाण्यं। नीर अचाण्यं! धरन न धाण्यं।
जन्न रिझाण्यं। अति हरषाण्यं। लै जस गाण्यं।
निज तन ताण्यं। तहाँ लजाण्यं। कार्जन सारहि।
दास तिहारहि। सत्त जना रहि। कठिन निहारहि॥

(29)

रखिये जड़ता अति हियें, जाने नहिं सिरतज्ज।
हाय हाय तें दास है, कीने कठिन अकज्ज॥
कठिन अकज्जहिं। निज गृह तज्जहिं। तन कर थर थर।
अति डर लग्गहिं। गाय लै अग्गहिं। चले जहाँ हर।
गिरि नख सज्जहिं। जन सज गज्जहिं। दासन लखिये।
सीस चरन्नहिं। राख धरन्नहिं। सरन हि रखिये॥

(30)

खेलहिं लालन दास कह, केतिक ख्याल निरक्ष।
चकई गेंद चिरइ चिरा, लै कर नचत हरक्ष॥
नचत हरक्षहिं। लेत निरक्षहिं। गिर गिर गह गह।
आनन लग्गहिं। हित गन जग्गहिं। ततता कह कह।
धरन ढकेलहिं। चलत अकेलहिं। हँस हँस ते लहिं।
ये रस रेलहिं। जननि सकेलहिं। हिय हरखे लहिं॥

(31)

नृत्यत हरि जननिय सदन, थिरक थिरक गति लेत।
दास दृगन निहार सखि, निज गन हर्षहि देत॥
देत अनंदहि। चाहत चंदहि। गगन करत कर।
सहज सहज रर। ठन गन कर कर। दीजिये कह लर।
किंकिनी रज्जहिं। कटि तट गज्जहिं। झननन अति गत।
लचक लचक कर। चरन अचक धर। हँसि हँसि नृत्यत॥

(32)

जै जै जै श्रीराधिके, जै नन्दनन्द अधार।
जै जै कीरति लाड़िली, दासहि दृष्टि निहार॥
दृष्टि निहारिय। जै हितकारिय। अर्जहि धारिय।
दीन तिहारिय। कष्ट निवारिय। संसै टारिय।
दीन दयालिय। करत निहालिय। दरसन दै दै।
हित गन कै कै। सरनन लै लै। धन धन जै जै॥

(33)

रज्जहिं हीरन के सरन, लाड़िली लाल निरक्ष।
करत सहचरी दास कह, केतिक काज हरक्ष॥
करत हरक्षहिं। हित गन लक्षहिं। चित हित लह लह।
रंग रंगीलिन। रसिक रसीलिन। तिन सन कह कह।
केइ जल दानिय। अतरन दानिय। लै कर सज्जहिं।
छिनक न तज्जहिं। कर हित कज्जहिं। संग संग रज्जहिं॥

(34)

कारिय जीरी तें धरी, लालन नेह सनाय।
सीतल चीनी दास कह, रहैं तिहारिय चाय॥
चाय तिहारिय। लै जस आरिय। चित हरि दीजिय।
धनी न खीजिय। खें रंगनी जिय। रार न कीजिय।
छन्द कटेरिय। तज जस ले रिय। आलस टारिय।
नर अल आरिय। चन्दन हारिय। तें हित कारिय॥

(35)

चढ़ तरु लालन गेंद हित, दह गिर जाइय निरक्ष।
धसे गरज्जत दास कह, कालिन्दी यह रक्ष।।
धसे हरक्षत। जन हित रक्षत। नाग झटक्कहिं।
अंग खटक्कहि। जगे सटक्कहिं। लडे हटक्कहिं।
छंडत गरलहि। खंडहि चह तन। अति रिस अड़ अड़।
हन्नहिं झड़ झड़। गर्जहिं धड़ धड़। झट हर सिर चढ़॥

(36)

कीजिये लालन तें हितहि, दासहि सिख धर कान।
कान तिहारी चाह करि, रर तज यहि रसखान॥
खान अनंदहि। आनन्द चंदहि। चलन गयंदहि।
दहरिस अंगहि। हेत अनंगहि। कर हर संगहि।
गह निज रीतहि। छांडि अरीतहि। तें जस लीजिय।
जिय जिन खीजिय। धीर धरीजिय। हित गन कीजिय॥

(37)

कर कर सकल सखन ललन, अचक अचक दधि गहन।
धसत हरष तहँ तहँ सकल, जहँ घर अलिन लखयन॥
लखि तन अलि घर। धसत हरष भर। सहित सखन चर।
झट झट चखत। लखत जन हटत। डरत न घट घट।
(जद) घर घर चलत। धरन धर दलत। कढ़त हरखत।
छल कर लहत। रहस यह चहत। ललन सदन कर॥

(38)

थेई थेई नृत्यति लाड़िली, ललन दास कह संग।
निरख कांति तन की रतिहि, लाजत सहित अनंग॥
लजत अनंगहि। राजत संगहि। आनन्द हियधर।
खड़कत चंगहि। दरसत रंगहि। अलि गन जस रर।
जलज सिंगारहिं। हित कर धारहिं। अंग अंग केई केई।
चाहत तिय जेहि। लालन कर तेहि। नृत्यति थेई थेई॥

(39)

हँसि हँसि राधा संग हरि, लचक नचत नँदलाल।
निरखत सखिजन दास कहें, देत सकल कर ताल॥
तालहि देत। ललन कर हेत। सितार खनंकहि।
चंग न लहत। सरंगिन गह कर। झांझ झनंकहिं।
थेई थेई करत। अंस कर धरत। निरख थक्कहिं ससि।
लचक लचक कर। चरन अचक धर। नृत्यत हँसि हँसि॥

(40)

रज्जहिं लाड़ली लाल सँग, दास दृगन्न निहार।
सीतल अति जल जंत्र तें, चलत सरस गत धार॥
धारहि चलत। सरस गत ढलत। जलज तन निर्खहिं।
ललन हरषहिं। दृगन निरखहिं। हित गन रखहिं।
अतर ढरानहिं। तर तरखानहिं। अलि जन सज्जहिं।
जस गन गज्जहिं। सारद लज्जहिं। लख लख रज्जहिं॥

(41)

राजहिं स्यामा स्याम सँग, मंजुल महल गुलाब।
झलति बीजना दास अलि, गन मन अमित उछाव॥
अमित उछावहिं। अतर लगावहिं। प्यारी पिय अंग।
मिल सुर गावहिं। जुगल रिझावहिं। बहु विधि रँग रँग।
सुमन सिंगारन। सुभग सुढारन। रुख लै साजहिं।
अति छबि छाजहिं। रति पति लाजहिं। दोउ सँग राजहिं॥

(42)

गावहिं सारद जस सरस, मन बलबीर हमेस।
श्रीवृषभान कुमारि पद, बंदत सेस महेस॥
सेस महसाहिं। सहित गनेसहि। ध्यान धनेसहि।
सुभग सुरेषहि। दिपत दिनेसहि। रमत रमेसहि।
जतन जलेसहि। प्रेम प्रजेसहि। नारद धावहिं।
हित फल पावहिं। मन हरषावहिं। सारद गावहिं॥

(43)

कुंजन कुंजन लाड़िली, ललन संग बलबीर।
करहिं केलि रस रेलि बर, लख हरषत सखि भीर॥
भीर सिरावहिं। दृगन लगावहिं। हितन जनावहिं।
चमर ढुरावहिं। सिर पद नावहिं। मिल जस गावहिं।
मोर मरालहिं। बिहरत बालहिं। पुंजन पुंजन।
छबि गन दुंजन। अलि कुल गुंजन। कुंजन कुंजन॥

(44)

छैल छबीली राधिके, जै बलबीर अधार।
जै जै श्रीवन राजनी, जै जै तन सुकमार॥
तन सुकुमारिये। रूप उजारिये। मोहन प्यारिये।
सब सुख सारिये। परम उदारिये। कीर्ति दुलारिये।
नेह नवीनिये। पिय रँग भीनिये। गुन गरबीलिये।
रंग रंगीलिये। प्रेम पगीलिये। छैल छबीलिये॥

(45)

श्रीराधा राधा रटौं, राधा ही कौ ध्यान।
सदां लाल बलबीर उर, राधा नाम प्रधान॥
ध्यान धरहिं। जतन बहु करहिं। अबल मन कर कर।
सुख उर भरहिं। दृगन जल ढरहिं। चरन सिर धर धर।
यह हम साधहिं। नाम अराधनहिं। हर जग बाधे।
जन सुख साधे। सुजस अगाधे। जै श्रीराधे॥

## कवित्त

(46)

आज ब्रजराज जू कें लाल कौं जनम भयौ,
छयौ उर मोद नयौ अति सुखदाई हैं।
नाचें सुर किन्नरी खरी री उर चाह भरी,
गाजत मृदंग झांझ ढोलक सवाई हैं॥
'लाल बलबीर' कौं दरस पाय पाय गाय,
गीत सुखदाई द्रव्य अमित लुटाई हैं।
देखि चलि आली नैन कीजिये निहाली कैसी,
जसुमति जू के द्वार बाजत बधाई हैं॥

## दोहा

श्रीवृन्दावन छबि कछू, पावस गिरिवर जान।
पिय प्यारी कौ रहस वर, कीयौ सतक सुजान॥47॥

सम्बत ससि निधि वेद ग्रह, भादों अदहि जान।
गुरु बासर बलबीर कियौ, सत वनराज सुजान॥48॥



# षड्ऋतु-शतक

## दोहा

जै जै श्रीराधारमन, जै जै श्रीसुखरास।
जै जै रसिकन प्राण धन, मम उर करौ निवास ॥1 ॥

मेरे श्रीराधारमन, अति सरूप सुकमार।
कोटि कोटि रति काम छबि, इन पर डारूँ बार ॥2 ॥

श्रीगुरु चरन सरोज रज, मम उर करौ निवास।
कछु षड़ऋतु बरनन करौं, करौ बुद्धि परकास ॥3 ॥

## कवित्त

(4)

गावैं व्रज-नारी रग रागिनी अपारी बाजैं,
सारंगी मुरज धुन बीन एकतारी हैं।
साजैं सीस सारी जरी किरन किनारी वारी,
जगमग जोत होत हियौ हर्न हारी है॥
'लाल बलबीर' रस रास में सुजान संग,
नाचत अभंग प्रेम अंग अंग भारी है।
जैसी निसि प्यारी लगै चंद को उजारी तैसी,
राजत बिहारी संग राधा सुकुमारी है॥

(5)

भूले सुर चन्द चन्द थकित कुरंग भये,
मोद उर छये बीन बाजत रसाला हैं।
सुनि सुनि कानन में आई नारि कानन में,
बिर्धी प्रीति बान उर लागत उताला हैं॥
'लाल बलबीर' रचौ कौतुक विसाला भये,
एक एक गोपी संग एक नन्दलाला हैं।
नाचें ब्रज बाला राधा मोहन गुपाला मानों,
सामल घटा में नचें दामिन की माला हैं॥

(6)

लाड़ली लला की छबि देख री निराली आली,
सेत अंग वस्त्र हीर आभूषण धारें हैं।
बाँसुरी बजावैं हरषावैं मुसिकावैं गावैं,
सखी सुख पावैं हेर सीस चौंर ढारें हैं॥
'लाल बलबीर' कर करसों मिलावें उर,
मोद कौं बढ़ावैं छैल गल भुज डारें हैं।
सुखमा अमद सुखकन्द राधिका-गोविन्द,
दोऊ व्रजचन्द चन्द चान्दनी निहारें हैं॥

(7)

साजे अंग अंग चीर जगत जरी के नीके,
तैसी हीर हारन की झलक झलाकी है।
तैसी ही रँगीले छैल नेह रंग राचे तैसी,
चाँदनी चटकदार चन्द की कला की हैं॥

दास कहैं तैसी कट किंकिनी कनक राजैं,
तैसी ही चटक कर (माँहि) कर छला की हैं।
देख देख आली नैन करिये निहाली कैसी,
सरद निसा की झांकी लाड़ली लला की हैं॥

(8)

हीरन के सदन सजाये हित हीके जीके,
चाँदनी जरी की नीकी झालर झला की है।
कंचन सिंगासन हैं खासे सेत आसन हैं,
राजत तहाँ ही अली गन गान ताकी है॥
दास कहैं दासी खासी लै लै री अतर आसी,
अंगन लगाय चाय नेह रंग छाकी है।
देख देख आली नैन करिये निहाली कैसी,
सरद निसा की झाँकी कृष्ण राधिका की है॥

(9)

नील भये अचल सकल नद नद्दिन के,
थकि रहे पंछी तन सुधि बिसराई है।
सुरभी समूह सुनि मौनी औ मगन भये,
छ्ये उर मोद नये बैंन सुखदाई है॥
'लाल बलबीर' थकि रहे चन्द तारागन,
सीतल समीर आय अंग लिपटाई है।
सर्द रितु आई सुखदाई मन भाई माई,
आज ब्रज-चन्द मिल बाँसुरी बजाई है॥

(10)

हँस उर मोद छये खंजन प्रगट भये,
पंथिन ने पंथन की ताप बिसराई है।
पल्लव नवीन भये सुमन रंगीन भये,
मीन भये मुदित अमल जल पाई है॥
'लाल बलबीर' मनमोहन मगन भये,
जाय वनराज जू में बाँसुरी बजाई है।
विमल आकाश भये चन्द के प्रकास भये,
तिमिर के नास भये सर्द रितु आई है॥

(11)

मोरन कौ सोर गयौ घनन कौ घोर गयौ,
झिंगुर कौ जोर गयौ मोरन अनन्द है।
पपिहा की कूक गई चकोरन हूक गई,
दादुर की दूक गई जुगनू गन मन्द है॥
'लाल बलबीर' अबै पावस कौ जोर गयौ,
सरद कौ सोर छयौ बहत सुगन्द है।
तम कौ निवास गयौ बिज्जु कौ प्रकास गयौ,
कैसौ ये अमंद आज दमदमात चन्द है॥

(12)

फूले अरविंद वृन्द विमल तडागन में,
बागन चमेली खिली सुखमा अमंद है।
सीतल सुगन्द मन्द चलत समीर बीर,
प्यारे बलबीर संग राधा सुखकन्द है॥

बहारें छबीले लखें लहरें कलिन्दजा की,
देख छबि ताकी होत उरन अनन्द है।
जैसी ये दमंकै आल रेनु वनराज जू की,
तैसो ही चमंकै चारु सरद कौ चन्द है॥

(13)

अमल अकास देख ससिक प्रकास देख,
मिटी है चकोर पीर विरहा दरद की।
प्रफुलित कंजन पै गुंजत मधुप पुंज,
झरत पराग मानों बरषा जरद की॥
'लाल बलबीर' संग बिहरें बिहारी प्यारी,
रही ना निसानी दिस दसन गरद की।
वृन्दावन-चन्द जू की दैखो रेनु दमदमात,
चमचमात चारों ओर चाँदनी सरद की॥

## हिम शिशिर के कवित्त

(14)

बैठी केलि मन्दिर में सुन्दरि सिंगार साज,
आगम बिलोकि रही प्यारें नन्दलाला के।
द्वारन में परदे परे हैं मखतूलन के,
तूल भरें दमदमात लाल रंग गाला के॥
'लाल बलबीर' के रिझावन विचित्र चित्र,
रचे चित्रसाला में अनेक केल माला के।
पाला के कसाला के न समान बिसाला जहाँ,
राजत अनेक वस्त्र रेसमी दुसाला के॥

(15)

गरम गिलौरी हेन कुलनोंनी नेजन की,
विंजन अनेकन में गरम मसाला हैं।
सुन्दर मधुर मीठी मेवा धरी थारन में,
परा के सुधा लै भरे कंचन के प्याला हैं॥
'लाल बलबीर' जू कें पाला के कसाला कहाँ,
आय आय लागत नवीन उर बाला हैं।
जरें दीप माला सेज सुन्दर बिसाला जाके,
साल हैं दुसाला हैं बिसाला चित्रसाला हैं॥

(16)

बैठी चित्रसाला में बिलोकत पिया की बाट,
होयगौ कहारी खाय गरम मसाला ते।
सीतल समीर अंग तीर सी लगै है बीर,
मानों ये लिपट आई बरफ हिमाला ते॥
'लाल बलबीर' पीर कबलौं सहूँ मैं बीर,
कीजिये उपाय री बचाऔ काम ज्वाला ते।
भई मैं बिहाला बिन एरी नन्दलाला नहीं,
सिसिर कौ सीत जाय साल औ दुसाला ते॥

(17)

कौंने बिरमाये छैल अजहुँ न आये अबै,
मैन लेत दाये को बचाबै सीत काला ते।
दौर दौर आली झुक झाँकत झकोरन में,
लगन लगी है मोर मदन गुपाला ते॥

'लाल बलबीर' बिन जागी बिरहा की पीर,
जाइयै जरूर दौर लाइये उताला ते।
भई मैं बिहाला बिन एरी नन्दलाला नहिं,
सिसिर कौ सीत जाय साल औ दसाला ते॥

(18)

बैठे चित्रसाला में विसाला रूप बाला लाल,
एक बैस बाला उभै अंग उजिआला हैं।
दीनें गलबाहीं तन मन सों लगाई मानों,
सुन्दर अमोल कण्ठ मेली बनमाला हैं॥
'लाल बलबीर' ब्यापै हिम की न पीर बीर,
प्रेम रनधीर पियें रूप रस प्याला हैं।
देखि छबि आला बाला होत हैं निहाला संग,
राजैं प्रतिपाला राधे छैल नन्दलाला हैं॥

(19)

सोभित सखिन मध्य सुन्दर नवेली बाल,
ऐसी छबि देत हैं अनूप तिहिं काला में।
जैसें उडुगन मध्य राजत सुधाधर जू,
फैलि रही जगा जोति जोबन उजाला में॥
'लाल बलबीर' अंग भूषन नवीन राजैं,
जटित जवाहर अमोल हेम माला में।
सजी सेज आला आमैं मदन गुपाला आज,
ओढ़ि कें दुसाला बाला बैठी चित्रसाला में॥

(20)

राजैं आस पास दासी खासी कर बीन लै लै,
गावत सुहावनी अनूप तान ताला में।
चारों ओर द्वारन में परदे पसमीनन के,
राखे भर अतर अमोल दीपमाला में॥
'लाल बलबीर' प्याला भरे खीर पन्नन के,
पानन के बीर भर राखे हैं मसाला में।
सजी सेज आला आमैं मदन गुपाला आज,
ओढ़ि कें दुसाला बाला बैठी चित्रसाला में॥

(21)

चमचमात चाँदनी चंदोवा लगे चन्द्रमा से,
राजैं तसबीरें बिपरीत रत बाला की।
चौलंग दिवालगीर सोहत फनूस झाड़,
चहकैं चिराग छबि छाई दीपमाला की॥
'लाल बलबीर' सजी सुन्दर सजीली सेज,
गिलम गलीचे गादी सुरख दुसाला की।
सिसिर के पाला के कसाला काटबे के हेत,
रची है विसाला चित्रसाला नन्दलाला की॥

(22)

आज रंग महल बिराजैं सिरी स्यामा स्याम,
जगमग चारों ओर दीपक उजाले हैं।
बिबिध बनातन के पर्दे परे द्वारन में,
'लाल बलबीर' झब्बा झूमत निराले हैं॥

बिद्रुम पलंग तापै गादी मखमली जापै,
बसन रंगीले तर अतर सँमाले हैं।
कहा सीत पाले खाय गरम मसाले पियें,
प्रेम मधु प्याले ओढ़ैं चौहरे दुसाले हैं॥

(23)

बिहरत रहै बनराज जू में आठों जाम,
और सों न काम गान गाबैं नन्दलाला के।
फाटी सी पिछौरिया में राजत हजार चीर,
दीपत अनूप रूप छीने मृगछाला के॥
'लाल बलबीर' स्यामा स्याम जू के रंग भरे,
तिन कौं न व्यापत कसाला भूल पाला के।
ओढ़ ओढ़ साधु प्रेम कुटी में निवास करैं,
गूदरी गुथेंमा मान मारत दुसाला के॥

## बसन्त-वर्णन

(24)

वनन पै बागन पै बागन की बीथिन पै,
वृक्षन पै बेलिन पै सोभा सरसंत है।
व्रज की नवेलिन पै बेनिन पै वस्त्रन पै,
बेसर बुलाखन पै ब्यूह दरसंत है॥
'लाल बलबीर' जू की बाँसुरी पै बैनन पै,
बिहँसि बिलोकन पै हेर हरषंत है।
बर्नत बनंत ना बहार है अनंत देखौ,
वृन्दावन-चन्द पै बसंत बरषंत है॥

(25)

केरन पै क्यारिन पै किंसुक कसुंभन पै,
कूल कचनारन पै किसलै सजंत है।
कुन्द पै कदम्ब पै कपोत कुल कारन पै,
कोकिल कुकारन पै कैविध लसंत है॥
'लाल बलबीर' कंज पुंजन पै कुञ्जन पै,
कामिन के कंठन पै हेर हरषंत है।
कुंडल कपोलन पै केसर पै देख आज,
कुमर कन्हैया पै बसंत बरसंत है॥

(26)

फूले हैं पलास आस पास बन बागन में,
मधुर मधुर टेर कोकिला लगाई है।
गुंजत मधुर पुंज कुंज कुंजन में,
सीतल सुगन्ध मन्द पवन सुहाई है॥
'लाल बलबीर' बस बालम विदेस रहे,
को करै सहाय पीर मैन को सवाई है।
पथिक प्रबीन प्यारे एतनी कृपा करिकै,
कहियो जाय कंत सों बसंत ऋतु आई है॥

(27)

बेल बन बागन में सुमन बसंती खिले,
पवन बसन्ती ये त्रिबिध सुखदाई है।
बसन बसन्ती धार धार अंग अंगन में,
केसर बसन्ती खौर भालन सजाई है॥

'लाल बलबीर' प्यारी प्रीतम के संग सबैं,
गावत बसन्ती राग मोद सरसाई है।
देख छबि जाई भई व्रज में अवाई बड़े,
भागन ते प्यारी ये बसन्त रितु आई है॥

(28)

गुंजत मधुप पुंज पुंज कुंज कुंजन में,
कोकिला औ कीर तान गावत हसंत की।
फूले हैं गुलाब मौर फूले महँकारन के,
सरसों सरस फल फूलन लसंत की॥
'लाल बलबीर' फूल फूले हैं पलासन के,
फूल मई भूमि पौन त्रिविध गसंत की।
देखौ चलि प्यारी छबि देखबेई लायक है,
वृन्दावन-चन्द में ब्रहार है बसन्त की॥

(29)

कुन्दकली केतकी कसूँम कचनारन की,
कदली कदम्बन की कांति सरसाई री।
अंबुज अनार बौर लीजै लख आमन के,
जामन के पातन में छाई अरुनाई री॥
सुन्दर सरस सुभ सरसों सुहायमान,
पुष्प झर झूमि भूमि मानों पियराई री।
'लाल बलबीर' बीर देखिये बहार बेस,
आज रितुराज फूल बाटिका सजाई री॥

(30)

सीतल पवन मन्द चलत सुगन्ध लीयें,
फूली द्रुम डार बेल सोभा है अनंत की।
कोकिला कहूँके कूकैं करत किलोल कीर,
गुंजत मधुप धुनि गावै हरषंत की॥
'लाल बलबीर' फूले सुमन सुबास भरे,
आई हरषंत रितु सबै जीव जन्त की।
मोहन सुजान गुन खान प्रान प्यारे ये जू,
कैसी मन भावन बहार ये बसन्त की॥

(31)

झूमि रहे द्रुम डारन में बहु,
बौर प्रसून खिले सुखदाई।
गुंजत भौंर मनोज भरे मनों,
कोकिल प्रेम की तान सुनाई॥
सीतल मन्द सुगन्ध लिये 'बलबीर',
समीर बहै सुखदाई।
आय सुजान निहारिये जू,
व्रज-माँहि बहार बसन्त की आई॥

(32)

गेंदा पै गुलाब पै गुठेर गुल लालन पै,
गोपन पै ग्वालन पै गुलाल दरस्यौ परै।
पावन पै पत्रन पै पलासन पै पत्रित पै,
पुष्पन के पुंज पै पराग परस्यौ परै॥

'लाल बलबीर' सज्यौ सीतल समीरन पै,
सेवन पै सौंफ पै सरस सरस्यौ परै।
बाँसुरी पै बन पै बिहारी पै बिलोक बीर,
वृन्दावन-चन्द पै बसन्त बरस्यौ परै॥

(33)

सरसों पै सर पै सरोवर पै सेवती पै,
सन्दल सुगन्ध पै समूह सरस्यौ परै।
कालिन्दी के कूलन पै केंवरा कनेरन पै,
कोकिल के कण्ठ पै कलोल करस्यौ परै॥
'लाल बलबीर' लौनी लतन लबंगन पै,
लफ लफ लूमि लोट लरस्यौ परै।
ब्रज की बधून पै बिहारी पै बिलोक बीर,
बृन्दाबन-चन्द पै बसन्त बरस्यौ परै॥



# होरी

(1)

चित्रा रंग देवी जू विसाखा ललितादि आली,
लीनी सब टेर वृषभानु की किसोरी जू।
फागुन सुहागन ये भागन तें आयौ सखी,
केसर घुरावौ भरियौ गुलाल झोरी जू॥
'लाल बलबीर' आये नन्द के रंगीले छैल,
लीने ग्वाल-बाल ठाड़े सांकरी की खोरी जू।
एती सुनि गोरी सबै धाई चहुँ ओरी कहैं,
होरी लाल होरी! आज होरी लाल होरी जू॥

(2)

मोर के पखौआ सीस गुंजन की माला गरैं,
मुख में तमोल बैन बोलैं बरजोरी के।
गावत धमार चलैं पिचकी अपार परैं,
नीरन फुहार अंग भीजत किसोरी के॥
'लाल बलबीर' लाल छाँड़त गुलाल लाल,
अवनि अकास द्रुम लाल चहुँ ओरी के।
धाई सहजोरी गोरी लोक लाज तोरी कहैं,
दौरि घेर लेऔ री (ये) खिलारी आये होरी के॥

(3)

बाजत मृदंग ढोल मानों घन घोर आये,
उड़त अबीर चहुँ ओर धुंध छाई है।
कुंकुंम गुलाली चलैं चामीकर वर मानों,
जुगनू जमातें की जमातें दरसाई है॥
लाल बलबीर नारी सारी ओढ़े जरी वारी,
झमकैं अमन्द चपलासी चमकाई है।
पिचकी अपार छूटैं नीर की फुहार धार,
मानों बरसाने बरसा ने झर लाई है॥

(4)

इतैं ठाड़े नन्दलाल लीने गोप ग्वाल बाल,
उतै लै सखीन वृषभानु की किसोरी है।
मन्द मुसिक्यावै राग नये नये गावैं बहु,
बाजन बजावैं लै उड़ावैं रंग झोरी है॥
'लाल बलबीर' बाढ़ी मदन उमंग अंग,
धाई कहैं होरी लोक हू की आज तोरी है।
करैं बरजोरी मुख मींजत हैं रोरी धूम,
माची चहुँ ओरी बरसाने आज होरी है॥

(5)

मोहन छबीले कौं पकरि लीनों होरी माहिं,
मोर को पखौआ छीन सारी सीस धारी है।
खञ्जन से नैनन में अंजन अंजाय दीनों,
दीनों मुख पान भाल बेंदी दई कारी है॥
'लाल बलबीर' प्यारी प्रीतम मनाय दीनों,
रंग की कमोरी सीस ऊपर सों ढारी है।

हँसैं बूझैं नारी बोली भान की दुलारी प्यारी,
आई मथुरा तें एक गोप की कुमारी है॥

(6)

बाँध गोल गोरी मनमोहन गहोरी कोऊ,
मींजे मुख रोरी आज होरी लाल होरी है।
छीन लई लकुट मुकट बेनु पीत पट,
चूंदरी उढ़ाय हसैं बधूंटी हँसोरी है॥
'लाल बलबीर' लोक पालन कौ पाल लाल,
देखौ व्रज बालन की बंध्यौ प्रेम डोरी है।
बूझैं चित चोरी नई कौन ये कहोरी हँसि,
कहत किसोरी भोरी नन्द जू की छोरी है॥

(7)

दौर दौर आवौ छैल ग्वाल गोल संग लावौ,
ढप ही बजावो गावो राग लाज बोरी के।
कहाँ बल भैया मैया संग के सहैया तेरे,
कौन है छुड़ैया तो खिलैया बड़े होरी के॥
लाल बलबीर गरुताई कौं बिसार दीजै,
दीनताई लीजै जस गावौ मन भोरी के।
रीझैं जब गोरी सुनि टेर तुम ओरी तबै,
चरन छुवाय छोड़ैं कुमरि किसोरी के॥

(8)

आये फाग खेलन गुपाल बरसाने माँहि,
धाय चलीं गोरी गृह काजन तें छूट छूट।

कनक कमोरी जोरी ढारत बसंती नीर,
छाँड़त अबीर मुठि झोरिन ते लूट लूट॥
'लाल बलबीर' लाल करत अनोखे ख्याल,
मसके उरोज आँगी बन्द जाँय टूट टूट।
लूटि जाय छलसों छबीले रस बार बार,
कुंकुंम चलावै गिरैं लगैं तर फूट फूट॥

(9)

कीरतकुमारी इत रसिक रंगीले छैल,
माची धूम धाम पिचकीन के चलाने में।
उड़त गुलाल लाल भये हैं लड़ैती लाल,
परत फुहार धार केसरिया बाने में॥
'लाल बलबीर' अंग चुअत बसन्ती नीर,
होय मन मुदित धमार राग गाने में।
रंग के लगाने में अबीर के उड़ाने में सु,
आज व्रजराज फाग खेलें बरसाने में॥

(10)

आये फाग खेलन गोपाल वृषभानु पुरा,
गावैं ख्याल दै दै ताल उर हरषत हैं।
इततें किसोरी गोरी सखिन के यूथ मध्य,
लेकर अबीर पी कपोल परसत हैं॥
कंचन पिचक तक मारत बिहारी नीर,
'लाल बलबीर' अंग प्रीत दरसत हैं।
छज्जन तें छात तें झरोखन तें मोखन तें,
लाल नन्दलाल पै गुलाल बरषत हैं॥

# ग्रीष्म-वर्णन

(1)

मंजुल महल मालती के नीके साज राखे,
महकें उड़त उर बाढ़े मैन मद्दी हैं।
छूटत फुहारें नीर सीतल गुलाब बारे,
चंदन चहल चारु चौक में चौहद्दी हैं॥
'लाल बलबीर' तहाँ राजत बिहारी प्यारी,
सुन्दर सुहावन गुलाबन की मद्दी हैं।
राजैं रूप रासी दासी करत खवासी तहाँ,
ग्रीषम कौ गरम गरूर किये रद्दी हैं॥

(2)

चंदन लगाय अङ्ग लियें प्रान प्यारी संग,
गति है निराली मुख बाँसुरी धरन की।
चन्दनी ही बागे साज सर्व लोक सिर ताज,
सुखमा निहार गौर सामरे बरन की॥
सुमन सिंगार कीने प्यारी पिय रंग भीने,
'लाल बलबीर' छबि तापन हरन की।
लीजै ललि झाँकि बाँकी बाँके की बाँकी अदां की,
जलि बलि जाऊँ प्यारी बिहारी चरन की॥

(3)

चन्दन सिंगासन पै फूलन के आसन पै;
रसिक बिहारी प्यारी तापैं सुख पावहीं।

कोऊ कर छत्र धारे कोऊ सखी चौर ढारे,
'लाल बलबीर' दासी बीजना झलावहीं॥
नाना गति भेदन सों नाचत बजावें बीन,
अति रसभीनी प्यारी तानन सुनावहीं।
लखि सुख पावहीं बुड़ावैं रस सागर में,
छिन छिन नये नये चोजन लड़ावहीं॥

(4)

द्वार दर परदे पराये मालती के नीके,
छूटत फुहारे भारे री गुलाब नीर के।
चन्दन चहल मची चौक में चौहद्दी चारू,
चलत झकोरें जोरें सीतल समीर के॥
'लाल बलबीर' दासी लै लै जुही चौंर ढारैं,
रूप कौं निहारैं छैल प्रेम रनधीर के।
जीवन अधार सुकमार सार आज दोऊ,
राजत बिहारी प्यारी मन्दिर उसीर के॥

(5)

बैठे रंग महल रँगीले गरबीले छैल,
छबि सों छबीले प्रेम रंग रस भीने हैं।
कीने हैं सिंगार अङ्ग अङ्गन सजीले चट-कीले
मटकीले पट निपट नवीने हैं॥
'लाल बलबीर' दासी निरख सिरावैं नैन,
मन मद भरी सैन करत रँगीने हैं।
मालन मवीने लाइ सुमन सजीले प्यारी,
पग धर दीने लाल नासा लाय लीने हैं॥

(6)

चन्दन चहल चारु चारों ओर चौकन में,
चन्दनी चुनेमा चीर चोंपन सों धारें हैं।
चम्पक की चाँदनी में चामीकर चमचमात,
चन्दमुखी चंचल सैचरी चौंर ढारें हैं॥
चरचित चोवा बलबीर चित चाहन सों,
चाहन सों चत्रभुज चंगेरें निहारें हैं।
चाँदनी सी चादर पै चौंसर चमेलिन के,
चाल चित चोजन सौं चौतरफी पारें हैं॥

(7)

चलत फुहारे नीर सीतल सुगन्ध बारे,
झरन अपारे हेर मेघ झर लाजे हैं।
अतर लगाय चाय हिये हरषाय दोऊ,
अङ्ग अङ्ग सुमन सिंगार सुभ साजे हैं॥
'लाल बलबीर' दासी लै लै कैं नवीन बीन,
गावत प्रबीन रस रंग राग ताजे हैं।
देख सुर साज रीझे रसिक रसीले आज,
मालती महल राधारमन बिराजे हैं॥

(8)

कोऊ जलदानी सुखसानी लै अतरदानी,
कोऊ लै गुलाब नीर अङ्क चरचा में हैं।
कोऊ चौंर ढारें फूल रूप कों निहारें आली,
कोऊ सुख सानी लै लै बीजना झुलामें हैं॥

'लाल बलबीर' दासी सुमन नवीन बीन,
चुन चुन सुभग सिंगारन सजामें हैं।
जो जो मन भावै प्रान प्यारी श्रीबिहारी जू के,
सो सो वनराज श्रीनिकुंज में लड़ामें हैं॥

(9)

चारों ओर द्वार परे परदे उसीरन के,
छूटत फुहारे नीर सीरे चित चाव के।
सखी चौंर ढारैं फूल अंगन अतर बोरैं,
सौरभ झकोरें साज मदन उछाव के॥
'लाल बलबीर' दासी खासी कर बीन लै लै,
गावैं राग रागिनी रसीले हाव भाव के।
दाव कें विलोक की निकाई सुखदाई आज,
राजत बिहारी प्यारी मन्दिर गुलाब के॥

(10)

फटिक सरोवर में अमल सुजल भल,
नाभी के प्रमान तहाँ कंटक न काई है।
तामें जल केलि करैं रसिक बिहारी प्यारी,
चूबक लगाय पिय पग सिरनाई है॥
लता झुकि रहीं फल पल्लव-सों ताके बीच,
बीच बीच-बीच जल जंत्र बारि छाई हैं।
परत फुहार भारी भीजें पिय प्रान प्यारी,
'लाल बलबीर' दासी हरे हरषाई हैं॥

# पावस वर्णन

(1)

ललित लवंगन की लहलहीं लोनी लता,
लफ लफ लूम लूम भूम चूम जावै री।
सहित सुगन्धन सों सीतल समीर धावै,
चारों ओर जोर सोर मुरवा मचावै री॥
'लाल बलबीर' बिन भूषन बसन भोग,
पय पान पानी उर पीर कौं बढ़ावै री।
कछुना सुहावें मोहि मदन जरावें आली,
देखि घनस्याम घनस्याम याद आवैं री॥

(2)

झूम झूम आवैं घूम घूम जोर सोरन सों,
झप झप लूम लूम भूमि चूमि जावैं री।
तड़ड़ तड़ित तेज तड़कें गगन बीच,
सरर सरर ये समीर बीर धावैं री॥
अरर अरर नीर ढरकें अपार धार,
'लाल बलबीर' बिन ब्रज कौं डुबावैं री।
कछू ना सुहावैं उर मदन जरावै आली,
देखि घनस्याम घनस्याम याद आवैं री॥

(3)

केकी कूकि कूकि कें करेजा करैं टूक टूक,
ढूक ढूक दादुर दुखारे प्रान खावैं री।

सूक सूक पिय बिन पिंजर भये सरीर,
पीय पीय बैन पापी पपिया सुनावै री॥
'लाल बलबीर' बिन ढरै नैन नीर बीर,
बिरहा मरोरन तें कौन ले बचावै री।
कछू ना सुहावैं मोहि मदन जरावै आली,
देखि घनस्याम घनस्याम याद आवै री॥

(4)

कारी कारी रैन ये डरारी झुकि आई प्यारी,
मारन कटारी मदनाग में भरी भरी।
बोलत पपैया मोर सोर करैं चारों ओर,
बरषें बिलन्द बुन्द बादर घरी घरी॥
'लाल बलबीर' मनमोहन न आये बीर,
हेरत दिसान कौं बिसूरत खरी खरी।
हाय बिन कंत को सहाय करै मेरी अब,
सूनी देख सेज कों पुकारती हरी हरी॥

(5)

कारे कारे भारे घन छाये चहुँ ओर आली,
प्यारे बनमाली बिन लागत डरावने।
फूले हैं कदंब अंब जंबु झुकि झोटा लेत,
गुंजत मधुप ये मदन उपजावने॥
'लाल बलबीर' ये पपैया रटैं पीऊ पीऊ,
काढ़े लेत जीव बैन बोलै तन तावने।
पवन झकोरै घन बाँध बाँध जोरैं घोरैं,
बरष गये री एक आये बरषावने॥

(6)

पावस में छाये परदेस री प्रवीन नाथ,
चमचमात चंचला चहूँधाँ आय तरजैं।
तैसी अंधियारी रैन लागत डरारी मोहि,
प्यारे बनवारी बिन हिये होत दरजैं॥
'लाल बलबीर' बिन कैसे मैं धरूँ री धीर,
व्यापी मैन पीर करूँ कासों जाय अरजैं।
हरजैं न जानैं कछु बरजै न कोऊ जिनै,
देख बजमारे घन बेर बेर गरजैं॥

(7)

बालम बिदेस बीर बरषा बरावत हैं,
बोलत बिहंग बन बेलिन पै हरषैं।
बान पंच आन आन बेधैं हैं बदन बीच,
बारी बैस बावरी बचावै कौन डर सैं॥
'लाल बलबीर' बैठी बारहदरी के बीच,
बाट कौं बिलोकैं ना बिलोके नैन तरसैं।
बिरहा बढ़ावन कौं बादर बुरैया बीर,
बाद बदि बदि कें बिलन्द बुन्द बरसैं॥

(8)

पावस में पिले पंचबान जू कें पाँचो बान,
प्रानन निकारें लेत पापी पुंज हरसैं।
पीऊ पीऊ करिकें पपैयरा पुकार करे,
पीउ परदेस री पखेरू प्रान तरसैं॥

'लाल बलबीर' पूर पोहमी पतौषन सों,
पथिक प्रवीन कौन पूछैं पंथ दरसैं।
पीकर पताल पानी पानकी पजारे घन,
पल पल प्रबल प्रचण्ड धार बरषैं॥

(9)

कूकत हैं मोर जोर झींगुर मचावैं सोर,
पवन झकोर अङ्ग लागें काम सर सें।
भूमि भई हरित सरित जल पूर भई,
पातकी पपीहा पीऊ पीऊ धुनि करसें॥
'लाल बलबीर' घर मोहन न आये बीर,
कारी बजमारी घटा काल सम दरसें।
बाँध बाँध जोरें घन घोरें चहुँ ओरें आज,
धारा बाँध धर पै अखण्ड धार बरषें॥

(10)

सावन के दिवस डरावने लगन लागे,
प्यारे बनमाली बिन आली जीउ तरसे।
पातकी पपैया पीऊ पीऊ टेर करें,
कामी काम आन जान बेधत हैं सर से॥
'लाल बलबीर' केकी कूकत गुमान भरे,
चपला चमकि के डरावत हैं हरसे।
बाँध बाँध जोरें घन घोरें चहुँ ओर आज,
धारा बाँध धर पै अखण्ड धार बरषे॥

# हिंडोरा

(1)

चलो री सहेली मिल आज सबै वृन्दावन,
बाढ़त उमंग सुन मोरन के सोरे में।
सीतल समीर मन्द चलत सुगन्ध लिये,
छोटी छोटी बुंदिया झरत चहुँ ओरे में॥
'लाल बलबीर' सजौ चीर नवरंग अङ्ग,
कंचुकी कसुँभी रंग धारौ कुच कोरे में।
कीरति किसोरी वृषभान की दुलारी राधे,
आज बनवारी संग झूलत हिंडोरे में॥

(2)

ललित लंवग की निकुंज में हिंडोर चढ़ि,
राजत जुगल अङ्ग अङ्गन हरषियाँ।
सारी फुलनारी सीस राजत पियारी जू के,
प्यारे सिर राजत अनूप मोर पखियाँ॥
'लाल बलबीर' दोऊ दोऊ को निहारैं डीठ,
कितहूँ न टारैं मधुभरी चारु अखियाँ।
कीरति किसोरी वृषभान की दुलारी राधे,
झूलत बनवारी संग देत झोटा सखियाँ॥

(3)

कारी कारी घटा भारी उमड़ घुमड़ आई,
छोटी छोटी बूँदन की परत फुआर हैं।

बोलत चकोर मोर सोर करैं चारों ओर,
सीतल सुगन्ध लियें चलत बयार हैं॥
'लाल बलबीर' लता भूमि लगीं झूम झूम,
ललित लवंगन की फूल रहीं डार हैं।
देखौ कुंज कुंजन में झूलत हैं स्यामा स्याम,
वृन्दावन-चन्द में हिंडोरा की बहार हैं॥

(4)

आली आउ आउ नैक निरखौ उताली,
वनराज की बहाली टुक हिये माँहि धारौ री।
झूमत कदंब अंबु जंबु सुखमा सों निंबु,
तिन पै हजार सुरपुर बाग बारौ री॥
फूले अरविन्द कुन्द सेवती गुलाब पुंज,
दिव्य मकरन्द हेर पारजात टारौ री।
झूलत हिंडोरे तहाँ राधिका-रमन लाल,
'लाल बलबीर' प्यारी छबि कौं निहारौ री॥

(5)

नवलकिसोर नव जोबन में जोर दोऊ,
नवल सिंगार साजे स्याम तन गोरे में।
नवल उमंग नव प्रेम में अभंग खेलैं,
नव नव ख्याल नव मैन मद जोरे में॥
नवल समाज सुख साज नवकाज नव,
'लाल बलबीर' दासी रहत निहोरे में।
नवल ही राग गामें लाल लाड़िली झुलावैं,
नवल निकुंज माँहिं नवल हिंडोरे में॥

(6)

रतन जटित भूमि साखा द्रुम रहीं झूमि,
लेत मग चूमि चूमि झरनि प्रसून की।
नाचत मराल बाल बरही विसाल चाल,
पपिया रसाल तान गावैं सुर दून की॥
'लाल बलबीर' बहैं सीतल समीर धीर,
छूम छूम झरैं नीर बुंदियाँ सुहून की।
राधा बनमाली आज नवल हिंडोरे आली,
झूलत उताली छवि देखो री दुहूँन की॥

(7)

दोऊ गरबीले छैल छबि में छबीले प्रेम,
रंगन रंगीले दोऊ स्याम तन गोरे में।
दोऊ सुर गावैं दोऊ दोऊ कौं रिझावैं,
सुन दोऊ हरषावैं मन बँधे प्रेम डोरे में॥
दोऊ हैं प्रवीन अङ्ग अङ्गन नवीन दोऊ,
दोऊ रस लीन भये रूप के झकोरे में।
'लाल बलबीर' दासी करत खवासी आज,
झूलत निकुंज राधारमन हिंडोरे में॥

(8)

सावन सुहावन की आई हरिआली तीज,
गावत मलार ब्रज बाल तन गोरे की।
ओढ़ें सीस सारी स्यामा सोहनी सुनैरी कारी,
चंपई नरंगी औ कसुंभी रंग बोरे की॥

'लाल बलबीर' प्रान प्रीतम के अङ्ग सङ्ग,
झूलत उमंग भरी मदन मरोरे की।
जेहर झनक पै खनंक कटि किंकनी की,
बेसर चमंक पै दमंक है हिंडोरे की॥

(9)

आये घन कारे मोर सोर करैं भारे नव,
झिल्ली झनकारें औ उचारें तान जोरे की।
प्रीतम की प्यारी अङ्ग अङ्ग सुकमारी,
मुख चन्द उजियारी मुसिक्यान चित चोरे की॥
'लाल बलबीर' झूलैं मदन उमंग भरी,
उड़त दुकूल पौन चलत झकोरे की।
जेहर झनक औ खनक कटि किंकनी की,
बेसर चमंक पै दमंक है हिंडोरे की॥

(10)

सारी सीस सामरी सँजोई सजी जारीदार,
जरी की किनारी कोर बादले सुमारिये।
जेवर जवाहर के जगमगात अङ्गन में,
झलझलात कंचुकी कसुंभी उर धारिये॥
'लाल बलबीर' छवि निरखि सिराने नैन,
रमा उमा मोहनी रती हू वार डारिये।
कौन लख नारी सुध देह ना बिसारी प्यारी,
सामरी सखी के चल झूलन निहारिये॥

# ऋतुवर्णन प्रकीर्ण

(1)

झूलत हिंडोरे प्रान प्रीतम के अङ्ग सङ्ग,
मदन उमंग की तरंग में भरी भरी।
'लाल बलबीर' दोऊ गावत मलारैं चलैं,
सीतल बयारैं बेली झूमत हरी हरी॥
उर चमकाय पाँय भूमि ते लगाय धाय,
लेत हैं सिहाय झोटा दीरघ घरी घरी,
पट फहरात जात छिन आवै छिन जात,
मानौ आसमान तें विमान लै परी परी॥

(2)

झूलत हिंडोरना में दोऊ मदमाते छैल,
हिये हरसावैं देख रूप की मेहरिया।
हरष हरष हँस हँस झूंम झोटा देत,
उमड़ उमड़ चलीं रूप की नहरिया॥
चलत समीर मन्द सीतल सुगंध लियें,
'लाल बलबीर' धन गरजैं गहरिया।
फहर फहर करैं प्रीतम कौ पीत पट,
लहर लहर करैं प्यारी की लहरिया॥

(3)

गरज गरज घन घिर-घिर घूम आये,
छोटी छोटी बूँदन की परत फुहरिया।

ताल नदी नारन के नीर उमगान लागे,
मन्द मन्द चालन सों चलत नहरिया॥
नवल निकुंजन में झूलत लड़ैती लाल,
'लाल बलबीर' पौन चलत सहरिया।
फहर फहर करै प्रीतम कौ पीत पट,
लहर लहर करै राधे कौ लहरिया॥

(4)

आये हैं गरज घन घोर चहुँ ओर बहै,
सीतल समीर बारि बूँद छबि छाती है।
रची हैं हिंडोरा मारतंड तनया के तीर,
फूली द्रुम डारन पै कोकिला कुकाती हैं॥
'लाल बलबीर' दोऊ झूलत हैं स्यामा स्याम,
मोर करैं सोर नारि मिल मल्हार गाती हैं।
पीत पट प्यारे कौ परौ है आन प्यारो पर,
चूनर लड़ैती की गुपाल पै चुचाती है॥

(5)

आली बाग देखबे गई ही हुती वृन्दावन,
तहाँ झूला डार राख्यौ सामरे गुपाल ने।
कह्यौ मुसिक्याय गज गौनी ये सलोनी इतै,
आऔ झूलि जाऔ त्याग जगत जंजाल ने॥
'लाल बलबीर' जौलौं झूलन न पाई बीर,
तौलौं आय धाय कोप कीनों सुरपाल ने।
उमड़ घुमड़ घन बरषन लागे नीर,
कामरी उढ़ाय के बचाई नन्दलाल ने॥

(6)

प्रीतम के संग में उमंग भरी झूलें बाल,
धुरवा निहार एक बैन कह्यौ सुन्दरी।
येहो मनभामन ये सावन सुहावन की,
कारी कारी भारी घिर आई घटा धुंधरी॥
आज ही निकार माय दीनी मोहि ओढ़न कौं,
'लाल बलबीर' ना मचैयौ कहीं दुंदरी।
ये हो मान सैयां तुम लेहुँ मैं बलैयाँ,
यह कामरी उढ़ा कें बचाय लीजै चूँदरी॥

(7)

संग सखियन के किसोरी गई बागन में,
अंग अंग आभूषण राजै कर मूँदरी।
ताही समै झूला डार झूलत मयंकमुखी,
गावत मलार सों मची है बहु दुंदरी॥
धुरवा धुकार झर लायौ सह जोरन तें,
'लाल बलबीर' घिर आई घटा धुंधरी।
स्याम प्रीति सों सनी भई है सराबोर सारी,
प्यारी की सुरंग रंग भीजि गई चूनरी॥

(8)

मुदित मुदित झूला डारत कदम तर,
झूलत जुगल तहाँ कूकि रहे मुरखा।
गावत मलार गोपी जन उर हरषत,
कोयल भरत मानो बागन में सुरवा॥

फहर फहर पौन चलत चहूँये दिस,
झूमि झूमि झुकि बरषन लागे धुरवा।
'लाल बलबीर' पिय पट फहरान लागो,
लहर लहर करै प्यारी कौ चुँदरवा॥

(9)

ल्हैरदार भूमि खग बोलत लहरदार,
ल्हैरदार लता पता पुष्पन सों छाई है।
ल्हैरदार दासी सुख रासी हैं खवासी माहिं,
ल्हैरदार द्रुमन पैं दांमरी गिराई है॥
ल्हैरदार आभूषन साजे अङ्ग अङ्गन में,
ल्हैरदार झोटैं लैत छैल सुखदाई है।
ल्हैरदार ल्हैलहात 'लाल बलबीर' जू की,
पीत पट लाड़िली की सारी लहराई है॥

(10)

आज सखी माधुरी लतान में नवेली बाल,
पचरँग डारी डार मखतूल दामरी।
कुन्दनपटी में नवरत्न की कटीली कांति,
देख दृग भ्रांति छबि लेत मनु भामरी॥
झीने सुर गावैं कर बीन लै बजावैं मन,
जुगल रिझावैं हरषावैं ब्रजवामरी।
'लाल बलबीर' दासी देख चल सुखरासी,
झूलत छबीली छबि स्याम संग सामरी॥

(11)

कारे कारे धुंधरे उतंग अङ्ग अङ्ग धारे,
बकुल कतारें हैं न दीरघ दतारे हैं।
चपला चमंक हैं न झूल झमकंत आवैं,
बरषैं न मेघ मधु झरत अपारे हैं॥
'लाल बलबीर' बीर झूमत झुकत आवैं,
मानिनी के मानगढ़ तोरबे सिधारे हैं।
हैं न घन कारे छूटे जोम भरे जंगी ये तौ,
मदन महीप के मतंग मतवारे हैं॥

(12)

आये घूम घूम झूम झूम चहुँ ओरन सों,
कारे कारे धूंधरे पुष्ट अङ्ग भारे हैं।
लाल पीत लीले कुंभ चित्रित विचित्र रंग,
झमझमात बिज्जु मनौ झूल वस्त्र धारे हैं॥
'लाल बलबीर' मानिनी के मान तोरिबे कौं,
देखरी हजारन किरोनन हुंकारे हैं।
हैं न धनकारे छूटे जोम भरे जंगी ये तौ,
मदन महीप के मतंग मतवारे हैं॥

(13)

उमड़ घुमड़ घन घिर घिर आये धूम,
झूमत झुकत मानों लंक सी लकत है।
माधुरे सुरन कर झींगुर झिंगारत हैं,
मन्द मन्द मानों सुर मेखला बजत हैं॥

'लाल बलबीर' बिज्जु दमकैं दसन मानों,
जुगनूं चमंक स्रुति कुण्डल लसत हैं।
चटकैं अटान पै घटान कों निहारि प्यारी,
आज नभ मांहिं ये गनेस से नचत हैं॥

(14)

बोलें न मयूरन की भीरन बिडार देरी,
टार देरी दादुर धुकार तन छोलैना।
छोलैना तन कौं यह धुरवा धुकारन सों,
दामिनी दमंकै चहुँ ओर आय डोलैना॥
डोलैना जुगनून जमातें ये जरावैं मोहि,
'लाल बलबीर' पौन आय भौन खोलैना।
खोलैना अनंग खातो जौन आवै मेरो पीउ,
पातकी पपीया पीउ पीउ कह बोलैना॥

(15)

प्यारी आई देख ये बहार नई पावस की,
आज घन रंग ये अनेक रंग छायौ है।
सोसनी सुनेरी सुभ्र संदली सबज काई,
सूहे सरबती स्याह सबज सहायौ है॥
'लाल बलबीर' सपतालु सुरमई सेत,
सबजी सुजान ये सजीले साज लायौ है।
सुन्दर सयानी मन मानी सीस सारी साज,
सामन में इन्द्र रँगरेज बनि आयौ है॥

(16)

लीले असमानी खाखी बैंगनी मकोईया हैं,
बैंजनी जुमर्दी आँबी जांमनी सुहायौ है।
कासनी कपासी खस़खासी नाफरी गुलाबी,
मूँगिया कपूरी तोती धानी साज लायौ है॥
चन्दनी बदामी औ नरंगी नीबुआ हैं बेस,
चंपी फालसी कुँ देखि जोजई सुहायौ है।
'लाल बलबीर' राधे अचरज नयौ घन,
सामन में इन्द्र रँगरेज बनि आयौ है॥

(17)

गरज गरज घन घिर घिर आये देख,
धाये दिस दिसन ते अधिक डरारे री।
धारा धर धार नीर ढरकें गगन तेज,
तड़कत आज हियें धीरज न धारे री॥
चात्रक चिकार करैं अलिगन गान करैं,
नीलकण्ठ तान कहि कहि जिय जारे री।
दास कहै छाये कंथ आये नहिं आज तक,
तक तक राग दृग हेर हेर हारे री॥

(18)

आये हैं न कंत आली छाये किन देस जाय,
चात्रक चिकारन नें जीय तरसाये हैं।
साये हैं सखी री सज लागी संग साजन के,
हरष हरष हिये ते लगाये हैं॥

आये हेरी गीत नीलकंठ अलि के कईन,
आयकें अनंग तन तीर लै चलाये हैं।
लाये हैं कटक साज इन्द्र घन दास कहैं,
गरज चलेरी एक गरजत आये हैं॥

(19)

आई नीर लैन कौं पठाई मोहि सास जू नें,
बीच बन चपला चहुँधाँ चमकाई है।
कूकि उठे मोर जोर मदन मरोर भरे,
सरर सरर पौंन धाई पुरवाई है॥
'लाल बलबीर' घटा आई बरषारी कारी,
परत अपार जल को करै सहाई है।
जानिकैं गरीब मोहि प्यारे ब्रजराज जू नें,
कामरी उढ़ाय लाल चूनरी बचाई है॥

(20)

आई मैं निहारन कौं बाग अनुराग भरो,
सोभा वनराज जू की मेरे मन आई है।
फूली द्रुम बेली अलबेली ते निहार लीजै,
गुंजत मधुप सीरी पवन सुहाई है॥
एते में उमड़ घन आये चहुँ ओरन ते,
'लाल बलबीर' भारी मेघ झरलाई है।
जानि कें गरीब मोहि प्यारे ब्रजराज जू ने,
कामरी उढ़ाय लाल चूनरी बचाई है॥

# होरी के कवित्त

(1)

खेलत हैं फाग अनुराग भरी बागन में,
मोसर लै आव गहौ रसिक बिहारी ये।
छीन लई लकुट मुकट बेनु पीत पटी,
हँसैं व्रजबाल सबै दै दै कर तारीये॥
'लाल बलबीर' लूट खायौ दधि खोर खोर,
आज सब बासर की कसर निकारिये।
डारिये अबीर नीर कीजै सराबौर याहि,
मलिकैं गुलाल गाल गुलचा द्वै मारिये॥

(2)

खेलत में होरी गोरी छल सों गोविन्दैं गहि,
मीड़िं मुख रोरी दौर नीर सिंर डारिये।
कोऊ गुलचावैं मुसिक्यावैं ये सुनावैं बैन,
अब कहौ ललाजू को सहायक तिहारिये॥
'लाल बलबीर' ह्वै अधीर रसलीन छैल,
मधुर मधुर बैन ऐसे कें उचारिये।
डारिये गुलाल औ अबीर नीर आछी भाँति,
एहो व्रज-लाल गाल गुलचा न मारिये॥

## जयपुर की बोली में

(3)

केयाँ नें करोछो म्हारी बेयाँ नें बिसारी दीजै,
अेयाँ ना बनें अबार खेल ना सुहासी जी।
पनियाँ नें जासीं इठें बार थें लगासी म्हेला,
सास जी रिस्यासी दूजैं बाई झुंझलासी जी॥
थारे 'बलबीर' बहु लारे छैं सखा अहीर,
घालें छैं अबीर दृग धूम उड़ जासी जी।
प्रात उठि आसी लासी संग की सहेल्याँ नें जी,
थानें ये गुपाल जदी होरी नें खिलासी जी॥

(4)

पनियाँ भरन जिन जाऔ मोरी सजनी ये,
ठाड़ो मग रोकत है नन्द कौ लंगरवा।
हँसि हँसि गावैं ग्वाल आँखन नचावैं लाल,
नीर भर मारत कनक पिचकरवा॥
केसर अबीर नीर घोर अङ्ग भिजवत,
थर थर कांपै देह चुवत चुंदरवा।
'लाल बलबीर' लाज कैसें कैं बचैंगी बीर,
भयौ है अनौखौ व्रज होरी कौ खिलरवा॥

(5)

जोई उर डरपत हीय मोरी सजनीय,
जोई जोई आगु आय गयौ मोरे कलवा।
साँवरो बिहारी तकमारी पिचकारी दौर,
रंग की कमोरी सिर ऊपर ते ढलवा॥

दौरिकें अबीर बलबीर मुख मिड़वत,
हरष हरष हँसि आय लाग्यौ गलवा।
नैनन नचाय मुसिक्याय मन हरि लीनों,
तब ही ते मोर तन रहत बिहलवा॥

## सवैया

(6)

आयौ गुपाल लै संग में ग्वाल री,
साँकरी खोर पै रंग रचायौ।
नैनन कौं सुख देऔ सखी,
कुल कान की बान सबै बिसरायौ॥
त्यौं 'बलबीर' बन्यौ यह बानक,
बीतिहै फाग तौ दाव न पायौ।
त्यागि कै संग लैऔ भर अंक सु,
लाल के गाल गुलाल लगायौ॥

(7)

लैकै अलीन किसोरी किसोर पै,
हर्ष चली जहाँ साँकरी खोरी।
सांवरो छैल छबीलो तहाँ,
'बलबीर' उड़ावै अबीरन झोरी॥
नीरन की पिचकारी चलैं चहुँ,
ओर सखी सो गई मुख मोरी।
प्यारी के गाल सों लाल गुलाल,
**लगाय कह्यौ हँसि होरी है होरी॥**

(8)

आये उते ते सखा लै किसोर
सुधाइ इतै तें सखी लै किसोरी।
ले 'बलबीर' सुगंधित नीर अबीर
चलावैं चहूँ दिसि सो री॥
बाजत ताल सों चंग पखावज,
राग धमारन की घन घोरी।
प्यारी नें लाल के गाल गुलाल लगाय
कह्यौ हँसि होरी है होरी॥

(9)

आज किसोरी लखी हुती फाग में
खेलत ही सँग भानुकुमारी।
कंचन की पिचकी तक़ मारैं
उड़ावैं अबीर उतें बनवारी॥
त्यौं 'बलबीर' अनंग उमंग में,
बाढ़ौ दोऊ दिसि आनन्द भारी।
प्यारी के रंग में लाल रंगे सु गई
रँग लाल के रंग में प्यारी॥

(10)

खेलत फाग में लाड़िली लाल कों,
लै मुस्कियाय गई एक गोरी।
सीस पै सारी सजा जरितार की
कंचुकी धार दई बरजोरी॥

लै 'बलबीर' दियौ दृग अंजन,
दीनों बनाय गुपाल कों गोरी।
अंग लगाय कही मुसिक्याय लला,
फिर खेलन आइयो होरी॥

## दोहा

श्रीबनराज निकुंज में, पिय प्यारी सुख दैन।
षटऋतु सहचरि बपु धरे, सेवत हैं दिन रैन॥11॥

कृष्ण अली पद कमल बल, षटऋतु शतक बखान।
जो बाँचै सुन उर धरै, रीझें स्याम सुजान॥12॥

ऋषि वेद ग्रह इन्दु जुत, समबत सृष्टि सुजान।
मगशिर कृष्णा चौथ रवि, दिवस पूर सतु मान॥13॥



# षटऋतु-शतक

## अमृत-ध्वनि

(1)

कूकहिं केकी गिरिन पै, अति उर भरे अनन्द।
लक्षहिं पियतिय गगन छबि, बिज्जुहि झमक अमन्द॥
मद्दत चलत सुगंद्दत ढलन, समीरक हल हल।
गग्गग् गरज चतुर दिशि तरज, अमित जल ढल ढल॥
फुल्लेहु सुमन अनेक द्रुमन अवनी पर झुक्कहिं।
दादुर दुक्कहिं जुगनू चमकहिं पपिगन कुक्कहिं॥

(2)

सरसर चलत सुगंध लै भन बलबीर समीर।
अरररर चहुँ ओर तें छाँडत हैं घन नीर।
नीरक ढरत समीरक चलत नदी नद भर भर।
दादुर दुककहिं पपिगन कुक्कहिं पिय पिय तर तर॥
जुगनू चमकहिंत तड़ित तमंकहिं तरररररर।
बगुल कतारहिं उड़त अपारहिं सरररररर॥

(3)

गिरवर की पूंजा करी बढ़्यौ प्रबल उर क्रुद्ध।
माया श्रीबलबीर की हरी सक्र की बुद्ध॥
बुद्ध असुद्धहिं करन विरुद्धहिं यहि विध उर धर।
मोसन जुद्धहिं को सह क्रुद्धहिं पठ बहु बद्दर॥

सिद्धहिं सरवर लावहु जल भर छडह व्रज पर।
आयसु उर धर अब न बिलम कर षंडहु गिरवर॥

(4)

फन फन नृत्तत सामरे आये नभ सुर वृन्द।
सुमन झरावहिं प्रभुहिं पै लख बलबीर अनन्द॥
नन्द लक्खतहिं सुमन बक्खतहिं लक्खहिं ब्रज जन।
अधरन सज्जहिं मुरलिय बज्जहिं कहैं जन धन धन॥
नूपुर चरनन गज्जत झननन नृत्तत फन फन॥

## अमृतछन्द

(5)

श्रीराधा राधा रटौ, राधा कौ उर ध्यान।
सदां लाल बलबीर उर, राधा नाम प्रधान॥
ध्यानन धरहिं। जतन बहु करहिं। अचल मन कर कर।
सुख उर भरहिं। दृगन जल ढरहिं। चरन सिर धर धर।
यहि हम साधहिं। नाम अराधहिं। हरत न बाधा।
जन सुख साधा। सुजस अगाधा। जै श्रीराधा॥



# श्रीराधा-शतक

## सोरठा

आई तुमरे द्वार, श्रीवृषभानु कुमारि जू।
चेरी हौं सुकमार, चरन सरन मैं राखिये ॥1॥

श्रीवृषभानु कुमारि, परम उदार कृपाल तुम।
दासी मोहि बिचारि, टहल महल की दीजिये ॥2॥

सारद नारद सेस, सुरपति पसुपति प्रजापति।
बंदत रहैं हमेस, श्रीवृषभानु कुमारि पद ॥3॥

अति मलीन मति हीन, दीन तुम्हारी सरन हौं स्यामा।
परम प्रबीन, मोहि निकुंज बसाइये ॥4॥

## दोहा

कृष्ण अली पद कमल रज, मम उर करौ निवास।
राधा सत की लालसा, पूरन हो सुखरास ॥5॥

## कवित्त

(6)

कोमल कमल हू सों गहरे गुलाबन सों,
ललित रसाल पत्र आभा के हरन हैं।
लाल हैं गुलाल गुंज हिंगुर सिंदुर बिंब,
ये कहा बिचारे रंक समता करन हैं॥

'लाल बलबीर' उर करत बिचार चारु उपमा,
हजारन की सुषमा दरन हैं।
रसिक जनन धन ये ही हैं अगिन सर्व,
आनंद करन राधारानी के चरन हैं॥

(7)

माखन तें मृदुल अरुण भल मानक तें,
हीरा नग जालन की परभा हरन हैं।
हिंगुर गुलाल गुंज सेंदुर सकुच रहैं,
जावक मजीठ हेर होत आ सरन हैं।।
कमल गुलाबन के दरन बरन नींके,
'लाल बलबीर' जू के मन आभरन हैं।
रसिक जनन धन ये ही हैं अगिन सर्व,
आनन्द करन राधारानी के चरन हैं॥

(8)

मानक महल में बिराजैं राज राजेस्वरी,
चार दस लोकन की उपमा लजानी की।
आस पास दासी खासी करत खवासी केती,
कोऊ जलदान इत्र दान पानदानी की॥
'लाल बलबीर' द्वार भारती भमानी रानी,
अस्तुति सुनावैं हरषावैं वेद बानी की।
केती सुखदानी देवरानी यहाँ आय आय,
आरती उतार्‌यौ करैं राधे महारानी की॥

(9)

गावैं गुन सारद बजावें रस लीन बीन,
ठाड़े करजोर द्वार अस्तुति करैं सुरिन्द।
संभु चतुरानन धनेस से दिवाकर से,
सेष से सहस्र मुखी जाचत रहैं फनिन्द॥
'लाल बलबीर' दासी करत खवासी ऐसें,
नवल सरोजन कौं सेवत हैं जो अलिन्द।
तैसें नदनन्द ब्रजचन्द श्री माधव मुकुन्द,
बंदित गोविन्द राधे तेरे चरनारविन्द॥

(10)

रंभा सी रमा सी औ गिरा सी गिरिजा सी लै लै,
खान पान दान मन अमित हुलासी में।
किन्नरी सुरी सी उरबसी सी भली सी बीसी,
सेवैं हुलसी सी सदाँ रहैं आस पासी में॥
'लाल बलबीर' बिमला सी कमला सी केती,
रूप कौं निहार हार रहे भाव दासी में।
इंदुमा दमा सी सुखमा सी उपमा सी खासी,
राधे महारानी जू के रहत खवासी में॥

(11)

चौंर चन्द रानी लिये छत्र लै दिनेस रानी,
सोभा सरसानी अङ्ग रहत हुलासी में।
लिये इत्रदानी सुखसानी हैं जलेस रानी,
गहे पानदानी इन्द्ररानी खड़ी पासी में॥

'लाल बलबीर' पीकदानी लै धनेस रानी,
देखी वनराज मांहि ऐसी सुखरासी में।
इनदुमा दमासी सुखमा सी उपमा सी खासी,
राधे महारानी जू के रहत खवासी में॥

(12)

जेती देवदारा गर्भ रूप कौ अपारा तेती,
राधे महारानी त्यारे द्वार में झलूमैं आन।
चरन पलोटैं कोटैं बाँध सुख मोटैं कहैं,
धन्य धन्य आप सी रची न विधि भू मैं आन॥
'लाल बलबीर' वनराज राज राजेस्वरी,
राजो जू सदैव व्रजराज पद छूवैं आन।
दीजै सुखदान दान दीज जानि स्वामिनी जू,
करैं गुनगान कुंज मग रज चूमैं आन॥

(13)

वृन्दावन-चन्द में अखण्ड राज राजेस्वरी,
राजत सदैव सेवैं सखी सुखदानी हैं।
कोऊ छत्र लीनैं चौंर कीनैं रंग भीनै बीनैं,
लै लै कें बजावैं गावैं विरद अमानी हैं॥
ठाड़े कर जोरैं लखैं मुख रूप ओरैं जाके,
'लाल बलबीर' मनमोहन गुमानी हैं।
जेंती देवरानी सुर पालन की रानी तेती,
राधे महारानी जू के रहैं दरवानी हैं॥

(14)

आवैं दौर दौर दारा द्वार महारानी जू के,
रूप कौं निहारैं प्रान बारैं विमला सी हैं।
रती सी गिरा सी गिरजा सी सुखरासी आसी,
रंभा सी रमा सी कर जोरत दमा सी हैं॥
आई सिरमौर बासी जेती लोक लोकन की,
'लाल बलबीर' कोटि ससि सी प्रकासी हैं।
पासी हैं न कोऊ सम सुखमा अपार राजैं,
सब में अधिक एक राधे रूप रासी हैं॥

(15)

सेवत ब्रजेस्वरी कौं कोटि कोटि जूथेस्वरी,
रूप ओर ढरैं करैं सोई रुचि आवैं हैं।
चतुर विसाखा चुन लावैं चीर चान्दनी से,
ललित प्रवीन बीरी कर सों पवावैं हैं॥
'लाल बलबीर' छबि निरखैं सुजान कान्ह,
बार बार प्यारी जू पै चौर लै ढुरावैं हैं।
इन्द्र चन्द्र बरुन कुबेर नारि ठाड़ी द्वार,
राधे महारानी जू के मुजरा न पावैं हैं॥

(16)

हीरन कौ महल पुतायौ जुही सारन सों,
देहरी दुआरन सों उड़ै गन्ध बे प्रमान।
चमचमात चन्द्रमा से चान्दनी चन्दौवा चारु,
तैसोई जरी कौ नीकौ राखौ है बितान तान॥

'लाल बलबीर' चल देखिये सुजान प्यारे,
सेवैं आस पास दासी लीये सौंज सुखदान।
रूप के गुमान भरी बैठी मनि आसन पै,
राधे महारानी सरबोपरि विराजमान॥

(17)

लागी आस तेरी उर चाह है घनेरी सुनि,
लीजै बिनै मेरी दीन जान राख पासी मैं।
हियौ अकुलावैं छिन धीर न धरावैं नैन,
रावरे बिलोके बिन रहत उदासी मैं॥
करुनानिधान गुन खान ये सुजान प्यारी,
कीरत दुलारी जिन राखौ जी निरासी मैं।
ये हो सुखरासी वृन्दा विपुन विलासी कीजै,
'लाल बलबीर' जू कौं आपनी खवासी मैं॥

(18)

मुनिन के वृन्दन के वृन्द सदाँ वन्दें तुम्हें,
आनन्द के कन्दै नँन्दनन्दै सँग लीजि॥
तीन लोक जीवन के सोकन की हारनी,
प्रसन्न मुख पंकज सों चर्न सर्न दीजिये॥
निकुंज भू विलासिनी प्रकासनी हौ ग्यान की,
व्रजेन्द्र भान नन्दनी अरज्ज सुनि लीजिये।
कहन्त बार बार मैं तिहारे दरबार में,
'सुलाल बलबीर' पै कृपा कटाक्ष कीजिये॥

(19)

कीरति कें कन्या भई आये व्रज गोपी गोप,
नाचैं कूदैं गामैं दधि गोरस लुटावैं हैं।
बीना लै प्रवीन राग गावत रिसीस ठाड़े,
होय हर्ष भोलानाथ डमरू बजावैं हैं॥
'लाल बलबीर' व्रजराज जी के द्वार आली,
चार मुख बारे चार वेदन सुनावैं हैं।
देवता विमान चढ़े सेवन जनावैं और,
दुंदभी बजावैं गावैं फूल बरषावैं हैं॥

(20)

काहू कही कीरति कें कन्या कौ जनम भयौ,
गोपी गोप ग्वाल सुन सबै हरषाये हैं।
कंचन कटोरन में केसर अतर घोर,
दूध दधि हर्दिका के कलस सजाये हैं॥
'लाल बलबीर' साजे वसन विसाल अङ्ग,
उरन उमंग ब्रजराज द्वार आये हैं।
देखि छवि छाये गोप इन्दु से प्रकास रहे,
आज व्रजराज जू कें बाजत बधाये हैं॥

(21)

बैठी कुंज माँहि महारानी ब्रजराज जू की,
अङ्ग की सुगंधि भौंर भ्रमत भ्रमाने से।
चाह भरी दासी सुखरासी चौंर छत्र लिये,
कोऊ परबीनें राग गामें मनमाने से॥
'लाल बलबीर' कर जोरत महेस सेस,
सहित दिनेस उर रहत सकाने से।

याकी पद रेनु जाचैं नारद सुरेस ठाड़े,
राधे महारानी के दुआरे दरबाने से॥

(22)

चन्द दुति मन्द होत जाके मुखचन्द आगें,
बैनी कौं फनिन्द लख रहत सकाने से।
खंजन कुरंग अलि मीन गत दीन होत,
निरख सरोज दृग रहैं कुम्हिलाने से॥
'लाल बलबीर' देव-दारा चौंर छत्र लीनें,
भूषन नवीनैं पहिरावैं मनमाने से।
जाकी पद रेनु जाचैं नारद मुनेस ठाड़े,
राधे महारानी के दुआरे दरवाने से॥

(23)

जगर मगर होय रही मन मन्दिर में,
फैल रंही आभा तहाँ जरी के बितान की।
फरस दुरस्त बिछ रहे चौक चांदनी से,
तापै 'बलबीर' जू बिछात बादलान की॥
कोऊ लिये छत्र पाछैं बीजना ढुलावैं कोऊ,
कोऊ लै प्रवीन बीन गामैं तान मान की।
वृन्दावन महल विराजैं महारानी सदाँ,
मेरी कुल पूज्ज राधे बेटी वृषभान की॥

(24)

ठाड़ी कर जोर दासी खासी उर चाह भरीं,
प्रेम में पगीली तान गावत गुमान की।

कोऊ पानदान लै गुलाबदान पीकदान,
कोऊ हरषाय ब्यार ढोरै बीजनान की॥
कोऊ 'बलबीर' लै लै अतर लगावै अङ्ग,
कोऊ करजोर देत बीरी मुख पान की।
वृन्दावन महल बिराजैं महारानी सदाँ,
मेरी कुलपूज्ज राधे बेटी वृषभान की॥

(25)

कढ़ी अंग अंगन तें रूप की तरंग ऐसी,
कोटि कोटि कला कलाधर की लजान की।
'लाल बलबीर' छबि दिपत अनूप ऐसी,
रमा की न उमा की न रानी पंचबान की॥
पायन तें सीस लौं निहारैं खड़ी देवदारा,
आरती उतारैं करैं न्यौछावर प्रान की।
वृन्दावन महल बिराजैं महारानी सदाँ,
मेरी कुलपूज्ज राधे बेटी वृषभान की॥

(26)

चंपकबरनि मृगलोचनी सलोनी प्यारी,
रचि विधि कौन विध कवन सयान की।
कंचन तें गोरी तन नवलकिसोरी भोरी,
जात मुखमोरी उर रति के गलान की॥
मुख के उजास आगे ससि कौ प्रकास लाजै,
'लाल बलबीर' मति मोही पिय कान की।
वृन्दावर्न महल विराजै महारानी सदाँ,
मेरी कुलपूज्ज राधे बेटी वृषभान की॥

(27)

पन्नन के मन्दिर में हीरन के काम भये,
लसत तिवारी जारी फटिक सिलान की।
जटित सितारे सिन्धु लखैं नभ तारे मन्द,
झलकें अमन्द उडगनन गलान की॥
'लाल बलबीर' दासी खासी चपला सी खरी,
काम की प्रिया सी तान गामैं मन मान की।
वृन्दावन महल विराजैं महारानी सदाँ,
मेरी कुलपूज्ज राधे बेटी वृषभान की॥

(28)

कंचन अवनि तापै भवन पिरोजन के,
लालन की पुतरी दमंकैं कुलकान की।
फटिक सिलान तें समारौ चौक चाँदनी सो,
नीलम की बेल तामैं लागी प्रिय आन की॥
जड़े हैं पिरोजा द्वार द्वारी की किनारिन में,
'लाल बलबीर' जारी गजमुकतान की।
वृन्दावन महल विराजैं महारानी सदाँ,
मेरी कुलपूज्ज राधे बेटी वृषभान की॥

(29)

चारौं ओर दासी खासी सोहत खवासी माहिं,
स्वामिनी लड़ैती कौं सुनामैं तान मान की।
कोऊ परबीन बीना सारंगि सितार लै लै,
कोऊ लै मृदंग चंग बाँसुरी मिलान की।।

'लाल बलबीर' लै लै आरती उतारै कोऊ,
कोऊ चौंर ढारै कोऊ सुखमा बखान की।
वृन्दावन महल विराजैं महारानी सदाँ,
मेरी कुलपूज्ज राधे बेटी वृषभान की॥

(30)

सती सी सची सी कर चौंर लियें मैंनका सी,
नाचै उरबसी तान गावै हुलसान की।
रंभा सी दमा सी कमला सी बलबीर दासी,
कोऊ छत्र लीनै कोऊ चौंरन ढरान की॥
अष्ट सिद्धि नौऊ निद्धि पायन पलोटैं लोटैं,
ठाड़ी कर जोर सबै रानी देवतान की।
वृन्दावन महल विराजैं महारानी सदाँ,
मेरी कुलपूज्ज राधे बेटी वृषभान की॥

(31)

कंचन सिंहासन पै बैठी वृषभान सुता,
लखत प्रभान प्रभा ससि की लजावैं री।
नव सीस सारी लगी मुक्तन किनारी धारी,
उडगन कांति लख मलिन दिखावैं री॥
चारों ओर दासी सुखरासी चपला सी खड़ी,
रतनमै डांडी चारु चौंरन ढुरावैं री।
पन्नगी सुरी सी किन्नरी सी 'बलबीर' भ्रमैं,
राधा महारानी जू के मुजरा न पावैंरी॥

(32)

बैठी जातरूप के महल वृषभान सुता,
देवन को सुता द्वार दौर दौर आवै हैं।
चाह भरी चौंपन सों चुन चुन चीर चारु,
भूषन नवीन बीन साज साज लावैं हैं॥
'लाल बलबीर' महारानी श्रीवनेस्वरी के,
अङ्गन उमंग प्रीति हीसों पहिरावैं हैं।
गावैं हैं सुजस हरषावैं बीन कौं बजावैं,
दीन ह्वै दयानिधि के सीस पद नावैं हैं॥

(33)

जातरूप नुपूर अनूप पग गाजैं तैसी,
किंकिनी झनक धुनि छाई एक तारी री।
तैसी पचरंगी जंगी जेबदार घाँघरे की,
लहलही लीनी लगैं घूमन घुमारी री॥
'लाल बलबीर' दासी हेर सुखरासी सीस,
जरीदार चादर में किरन किनारी री।
आज सुखमारी पर वारौं कोटि मैननारी,
राजत बिहारी संग राधा प्रान प्यारी री॥

(34)

बैठे कंज आसन पै नवल निकुंज मांहि,
स्यामा स्याम दोऊ रूप रंग रस भीने हैं।
मन्द मुसिक्यावैं कर चिबुक छुवावैं भुज,
अंसन धरावैं राग गावत रंगीने हैं॥

'लाल बलबीर' बीन लै लै कें बजावैं प्रिया,
सुन सुन लाल भये अधिक अधीने हैं।
प्रेम की घुमेर घूम गिरत सुजान दौर,
प्यारी सुकमारी जी ने अंक लाय लीने हैं॥

(35)

बिंदा सखी विपिन सम्हार राखैं नीकी भांति,
स्यामा चीर विविध नवीन साज लावैं हैं।
मुदिता मदन मोद मई प्रेम बातें करैं,
चन्दा लै विचित्र अङ्ग चन्दन लगावैं हैं।।
'लाल बलबीर' उर नन्दना अनन्द करैं,
भामा मन भाये तन भूषन सजावैं हैं।
मुदिता जु बीजना लै सुमन झलावैं आली,
सदा सर्व कुञ्ज राधारानी कों लड़ावैं हैं।।

(36)

ठाड़ी फुलवारी में दुलारी वृषभान जू की,
सील व्रतधारी ताकी मुसिक्यान प्यारीये।
सारी सीस धारी है सुनैरी जरी कोर वारी,
आँखें कजरारी आगें मैन सर टारिये॥
'लाल बलबीर' अङ्ग अङ्ग सुखमा अपारी,
रमा उमा हू की गति मन्द कर डारिये।
सांचे की सी ढारी तियारे मन की जियारी लाल,
रूप उजियारी नैंक चलिकैं निहारिये॥

(37)

करें जल केलि वृषभान की कुमारि राधा,
परम प्रवीन संग नवल अलीन वृन्द।
लै लै उछिटावै अङ्ग अङ्ग सों मिलावैं हँसि,
चुबकि लगाय धाय गहैं पद अरविन्द॥
'लाल बलबीर' लाल माधुरी लतान मांहि,
रूप कौं निहारैं दूर परौ उर प्रेम फन्द।
मानौ हरषाय आये बारुनी परब पाय,
तारागन सहित अन्हात स्याम सिन्धु चन्द॥

(38)

खावौ चोर चोर दही मही साँझ भोर सबै,
भवन ढंढोर त्यारी कीरति बिख्याती है।
लैकें कहुँ चीर आप आभूषन भाज जैहो,
याही तें ललन सब ललना सकाती हैं॥
चंचल चपल चटकीले नैन सैन करौ,
ताते 'बलबीर' तुमैं कोऊ ना पत्याती हैं।
आवौ दौर दौर कहा काम है तिहारौ यहाँ,
उतै जाउ उतै इतै लाड़िली अन्हाती हैं॥

(39)

उठौ हो किसोरी गोरी भोर भयौ लाड़िली जू,
हँसि हँसि ठाड़ी बैंन कीरति सुनावैं हैं।
ललिता, विसाखा, चंपलता, चित्रा, तुंगविद्या,
इन्दुलेखा, रंगदेवी, सुदेवी जगावैं हैं॥

'लाल बलबीर' लै लै बीन कों बजावै कोऊ,
कोऊ मुस्कियाय धाय चरन सिरावैं हैं।
झीनें सुर गावैं तन आलस नसावैं सबै,
राधा मुखचन्द कौं चकोर ललचावैं हैं॥

(40)

उठि मुसिकात अङ्गरात जमुहात प्यारी,
आलस बलित नैन झप झप जावैं हैं।
दौर वृषभान रानी गोद लै लड़ैती जू कौं,
सिर कर फेर बेर बेर समरावैं हैं॥
मीजत हैं कर जुग दृगन किसोरी गोरी,
'लाल बलबीर' उपमा ये उर आवैं हैं।
मानौं जुग मीन फँसे मदन अहेरी जाल,
जानि निज बन्धु कंजु अरितें छुड़ावैं हैं॥

(41)

स्वामिनी जू भामिनी जू हंस कल गामिनी जू,
कोटि द्युति दामिनी जू पीउ चितचोरी जू।
लाल संग रमनी जू केलि रस कमनी जू,
छबि कंज बदनी जू सर्व तन गोरी जू॥
सखी सभा मंडनी रसिक लाल बंदनी,
अनन्द रस कन्दनी चतुरी और भोरी जू।
'लाल बलबीर' दासी तोरी सर्न सुखरासी,
रखिये सदैव पासी कीरति किसोरी जू॥

(42)

कंज छवि बदनी जू रमा रूप रदनी जू,
कोक कला हदनी जू हेरि मम ओरी जू।
रति रन मंडनी जू मैन मद खण्डनी जू,
प्रेम रंग रंगनी जू सुकुमार भोरी जू॥
चातुर्य चतुरा जू माधुर्य मधुरा जू,
अम्र फल अधरा जू ललन हित गोरी जू।
'लाल बलबीर' दासी तोरी सर्न सुखरासी,
रखिये सदैव पासी कीरति किसोरी जू॥

(43)

आई हाल देखि मैं किसोर जू किसोरी गोरी,
फैली मुख आभा तन बसीकर्ण जी कौ है।
दृगन की ओर लख भौंर मुख मोर गये,
अधर अरुन स्वाद सरस अमी कौ है॥
मदन उमंग अङ्ग जोबन तरंग भरी,
'लाल बलबीर' उत्साह तुम पीकौ है।
देखौ नंदनन्द सुख कन्द व्रजचन्द प्यारे,
आप तें अधिक नेह भानु नन्दनी कौ है॥

(44)

चली वन सोभा देख नवल किसोरी गोरी,
आगें मग लाल पीत पट ही सों झारे हैं।
जित जित लता झुकि रहीं तित तित ही सों,
निज कर पल्लव सों गहि के निवारें हैं॥

'लाल बलबीर' रस लीन ह्वै प्रवीन,
दीन-ताई के वचन प्रान प्यारी सों उचारे हैं।
चलो जी निकुंज छबि पुंज सुख सैन कीजै,
बिनै मान लीजै हँसि अंस भुज धारे हैं॥

(45)

जमुना अन्हात वृषंभान की कुमारि राधा,
रूप की अगाधा तन छबि वृन्द बरसैं।
रमा उमा दमा सी सची सी सतभामा हू सी,
मैनिका सी जाकी पद रेनुका कौं तरसैं॥
'लाल बलबीर' झुकि झुकि लता ओट लाल,
बेर बेर हेर हेर हेर मन हरसैं।
चुबकि लगाय निसरत प्रान प्यारी मानौं,
सामल घटा में चन्द छिप छिप दरसैं॥

(46)

कानन लौं अंखियाँ अन्यारी कजरारी लट,
नेह भीनी प्यारी सटकारी घुंघरारी हैं।
रूप ही के भूषन सों भूषित सदैव अङ्ग,
अङ्गन निहार चम्प हेम दुति हारी हैं॥
'लाल बलबीर' नैंक चलिकें निहारौ प्यारे,
मैन मदवारे छैल सोभा अति भारी हैं।
रमा उमा नारी परैं पायन विचारी आय,
सब में मुकट मनि राधा प्रान प्यारी हैं॥

(47)

राधे बदनारबिन्द विमल अमंद आगें,
कोटि कोटि मैन रति चन्द द्युति टारौ री।
कोमल सुढार जुग भुजन निहार सर्व,
सहित मृनाल कंज ही कौ गर्व गारौ री॥
'लाल बलबीर' प्यारी लटक चलन तापैं,
मद भरे करी औ मराल जाल वारौ री।
नूपुर झनक श्रवनन में परै सदैव,
इन ही कौं धारौ ब्रह्मानन्द कौं विसारौ री॥

(48)

ठाड़ी चित्रासारी में दुलारी वृषभान जू की,
रूप रति रमा उमा दमा तें उजाला है।
हीरन के हार चारु हियरा बहार देत,
कंगन चुरीन दुति दीपति निराला है॥
'लाल बलबीर' नैन भरे मधु बैस प्याला,
तनक बिलोक लाला होउगे निहाला है।
जेवर विसाला अङ्ग अङ्गन रतन जाला,
कनक लता में मनौं जगी दीप माला है॥

(49)

परम उदार सुकमार छबि सार आँखें,
मैन मद वारी व्रत सील उर भोरी है।
झीनें लंकवारी सिर चन्द्रिका चमकवारी,
भौंयें बंक बारी मनौं धनु बिन डोरी है॥

'लाल बलबीर' छबि देखिये सुजान ताकी,
और को कहा है जुवतीन चित चोरी है।
उमा रति कोरी बारौं नख पै करोरी सर्व,
अङ्ग अङ्ग गोरी वृषभानु की किसोरी है॥

(50)

खेलत सघन वन कुंज की लतान माहिं,
राधिका रंगीली आज सहित अलीन वृन्द।
पुष्प तोरि लावै कोऊ भूषन बनावै बहु,
अङ्गन सजाव धार धार पिया परसंद॥
'लाल बलबीर' सर्व नवल प्रवीन एक,
एक तें रंगीन परबीन रूप में अमंद।
देखो नदनन्द सुखकन्द वृजचन्द प्यारे,
मानौं सुर बाग में प्रकट डोलैं कोटि चन्द॥

(51)

संग सखियान के किसोरी वृषभान जू की,
देखन विपिन छबि हरषि सिधाई है।
जित मग धरत चरन सुकमार तित,
तित मनौ लोहित बनात सी बिछाई है॥
'लाल बलबीर' उठै सौरभ तरंग अङ्ग,
चहुँ ओर अलिन की पाँति घिर आई है।
रंभा रति मैन नारी पावत न समता री,
रमा उमा इन्दुमा ते सुखमा सवाई है॥

(52)

फटिक मनीन कौ महल कमनीय तामें,
जरी कौ बितान तन्यौ सुखमा अनन्द की।
चारौं ओर दासी खासी बिहरैं खवासी माँहिं,
सर्व रूप रासि करैं टहल पसंद की॥
'लाल बलबीर' कोऊ लै लै परबीन बीन,
गावत रंगीन तान भरी प्रेम फन्द की।
दाबि कें त्रिलोक की निकाई सुखदाई राधे,
हीरन तखत बैठी रानी व्रजचन्द की॥

(53)

उठी अँगरात मुसिकात परभात प्यारी,
आलस सों भरे नैन मैन मदमाते हैं।
ढीले कबरी के जाल टूटी लर मुक्तमाल,
बीरन की सुर्ख चिह्न गण्डन पै राते हैं॥
'लाल बलबीर' नव जोबन उमंग अङ्ग,
उरज उतंग कंचुकी में उमगाते हैं।
पाते हैं न हेम जाकी अङ्ग समताई माई,
बदन निहार ससि पूरन लजाते हैं॥

(54)

कंचन अजिर माहिं बैठी चन्दमुखी प्यारी,
चाँदनी सी सारी सीस तास बादला की हैं।
हीरन के हार गरैं मोतिन सों माँग भरैं,
बेनी ढर जानु परैं भ्रकुटी पिनाकी हैं॥

'लाल बलबीर' कजरारी अनियारी भारी,
आँखें मतवारी प्रेम मैन मद छाकी हैं।
ऐसी छबि काकी हेरि जैसी वृषभानुजा की,
रमा उमा मैनका सी पग तल ताकी हैं॥

(55)

जाकी सुन बानी बीन कोकिला सकानी मन्द,
मन्द मुसिकानी बिज्जु घन की लजेरी हैं॥
बैनी सटकारी आगे पन्नगी लहर हारी,
चन्द तै सुचन्द चारु बदन उजेरी हैं॥
'लाल बलबीर' जू की प्रानन की प्यारी मति,
कहै का बिचारी तन सुखमा घनेरी हैं।
राधा महारानी जू की रूप घटा कौं हेर,
रमा उमा मैनका सी सर्व नारी चेरी हैं॥

(56)

कंचन बरन भूमि साखा द्रुम रहे झूमि,
झरत प्रसून अलि गुंज होत प्यारी है।
कूकत केकीन जाल बिहरैं मराल बाल,
जल जंत ताल पाय मोद मन भारी हैं॥
'लाल बलबीर' चलि देखौ वन कुंञ्ज माहिं,
ये तो सब पुंज छबि आज ही निहारी है।
हीरन सिंगासन पै बैठी तास आसन पै,
रूप गरबीली तहाँ राधा सुकमारी है॥

(57)

सोहत सुदेस सने सुन्दर सजीले स्याह,
लामैं लहरारे सटकारे फटकारे बाल।
बाधे मखतूल तार सेंदुर की माँग पार,
केसर की खोर बाँकी सोहत बिसाल भाल॥
'लाल बलबीर' नासा बेसर हैं मोरदार,
भूषन नवीन राजैं गरैं गज मुक्तमाल।
आई मैं निहार हाल देखौ चल नन्दलाल,
तुमैं वो प्रवीन राधे करैगी निहाल हाल॥

(58)

कंचन महल तनो जरी कौ वितान तामैं,
मोतिन की झालरें झमंकैं चहुँ ओरी की।
अतर गुलाबन सों अजिर पुतायौ चौखी,
गिलमें बिछाई हैं हरित लाल कोरी की॥
'लाल बलबीर' तहाँ ठाड़े कर जोरें लखैं,
दृगन की ओरैं तान गावत निहोरी की।
आई हाल देख और दिखाऊँ छबि तोहि बैठी,
हीरन तखत राधे कुमरि किसोरी की॥

(59)

महल मनीन के बिराजी वृषभानु सुता,
देखन की सुता आय आय पग परसें।
सुजस उचारैं कोऊ सीस चौंर ढारैं कोऊ,
रूप कौं निहारैं बेर बेर हेर हरसैं॥

'लाल बलबीर' छबि तनक बिलोकि देखौ,
रम्भा रति रमा उमा हू तें अति तरसैं।
राधे महारानी जू के सर्व अङ्ग अङ्गन तें,
कोटि छवि के छता से आज बरसैं॥

(60)

जाके पद नेति नेति बंदत सुरेस सेस,
तेरे पद सीस नाय ठाड़े कर जोरी री।
जेतौ नट नागर तू नागरी छबीली बाल,
कहा प्रतिपाल भई ऐसी मत भोरी री॥
'लाल बलबीर' मिल दोऊ रस रंग कीजै,
दीजै सुख नैनन कौं मानि बिनै मोरी री।
रही रैन थोरी अब सैन करौ गोरी,
कुञ्ज प्रीतम के संग मिलि कीरति किसोरी री॥

(61)

बार बार प्यारी तेरी जाऊँ बलिहारी दीजै,
मान कौं बिसारि सुकमारी मान मोरी री।
तेरे गुन गान ही सों ध्यान प्रान प्रीतम कौ,
राबरे सरूप कौं निहारैं छैल ओरी री॥
'लाल बलबीर' मुख चन्द सो बिलोकि प्यारे,
मोर चन्द धारें सीस करें आस तोरी री।
दोऊ कर जोरी छैल द्वार पै खरो री,
नैक हेरौ उन ओर वृषभान की किसोरी री॥

(62)

जब तें बिसारी चित्रसारी प्यारी प्रीतम की,
तब तें बिसारी सुधि लाल खान पान की।

उठत कराहि गिरे भूमि अकुलाय धाय,
राधा राधा राधा रट लागी सुख दान की॥
'लाल बलबीर' जी सों भूलि न गुमान कीजै,
छाँड़िये रंगीली हाल एती हठ मान की।
कीजै अब ही पयान लीजै जो अरज मान,
दीजै पति प्रानदान बेटी वृषभान की॥

(63)

कीजै जी न मान मेरी एती लै अरज मान,
देखिये विचार मन आपने ही ओरी री।
जाके गुन गान करैं नारद सुरेस सेस,
संभु चतुरानन धनेस कर जोरी री।।
परम प्रवीन भये प्रेम के अधीन ठाड़े,
'लाल बलबीर' जू बिलोकैं बाट तोरी री।
हेरि इन ओरी गोरी भोरी चित चोरी तोरी,
प्रीत में बिंधो री कान्ह कुमर किसोरी री॥

(64)

बरनैं जलेस जू धनेस जू सुरेस जू से,
निज निज जन की हरैया सब बाधिका।
नारद मुनेस जू गनेस बलबीर प्यारे,
रिद्ध सिद्ध बुद्धि के दिवैया सुख साधिका॥
सेस जू महेस जू प्रजेस जू रमेस जू की,
महिमा पुरानन में सुनी है अगाधिका।
सब ही के राज व्रजराज जू की राजेस्वरी,
सोई कुलपूज्ज मो किसोरी सिरी राधिका॥

(65)

चमचमात जरी के बितान चारु चाँदनी से,
चन्द से चँदोवन की रही दुति सरसाय।
मोतिन की झालरें झमंकै जोर जेब बारी,
गिलम गलीचे निज चौक में दिये बिछाय॥
'लाल बलबीर' दासी सबैं सुखरासी सबैं,
मैन अबला सी खासी अस्तुति रहीं सुनाय।
नाह रससानी हरसानी श्रीकिसोरी राधे,
फटिक मनीन के सिंगासन पै बैठी आय॥

(66)

बैठे हैं मनीन के सिंगासन जुगल छैल,
लाल कर कंज लै किसोरी कौं दिखावैं हैं।
प्यारी गहि लियौ ललचाय हरषाय लै लै,
सरस सुबास हेर हेर मुसिक्यावैं हैं॥
परम प्रवीन रस लीन भुज मेल कण्ठ,
करैं नव खेल सुख पुंज उपजावैं हैं।
'लाल बलबीर' दासी निरखि सिरावैं नैन,
आवत न बैन मैन रति कौं लजावैं हैं॥

(67)

कारी बेनी सीस ते लहर लेत पाइन लौं,
मानों पूरचन्द के सुधा कौं पीये हैं फनिन्द।
मृग मद भाल विन्द दिपत अमन्द मानो,
बिकसे सरोज की सुबास लेत हैं अलिन्द॥

चंचल चपल नैन ताक वृषभानुजा के,
मीन सर थाके हैं अनंग सर सरमिन्द।
'लाल बलबीर' चलि देखौ नदनन्द प्यारे,
जाकी छबि आगें हीन होत रति रंभा वृन्द॥

(68)

सारी सीस राजत रंगीली चटकीली लीली,
निरखि लजानी गति घन की तरन की।
चंचल चलाक नैन सेत रतनारे कारे,
खंजन खिजानें गति छीन अलिगन की॥
तेरे अंग अंगन की निरखि निकाई सची,
जात री लजाई गती रती की दरन की।
दास कहैं लालन के हिये के हरन हारे,
कंज लखि हारे हेर झलक चरन की॥

(69)

जलज अधीन रहैं कंज लख दीन रहैं,
निरख लजाने ससि सरद निसा के हैं।
ऐसे हैं झलकदार गिरजा न इन्दिरा के,
रती के न सची के न सिया के गिरा के हैं॥
सेस सनकादि आदि नारदादि ईस सीस,
नाय रटैं ध्यान सदाँ सिर ताज ताके हैं।
अष्ट सिद्धि दायक हैं संतन सहायक हैं,
दास निज नायक चरन राधिका के हैं॥

(70)

चरन हैं नीके हित ही के जन मन ही के,
संकट हरन रिद्ध सिद्ध के धरन हैं।
धरन धरा के तें धरत ध्यान रैन दिना,
गाते जस नेति नेति आनन्द करन हैं॥
करन हैं कंज दल गंजन अरुण एड़ी,
नखन झनक कांति ससि की हरन हैं।
हरन अधीरता के धीरता धरन हारे,
दास चित धारैं राधारानी के चरन हैं॥

(71)

जाके जस गाये चतुरानन नें नेत नेत,
ताही तें कहाये सदाँ सृष्टि के करन हैं।
जाके जस गाये ईस सीस नाय ध्यान लाय,
ताही तें कहाये खल दल के दरन हैं॥
जाके जस गाये सेस रसना हजारन ते,
ताही ते कहाये निजधारा के धरन हैं।
जाके जस गाये जग ताके जस छाये दास,
करैं चित चाहैं रानी राधे के चरन हैं॥

## सवैया

(72)

सोहत मोर पखा सिर पै कल भाल पै केसर खोर दिये जू।
झूमत घूमत जात सिहात नवीन प्रसून के हार हिये जू॥
दीजै कहा उपमा 'बलबीर' पड़ी पछितात लजात हिये जू।
या छबि सों बिहरैं जमुना तट राधिका स्याम सिंगार किये जू॥

(73)

डोलत बोलत राधिका राधिका राधा रटौ सुख होय अगाधा।
सोवत जागत राधिका राधिका राधिका नाम सबै सुख साधा॥
लेतहु देतहु राधिका राधिका तौ 'बलबीर' टरै जग बाधा।
होय अनन्द अगाधा तबै दिन रैन कहौ मुख राधा श्रीराधा॥

(74)

श्रीवृषभानु सुता पद पंकज मेरी सदां यह जीवन मूर है।
याही के नाम सो ध्यान रहै नित जाकें रटे जग कंटक दूर है॥
श्रीवनराज निवास दियो जिन और दियो सुख हू भरपूर है।
याकौं बिसार जो औरै भजौं 'बलबीर' जू जानिये तौ मुख धूर है॥

## कवित्त

(75)

कंचन जटित भूमि रत्न द्रुम रहे झुमि,
पंछी कल गान करैं तहाँ मृदुबानी के।
विमल बिलंद जामैं फूले हैं सुमन वृन्द,
गुंजत अलिन्द मधु हेत मृदुबानी के।।
'लाल बलबीर' बनराज की रंगीली छबि,
गावत मुनिन्द पति श्रीपति भवानी के।
तामें दिव्य दिव्य भासमान से प्रकासमान,
धवल महल बने राधे महारानी के॥

(76)

मण्डल मनोनमय राजत अमन्द ताकी,
सुखमा निहार भान कोटि ससि लाजैं हैं।

सहित सुबास पद्म षोडस कलीन ताके,
दल दल पर सहचरी जस गाजैं हैं॥
'लाल बलबीर' दासी सुखमा निहारैं खासी,
छबि रास छैल प्रेम मैंन खेल साजैं हैं।
रूप मद छाके नेह मैंन अबला के दाव,
चाह भरें दोऊ स्यामा स्याम संग राजैं हैं॥

(77)

अष्ट सखी आठौं जाम सेवत हैं सुखधाम,
ललिते प्रबीन बीरी रुचिर बनावैं हैं।
प्रेम प्रीति बातें घातें दंपति सिहातें रहैं,
लहैं रुख जबै तबै रुचि सों पवावैं हैं॥
'लाल बलबीर' अंग रंग गऊरोचन सों,
बसन नवीन मोर चन्द से सजावैं हैं।
स्याम राधिका कौं बनराज की निकुंजन में,
छिन छिन नये नये चोज सों लड़ावै हैं॥

(78)

चतुर विसाखा अभिलाषा रूप माधुरीकी,
चुन चुन सुमन नवीन साज लावैं हैं।
जो जो मन भावत है रसिक रसीली जू के,
सोई सो रसीले हित ही सों पहिरावैं हैं॥
'लाल बलबीर' द्युति दामिनी सी देह राजै,
उडगन मण्डल से बसन सुहावैं हैं।
स्याम राधिका कौं वनराज की निकुंजन में,
छिन छिन नये नये चोज सों लड़ावै हैं॥

(79)

चंपक लता जू हैं प्रवीन बर बिंजन में,
अति ही अनूप खटरस के बनावै हैं।
जैसी रुचि पावैं हर्ष सोई सोई साज लावैं,
लै लै हित ही सों पीय प्यारी कों पवावैं हैं॥
'लाल बलबीर' तन चंपक बरन दियौ,
नील पट स्यामा साज सोई हरषावैं हैं।
स्याम राधिका कौं वनराज की निकुंजन में,
छिन छिन नये नये चोज सों लड़ावैं हैं॥

(80)

चित्रा जू विचित्र मन भावैं पिया प्यारी जू के,
विविध सुगन्धि नीर रुचिर बनावैं हैं।
जैसी रुचि पावैं ललचाय मुसिक्याय धाय,
सो सो रसलीन आन पान कौं करावैं हैं॥
'लाल बलबीर' तन कुंकुम बरन धनि,
बसन सुनैरी सिखि सुभग सजावैं हैं।
स्याम राधिका कौं बनराज की निकुंजन में,
छिन छिन नये नये चोज सों लड़ावैं हैं॥

(81)

परम प्रवीन तुंगविद्या सब विद्या माहिं,
सकल नवीन बाजें हित सों बजावैं हैं।
गावैं राग रागिनी रिझावैं प्रिया प्रीतम कौं,
सुखमा निहार हेरि हेरि सचु पावैं हैं॥

'लाल बलबीर' गौर बरन हरन मन,
पंडुर बसन तन अति ही सुहावैं हैं
स्याम राधिका कौं बनराज की निकुंजन में,
छिन छिन नये नये चोंज सों लड़ावैं हैं॥

(82)

सखी इन्दुलेखा सुखदेवा प्रिया प्रीतम कौं,
कोक की कलान की चालन कौं जनावैं हैं।
बसीकर्न मन्त्र जन्त्र तन्त्र बहु भाँतिन के,
सकल प्रवीन रसलीन कौं सिखावैं हैं॥
'लाल बलबीर' हेर अंग हरताल रंग,
बसन सुमन दाड़िमी से लै सजावैं हैं।
स्याम राधिका कौं बनराज की निकुंजन में,
छिन छिन नये नये चोंज सों लड़ावैं हैं॥

(83)

सखी रंगदेवी सुखदेवी प्रिया प्रीतम कौं,
भूषन नवीन नख सिख पहिरावैं हैं।
करिकैं इकत्र चित्र लिखत विचित्र चित्र,
परम पवित्र जुग मित्र कौं दिखावैं हैं॥
'लाल बलबीर' आभा केसरी कमल अङ्ग,
जपा पुष्प की सी सीस सारी लै सजावें हैं।
स्याम राधिका कौं बनराज की निकुंजन में,
छिन छिन नये नये चोंज सों लड़ावैं हैं॥

(84)

सुघड़ सुदेवी अति ही है सुखदेवी हेर,
सुठि रूप ही कौ जी कौं अति ही रिझावैं हैं।
रुचि कें सिंगार करैं हियैं अति भाव भरैं,
नख सिख साज राज मुकर दिखावैं हैं॥
'लाल बलबीर' सुक सारी कौं पढ़ावैं तन,
सुभग सजीली सूही सारी कौं सजावैं हैं।
स्याम राधिका कौं बनराज की निकुंजन में,
छिन छिन नये नये चोंज सों लड़ावैं हैं॥

(85)

अष्ट सिद्धि दायक हैं संतन सहायक हैं,
सृष्टि ही के नायक हैं आनन्द करन हैं।
दरन हैं कलि के कलेसन के जाल हाल,
करत निहाल लीनी आन ये सरन हैं॥
दास दृग रंजन हैं खलगन गंजन हैं,
कंज लखि हारे लाल कांतिन हरन हैं।
धीरज धरन हारे ऐसे ना निहारे जैसे,
तारन तरन राधारानी के चरन हैं॥

(86)

चीकने चटकदार अंग ही के रंग रँगे,
जलज रंगीन की ललाई के हरन हैं।
एड़ी की अदां की झाँकी अँखियाँ सिराती रहीं,
नारंगी अधीन लगी देखत डरन हैं॥

दास कहैं नखन निकाई तें नगीने कहा,
तारन तरैयन की कांतिन हरन हैं।
धीरज धरन हारे ऐसे ना निहारे जैसे,
तारन तरन राधारानी के चरन हैं॥

(87)

साधन की आस सदाँ सिद्ध ही करन हारे,
अष्ट सिद्ध निद्ध देत रक्षा के करन हैं।
जाके ध्यान धरत सरत जन काज नीके,
जाके त्रास नारे हैं दरिद्र के हरन हैं॥
दास कहैं करत निहाल ततकाल हाल,
जिनकी सरन लेत रंचिक डर न हैं।
धीरज धरन हारे ऐसे ना निहारे जैसे,
तारन तरन (श्री) राधारानी के चरन हैं॥

(88)

चार दश देशन अखण्ड जस छाय रहे,
जिनके दरस सिद्ध कारज करन हैं।
सदाँ ही ढरन हियें आनन्द जनन ही के,
सरन लिये ते अरिदल के दरन हैं॥
दास कहैं दयासिन्धु दारिद हरैया,
घट-घट के लखैया हैं अधीरता हरन हैं।
धीरज धरन हारे ऐसे ना निहारे जैसे,
तारन तरन राधारानी के चरन हैं॥

(89)

नाहक रचत जन्त्र तन्त्रन के साधन तें,
ये कहा रंगीले त्रास काल की हरन हैं।
नाहक गरत सीत जारत अनल देह,
तिन तें हठीले कहा कारज सरन हैं॥
दास कहैं चेत चित्त तिनकी सरन लीजै,
जिन के रटत जग काही के डर न हैं।
धीरज धरन हारे ऐसे ना निहारे जैसे,
तारन तरन राधारानी के चरन हैं॥

(90)

छाँड़ जग जालन के ख्याल तें रँगीले हाल,
जाकी लै सरन जहाँ काही के डर न हैं।
दारा तात जननी सजाती जात जेते जान,
तेते जान घाती सिद्ध कारज हरन हैं॥
दास कहैं चेत दयासिन्धु तें लगाय हेत,
रहिये निकेत अघ दल के दरन हैं।
धीरज धरन हारे ऐसे ना निहारे जैसे,
तारन तरन राधारानी के चरन हैं॥

(91)

आज ब्रजराज प्यारे लाड़िली किसोरी जू सों,
रंग रंगे प्रेम पगे केसन गुथावैं हैं।
औंछत हैं बार प्रान प्यारी श्रीबिहारी जू के,
सी करत लाल पीठ उरज लगावैं हैं॥
'लाल बलबीर' तन भृकुटी चढ़ाय हेर,
कोमल कपोल गोल कर गुलचावैं हैं।

हँसि मुसिक्यावैं उर आनन्द बढ़ावैं दोऊ,
कोटि रति मैंन हू के प्रेम कौं लजावैं हैं॥

(92)

आज सखी सुन्दर सुहावनी निकुंज माहिं,
लाल मखतूल की बिछायत रंगीनी हैं।
तापरि बिराजैं प्रिया प्रीतम रंगीले छैल,
खेलत हैं चौंसर अनूप रंग भीनी हैं॥
पाँच पाँच जुगल परे हैं श्रीबिहारी जू के,
प्रिया के सरस सो सरस चाल कीनी हैं।
'लाल बलबीर' दासी बीरी दई ललिता कौं,
प्रिया कौं पवाय पुनि लाल मुख दीनी हैं॥

(93)

गई हुती कुंजन में सुखमा की पुंजन में,
दृष्टि परी लीनी गहि दीनी तब सोहनी।
दाँयें कृष्णदासी बाँयें जोरें कर प्रेमदासी,
आगें बलबीर दासी ठाड़ी हुलसौहनी॥
कंचन सिंहासन पै राजत बिहारी प्यारी,
कहत बनै ना री बने हैं छबि जोहनी।
एक अली चौंर ढारै एक आरत उतारै,
आज मैं निहारी छबि प्यारी बिस्वमोहनी॥

(94)

कारे अनियारी कोरवारे नैन कजरारे,
कुरंग कमनी किये हेर लाल डोरी के।

कानन करनफूल जटित कनीके कसी,
कारचोवी कंचुकी कठोर कुच गोरी के॥
'लाल बलबीर' कवि कहत बने न कांति,
कमल कलाधर कौं करैं दुत थोरी के।
कंचन सिंहासन पै राजत कुमर कान्ह,
कीजिये दरस बलि कुमरि किसोरी के॥

(95)

कोमल कछारे केस कारी सीस सारी बेस,
कंठ चंपकली हार कुसुम झरत हैं।
कंचन करन कटि किंकिनी कनक बाजैं,
कीरति कुमारी गति करी की हरत हैं॥
'लाल बलबीर' केलि कुंज कौं सिधारी प्यारी,
केसर कुसुम कांति मग में ढरत हैं।
कंज केलि केहर कलस कंबु कुन्द कीर,
कुरंग कलाधर कौं कायर करत हैं॥

(96)

डोलत फिरत मुख बोलत में राधे राधे,
और जग जालन के ख्यालन सों हट रे।
सोवत जगत मग जोवत में राधे राधे,
राधे रट राधे त्याग उर ते कपट रे॥
'लाल बलबीर' धर धीर रट राधे राधे,
टरैं कोटि बाधे रट राधे झटपट रे।
एरे मन मेरे चेत भूलिकें न हो अचेत,
राधे रट राधे रट राधे राधे रट रे॥

(97)

राधा गुन गावैं तहाँ दौर दौर जाओ प्यारे,
राधा गुन है न जहाँ भूल कें न डट रे।
राधे जू की चरचा सलोनी लौनी होय जहाँ,
सुनिये लगाय श्रुति तहाँ ते न हट रे॥
राधा राधा नाम ही सों काम राख आठौं जाम,
'लाल बलबीर' जग जाल कों न ठट रे।
एरे मन मेरे चेत भूल कें न हो अचेत,
राधे रट राधे रट राधे राधे रट रे॥

(98)

कीरति किसोरी वृषभान की दुलारी प्यारी,
अरज हमारी सुकमारी कान कीजै री।
भ्रमना भ्रमावै छिन छिन अकुलावै मन,
कछुना सुहावै उर धीरज धरीजै री॥
'लाल बलबीर' दासी चेरी हैं चरन ही की,
सरन लई हैं सो निभाय मोहि लीजै री।
कीजै दीन जान दान एहो करुनानिधान,
सदां तेरौ ध्यान औ निकुंज बास दीजै री॥

(99)

कोऊ जलसैया कोऊ करै सूलसैया,
कोऊ पंचधूनी तैया कोऊ दूध के अहारी हैं।
पवन अहारी कोऊ तीर्थ व्रतधारी कोउ,
दान धर्म धारी कोऊ ज्ञान ध्यानधारी हैं॥
'लाल बलबीर' दया जीव उरधारी कोऊ,
सील उरधारी कोऊ ब्रह्म के विचारी हैं।

साधन अपार नहीं जानत विचार सार,
मेरे तौ अधार वृषभान की दुलारी हैं॥

(100)

छोड़ सुभ कर्म कौं कुधर्म में लगोई रह्यौ,
सार कौं न गह्यौ भई भिष्ट मति मेरी है।
संतन के संग में न रंगौ री अभंग रंग,
जंग करिबे कौं मति सृष्टि सों घनेरी है॥
अबै 'बलबीर' जग जानकें कनिष्ठ दई,
सब ही कौं पिष्ठ मिष्ठ तुही इष्ट हेरी है।
कोटि कोटि कष्टन के नष्ट करवैया दैया,
बड़ी ये बलिष्ठ राधे कृपा दृष्टि तेरी है॥

(101)

वेही नर्कवासी मद मांस के उपासी,
उर कपट के रासी कूट कर्मन कौं धारैं है।
जानौं स्वर्ग वासी जप तप धर्म कर्म रासी,
वेद भेद मासी मान मन तें न टारैं हैं॥
'लाल बलबीर' तिनैं जानौं बैकुंठ बासी,
और कौं न मानैं बैठ ब्रह्म कौं बिचारे हैं।
गऊ लोकबासी बनैं जुगल किसोर दासी,
जक्त सों उदासी राधे नाम कौं उचारैं हैं॥

(102)

पुल जी पुलस्त जी अगस्त जी वष्ठिजी से,
अंगिरा जी भृगु क्रतु जी से सदां धरैं ध्यान।

गौतम जी धूमर जी जामदग्नि सौनक जी,
मारकंड कौंडक जी मानप जी करैं गान॥
'लाल बलबीर' कौं दधीच जी मरीच जी से,
बामन जी कण्ठ जी से रिषी मुनी बेप्रमान।
सेवैं गुन खान नन्दनन्दै राधिके सुजान,
सोई व्रजचन्द तेरे पद बदै आन॥

(103)

विस्वामित्र गालव जी चिमन उदालक जी,
सिंगी रिषी पर्वतजी करैं जोग तप गान।
उतंगजी मतंगजी से रोमहर्ष लोमस जी,
पारासर आत्रेयजी करैं नाम रस पान॥
'लाल बलबीर' पिप्पले जी बालमीक जी से,
प्रेम के सहित ध्यान लावैं हिय हुलसान।
सेवैं गुन खान नन्दनन्दै राधिके सुजान,
सोई व्रजचन्द तेरे पद बदै आन॥

(104)

केते चित चाहि चाहि नावैं सिर जाय जाय,
अति हुलसाय गुन गावैं सिंभु ग्यानी के।
केते मन लाय लाय सुजस सुनावैं द्वार,
कालिका कृपाली जू के सारदा भवानी के॥
'लाल बलबीर' रघुवीर दुजवीर केते,
निज निज इष्टन में ढरैं मृदुबानी के।
सेवैं सुखधाम पूजैं दास मन काम मैं तो,
बन्दौं पद कंज मंजु राधा महारानी के॥

(105)

जोग जग्य जप तप तीरथ गवन व्रत,
कबहुँ न हरिदास श्रवण कथा करी।
भ्रमना भ्रमायौ माया मोह मद लिपटायौ,
वृथां जग बादन में उमर बिता करी॥
'लाल बलबीर' मति हीन मैं मलीन पीन,
सेवा रसिकन तनहूँ की नहिं जा करी।
कृष्ण अली जू की कृपा दृष्टि बर पाय पाय,
राधा ठकुरायन के पायन की चाकरी॥

## सवैया

(106)

श्रीवृषभानु सुता पद पंकज में निसि बासर ध्यान लगायौ।
मेरी तो जीमनमूर यह कुलपुञ्ज सोई मुख गाय सुनायौ॥
जाकौं अहो बलबीर त्रिलोक के नायक हू नित सीस नवायौ।
श्री गुरुदेव दया करि राधिका मंत्रसिरोमनि नाम बतायौ॥

(107)

नारद सारद सेस सुरेस महेस सदां उर ध्यान धरायौ।
और जिते सुर सिद्ध मुनीस सबै मन गावन कौं ललचायौ॥
खेलत हैं वनराज निकुंजन पी बलबीर करैं मन भायौ।
श्री गुरुदेव कृपा करि राधिका मंत्र सिरोमनि नाम बतायौ॥

(108)

जानत न काव्य कोस छन्द के बनायबे कौं,
पिंगुल प्रमान कौं न नैंक डर आनो है।

जानत न नव रस सतक संचारिन कौं,
अलंकार हाव भाव हू को ना चिह्नानो है॥
'लाल बलबीर' बनराज कौ निवास पाय,
जमुना अस्नान प्रभु को प्रसाद पानो है।
सब ही कौ सार भवसागर तें पार करैं,
मन में विचार एक राधा नाम जानो है॥

## दोहा

(109)

धरे राधिका सतक में, कवित एक सौ तीन।
निरख होंयगे मगन मन, जो हैं रसिक प्रवीन॥
धूषन भूषन गनागन, कौं उर है न विचार।
कृपा दृष्टि कर रसिकजन, लीजौं ग्रन्थ सुधार॥

(110)

केकी जो बनावै तौ बनैयौ बनराज जू कौं,
कूक कूक नाच नाच सुजस सुनाऊँ मैं।
लता द्रुम बेली रंगरेली जो करौ तौ करौ,
रावरे ही अंगन पै पुष्प-झर लाऊँ मैं॥
जो पै रज-रेनुका बनावौ मन भायौ ये ही,
तौ पै पद पंकजन सीस पै धराऊँ मैं।
ये ही बर पाऊँ ललचाऊँ सुख साधे राधे,
बास दै निकुंजन को तेरौ ही कहाऊँ मैं॥



# शिख-नख वर्णन

## दोहा

श्री गुरुचरन सरोज रज, बन्दौं बारंबार।
अति मलीन मो दीन के, तुम ही तारन हार ॥1॥

अपनी अपनी वस्तु सों, करै सकल बिवहार।
रसिक अनन्यन धन्य ही, श्रीवृषभान कुमारि ॥2॥

श्रीवृषभान कुमारि छबि, का पर बरनी जाय।
जाके पद नख कोर के, कोटि इन्दु सम नाँय ॥3॥

भूमिलोक सुरलोक सब, रहे पताल लजाय।
कुमरि माधुरी अंग की, समता दीजै काय ॥4॥

मैं मतिहीन अधीन हौं, और न कछू उपाय।
कछु छबि बरनन चहत हौं, हूजै आय सहाय ॥5॥

श्रीवृषभान कुमारि की, तन छबि सिंधु अथाय।
कृष्ण अली पद कमल बल, जो कछु बरनी जाय ॥6॥

दियौ किसोरी लाड़िली, श्रीबनराज निवास।
ऐसे ही अपनाइये, जान आपनों दास ॥7॥

श्रीगुरु संतन के चरन, उर लावन की आस।
ये ही अवलाषा रहै कोउ करौ उपहास ॥8॥

(9)

अतर समारे घुँघरारे हैं लछारे स्याम,
घनहूँ सों कारें सुकमार दरसत हैं।
अलिगन हारे हेर पन्नग लजारे किधौं,
सुखमा के सिन्धु में सिवार सरसत हैं॥
'लाल बलबीर' जू नें जब सों निहारे तब,
ही सों री सुजान कान हेर हरसत हैं।
प्यारे सटकारे केस असि ही सुढार राधे,
झूम झूम झूम आन जानु परसत हैं॥

(10)

चीकने चटकदार नीलमनि तें अपार,
अंधकार धूमधार के मनों सार हैं।
कैधों अलि गान हार कैधौं पन्नगी कुमार,
कैधौं सुकमर ये कलिन्दजा की धार हैं॥
'लाल बलबीर' मनमोहन के मोहन हैं,
सुखमा अपार मन करत बिचार हैं।
कैधौं मखतूल तार रूप सर के सिवार,
केधौं सटकारे प्यारे राधिका के बार हैं॥

(11)

चीकने चटकदार लहर लहर करैं,
हिय धीर धरैं लखैं ऐसे ना सिखी के हैं।
नेह रङ्ग रङ्गे कै सिगार रङ्ग ही के रङ्गे,
कै जे रङ्गराचे री कलिन्द नन्दनी के हैं॥
दास कहैं दयासिन्धु धीरज धरै या तन,
आनन्द करैया री सदां जे लालजी के हैं।

देख देख आली नैन करिये निहाली कैसे,
कारे कजरारे केस कीरति लली के हैं॥

(12)

सीस तें निकस अंधकार किसी धार चार,
हेर हारे केकिन की कांतन हरी के हैं।
अहिराज हारे अलिगन दल डारे केते,
नील नग ढारे तारे कञ्ज अलसी के हैं॥
दास कहैं ऐसी ना कलिन्द नन्दनी की धार,
असित जलज हैं न लाल गंडकी के हैं।
देख देख आली नैन करिये निहाली कैसे,
कारे कजरारे केस कीरति लली के हैं॥

## शीश-फूल-वर्णन

(13)

कैधौं स्याम घन पै बिराजौ री मराल बाल,
असित सरोजन पै जुगनू को डेरो हैं।
कैधौं अहि कुंडली बनाय मन लाय धरी,
कैधौं धुरवा पै उडगन कौ बसेरो है॥
कैधौं सिव जटा मध्य विष्णुपदी को निवास,
'लाल बलबीर' लख लाल मन चेरो है।
कैधौं निसि मण्डल में प्रगटयौ है इन्दु आय,
कैधौं सुख साधे राधे सीस फूल तेरो है॥

(14)

कोमल अमल भल चरन बिलोक सोक,
बारिध बुड़ानी सुरझानौ अरविन्द है।

तार सी चलत लंक केहरि बिलोकि संक,
मधु भरी चालन पै थकित गमंद है॥
'लाल बलबीर' मुख सुखमा अपार राधे,
उपमा लजानी जगमगात अमंद है।
तेरे सीस सीसफूल ऐसौ छबि देत आली,
जैसे स्याम घन में प्रकास फेर चन्द है॥

(15)

कुहू की कुमारि नीलमनि की कतार है,
कलिन्दजा की धार कोटि सुखमा धरैनी हैं।
पन्नगी नगी हैं किधौं दीपसिखा ही है किधौं
अलग ह्वै धार चली ससि सों रिसैनी हैं॥
'लाल बलबीर' रतिनाथ की छरी हैं किधौं,
लाल नन्दलाल जू कौ मन हरलैनी है।
अलिगन सैनी है कि तम घन रैनी हैं ये,
किधौं सुख साधे राधे रावरी ये बैनी हैं॥

(16)

कैधौं अरविन्दन की लैन मकरन्दन कौं,
सिमटे सुहावनी अलिन्दन कौ वृन्द हैं।
कैधौं निसि पति कौं मिलन आई सुखदाई,
हिय हरषाई छबि दीपति अमन्द हैं॥
'लाल बलबीर' तेरी बैंनी कौं बिलोकि राधे,
सुखमा अगाधे लाल जू के भ्रम फन्द हैं।
कैधौं मुखचन्द्र सों सुधा कौं पियें मन्द मन्द,
लहर लहर पाछैं करत फनिंद हैं॥

# माँग वर्णन

(1)

कैधौं स्यामघन माहिं उड़त मराल बाल,
सहित कतार हेर सुखमा अपारा है।
कैधौं तम पुंज कौं बिदारन सुधाकर नें,
लाय धरौ सीस चारु चामीकर आरा है॥
'लाल बलबीर' छबि निरख जुड़ाने नैन,
आवत न बैन मुख प्रेम फन्द डारा है।
स्यामा तेरी मोतिन सों मांग भरी राजत है,
मानों गिरि नील श्रृंग विष्णुपदी धारा है॥

## पाटी वर्णन

(1)

उन्नत उरोज ढाँप राखे कंचुकी में मनो,
सुन्दर अमोल गोल नट के बटा हैं जे।
चंचल चपल चारु पलकें सुढार मानों,
सान धरें राजैं चारु काम के पटा हैं जे॥
'लाल बलबीर' मुख सुखमा अगाधे राधे,
हरैं जग बाधे लाल मन कौं सटा हैं जे।
इंगुर की मांग मध्य राजैं जुग ओर पाटी,
तड़िता समेत मानों सामल घटा हैं जे॥

## बन्दनी वर्णन

(1)

कैंधौं रूप सागर पै चेंटुआ मरालन के,
राजत सुढार बाड़ परमा बिलंदनी।
कैंधौं सोम व्योम मध्य पूरन निसा कौ जान,
तोरन तनाय सीस तारन अमंदनी॥
'लाल बलबीर' मनमोहन सुजान राधे,
रीझ रहे देख जे परैया प्रेम फन्दनी।
प्यारी सुख कन्दनी हरैया तम दंदंनी ये,
राजत बिसाल भाल मोतिन की बंदनी॥

## बैनी वर्णन

(1)

कैंधौं भूमि नन्दन निकन्द तम वृन्दन कौं,
लीनों ससि गोद मोद उर में धरेना हैं।
कैंधौं चारु चंपक के दल ले सजीले स्वाफ,
बैठी आन कीनों बीर बधूटी बिछोना हैं॥
'लाल बलबीर' हेर मोहन रसिक राय,
सुखमा अथाय कहैं मन कौं हरेना हैं।
राजत अमोल गोल करत किलोल तेरौ,
मानिक जटित भाल चामीकर बेना हैं॥

# भाल वर्णन

(1)

चामीकर चौकी में प्रगट जोति हीरन की,
कैंधौं मन बैठक अनूप लाल जी की है।
कैधौं छीरनन्दन प्रघट अष्टमी कौ नीकौ,
सीतल करन हेर दृष्ट सब ही की है॥
'लाल बलबीर' उर करत बिचार चारु,
सुखमा अपार उपमा की दुति फीकी है।
भा हू रती की है न रमा रमनी की ऐसी,
राजत विसाल भाल कीरति लली की है॥

(2)

कैंधौं अरविन्दन की लैन मकरन्दन कौं,
अलिन कौ वृन्द जे समाज साज बैठौ है।
कीरति किसोरी चित चोरी गोरी भोरी तोरी,
भृकुटी निहार भ्रम लाल आज बैठौ है॥
'लाल बलबीर' अबै कहैं कर जोरी मोरी,
ऊकत सुनोरी उर एही काज बैठौ है।
बदन मयंक आज राह रन जीतबे कौं,
कौन सर भ्रकुटी कमान साज बैठौ है॥

# लट वर्णन

(1)

फूले बारिजात की गहन मकरन्द वृन्द,
सिमट सुहावनी अलिन पाँति आई है।
कैधौं कुल त्याग पन्नग कुमारी प्यारी,
सरद ससी पै अमी पीवन कौं धाई है॥
'लाल बलबीर' बाढ़ी सुखमा अपार राधे,
हेर हेर प्रीतम की अखियाँ सिराई हैं।
बदन सलोल में कपोल गोल गोल प्यारी,
तिन पैं सुजान किधौं लट लटकाई हैं॥

(2)

आई गेह त्यागि कें अधर रस लैन हेत,
लहर लहर धीरें धीरें सटकत हैं।
लीक हैं सिंगार की सी कलिन्दजा धार की सी,
हेर नन्दलालन के नैंन अटकत हैं॥
दास कहैं नई नई चढ़त तरंगें चाउ,
चहत न संगे अंग अंगे झटकत हैं।
चीकनी चटकदार गंडन के तीर राधे,
कारी सटकारी त्यारी लट लटकत हैं॥

(3)

नागिन लली हैं कैं सिंगार लीक ही हैं अलि,
गन की लरी हैं चित हेर झटकत हैं।
अंधकारनी हैं कै हिरन तारनी हैं आली,
कै जे ससि ही तें रस हेत अटकत हैं॥
दास कहैं लाल नन्दलाल जी के नीके हित,
ही के जे अनन्द दैन हारी सटकत हैं।
चीकनी चटकदार गंडन के तीर राधे,
कारी सटकारी त्यारी लट लटकत हैं॥



# बेंदी वर्णन

(1)

राधे भाल रावरे अमद बिन्द बन्दन कौं,
कैधौं अरविन्द पै सुधा कौ बिन्द राखौ आन।
कुन्दन पटी पै किधौं चुनी कौं प्रकास खास,
कैधौं मुकर पै मानिक धरी सुजान॥
'लाल बलबीर' बाढ़ी सुखमा अपार प्यारी,
जिनैं देख रीझे मनमोहन सुजानकान।
कैंधौं सिन्धु नन्दन मयंक महाराज जू की,
मोद भरी गोद में मही कौ पूत बैठौ आन॥

(2)

कीरति कुमारी सुकमारी त्यारी भाल मध्य,
केसर की विन्दका की सुकमा बढ़ी सुजान।
पुरट सिला पैं पुखराज कौ निवास खास,
कैंधौं प्रगटी है गऊ मोदक की आन खान॥
'लाल बलबीर' मोहि राखे नन्दनन्द प्यारे,
टरत न टारे छैल प्रान धन मन मान।
कैंधौं बार जात मध्य चंपक कली है भली,
कैधौं ससि सेज बिछायौढो सुर गुरु आन॥

(3)

सोभा के सदन में धरी हे नीलमनि किधौं,
कैंधौं अल चेंटुआ गुलाब में दुरानों है।
पूरन मयंक जगमगत असंक तापै,
किधौं ये कलंक ही कौ अंक दरसानों है॥
'लाल बलबीर' कैधौं सुरसों ससंक ह्वै कें,
हेम गिरि रजनी जमाव आज मानों है।
प्यारी तेरी भाल पै अमन्द मृगमन्द बिन्द,
देख देख राधे मनमोहन लुभानों है॥

(4)

जा दिन तें हेरे नँदनन्दन रंगीले छैल,
तादिन तें किये लाल जतन घनेरे हैं।
लालसा लगी री रहै छिन छिन देखन की,
रसना तिहारे जस रटत घनेरे हैं॥
दास कहैं दरसन दीजिये दया की सिन्धु,
कीजिये निहाल लाल ठाड़े चल नेरे हैं।
कारे अनियारे कजरारे रतनारे राधे,
चंचल चलाक ऐंड़दार नैंन तेरे हैं॥

(5)

खञ्जन खिजाने हार कानन सिधाने हेर,
जलज लजाने किये अलिगन चेरे है।
झिक झहराने जल तल ही धराने रहैं,
तीक्षन अनग जी के सर गर गेरे हैं॥

दास कहैं जेते हैं हिरन ताके जेर की ये,
ललन नें सरी ये अनंद देन हेरे हैं।
कारे अनियारे कजरारे रतनारे राधे,
चंचल चलाक ऐंड़दार नैंन तेरे हैं॥

(6)

खञ्जन खिस्याने से लजाने गये कानन री,
चंचलता हेर कें अदां की चाल हारे हैं।
झिक झहरानी सीसकानी रही जल तल,
चीकनी चटकतान हेर अंग गारे हैं॥
दास नैंक ताके जे छिद्त नैन ताके जे,
अनंग सर ताके ताते ताके अनियारे हैं।
कीने नँदनन्दन अधीन रस लीन राधे,
चंचल चलाक चटकीले नैन त्यारे हैं॥

(7)

जंगी हैं हटीले हैं कटीले जंग जीतन को,
नेक ही निहारे तें अनंग सरथाके हैं।
चंचल चलाक चटकीले हैं रंगीले छैल,
छैल के छलैया हैं सनेह रस छाके हैं॥
दास कहैं कंजन के खञ्जन के गंजन हैं,
रंजन धनी के हैं धरैया धीरता के हैं।
जाहिर जहान ऐंड़दार हैं अदां के झाँकें,
करन नसा के ताके नैन राधिका के हैं॥

(8)

टारे हैं टरे न कर जतन अनेक लीने,
नेक ही निहारत घायल कर डारे हैं।
डारे हैं जलज गार केते सर सरतन के,
खंजन खिस्याने अलि केते जिय हारे हैं॥
हारे हैं हिरन हहराने झहराने झेके,
दास कहैं ग्यान लख कानन सिधारे हैं।
धारे हैं धरारे तीखे सान धरे अनियारे,
नैन हैं कि तेरे जे अनंग के कटारे हैं॥



# नासा वर्णन

(1)

कीर गये कानन निहार कैं निकाई नीकी,
लाल नन्दलाल के निहारन की आसा है।
चीकनी चटकदार दिया की सिखासी खासी,
हेर हेर दासी हेर हेरन . हिरासा है॥
दास कहैं धन्य करनी ये करता की ताकी,
रची करताकी कहा जन्त्र ले निकासा है।
कीया रंग खासा कंत दिल की दिलासा,
सदां आनंद की रासा आली राधिका की नासा है॥

(2)

नासा हैं अली जे दास दासिन के त्रासन की,
सदां हीं करत निज जनन के हांसा है।
हांसा हैं ये हेर हेर लाल नन्दलाल जी के,
नैक ना निहारे छैल हाल ही निसासा है॥
रासा है री दास कहैं अष्ट सिद्ध निद्धि की,
धीर की धरैया है करैया जस खासा है।
खासा है तेज नीका झलझलात रैन दिना,
सहित अलंकृति श्रीराधिका की नासा है॥

(3)

कंचन की बेली सी नबेली अलबेली चाल,
गरब गहेली गजराज कौ नलैठो है।

उन्नत उरोजन पै आंगी कसि बाँधी तागी,
मानों काम जोबन को बटुआ समैठो है॥
'लाल बलबीर' बेनी पीठ पै डुलत मानों,
कदली के पत्र नाग फिरै ऐंठो ऐंठो है।
बेसर अमोल करै मुख पै किलोल मानों,
चन्द रखवारी कीर चक्र लिये बैठो है॥

(4)

कारे मतवारे घुंघरारे हैं लछारे बार,
नैंन कजरारे लाग भरी है सनेह की।
चन्द सौ मुखारविन्द झलकै अमन्द सदां,
कनक लता सी छबि कहूँ कहा देह की॥
'लाल बलबीर' लखे लोनी लचकीली लंक,
केहरि के संग उर भूलै सुध गेह की।
सारी फुलवारी में झलक झलकत नीकी,
बर्नत बनै न छबि बेसर के बेह की॥

(5)

अतर अनहाय साजे उभै दस आभूषण,
सीस सीसफूल मन बेंदी भाल धर हैं।
गरैं गुलीबन्द बाजूबन्द पहुँची हैं कर,
छला कटि किंकनी की झनक मन रहैं॥
'लाल बलबीर' पग पायजेब बिछिया हैं,
नीबी कटि किंकिनी की झनर **मनर** हैं।

नासिका बुलाख मोती झूमि झुकि झोटा लेत,
मानों रूप सिंधु में सुहावनी लहर हैं॥

(6)

कैधौं रूप सागर की सीप हैं सुहौनी लौनी,
तामैं काम कारीगर किये छिद्र आन हैं।
तामें जातरूप के अनूप जुग धारे प्यारे,
जागत जड़ाऊ नव रतनन की खान हैं॥
'लाल बलबीर' तेरे कानन तरौना राधे,
रीझत गुपाल हेर सुखमा महान हैं।
सान भरी छूटी लट तिन पै झलूमी आन,
सामल घटा में मनों छिपे उभै भान हैं॥



# कपोल वर्णन

(1)

जोबन महीपति की कैधौं ये बिहार भूमि,
कैधौं चटकीले चारु मुकर अमोल हैं।
कनक लता में किधौं बिकसे सुमन जुग,
कोमल अमल भल सुखमा अतोल हैं॥
'लाल बलबीर' मनमोहन के मोहन हैं,
जोहन करत लाल लेत मन मोल हैं।
गोरे गोरे गोल अरुनाई भरे राजैं तेरे,
कैधौं सुख साधे राधे नवल कपोल हैं॥

(2)

भरे अनुराग प्रीति रंग में रंगे अभंग,
मानों गरबीले छैल रन के अडोल हैं।
गहरे गुलाबी आबी चमकत आरसी से,
पूरन अमी से ये गुलाब उर छोल हैं॥
'लाल बलबीर' जू के प्रानन के प्यारे भारे,
रूप के उजारे उर करत किलोल हैं।
गोरे गोरे गोल गोल सुखमा अतोल राधे,
कैधौं सुख साधे राधे नवल कपोल हैं॥

(3)

कैधौं रतिराज के खिलौना हैं खिलारी खूब,
कनकलता में कै सरोज जुग सरसैं।
जोबन जवाहर के खुले हैं खजाने किधौं,
रंक दृग देखन कौं बेर बेर तरसैं॥
'लाल बलबीर' चोखे चाह भरे झलमलात,
बेर बेर प्यारे कर फेर फेर हरषैं।
गोरे गोरे गजब गरूर भरे राजें गोल,
प्यारी के कपोल ये गुलाब सम दरसैं॥

(4)

काम के बटा से खासे चमकत चाह भरे,
अधिक उमाह भरे राजत अडोल हैं।
गेंदा से गुलाब से गहब गुल्ललालन सें,
कमल से कोमल हैं अमल अतोल हैं॥
'लाल बलबीर' चल देखिये सुजान किधौं,
मखमली रतनन की डिबिया अमोल हैं।
लेत मन मोल करैं मुख पै किलोल कैसे,
गोरे गोरे गोल गोल गोरी के कपोल हैं॥



# तिल वर्णन

(1)

कैंधौं रूप सागर में बिकस्यौ असित कंज,
कैंधौं विष्णुपदी माहिं जंबु फल गिस्यौ आन।
कनक लता में अहि सिमट बिराज्यौ किंधौं,
भ्रमर गुलाब मकरन्द पिये सुखदान॥
'लाल बलबीर' छबि निरखि लटू हैं भटू,
सुखमा निहारन कौं रहैं दृग हुलसान।
एरी गुन खान जान कीरति किसोरी तेरे,
नवल कपोल पै अमोल तिल दीप्तमान॥

(2)

जोबन नृपति ताकौ राजै दरवान किंधौं,
किंधौं गंग बीच अलसी कौ पुष्प गेरौ हैं।
आनन मयंक पर राजत कलंक किंधौं,
किंधौं बिधना की रोसनाई को उजेरौ हैं॥
'लाल बलबीर' हेर मोहन मगन किंधौं,
कनक पटी पै नीलमनि को बसेरौ हैं।
कीरति कुमारी सुकमारी प्रानप्यारी किंधौं,
गोरे से कपोल पै अमोल तिल तेरौ हैं॥

(3)

कैंधौं हिमगिरि पै विराज्यौ आय स्याम घन,
कैंधौं अलि कियौ पुंडरीक पै बसेरौ है।
कैंधौं अहि मनि पै विराज्यौ पूत पन्नग कौ,
कैंधौं निसि तम कौ मुकर पर डेरौ है॥
'लाल बलबीर' छबि देखत मगन भये,
कैंधौं ये मयंक ने कुरंग किंयौ चेरौ है।
कीरति किसोरी चितचोरी गोरी भोरी कैंधौं,
गोरे से कपोल पै अमोल तिल तेरौ है॥

## अधर वर्णन

(1)

मानिक मलीन किये चुन्नी नग दीन किये,
दाडिम दलैया हैं लजैया बिम्ब ही के हैं।
इन्द्र की वधू के गुंज हू के औ कसुंभ हू के,
लोहित अमल जलजात गात फीके हैं॥
'लाल बलबीर' जू के चमकत चाह भरे,
सुखमा अथाह भरे ऐसे ना रती के हैं।
पूरित अमी के पीके आनन्द करैया जी के,
लाल लाल नीके ये अधर स्वामिनी के हैं॥

(2)

मोतिन की हीरन की पन्ना पुखराजन की,
लालन की ल्हैसन की कांति परिहरी है।

बिंब की प्रवालन की लालन गुलालन की,
विस्व की ललाई लै इकत्र बिधु करी हैं॥
'लाल बलबीर' जू कौ मन हरबें कौं राधे,
सबै सुख साज राज सौंज तुम भरी हैं।
ऊख की पियूष की मयूष की मधुरताई,
एती सुभताई अधरन माहिं धरी हैं॥

## दसन वर्णन

(1)

जोबन उजारी प्यारी बैठी आन चित्रसारी,
अंग सुकमारी साज जरी के बसन हैं।
नासिका सुढारी तामें बेसर है मोरवारी,
तैसी झूमकी में गजमोती की लसन हैं॥
'लाल बलबीर' अंग बाढ़ी सुखमा अपारी,
तैसी मन्द मन्द चारु हीरा सी हसन हैं।
चन्द से बदन में अमन्द छबि झलकत,
देखौ प्रान प्यारे कैसे प्यारी के दसन हैं॥

(2)

चंचल चपल ऐंड़दार मतवारे कारे,
सेत लाल प्यारे नैन मैन मद भरे हैं।
अधर रसाल लाल लाल सुधा पूर लाल,
कमल गुलाब बिंब फल हू सों खरे हैं॥

'लाल बलबीर' चल देखिये गुपाल लाल,
प्यारी जू के रदन अनूप ढार ढरे हैं।
मेरे जान मोतिन की माल हीरा लाल मैन,
जौहरी ने मानिक डिबा से खोल धरे हैं॥

(3)

कैंधौं सिन्धुनन्दन के क्रीट सीस हीरन कौ,
किंधौ उरगन की जमात पास ढरी हैं।
किंधौं बारिजात मांहि कुन्द की कली हैं भली,
कोमल अमल झलकत रूप भरी हैं॥
'लाल बलबीर' कैंधौं दसन की पाँत राधे,
देख उर भ्रांति लाल जू की मति हरी हैं।
मेरे जान मैन जड़ी विद्रुम पटी में आन,
बीन कें नवीन नोंनी मोतिन की लरी हैं॥

(4)

कैंधौं रूप सागर में कुन्द की कली की भली,
अवली सजी हैं सम सुखमा न आन हैं।
कैंधौं वारिजात माहिं दाड़िम दरार खाय,
छिप्यौ अकुलाय कीर ही सों त्रास मान हैं॥
'लाल बलबीर' छबि निरखि निराली आली,
रीझै बनमाली छैल मोहन सुजान है।
प्यारी तो हँसन में दसन छबि देत ऐसे,
बिद्रुम के बीच मनों हीरन की खान हैं॥

## रसना वर्णन

(1)

कैंधौं मनमोहन की मोहनी रची है विधि,
निसरे अनूप बानी मानौं अमी घुरी है।
सुनत सुजान कान्ह बिबस भये हैं आन,
मन हू में मैन ऊदीपन की अंकुरी है॥
'लाल बलबीर' हेर रसना तिहारी प्यारी,
मेरे मन उपमा अनूप आन फुरी है।
ग्रीषम की बात तें सकात बीरबधू तासों,
लोहित कमल दल मध्य आय दुरी है॥

## वाणी वर्णन

(1)

मधुर मधुर मन्द मन्द बतराती तबै,
मानों तान मोहनी की बीन में बजाती हैं।
सुनि सुनि कानन में कानन में हास भरी,
दिसि दिसि सुरभीन यूथिका भजाती हैं॥
'लाल बलबीर' रीझे मोहन रसिक राय,
समता न पाती हेर कोकिला अजाती हैं।
जाती है न मोसों कछु सुखमा बखानी राधे,
तेरी सुन बानी बानी बानी की लजाती हैं॥



# मुख सुगन्ध वर्णन

(1)

मन्द मन्द हँसत अमंद मुखचन्द ही सों,
बारिज विकास की सुबास सरसाती हैं।
दिसि दिसि द्वार द्वार वीथी व्रज-मंडल में,
अतुल अखण्ड राधे घटा बगराती हैं॥
'लाल बलबीर' सार केतकी गुलाब जुही,
केंवड़ा कदम्ब गुलदाबरी सकाती हैं।
मोरछली मोतिया चमेली चंपा खस जुही,
पानड़ी सुहाग एला बेला की लजाती हैं॥

(2)

वाकौं मुख देखैं चौथ लागत कलंक अंक,
याकौ मुख देख टरै कोट जग फन्द है।
वदन निहार बाकौ सुकृत हिराय जाय,
इनकौं निहार बढ़ै आनन्द कौ वृन्द है॥
'लाल बलबीर' एक ही तें छबि छीन बाकी,
इनकौ प्रकास जगमगत अमन्द है।
कोट कोट चन्दमुख मन्द होत याके आगें,
देखौ व्रजचन्द कैसो राधा मुखचन्द है॥

(3)

जाकी सुख दैनी बैनी लहर लहर करैं,
चकित ह्वै चितै जात चौंकत फनिन्द है।

चंचल चपल अनियारे नैन मतवारे,
ताके नोंकझोंकन अनंग सर बन्द है॥
'लाल बलबीर' लोनी लफे लचकीली लंक,
केहरि के संक दाबें गवन गयंद है।
कोटि कोटि चन्द मुख मन्द होत याके आगें,
देखौ ब्रजचन्द कैसो राधा मुखचन्द है॥

(4)

वाकौ तौ प्रकास पूर पूरन निसा में होत,
इनकौ प्रकास सर्व दिवस निसा में है।
सीतलता बाकी तौ प्रगट चार जामैं याको,
सहित सुगन्ध सों प्रकास आठ जामें हैं॥
'लाल बलबीर' बाकौं दोज कौं प्रनामें याकौं,
चौधेहु भुवन करैं निसि दिन प्रनामें है।
देखौ नँदनन्द सुखकन्द व्रजचन्द प्यारे,
राधा मुखचन्द की न चन्द समता में है॥

(5)

कोऊ कहै स्वामिनी कौ बदन निंसाकर सो,
अङ्ग अङ्ग पातक अनेक बहु वामें है।
पूरन निसा ते कला दिन दिन छीन ताकी,
जिनकी कला तौ छिन छिन अधिकामें है॥
'लाल बलबीर' त्रास राहु की सतामें बाकौं,
राबरे ही प्रेम कौ हुलास बहु यामें है।
देखौ नँदनन्द सुखकन्द व्रजचन्द प्यारे,
राधा मुखचन्द की न चन्द समता में है॥

(6)

गवन गयंद की गमाई गरुताई सबै,
केहरि ते लंक हीन स्वामिनी घनेरौ है।
बोलन हँसन मुसिकन चितवन आगें,
वृन्दारिक नारिन को दर्प गार गेरौ है॥
'लाल बलबीर' छबि देखिये सुजान प्यारे,
जाके पद कंजन कौं भृङ्ग मन मेरौ है।
राधे के वदन सुख सदन अदन आगें,
कमल कमन लागे चन्द होय चेरौ है॥

## चिबुक-बिंदु वर्णन

(1)

सुखमा सरोवर में फूल्यौ बारिजात किंधौं,
हेत मकरन्द के भ्रमर वास कीनों है।
कैंधौं रति रानी के मुकर पै अमोल गोल,
राजत कनूका नीलमनि कौ नवीनों है॥
'लाल बलबीर' राजैं सुखमा अगाधे राधे,
कैंधौं विधि बसीकर्न जन्त्र लिख दीनों है।
सुन्दर अमोल करै नथ सों किलोल तेरे,
चिबुक के बिन्द ने गोविन्द बस कीनों है॥

(2)

कैंधौं चतुरानन करी है चतुराई चारु,
जाकी छबि हेर फेर लगे जक्त फीकौ है।

सहित सुबास को सरीर है सुभग कैंधौं,
कैंधौं आय बैठ्यौ धाय चेंटुआ अली कौ है॥
'लाल बलबीर' मंजुताई स्यामताई आगें,
नीलमनि नीकौ है न पुष्प अलसी कौ है।
देखौ नन्दनन्द सुखकन्द व्रजचन्द कैसौ,
चिबुक कौ बिन्दु वृषभानुनन्दनी कौ है॥

## चिबुक वर्णन

(1)

सुन्दर सुढार तेरी चिबुक कुमारि राधे,
प्यारे व्रजराज कौ दिवैया है अनन्द की।
बारौं री गुलाब ये रसाल फल सों बिसाल,
एरी प्रतिपाल ये परैया प्रेम फन्द की॥
लेत रस सार चारु सदां ही अधार हैं ये,
'लाल बलबीर' जू के कर अरविन्द की।
सुखमा आनंद उर करत विचार वृन्द,
आनन्द कौ कंद कै सिरी है मुखचन्द की॥

## ग्रीवा वर्णन

(1)

कैंधौं रूप सागर में फूल्यौ बारिजात ताकी,
सुन्दर सुहावनी मृनाल सुख दीवा है।
कैंधौं मनमोहन सुजान प्रान प्रीतम की,
भुज की अनूप रूप सेज-सुख सीवा है॥

हारे कंबु हेर री सकल दंभ दूर कीने,
कीने बस 'लाल बलबीर' प्रान जीवा है।
जीवा मोहिबे की कोटि सुखमा धरीवा प्यारी,
कैंधौं सुकमारी राधे रावरी ये ग्रीवा है॥

(2)

कीरति कुमारी सुकमारी प्रानप्यारी तेरौ,
सुन्दर अमल मुखचन्द तें उजाला री।
सुन सुन बानी बानी रानी की लजानी रानी,
कोकिला सकानी सुन भयौ तन काला री॥
'लाल बलबीर' मनमोहन जगत कौ री,
सोऊ देख मोह्यौ अङ्ग सुखमा विसाला री।
राजत जड़ाऊ तेरैं हार गरैं रतनन की,
कंचन लता में मनौ जगी दीपमाला री॥

## पीठ वर्णन

(1)

कैंधौं सुरलोक की बनी हैं ये सुघाट बाट,
हेर हेर आभा कलधौत की बिलाती है।
कैंधौं रूप भूप के भवन की दीवाल दीह,
देत सुख जीय बिज्जु ही सी दमदमाती है॥
'लाल बलबीर' किये मुकुर मलीन दीन,
सुखमा अपार हेर उपमा लजाती है।
कीरति कुमारी सुकमारी प्रान प्यारी किधौं,
जादूगर पीठ दीठ लाल की चुराती है॥

## भुजा वर्णन

(1)

कैंधौं मनमोहन के अंसन की भूषण है,
दूषण हरैया प्रेम मदन विकासनी।
कैंधौं रूप लतिका में प्रघटी अनूप बेल,
एक रंगरेल मेल परभा प्रकासनी॥
'लाल बलबीर' दासी कोक की कला सी खासी,
रहत हुलासनी सनेह जाल फाँसनी।
प्रीतम पिया के तन मन कौं लपेटें लेत,
सुख की सकेत तेरी भुज सुख रासनी॥

(2)

बदन मयंक राजैं हीरा सी हँसन छाजैं,
दसन की पाँति नीकी मुकतन माल सी।
सुधा सम बोल हैं गुलाब से कपोल गोल,
लोचन बिलोल स्याम बैनी बनी ब्याल सी॥
'लाल बलबीर' प्यारी अंगन की छबि न्यारी,
अमित उजारी नव रत्नन की माल सी।
नाभी रस ताल पग परभा प्रबाल सी है,
कुच फल ताल सी हैं भुज हैं मृनाल सी॥

## करतल वर्णन

(1)

प्यारी जू के करतल लालन निहारौ चल,
लोहित अमल मखमल हू सों खरी है।

रेखा सुभ सोहत छबीली छबि मोहनी है,
जोहत ही कहौगे अतूल सुख भरी है॥
तामें बहु राजत अमन्द मँहदी के बुन्द,
उर 'बलबीर' उपमा की बेलि फुरी है।
आलस बलित इन्द्रबधु के बिराजे वृन्द,
सैन हेत मानौं सेज पंकज की करी है।।

(2)

प्यारी जू के कोमल कमल से करन माहिं,
पृष्ठ मूल सुखमा अतूल है मनीन की।
दस नख चन्दन की मेंहदी के बुन्दन की,
प्रगटी अमन्द प्रभा उपमा मलीन की॥
'लाल बलबीर' हेर छिन में अधीर ह्वै हौ,
भूल जैहो सुध तन मन बेनु बीन की।
आरसी छलान की छबीली छबि हेर हेर,
लाल अंगुरीन की जड़ाऊ मुदरीन की॥

## कुच वर्णन

(1)

किधौं काम भूप के खिलौना जुग लोना सोना,
उमग उठोना रति रंगबीर नेरे हैं।
श्रीफल अनार मठ उलटे नगार कुंभ,
संतरा सुरंगन के दर्प गार गोरे हैं॥
'लाल बलबीर' जू नें जब ही सों हेरे,
तब ही सों ए सुजान जू के भये दृग चेरे हैं।

एरी सुकमारी वृषभान की दुलारी प्यारी,
बसीकर्न टोना ये उरोज जुग तेरे हैं॥

(2)

कंचन कलस किंधौं अमल प्रकासित हैं,
जुगल समान ये अमी सों भर राखे हैं।
कैंधौं रति रानी मेन भूप के रिझायबे कों,
सुघड़ सलोना ये खिलौना धर राखे हैं॥
'लाल बलबीर' किंधौं जोबन खिलारी बैस,
पिंजरा में चकवा के बाल ढर राखे हैं।
प्यारी स्याम कंचुकी में उमगे उरोज तेरे,
इनने बिहारी कौं बस कर राखे हैं॥

(3)

कैंधौं हेम कलस पीयूष भरे सोभित हैं,
कैंधौं फल ताल के सुढार ये सुहाने हैं।
कैंधौं हैं अनार किंधौं संतरा बहारदार,
रचे करतार ढार चकवा लजाने हैं॥
'लाल बलबीर' कैंधौं उरज कठोर जोर,
इनकौं बिलोकि राधे मोहन लुभाने हैं।
कैंधौं काम भूप बसे रूप बाटिका में आय,
सुरख बनात के सिमाने दोय ताने हैं॥

(4)

कैंधौं प्रानप्यारी जू के उरज अतोल गोल,
कनक लता के फल सुन्दर सुहाने हैं।

कैंधौं प्रान प्रीतम खिलारी की जुगल गेंद,
जिनैं हेर हेर कें अनन्द मन माने हैं॥
'लाल बलबीर' कैंधौं चकवा चटकदार,
कूही कौ बिलोक और दौर आ दुराने हैं।
कैंधौं काम भूप बसे रूप बाटिका में आय,
सुरख बनात के सिमाने दोय ताने हैं॥

## रोमराजी वर्णन

(1)

कैंधौं नाभि कूप तें निकरि कै पै पान हेत,
कंचन कलस सों पिपील पाँति भाजी हैं।
कैंधौं रूपसागर में लहरै उठत तामें,
कंत मन बाट परबे कौ नाव ताजी हैं॥
कैंधौं छबि भूपति की सेज पै सिंगार रेख,
इन्हें देख नैनन की गति मति भाजी हैं।
भये लाल राजी सुख साजी है उदर पर,
कैंधौं प्रानप्यारी ये तिहारी रोमराजी हैं॥

## त्रिबली वर्णन

(1)

कैंधौं रूप सागर में नागरि नवेली लौनी,
परम सुहौनी ये लहर सुखकारी हैं।
कैंधौं पिय नैनन की बीथी ये अनूप सोहैं,
सुखमा अपार सर्व उपमा लजारी हैं॥

'लाल बलबीर' मनमोहन मगन भये,
तनक निहारी तन सुधि लै बिसारी है।
ये री सुकमारी मुखचन्द उजियारी किंधौं,
कोमल उदर पर त्रिवली तिहारी हैं॥

(2)

गोरी गरबीली तेरौ गवन गरूर भर्‌यौ,
तरुन गयंदन कौ मन मद भर्‌यौ है।
चन्द तें अमन्द मुख परभा प्रकासित है,
अङ्ग अङ्ग मानो सर्व सांचे ही में ढर्‌यौ है॥
'लाल बलबीर' मनमोहन सुजान कान्ह,
बस कर राखे भाल भूरि भाग भर्‌यौ है।
एक पेच परे कोऊ निसरै जतन मन,
ललन त्रिभंगी तेरी त्रिवली में पर्‌यौ है॥

## उदर वर्णन

(1)

कैंधौं प्रेम भूप के विराजन की थली भली,
कैंधौं रंगरली अली सुखमा सहेट है।
कैंधौं रूप बैठ्यौ रोम राजी कर सक्ति लिये,
नाभि सर जंत्रन कौं मालन चपेट है॥
'लाल बलबीर' चामीकर सौ चमंकै चारु,
चीकनों परम नवनीत कौ लपेट है।
कमल गुलाब मखमल सौ नरम लाल,
मन कौं लपेट लेत प्यारी तेरौ पेट है॥

## नाभि वर्णन

(1)

कैंधौं रूप चोर की गुफा है बिमला है भली,
कैंधौं मोहनी नें ये सुघाट बाट करी है।
जोबन भवन कौ दुआर दीह कैंधौं यह,
सुखमा अमंद उपमा की दुति हरी है॥
'लाल बलबीर' नेही नेह को अन्हावन कौं,
सरस सुहावनी सिंगार रस भरी है।
नागर नवेली अलबेली रंगरेली तेरी,
कैंधौं सर नाभी लाल मान मन हरी है॥

## लंक वर्णन

(1)

कोऊ कहै लंक है कि जंत्र मन मोहनी कौ,
कोऊ कहै विद्या वर जादूगर भरी है।
कोऊ कहै वार सी सिवार सी है तार सी है,
कोऊ कहै नृपति अनंग कर छरी है॥
'लाल बलबीर' मेरे जान अनुमान ये ही,
केहरि गुमान दागबे कौं बिधि करी है।
गोरी तेरी कमर कुमर ब्रजराज हेर,
छीन अति संक उर लालन की परी है॥

## जघन वर्णन

(1)

कैंधौं मनमोहन के आलय जुगल थंभ,
कैंधौं रंभ तर उलटारे लाय धरे हैं।
गोरे गोरे चीकने चमक चारु चपला से,
कोमल अमल मंजु सुखमा सो भरे हैं॥
'लाल बलबीर' जू के मन के हरैया
रूप-जाल के परैया छैल हाल बस करे हैं।
गोरी तेरे जंघ जंग जीतत अनंग रंग,
प्रीति ही के रंग जुग सांचे ढार ढरे हैं॥

## गुल्फ वर्णन

(1)

गोरे गोरे गोल गोल गजब गरूर भरे,
नूर भरे नाजुक निहार नैन ललकैं।
चरन कमल ही के संग ही जनम लीने,
छैल बस कीने भूल लागत न पलकैं॥
'लाल बलबीर' बीर बांके रनधीर केते,
उपमा अधीर करी लुंज दलमलकैं।
कीरति किसोरी चित चोरी स्याम रंग बोरी,
गोरी तेरे गुल्फ गुलाब सम झलकैं॥

(2)

आनन है चन्द सो गयंद सों गवन मन्द,
बैनी है फनिन्द पन्नगी सी चारु अलकैं।

भृकुटी पिनाक सुक की सी है सुढार नाक,
मैन सर आंख औ पटा सी चारु पलकैं॥
'लाल बलबीर' राजैं कुन्द से दसन हेर,
सुधा सी हँसन लालजी को मन ललकैं।
कीरति किसोरी चित चोरी स्याम रंग बोरी,
गोरी तेरे गुलफ गुलाब सम झलकैं॥

## नूपुर वर्णन

(1)

नूपुर अनूप रूप जातरूप गाजैं साजैं,
झुनर मुनर हेर रागनियाँ लाजैं हैं।
कोमल चरन पुंडरीक के बरन तामैं,
भूषन अगन मन मानिक के राजैं हैं॥
'लाल बलबीर' बाढ़ी सुखमा अगाधे राधे,
देख उर भ्रांति कांति दामिनियाँ लाजैं हैं।
त्रिभुवन जीत कें उछाह की उमंग मनौं,
मदन महीप जू की दुंदुभियाँ बाजै हैं॥

(2)

कोमल अमल मंजु कञ्ज से चरन तामें,
अष्टादस नूपुर अनूप जुग साजे बाल।
जगर मगर जोत फैल रही चारों ओर,
जटित जवाहर अमोल नग हीरा लाल।।
'लाल बलबीर' ये रसीले मन्द मन्द बाजैं,
इनकौ निहार हारैं राग रागनी के जाल।

कीरति कुमारी वृषभान की दुलारी प्यारी,
छबि कौं निहार त्यारी रीझ रहे नन्दलाल।।

## चरण वर्णन

(1)

जब चक्र रेखा धुजा कमल पहौप लता,
अंकुश बलय इन्दु छत्र के धरन हैं।
मीन रथ परबत गदा सक्ति संख बेदी,
कुंडल अनूप बेंदी पी मन हरन हैं॥
'लाल बलबीर' गुन गावैं ध्यान लावैं सदाँ,
रसिक प्रवीनन के उर आभरन हैं।
आनंद करन जन भ्रमना हरन बन्दौं,
नव दस चिह्न जुत राधे के चरन हैं॥

(2)

जो पै अरबिन्द से बताऊँ वृषभानुजा के,
सकुच निसा में तन कंटक धरैनं हैं।
विद्रुम चुनीन मन मानिक बताऊँ जड़,
कहा मृदुताई पाई सौरभ झरन हैं॥
'लाल बलबीर' नख चन्द से बताऊँ जौ पै,
दिवस मलीन बहु कालिमा भरन हैं।
उपमा न आवैं सम कोऊ दस चार लोक,
राधे के चरन ऐसे राधे के चरन हैं॥

## बिछिया वर्णन

(1)

राधे के चरण जलजात के वरन तामें,
भूषन अगन मन मानिक के राजे हैं।
दाडिम कली सों भली आँगुरी अँगूठन में,
दस नखचन्द्र देख चन्द दुती लाजे हैं॥
'लाल बलबीर' चामीकर के चमंकैं चारु,
बिछिया झनङ्क झीने झीने सुर गाजे हैं।
मेरे जान मदन महीप जू के द्वार आली,
बसीकर्न दुंदुभी रसीली आज बाजे हैं॥

## नख वर्णन

(1)

कनक लता में किंधौं विकसे नवीन पुष्प,
अमल अनूप राजै परभा बिलन्द की।
विद्रुम पटीन में जटी हैं किंधौं हीर कनी,
दाड़िम कली में प्रभा उडुगन वृन्द की॥
'लाल बलबीर' मति पाँगुरी भई है राधे,
कैंधौं आँगुरीन नख छबि है आनंद की।
कैंधौं बारिजात के दलन पै अमल भल,
अवली बिराजी आय कैंधौं चारु चन्द की॥

## एड़ी वर्णन

(1)

दाड़िम प्रसून हू की किंसुक कसूम हू की,
इन्द्र की बधून हू की परभा लजेरी हैं।
कमल गुलाब हू की मानिक प्रवल हू की,
बिंब औ गुलाब हू की दुति गार गेरी हैं॥
'लाल बलबीर' जपा जावक मजीठ हू की,
इंगुर सिन्दूर हू की भई गति चेरी हैं।
देखौ नन्दलाल चलि लाड़ली लडैती जू की,
एड़ी नग जाल लाल हू ते लाल हेरी हैं॥

(2)

कैंधौं तन मन्दिर के आभा चढ़ाबे की सीढ़ी,
मानिक चुनीन गुंज हू की दुति थाकी हैं।
कैंधौं रजोगुन की जुरी हैं आय रास खास,
पुरट घटा में किंधौं चंचला चमाकी हैं॥
कमल गुलाब इन्द्रबधू के बरन मंद,
भये भदरंग हेर सुखमा अदां की हैं।
ढाँकी हैं त्रिलोक की निकाई 'बलबीर' देखौ,
कैसी सुकुमार लाल एड़ी राधिका की हैं॥

(3)

मंजुल चरन नवनीत के बरन हरैं,
सुखमा नवीन जल जातन की जोरी की।

विमल अंगुली नख चंद तें अमन्द राजैं,
हीरा मुक्ता उड्डुगन रस दुति थोरी की॥
'लाल बलबीर' पायजेब जेब वारिजात,
रूप की झनंके हैं रसीली चित चोरी की।
देखौ नन्दलाल तबै ह्वै हौ जू निहाल हाल,
मानिक प्रबाल हू सौं एड़ी लाल गोरी की॥

## सर्वांग वर्णन

(1)

कोमल अमल भल राजत जुगल कंज,
कंज पर कदली अनूप छबि छाती है।
कदली पै केहरि सरोवर कपोत दोय,
तापर मृनाल कंबु बिम्ब झलकाती हैं॥
बिम्ब पर कुंदकली तापै सुक राजत हैं,
तापै सीस मीन धनु बंक दरसाती हैं।
तापै ससि 'लाल बलबीर' अर्द्ध सोहत हैं,
तापर फनिन्द नारि झूमि झोटा खाती हैं॥

(2)

बैन सटकारी भाल केसर की खौर धारी,
आखें कजरारी नथ नासा झलकारी हैं।
सीप से करन वारी बिंब अधरन वारी,
कंठ पलचरी भुज बलया सुढारी हैं॥
देखौ 'बलबीर' जू नवीन उरजन वारी,
नाभि सर वारी छीन लंक सुकुमारी है।

जंघें तरु रंभ वारी गवन गयंद वारी,
पग अरविन्द वारी कीरति दुलारी है॥

(3)

'लाल बलबीर' वृषभान की किसोरी जू के,
सौरभ समूह अंग अंगन तें बरसैं।
घेरदार घाँघरौ सुरंगी पचरंगी जंगी,
तंगी कुच कंचुकी नरंगी कसी करसैं॥
सारी नील सीस धारी जरी की किनारीदार,
तामें मुख सुखमा अनूप हेर सरसै।
सामल घटा में चारु चंचला चमंकै मनौं,
तामें पूर चन्द्रमा अमंद आज दरसै॥

## सुकुमारता वर्णन

(1)

विपिन विलोकन कौं प्रीतम के संग आई,
अचक अचक प्यारी पगन धरत है।
लचकि लचकि जाय कच कुच भारन तें,
लंक मुख मोर मोर सिसकी भरत है॥
'लाल बलबीर' सुकुमारी रूप उजियारी,
रंभा रतनारन की गुरुता हरत है।
जित मग ढरत परत छबि जाल हाल,
तित तित छिति दुति लोपित करत है॥

# महल वर्णन

(1)

उज्जल मृदुल मंजु मंडित मुकुर वृन्द,
हीरन खचित कल कुरसी सुसाजे हैं।
अरुन हरित नील पीत पाये मन भाये,
टोटे छात छज्जे मनि मानिक के भ्राजे हैं॥
परदे जरी के द्वार चाँदनी चँदोबा चारु,
झालर झमंक देख रवि दुति लाजे हैं।
विद्रुम पलंग मखमल की विछात तापै,
'लाल बलबीर' श्रीकिसोरी जू विराजे हैं॥

(2)

अतर लगाऊँ हुलसाऊँ श्रीकिसोरीजू के,
सीतल सुगंध नीर ही सों लै न्हवाऊँ मैं।
बसन नवीन पहिराऊ अङ्ग अङ्गन में,
सुमन समूह कच कबरी गुथाऊँ मैं॥
सीस फूल बंदनी करनफूल झूमकान,
चंद्रिका मनीन भाल बैना लै सजाऊँ मैं।
बीरी लै पवाऊँ पद पंकज में सीस नाऊँ,
'लाल बलबीर' दासी तबही कहाऊँ मैं॥

(3)

बदी मनि बेसर चिबुक नील कन बुन्द,
कंज से द्रगन माहिं अंजन अंजाऊँ मैं।

झूमर झमंक मनि पुरट सजाऊँ कंठ,
जब मुक्त पुष्पन की माल पहिराऊँ मैं॥
हीर हार चंद हार पन्नन हमेल चारु,
कंचुकी जरी की नीकी उरन धराऊँ मैं।
बीरी लै पवाऊँ पद पंकज में सीस नाऊँ।
'लाल बलबीर' दासी तब ही कहाऊँ मैं॥

(4)

श्रीवन निकुंजन में प्रीतम के संग प्यारी,
चाह भरी दीन जान दरस दिखाऔगी।
माल गुहि लाऊँ पहिराऊँ हरषाऊँ तबै,
निज कर पल्लव कौं सीस पै धराऔगी॥
'नीर भरि लावौ री पिवावौ हमैं आय धाय',
'लाल बलबीर' दासी टेर यों बुलाऔगी।
और कौन मेरी तेरी चेरी हौं मैं गोरी भोरी,
हा हा श्रीकिसोरी मोहि कब अपनाऔगी॥

(5)

श्री रंगदेबी अब मैं सरन तिहारी आई,
दीन जानि आप दृष्टि कृपा की ढरीजिये।
कुटिल कुबुद्धिनी मलीन हौं अधीन हौं मैं,
दया की निधान नहीं औगुन मनीजिये॥
'लाल बलबीर' दासी जानिये चरन ही को,
बिनती करत मेरौ एतौ आज कीजिये।
श्रीवन विहारिनी विहारी के निकुंज माहिं,
एहो सुख पुंज जू टहल माहिं लीजिये॥

(6)

चाहे कीर कोकिला कपोत कर सारस तें,
चाहैं मुख चन्द की चकोरी लै बनाइये।
चाहे कर लता द्रुम फल फूल पल्लव तें,
मधुकर चाहैं केकी दया दृष्टि लाइये॥
'लाल बलबीर' दासी दीन है विचारो आप,
कीजिये जरूर यहाँ जोई मन भाइये।
जैसे बने तैंसे करुना निधान स्वामिनी जू,
हा हा श्रीकिसोरी मोहि श्रीवन बसाइये॥

(7)

हा हा रंगदेवी जू सुदेवी हा हा ललिते जू,
हा हा श्रीविसाखे जू सुनौं हो टेर सुखरास।
हा हा चंपकलते जू हा हा चित्रा तुंगविद्या,
हा हा इन्दुलेखा तुम प्यारी पिय रहो पास॥
'लाल बलबीर' दासी दीन हे दया की रासि,
तुम पद पदम की है मन मलिन्द आस।
करुना निधान गुन आगरि उजागरि जू,
हा हा मिलि सबै मोहि दीजिये निकुंज बास॥

(8)

परम दयाल दूजी आपसी न दीसै और,
एहो सिरमौर पदपद्म सिरनाऊँ मैं।
लाड़िली लला की मन भावनी रिझावनी है,
गुनन अथाह सिन्धु थाह किमि पाऊँ मैं॥

अति मति हीन दीन बावरी हौं स्वामिनी जू,
एहौ कृष्ण अली चेरी रावरी कहाऊँ मैं।
श्री वन निकुंजन में दीजिये निवास सदां,
'लाल बलबीर' राधा राधा गुन गाऊँ मैं॥

श्री रंगदेवी की सखी, कृष्ण अली सु सुजान।
तिनहिं कृपा सिखनख कह्यौ, अपनी मति अनुमान॥9॥

ढीठौ ह्वै कछु इक कह्यौ, तौऊ युक्ति मिलाय।
पिय प्यारी कौ रस सुजस, रसिकन हिये सुचाय॥10॥

वह रस सिंधु अगाध है, मो मति अति लघु मीन।
रसिक अनन्यन मुख सुन्यों, सोई यह लिख लीन॥11॥

## कुण्डलिया

(12)

श्रधा हीन औ करमठी, ज्ञानिन तें जिन बोल।
सखी भाव बासी विपुन, तिनहीं सों यह खोल॥
तिनहीं सों यह खोल, होय राधा पद दासी।
विलसौ हिलमिल कहा, लहौ रस सिंधु बिलासी॥
कृष्ण अली कौं गहौ, मिटै जग की सब बाधा।
निसकैं करिकैं रटौ, कहौ गुन राधा राधा॥

## दोहा

निसि पति गृह अरु वेद ऋषि, संवत श्रेष्ठहि जान।
फागुन कृष्णा तृतीय गुरु, सिख नख कियौ बखान॥13॥

## नखशिख वर्णन

### दोहा

श्रीराधे नन्दलाल की, चरण रेणु सिरधार।
चित चाहे कारज सरैं, करैं सकल अघ छार ॥14॥

जै जै श्री रासेश्वरी, बिनै सुनौ चित लाय।
कछु छबि बरनन चहत हौं, कीजै आप सहाय ॥15॥



# चरण रज वर्णन

## कवित्त

(1)

कानन निहार आई रसिक रसीले संग,
रसिक रसीली अङ्ग अङ्ग हरषाती हैं।
कनक लता सी खासी कर कान्ह अंस धरे,
रति नेह धरें नैन तीरन चलाती हैं॥
देख देख आली री निराली कांति आज हाली,
हीरन जटित अलंकारन सजाती हैं।
राधिका रंगीली की चरन रज अंचल तें,
झार झार दासी निज आनन लगाती हैं॥

(2)

इनहीं कौ ध्यान नित करें सनकादिक से,
सेस जी की रसना सदाँ ही जस गाती हैं।
संकर से ज्ञानी रिषि नारद से आदि जेते,
दरस करन हेत गिरा ललचाती हैं॥
दास कहैं नन्दलाल लाड़िले सजीले जी को,
अँखियाँ रसीली हेर हेर हरषाती हैं।
राधिका रँगीली की चरन रज अंचल ते,
झार झार दासी निज आनन लगाती हैं॥

## चरण वर्णन

(1)

राजत रँगीले लाल लाल के रिझैया छैल,
जक्त जस छैया असरन के सरन हैं।
दस नख चंदन की कांति है अनंदन की,
सरद कलाधर की कला के हरन हैं॥
कंचन जटित हीर झांझन झनंकत हैं,
चलन रसीली गति करी की दरन हैं।
दास कहैं हरन कलेस जाल हाल राधे,
करुना निधान री तिहारे ये चरन हैं॥

(2)

करत इन्हीं कौ ध्यान ईस सनकादिक से,
रटैं जस संत केते झाँझ लै करन है।
हिये हरषाते सिरनाते आय धाय धाय,
कहत इही जी कल कंटक हरन हैं॥
लाड़िले रसिक छैल लाड़िली दयानिधि ये,
लाल नंदलाल हिये धीरज धरन हैं।
दास चित्त आलै हैं करत हैं निहालैं हालै,
सदाँ ही दयालै राधे तेरे ये चरन हैं॥

## एड़ी वर्णन

(1)

चीकनी चटकदार नारंगी करी हैं छार,
इनकी सजीली काँति राजत घनेरी हैं।

कड़े छड़े साँठ झाँझन झनंकत हैं,
कंचन जटित हीर जेहर तरेरी हैं॥
दास कहैं दीरघ कला की छटा राजत हैं,
हेरत अलीन की है रही दृष्टि चेरी हैं।
कीने नँदनन्दन अधीन रस लीन राधे,
एड़ी नग जाल लाल हू तें लाल तेरी हैं॥

(2)

नागर रसिक छैल आनन झलक आगें,
सरद कलाधर की कलागन चेरी हैं।
चलन अदां की कल ताकी है न ऐसी कहीं,
तरुन गयंदनि की गति गार गेरी हैं॥
दास कहैं तेरे अङ्ग अङ्ग की निकाई नीकी,
गिरिजा गिरा तें तड़ता ते री घनेरी हैं।
कीने नँदनंदन अधीन रस लीन राधे,
एड़ी नग जाल लाल हू तें लाल तेरी हैं॥

## नख वर्णन

(1)

नख हैं जलद कांति हीरा गण की ये सान,
इनकी निकाई हरषत अली लख हैं।
लख हैं न निद्ध तारे केते दर डारे ससि,
झलकन हारे कहा अहंकार रख हैं॥
रख हैं रँगीले आस हिये जे अनंद रास,
छिनक न टारे नंदलालन के चख हैं।

चख हैं तरे की रज दास दासी रसना तें,
धीरज धरन राधाचरन के नख हैं॥

(2)

चन्द ते चटकदार राजत सजीले सेत,
जलज लजाय जल गिरे खाय सक हैं।
आनन्द करैया हैं धरैया तन धीरज के,
छिन छिन इनहीं की कांति लाल लख हैं॥
दास कहैं लाड़िली रंगीली अरी राधिका जू,
इनहीं की लालसा सदाँ ही छैल रख हैं।
ढक हैं दिनन्द झलकरन हीरा थक हैं री,
सरस सजीले तेरे चरनन के नख हैं॥

## जेहर वर्णन

(1)

हीरन जटित कल कंचन की राजत हैं,
जड़िया अनंग जाल सजल सजाये हैं।
जग्जगात कली कली सहस्र कला की छला,
सरद ससी के नीके जस ले गराये हैं॥
दास कहै लाड़िली रंगीली राधिका जी हेर,
हेर हेर आलिन के नैन लै सिराये हैं।
जेहर निहारे जन रीझत सकल तेरी,
जे हर चरन कीने जे हर रिझाये हैं॥

(2)

रची रस सार करतार री रँगीली राधे,
आनन निहार ससी सरद लजाये हैं।

हँसन दसन गत चंचला डसन कल,
चलन अदां की तें गयंद सिर नाये हैं॥
दास कहैं तेरे अंग अंग की निकाई आगे,
गिरा गिरिजा सी दासी रती तननाये हैं।
जेहर निहार जन रीझत सकल तेरी,
जेहर चरन कीने जे हर रिझाये हैं॥

## जघन वर्णन

(1)

चलन गयंद की लजाई चाल हाल कटि,
केहरी ते छीन लचकीली री घनेरी हैं।
कंज कलिका सी खासी दसन कतार राधे,
जलज करी हू ह्वै रहीं री हेर चेरी हैं॥
दास कहैं ऐरी ये सजीली घांघरे से घिरीं,
टारत न दृष्टि छैल ताछिन तें हेरी हैं।
कीने नद नन्दन अधीन रसलीन आली,
चीकनी चटकदार जंघें यह तेरी हैं॥

(2)

राजत सजीली करी गात तें टरीली चट
कीली ये रँगीली करता नें रच दीनी हैं।
रति रंग छाकी सजें दीरघ अदां की नेंक,
नन्दलाल ताकी ताकी दृष्टि जिन छीनी हैं॥
दास कहैं ताछिन तें धीर न धरानी छिन,
छिन हहरात हित हेरन अधीनी हैं।

कीनी हैं सरस चतुराई चित चाही इन,
जरीदार घांघरे तें जंघें ढाँक लीनी हैं॥

(3)

रची करतार ये सिंगार रस सार राजें,
कांति की अगार गत करी की हरी है।
छैल नन्दलाल जी के चित की हरैया दीह,
जालन गिरैया री कहा ये जंत्र सीकी है॥
दास कहैं अचल निहारै दृग टारैं नाहिं,
छिनक निहारे दृष्टि ऐसी ढीठ की की है।
सरस सजीली सार साँचे सी ढरीली आली,
कैसी लचकीली लंक कीरति लली की है॥

(4)

खेलत ललन संग खेल रसरेल अति,
लचलच जात चित तनक न संक है।
चीर जरीदारन तें हीरन के हारन तें,
तीजें केस धारन तें ऐसी चित रंक है॥
दास कहैं याकी कहा कहिये निकाई अली,
अति ही सजीली राजै चार की सी अङ्क है।
रची करतार राधे साँच की सी ढार राजैं,
कांति की अगार कैसी छीन करी लंक है॥

(5)

जलज की नालन तें राजैं सटकारी दीह,
सरस सजीली ये करत झलझल हैं।

कंकन कनक छन हीरन के साजत हैं,
काँति के अगार छटा ससि ही की दल हैं।
दास कहैं वैसी आरसी है करजन छला,
हेर हेर अली दृष्टि छिनक न टल हैं।
कीजिये दरस चित हरष करैया लाल,
कैसे लाल लाल लाड़िली के करतल हैं॥

## हार वर्णन

(1)

लाई अली कानन तें केतकी कनेर जुही,
चांदनी चटकदार कली रस सार हैं।
नरगिस गेंदा गेंदी हार री सिंगार साज,
सरस सजीले अति कांति के अगार हैं॥
दास कहैं रचत रँगीली चित चातुरी तें,
नील सेत लाल ले लगाये एक ढार हैं।
दरस हरष लाई लाड़िली लड़ैतीजी के,
लालन ललकि के सजाये कंठ हार हैं॥

## मुख वर्णन

(1)

कनक लता सी लचकत लंक दीह खासी,
कांति की घटा सी करता नें रचौ छन्द हैं।
नेह रंग छाकी जाकी अँखियाँ अदां की सदाँ,
इनही के हेरत रिझाने नंदनन्द हैं॥

दास कहैं रति की गिरा की हैं न गिरिजा की,
सरस निकाई आली आनंद की कन्द है।
राधिका रंगीली जी के आनन के आगें दैया,
दीन है री देख राका निसि चन्द है॥

## अधर वर्णन

(1)

रसिक रसीलीजी के आनन के आगे आज,
सरद कलाधर की कान्ति दीह डर हैं।
कारे रतनारे नैन चंचल हैं अनियारे,
खंजन जलज अहिपारी सर सर हैं॥
दसन गसन दरसन विहँसन आगें,
दास कहैं चंचला चटक गतिहर हैं।
देख नन्दलाल दृग कीजिये निहाल हाल,
कैसे लाल लाल लली राधे के अधर हैं॥

## दशन वर्णन

(1)

काके हैं झलकदार आली देखिये से दीह,
हेर हेर इनैं चंचला के गन थाके हैं।
थाके हैं अनंत जस गाय गाय नेत नेत,
कंज की कलीन के दरैया छैल ताके हैं॥
ताके हैं न ऐसे हेली जलज लरी के दल,
'दास' कहैं सदां चित हरत लला के हैं।

लाके हैं दिखाय दीजै हैं न दस चार देस,
सरस सजीले री दसन राधिके के हैं॥

(2)

ऐंडदार आनन तें झलकत रैन दिना,
जलज लरीन की निकाई के डसन हैं।
कंज की कलीन तें रंगीले राजै 'दास' कहैं,
जिनकी झलक आगें सरद ससि न हैं॥
रसना रसीली रस कहत हँसत चित,
लाल की रिझैया दीह हीरा सी हसन हैं।
देख देख आली नैन कीजिये निहाली कैसे,
सरस सजीले सेत राधे के दसन हैं॥

## नासिका वर्णन

(1)

राधिका रंगीलीजी के अंगन निकाई आगें,
सारदा सती सीरी रती सी हेर लाजै हैं।
रची करतार रस सागर की सार दीह,
नन्दलाल जी के हित ही के दैन काजै हैं॥
'दास' कहैं हीरन जटित कल कंचन की,
जलज लरी की नीकी नासा नथ साजैं हैं।
कै ये कीर आनन निसाकर की रक्षा हेत,
ऐंडदार आज आली चक्र लियैं राजैं हैं॥

## नेत्र वर्णन

(1)

आछे कजरारे रतनारे ही सजीले दीह,
हिरन के हारे खाली एक रंग कारे हैं।
रंग छाके सजैं सजल अदां के री,
अनंग सर थाके री सरस अनियारे हैं॥
'दास' कहैं लाल नन्दलाल के रिझैया अलि,
गन के सहैया सिर ताज री निहारें हैं।
कैसे ये सजीले नैन देख री ऩड़ैतीजी के,
जहाँ जहाँ झांके तहाँ जीत जीत डारे हैं॥

## लट वर्णन

(1)

रची करतार कारीगर नें चालाकी कर,
कांति दस चार देस देस की सकेरी हैं।
तेरे अंग अंगन की सरस निकाई राधे,
हेर हेर आलिन की करी दृष्टि चेरी हैं॥
आनन निसाकर तें खेलत हैं 'दास' कहैं,
नागिन तें सरस सजीली दीह हेरी हैं।
चीकनी चटकदार लहर लहर करैं,
कारी सटकारी री रँगीली लट तेरी हैं॥

## ताटंक वर्णन

(1)

देख देख आली चाल कीरति लड़ैती जी की,
हंस हहराने री गयंदन के संक हैं।
कंचन से अंग रंग केसर के दंग दिये,
केहरि लजाय लंक चार केसे अङ्क हैं॥
जलज लरी तें खरी दसन कतार राजैं,
कंज कलिका की ताकी निकाई के टंक हैं।
कंचन जटित दास हीरा नग जालन के,
जगत दिनंत तें ये करत ताटंक हैं॥

## आनन वर्णन

(1)

कानन निहार आई रसिक रसीले संग,
आनन अनंग की तरंग दीह छलकैं।
धाई गेह जलज लचकती जलज नैनी,
जलज की सेजन चढ़ी है हल हलकैं॥
राजैं गलहार नीके जलज कलीन ही के,
एते साज राह की गई न खेद टल कैं।
'दास' कहैं आली देख आनन लड़ैती जू के,
कैसे ये सजीले सेत सेद कन झलकैं॥

# केश वर्णन

(1)

सरस सजीले नील गगन तें चटकीले,
अंसित जलज गन कांति गार हारे हैं।
लहर लहर कर एडिन ते आय लागें,
अलिन के हेर दल कानन सिधारे हैं॥
'दास' कहैं दरसत चित के हरैया नेह,
जालन गिरैया करता नें रचि डारे हैं।
छिनक न टारे दृग जब तें निहारे लाल,
लाड़िली रँगीलीजी के केस सटकारे हैं॥

(2)

सहज चरन धरें धरनि लड़ैती तहाँ,
लाल लाल रंग के कलस से ढराते हैं।
चलन अदां की ते गयंद गस खाते लख,
छीन कटि केहरी से कानन सिधाते हैं॥
'दास' कहैं आली आगें आनन रंगीली जी के,
अति चटकीले ससि सरद लजाते हैं।
हिये हरषाते हैं निहारे नन्दलाल जाल,
सरस सजीले सिर केस लहराते हैं॥

(3)

कारे सटकारे केस दीन किये नाग देस,
आनन नें दरी हैं निकाई सर्द चन्द की।
तीखे रतनारे नैन चंचल चलाक त्यारे,
खंजन जलज कांति छली है अलिंद की॥
'दास' कहैं लाड़िली रँगीली अरी राधिके जी,
दृष्ट दूस तेरी ने हरी है नदनन्द की।
लंक की लचाई नें नसाई रास सिंघन की,
चलन अदाँ की ऐसी टाली है गयंद की॥

(4)

निकस निकुंजन तें आई छबि पुंज प्यारी,
धीरें सुकुमारी जू चरन मग देत हैं।
ताही छिन वन भूमि लोहित बरन भई,
'ला.त बलबीर' बढ़्यौ अति उर हेत हैं॥
लचक अचक झूम छबि सौं छबीली छैल,
निरख निरख हरषत कर लेत हैं।
सुखमा कौ खेत है कि सौरभ निकेत मेरौ,
जीवन निकेत राधा रानी पग-रेत हैं॥

(5)

नवल सखीन संग नवल किसोरी आई,
बिपिन निहारन कौं बढ़ौ उन हेत हैं।
भूषन मनीन नव अङ्ग अङ्ग भूषित हैं,
जारीदार चादर सुहाई सिर सेत हैं॥

जित जित चलत करत मग मग लाल लाल,
'लाल बलबीर' बर उपमा अचेत हैं।
सुखमा कौ खेत हैं कि सुख कौ संकेत मेरौ,
जीवन निकेत राधारानी पग रेत हैं॥

(6)

सरस्वती धार हैं कि हींगुर की छार हैं,
कि सेंदुर बगार हैं सरस दुति देत हैं।
मीनकेत बाग हैं प्रगट अनुराग मई,
मूंगा मनि मानिक की उपमा अचेत हैं॥
'लाल बलबीर' नव पल्लव रसाल हैं कि,
लोहित गुलाल हैं अमित उर हेत हैं।
सुखमा को खेत हैं कि सौरभ संकेत मेरौ,
जीवन निकेत राधारानी पग रेत हैं॥

(7)

लैंके दधि नारी आई चन्द सी उजारी देख,
कही बनवारी कितै जात रूप बाँकरी।
कनक लता सी चपला सी काम अबला सी,
घूँघट उघार सुकमार नेंक झांक री॥
'लाल बलबीर' आवौ दधिकौं पिवावौ तन,
ताप कौं नसावौं क्यों रही हौं मुख ढांक री।
कांकरी चलाई लाल मन्द मुसिक्याई बाल,
सांकरी गली में कछु हां करी न ना करी॥

(8)

आवौ बैठि जावौ सुसतातौ सुकुमारी बधु,
रम्भा मैंनका तें नौनी जोबन अदाँ करी।
सीस लै दहैड़ी ऐंड़ी ऐंड़ी चली आई नार,
देख धूप ही में स्याम पीतपट छाँ करी॥
'लाल बलबीर' जू कौं दीजै दधि दान आन,
कीजै ना सयान जू सुजान छैल बाँकरी।
कांकरी चलाई लाल मन्द मुसिक्याई बाल,
सांकरी गली में कछु हां करी न ना करी॥



# कपड़ा बन्ध

(1)

आनंद की कन्द कियें झालर सज री रीत,
अनि लस रही ऐसी ठनगन ठाई तें।
सांल री न दीजै अङ्ग जीतें धन कहा लई,
गाढ़ा लै ससक नारी कीजै रस जाई तें॥
दास कहैं पाराचित राख नारि जाली गति,
गाछ तर रें आछी टकना कराई तें।
दिल है दर्याई खासा अचकन छाँड़ दीजै,
गर्दरी न कीजै जस ल्हैरिया कन्हाई तें॥

## कवि नर्म बन्ध

(1)

श्रीधर सिरताज सारंग धर सनेही आली,
सीतल हैं सन्त सदा नन्द हरद्वाल हैं।
कासीनाथ संकर से हरिदास टेर कहैं,
जगदीस जगन्नाथ करत निहाल हैं॥
दास गदाधर गिरधारी तें हठीली रिस,
कीजै जिन रसलीन रस कर साल हैं।
चन्द सखी निंद चल छैल तक रस राज,
कीजै ना जलील री अधीर नन्दलाल हैं॥

(2)

आनँदघन ईस हैं आगन्त तेरे दर्सन कौं,
कीजै ना अनाथ दै आनन्द रिस टारी तैं।
नेही नैन नागर हैं नायक नरेस छैल,
रसखान रसिया ये ललित कटारी तैं॥
दास कलाधर केहरी की गति छीन हरी,
दयानिधि दीन हाल ललन निहारी तैं।
धीर धर सैन चैन कीजे रस रंग री तें,
नागरी अनन्त रस लीजै गिरधारी तैं॥

## वृष वन्ध

(1)

किस मिस कान नूं अकेला तैंनू चड्डि दित्ता,
बनाँ सथ्थ अमली अनारन क्यौं हेंदी है।
कीती क्या असोख प्रीति खिरनो लगां दी नीम,
जायफल लेंदी हैं न ताल कर देंदी हैं॥
'लाल बलबीर' तू न खट्टा कर दित्ता मन,
मिट्ठा क्यों न बोल दी हैं चीणता गहेंदी है।
बेर बेर केंदी बरसौं हैं न रिसेंदी कद्दी,
अमली रहैंदी बिहँसी नैंना लगेंदी है॥

(2)

काबुल करीले मान पूर तुमी येई येगो,
कान पुर येइ कान कासिक करी ये चे।

कोथाय गया पौ लैये येई अपिराग करी,
अकौल कोथाय तुमी हसार खिजीये चे॥
'लाल बलबीर' उर छौ एकौरी आपनुनाई,
आगुजी एतेर मैन पूरीर सौतैये चे।
सूरत दिखै ये कौल कोरी जे पुराई नाई,
उदैपुर दिल्ली मुखे राधार डाकीये चे॥



# लट वर्णन

(1)

फूले बरिजात की गहन मकरन्द वृन्द,
सिमट सुहावनी अलिन्द पंक्ति धाई हैं।
कैधौं कुल त्याग आई पन्नगी कुमारी प्यारी,
सरद ससी ते अमी पीवन कौं आई हैं॥
'लाल बलबीर' बाढ़ी सुखमा अपार राधे,
हेर हेर प्रीतम की अँखियाँ सिराई हैं।
बदन सलोल में कपोल गोल गोल नीकौ,
तिन पैं सुजान किधौं लट लटकाई हैं॥

(2)

एक ही हरी तें आज निरखैं अनेक हरी,
सरस सजीले लालसा हैं दृग हेरे की।
हर की ररन देख देख चित चैन जाके,
जाकी हैं कहन नीको गरज घनेरे की॥
दास कहैं कीजिये खियास हित आस स्वास,
लीजिये अरज धार येती चित चेरे की।
अधर कहा है याका अर्थ कर देना नहीं,
दंगल दलील छाँड़ राह लीजै डेरे की॥

(3)

उठी परयंक तें प्रभात होत इन्दु मुखी,
मुकर लै हाथ गात निरखी उम्हाये तें।

सुनौ ललितादि बात सिथिल है मेरौ गात,
गत श्रम भये बिन सेवन कराये तें॥
जाबक न लागौ पाय अचरज लखौ धाय,
दरसैं विसाल लाल सहज सुभाये तें।
खात हुती बीरी नित कबहू न ऐसें लखे,
कुन्द सम कुन्दन भये हैं आज काये तें॥

(4)

मान कर पौढ़ी परयंक पै नवेली आय,
प्रीतम सुजान जू सों अति ही रिस्याई तें।
आये मनमोहन छबीली छबि जोहन कौं,
चापे जू चरन बर चित की उम्हाई तें॥
'लाल बलबीर' उन जावक दियौ विसाल,
विनती सुनाई बहु रसना सिहाई तें।
बीरी लै पवाई निज करतें बनाई आज,
दरसैं सहस ये विसाल लाल याई तें॥

(5)

जाओगी न भूल अब आली यमुना के तीर,
'लाल बलबीर' ठाड़े लिये सखा सेनी कौं
ढपही बजावैं गावैं राग लाज बोरी होरी,
अति ही सिहावैं नारि देख मृगनैनी कौं॥
भर पिचकारी नीर केसरिया रंग बारी,
छांड़त बिहारी चित अधिक सिहैनी कौं।
सिख तें भिगैनी उर धीरज धरैनी धाय,
मसकैं उरोज छैल कंचुकी तनैनी कौं॥

# नैन वर्णन

(1)

कंज सम चरन सुचाल गजराज की सी,
केहरि सी लंक सर नाभी दरसाती है।
मखमली उदर उरोज सुभ श्री फल से,
बिंब से अधर दन्त कुन्दकली पाँती हैं॥
भनै 'बलबीर' मुख ससि सौ प्रकास बाल,
चलिये गुपाल बैठी सेज अरसाती है।
भृकुटी कमान तान मारत है मैन बान,
नैनन की नोकैं झोंकै फोंकै कर जाती है॥

(2)

देखी एक नारी सुकुमारी बनवारी जाके,
सीस धरी झारी चीर धारे गुजराती है।
घांघरौ घुमाती बर सोहै सखीआन साथ,
हेरत हँसत मुसिक्याती इठलाती है॥
भनै 'बलबीर' पनियाँ को चली जाती जाकी,
अंग की सुगन्ध व्रज वीथिन भराती है।
भृकुटी कमान तान मारत है बान जाके,
नैनन की नोकैं झोंकै फोंकै कर जाती है॥

(3)

जलज लजात मृग मीन पछितात जात,
खञ्जन खिजात अकुलात भौंर काले हैं।

रूप के जहाज सुख साज के समाज राज,
रहित निसंक बंक मद मतवाले हैं॥
रस में रसीले लखे जस में जसीले छैल,
'लाल बलबीर' मनमोहन निराले हैं।
काजर से काले सेत संख से उजाले तेरे,
नैन मतवाले लाले सुधा के से प्याले हैं॥

(4)

प्रेम भरे प्रीत भरे नीत भरे रीत भरे,
जीत भरे भौंरन तें देखियत कारे हैं।
रस भरे जस भरे नेह भरे नीर भरे,
नोंक भरे झोंक भरे काम सर वारे हैं॥
मैंन भरे सैन भरे चैन बिन बेन भरे,
'लाल बलबीर' मधु भरे मतवारे हैं।
स्यान भरे ग्यान भरे मान बान आन भरे,
लोभ भरे लाग भरे लोचन तिहारे हैं॥

(5)

ओढ़े सीस सारी जरतारी की किनारीदार,
कानन की आभा आभा इन्दु की निपाती है।
करन तरौना जगमगत जराऊ वारे,
कारी सटकारी लट लहर लहराती है॥
भनैं 'बलबीर' अङ्ग कंचन सौ झलमलात,
केसर की खौर भाल हू पै दरसाती है।
भृकुटी कमान तान मारत है मैन बान,
नैनन की नोंकै झोंकै फोंकै कर जाती है॥

(6)

जाती है ढरक तहाँ भूमि पै महावर सी,
मन्द मन्द प्यारी जितैं तितै कौं सिधाती है।
साती है न कोऊ मदमाती चली आती लाल,
रावरेई माधुरे सुरन जस गाती है॥
पाती हैं न चंप जाके अङ्ग की निकाई कहूँ,
प्रभा 'बलबीर' कलधौत को बिलाती है।
झूम झूम जाती छबि बरनी न जाती जाके,
नैनन की नोंकै झोंकै फोंकै कर जाती है॥

(7)

जाकी बानी मन्द मन्द सुने तें अनन्द होत,
बानी फेर बीन हू की नेंक ना सुहाती है।
जाके मुख चन्द कौं निहारत चकोर वृन्द,
निरख सिहाती और चन्द को नचाती है॥
भनैं 'बलबीर' जाके लंक की लचक देख,
हिय में हचक गति सिंघ की लजाती है।
बरनी न जाती छबि देख हरषाती हिये,
नैनन की नोंकै झोंकै फोंकै कर जाती है॥

(8)

देखी एक बाला नन्दलाला खड़ी चित्रशाला,
राजै कान बाला सीस सारी गुजराती है।
मोती गुहि बाल बाल दीपति विशाल भाल,
नासिका सुहौनी नथ झूम झोटा खाती है।।

गेंदा से गुलाबी गाल बांरीं मुख चाबे लाल,
दसन दमक दुति दामिनी दुराती है।
मन्द मुस्काती छबि बरनी न जाती,
जाके नैनन की नोंकै झोंकै फोंकै कर जाती है॥

(9)

देखी सुख सोनी गज गौनी मैं सलौनी बाल,
चारों ओर भौंरन की भीर भननाती है।
झूमत झुकत जित जित कौं सिधाती मानौ,
तितै व्रज वीथिन गुलाब छिरकाती है॥
'लाल बलबीर' बिधि बिस्व की सुगन्धताई,
धरी है सकेल मेल मन कौं भुराती है।
मन्द मुस्काती छबि बरनी न जाती जाके,
नैनन की नोंकै झोंकै फोंकै कर जाती है॥

(10)

आज जलकेलि में विलोकी नन्दलाल बाल,
कौतुक नवीन परवीन दिखलाती है।
उछरि उछरि मार चूबक नवेली नारि,
मलत उरोज तन हेर हरषाती है॥
'लाल बलबीर' मधुमाती अंगराती बेनी,
पीठ पै लुरत नागिनी सी लहराती है।
मन्द मुस्काती छबि बरनी न जाती जाके,
नैनन की नोंकै झोंकै फोंकै कर जाती है॥

(11)

आज ते न जावौं दधि लैंके मथुरा कौं दैया,
जैसी कछू बीती तैसी जानत हौं मन में।
आये दल निकर गरज कुंज कुंजन तें,
देखत निपट थहराय गई तन में॥
'लाल बलबीर' उन मटकी झटकि लई,
पटकी धरनि नख मारे हैं बसन में।
हार तोर डारे छोर डारे कंचुकी के बन्द,
बाँदर विकट बास करैं वृन्दावन में॥

(12)

लैकें दधि जाय ताय रोकत हैं बीच ही तें,
खेंचत हैं बस्त्र बार डारै घुरकन में।
कान्ह के हिलाये हैं खिलाये बर माखन के,
टलैं ना टलाये घेरा देत हैं सघन में॥
'लाल बलबीर' ऐसे बाँके रनधीर करैं,
छिन में अधीर बटवारे तन तन में।
मैं तो खिसियाय धाय आई भाग भागन तें,
बाँदर बिकट बास करैं वृन्दावन में॥

(13)

लूटैं बाट बारे ते हठीले बलवारे बाँधे,
तुपक दुधारे से अधीर होंये मन में।
धामैं धाम धाम खायँ बिंजन बिनाई दाम,
निसि दिन आठौं जाम हर्षित ह्वै तन में॥
'लाल बलबीर' पान करैं जमुना कौ नीर,
करत किलोल झूमि झूमि कैं तरन में।

मोहन के प्यारे गढ़ लंक के जितारे ये ही,
बाँदर बिकट बास करैं वृन्दावन में॥

(14)

लै लै वस्त्र झारी चढ़ जात हैं अटारी तिनैं,
टैरे व्रजनारी दै दै अन्न कुल्लरन मे।
खायँ ढार ढारी जुरैं सैना साथ बारी सारे,
करत अपारी हरषित होंयँ तन में॥
'लाल बलबीर' बिहरत बाग बारी कूद,
फुलवारी डारी तोड़ डारत धरन में।
रसिक बिहारी छैल जू के हितकारी भारी,
बाँदर बिकट बास करैं वृन्दावन में॥

(15)

भोगत हैं राज सुखसाज हद्द बाँट राखी,
आवत न दूजैं आवैं क्रोध करैं मन में।
घुरकि घुरकि धमकावत हैं नाना विधि,
खैंच खैंच पुंज कर खौंटत हैं तन में॥
'लाल बलबीर' बीर बाँके रनधीर ऐसे,
बिटप अडिगन हलावैं हरषन में।
पावैं फल फूल रसमूल फूल फूल केते,
बाँदर बिकट बास करैं वृन्दावन में॥

(16)

बाँध बाँध गोल बीर करत किलोल राजैं,
बल में अतोल हरषात मन मन में।

जुरें कहूँ आय जुद्ध करैं धाय धाय केते,
छलन दिखावैं क्रोध भरैं तन मन में॥
'लाल बलबीर' टूटे टाँग कर पूँछ कान,
लागत भयानक ये घूमैं कँदरन में।
भरे वीरपन में न लावैं संक मन में सु,
बाँदर बिकट बास करैं वृन्दावन में॥

(17)

आगैं आगैं जान लेत पाछैं नारि बच्चन कौं,
घुरकि घुरकि कूदि कूदि लरैं रन में।
टूटे कर पूँछ कान मानत न नेकौं हानि,
धावत सुजान क्रोध भरे तन तन में॥
'लाल बलबीर' बीर देखत लजामैं इन्हैं,
जायँ मुख मोर संका खाय मन में।
राधा महारानी जू की पद रज गर्व भरे,
बाँदर बिकट बास करैं वृन्दावन में॥

(18)

लै कौर आमार घटी गाछइ पलैये गेले,
एमोन तुमा के कि गोविन्द बले दीये चे।
काँदी काँदी मरि आमी दुई हात जोड़े कोरी,
दया कर ब्रजबासी तुमांर देसे रहीये चे॥
'लाल बलबीर' तुमी मौने कोथा बूजो नाई,
छाँड़ौ नाई कैंनौं तुमी कौथा जि सिखी ये चे।
लीए लेओ चाल डाल बूंट भाजा आर किछू,
सेई सेई भालो लागे तेई आमी दीये चे॥

# वन विहार वर्णन

(1)

ठाड़ी फुलवारी सुकुमारी रूप उजियारी,
गहे द्रुम डारी नैन प्रेम मद भीने हैं।
मन्द मुसिक्यावै छैल नाचै बाँसुरी बजावै,
भावन बताय राग गावत रंगीने हैं॥
'लाल बलबीर' छबि कहत बनै न आली,
चुबक गहत ललचात परबीने हैं।
रीझि कैं किसोरी चित चोरी गोरी भोरी जू ने,
गहिकै सुजान कान्ह कण्ठ लाय लीने हैं॥

(2)

देख सखि बिपिन निहारन लड़ैती लाल,
लटकि लटिक छैल दोऊ चले आवै हैं।
प्रेम मधुमाते भाते मन्द मुसिक्याते आज,
अधिक रसिले राग मीठे सुर गावै हैं॥
'लाल बलबीर' दासी द्रुमन लतान माहिं,
फरे फल मधुर अनेक दरसावै हैं।
झूमि झूमि आवैं तोरि लेत मन मोद ही सों,
कुमर किसोरी लाल बाँटि बाँटि पावै हैं॥

(3)

प्यारी सुकमारी संग रसिक बिहारी बर,
निकसि निकुंजन तें फूल बन आये हैं।

अचक अचक धरैं चरन लचक भूमि,
झूमि आये द्रुम फूल सेवन जनाये हैं॥
हरस हरस कर परस परस सबै,
श्रम मान कृष्णअली भवन सिधाये हैं।
बैठे मसनन्द पै बिलन्द मुखचन्द दोऊ,
'लाल बलबीर' दासी पग सहराये हैं॥

(4)

पावत हैं फूल रस मूल फल फूल दोऊ,
सुखमा अतूल हेर हेर हरषावैं हैं।
कोऊ लै नरंगी रस रंगी अति चाहन सों,
कोऊ सुभ बेस साज सपरी पवावैं हैं॥
'लाल बलबीर' दासी निरखि सिरावैं नैन,
निसरैं न बैन मन्द मन्द मुसिक्यावैं हैं।
कोऊ सिर नावैं कोऊ चरन सिरावैं,
बन-राज की निकुञ्ज पिय प्यारी कौं लड़ावै हैं॥

(5)

देख चल आली री उताली छबि निरआली,
बेर बेर फेर ऐसौ समौ हू न पावै है।
बैठे कुरसी पै दीपै रत भूप रूप दोऊ,
केती सखी आय पद सीस कौं नवावै हैं॥
केती कर जोरैं केती सीस चौंर ढोरैं तहाँ,
केती परबीन लै लै बीन कौं बजावै हैं।
श्रीबन लतान की छटान कौं निहारैं छैल,
'लाल बलबीर' दासी बीरी लै पवावै हैं॥

(6)

खेलत हैं गेंदन सों जुगल छबीले छैल,
दौरि दौरि झूमि गहि गहक चलावै हैं।
कारी पीरी लाल लीली सुभग अनेक रंग,
धावत समूह मनौं खंजन उड़ावै हैं॥
हों हों ललितादि मुसिक्यात कहैं छाँड़ौ अजू,
कोऊ कहैं अली लै लै प्यारी कौं गहावै हैं।
श्रीवन सुहावने की कुंज सुख पुंजन में,
'लाल बलबीर' दासी हेर सचु पावै हैं॥

(7)

नवल निकुंजन तें नवल छबीले आली,
विपिन विहारन कौं आये चित चाव सों।
रुनक झुनक धीरे चरन धरत भूमि,
नूपुर रसीले धुन बाजत उछाव सों॥
एक भुज अंसन पै एक एक ही सों दोऊ,
आंगुरी हलावैं मुसिक्यावैं हाव भाव सों।
'लाल बलबीर' दासी हेर छबि सुखरासि,
आरती उतारैं सबै निज निज दाव सों॥

(8)

देख री सहेली अलबेली अलबेले अंग,
अङ्गन तें छबि के छता से आज बरसैं।
दाहीं भुज प्रीतम के अंसन सुहायमान,
बाम कर ही सों लतिकान ही कौं परसैं॥

जोई झूम आवत है पद पदमन पर,
पद मन सोई वंदना कौं करैं सरसैं।
'लाल बलबीर' बनराज के विलासी दोऊ,
दोऊ गरबीले छैल हेर हेर हरषैं॥

(9)

खेलत बिपिन नव नवल छबीले आज,
प्यारी छिटकाय गेंद करहीं सों दीनी हैं।
छूटि के रँगीली भूमि भौंरा सी फिरन लागी,
छैल ललचाय दौर हिदें लाय लीनी हैं॥
'लाल बलबीर' दासी हेर सुखरासी अंस,
धार भुज मंद मुसिक्यात रंग भीनी हैं।
कुमर किसोर लाल कुमरि किसोरी गोरी,
भोरी चितचोरी जू कौं कंठ लाय लीनी हैं॥

## पद

(10)

यह छबि टरत न उर तें टारी।
नवल कुंज में राजत पिय सँग श्री वृषभान कुमारी॥
मंडित बदन गुलाल लाल सों सुखमा बढ़ी अपारी।
चरन टहल में राखौ स्वामिनि दासी मोहि बिचारी॥



# होरी के कवित्त

(1)

केसरिया हौजन पै मौज सों मचो है फाग,
मंजुल गुलाबजल राखे हैं अतर घोर।
कंचन पिचक्क भर घालै छैल प्यारी ओर,
प्यारी मुसिक्याय छांड़ै रसिक बिहारी ओर॥
भये सरबोर अंग अंगन उमंग भरे,
रंग मुख पौंछ पौंछ छिरकैं बहुत जोर।
सुखमा अथोर उठै प्रेम की हिलोर हेर,
'लाल बलबीर' दासी डारैं तृन तोर तोर॥

(2)

दै दै गलबाहीं छैल नाचत उमंग भरे,
लचक लचक धरैं चरन धरन ओर।
भीजे तन मन प्रेम केसर गुलाल कीच,
फटिक सरोवर में न्हात नीर कौं झकोर॥
'लाल बलबीर' दासी अङ्गन अँगोछ वस्त्र,
भूषन सजावैं रुचि बीरी देंई कई जोर।
रूप कौं निहारैं प्रान वारैं आरती उतारैं,
दोऊ मुख चन्द की सबै अली भई चकोर॥

(3)

नवल निकुंज में खेलत रँगीले फाग,
भरैं पिचकारी धार चलैं रंग भीनी हैं।
मन्द मुसिक्यावें गावैं जुगल छबीले छैल,
छबि 'बलबीर' दासी लसत प्रबीनी हैं॥
प्यारी लै अबीर मुठी घालत बिहारी जू पै,
रसिक बिहारी छाँड़ै प्यारी पै रँगीनी हैं।
पी मुख रसीली लै गुलाल कीच मींज दीनी,
पिय अतुराय प्यारी अंक भर लीनी हैं॥

(4)

फटिक मनीन के भरे हैं कमनीय हौज,
अमल सुजल तामें राखे हैं सुरंग घोर।
खेलत रँगीले फाग दोऊ अनुराग भरे,
बरसत रंग अंग होत ना अथोर बोर॥
'लाल बलबीर' दासी छबि सों छबीले छैल,
छलकर घालैं घात रूप उजियारी ओर।
प्यारी सुकमारी रंग रसिक बिहारी जू पै,
छाँड़ै पिचकारी लाल जावैं मुख मोर मोर॥

(5)

खेलत नवल फाग नवल निकुंजन में,
नवल सखीन कर नव साज लीने हैं।

अमल अबीर नीर केसर कलस भरे,
भर भर छिरकैं छबीले रंग भीने हैं॥
'लाल बलबीर' दासी बाढ़त उमंग हेर,
दोऊ रसलीन हैं प्रवीन हैं नवीने हैं।
प्यारी सुकमारी पै चलावैं पिचकारी लाल,
लाल मुख लाड़िली गुलाल मल दीने हैं॥

(6)

श्रीवन निकुंजन में खेलत जुगल फाग,
भरी अनुराग संग सखी परवीनी है।
अबिर गुलाल लै उड़ावैं गावैं हरषावैं,
कुमरि रिझावैं तान गावत रँगीनी हैं॥
'लाल बलबीर' नीर घालैं पिचकारी प्यारी,
प्यारे जू की एकौ घात चलन न दीनी हैं।
हरि रस लीन अली आगैं करिकैं प्रबीन,
दौरिकैं लड़ैती जू कौं अंक भरि लीनी हैं॥

(7)

लाड़िली लला के कर कंचन पिचक राजैं,
केसरिया नीर लै चलावै सुख सरसैं।
भरि भरि देत कृष्ण अली श्रीकिसोरी जू कौं,
प्यारे की बचाय चोट मोर मुख हरसैं॥
थाल लें गुलाल लाल उड़ावैं बिहारी जू पै,
प्रीतम कमोरी गोरी ढारत ऊपर सैं।

'लाल बलबीर' दासी निरखि बिसाल ख्याल,
दोउ मुखचन्द लाल लाल लाल दरसैं॥

(8)

मेल भुज अंसन पै आये हंस सुता तीर,
दोऊ रनधीर प्रेम अंग अंग दरसैं।
तैर तैर न्हात मुसिक्यात अंगन मलात,
छूटत गुलाल जल लाल रंग दरसैं॥
'लाल बलबीर' दासी निरखि सिरावैं नैंन,
होत उर चैन सुखमा अभंग दरसैं।
मानौं छबिसिंधु तें निकसि बिंब चंदभान,
अरुन घटा में छैल दोऊ संग दरसैं॥



# डोल

(1)

खेलत निकुंजन में जुगल छबीले फाग,
भरे अनुराग अंग अंगन नवीने हैं।
कछु श्रम मान सुख दान रस खान आन,
पल्लव नवीन डोल बैठे रंग भीने हैं॥
'लाल बलबीर' दासी लाल ललचाय उर,
परसन झोटा देत दीरघ प्रबीने हैं।
झिझकि किसोरी चितचोरी गोरी भोरी जू ने,
गहकि सुजान कान कंठ लाय लीने हैं॥

(2)

लटकि लटकि आये निकसि निकुंजन तें,
दोऊ रस लीन दोऊ बिपिन दिखावैं हैं।
मेलि भुज अंसन पै लतन प्रसंसत हैं,
मन्द मन्द छैल रस लीन सुर गावैं हैं॥
ठुमकि ठुमकि धरैं चरन लचकि भूमि,
कोटि रति मैन रूप प्रेम कौं लजावै हैं।
कृष्ण अली ठाड़ी पाछैं चौंर लै ढुरावैं छबि,
हेर 'बलबीर' दासी हियैं हरसावैं हैं॥

# ग्रीष्म

(1)

कोमल नवीन पदमन की रची है कुंज,
झूमर हैं झब्बा झालरन में निवारे हैं।
कुमर किसोर संग कुमर किसोरी तामें,
राजत छबीले आज रूप उजियारे हैं॥
सीतल गुलाब जल नहरें भरी हैं खरी,
परदे उसीर उड़े सौरभ अपारे हैं।
'लाल बलबीर' दासी देख छबि सुखरासी,
चारों ओर छूटत फुवारे रंग बारे हैं॥

(2)

अतर गुलाबन सौं महकै महल मंजु,
लता झुकि रहीं पुंज प्रभा दरसत हैं।
सीतल उसीर नीर चलत फुआरे भारे,
'लाल बलबीर' लखि मोद सरसत हैं॥
तीर तीर बिहरैं बिहारी प्यारी रंग भरे,
करतल ही सौं धाय धार परसत हैं।
लागत झरत बूँद ऐसी छबि देत मनौं,
प्रात अरविन्द ओस मोती बरसत हैं॥

(3)

आई एक कौतिक बिलोकि नव कुंजन में,
कोटि रवि चन्द की प्रभा तें तन नीके हैं।

पौढ़ी परजंक पै नवेली अलबेली प्रिया,
प्रीतम प्रवीन काज करत हँसी के हैं॥
'लाल बलबीर' छबि कहत बनै न आली,
देख री उताली हाली बैन हित ही के हैं।
मैंन रति ही के लीये प्रेम मद रूप भूप,
चाँपत चरन आज लाल लाड़िली के हैं॥

## दोल

(1)

फूलन सिंगार साज आये फूल वनराज,
सुखमा निहार बाढ़ी अंग अंग फूले हैं।
फूल रच्यौ डोल कृष्णअली नव पल्लवन,
बैठे आजु गल बढ़ी सुखमा अतूले हैं॥
'लाल बलबीर' दासी झोटा देहिं हरैं हरैं,
नीके सुर रंैं राग प्रेम भरे झूले हैं।
सहर सहर चलें सीतल समीर पाछैं,
फहर फहर उड़ै अंगन दुकूले हैं॥

(2)

चलत फुहारे री गुलाब आब बारे भारे,
झरन फुआर धार सहित सुगंध की।
गुलम लता हैं अंग पल्लव छता हैं खिले,
सुमन अथाहैं धुंध छाई मकरन्द की॥
अतर सुतर कर बीजना ढुरावैं अली,
गामैं हैं रँगील तान जुगल पसन्द की।

'लाल बलबीर' आली देख री उताली आज,
मालती महल झाँकी राधिका गुबिन्द की॥

(3)

बैठे आ गुलाब के भवन में लड़ैती लाल,
दिपत अमन्द छबि चंद तें उजाला सी।
भीजत हैं रीझत हैं दोऊ रसराज नीर,
झरत फुहारन तें धार मेघमाला सी॥
बापी कूप सरिता सरोवर सलिल भरे,
पैरैं कलहंस बंस मंडली उताला सी।
'लाल बलबीर' दासी लै लै जुही चौंर ढारैं,
ग्रीष्म की बात आय लागै गात पाला सी॥

(4)

महल उसीर के विराजैं श्रीविहारी प्यारी,
चादर फुआरे तें बिलन्द धार धामें हैं।
मंजुल अमल नीर चलत समीर धीर,
सहित सुबास खास चारौं दिसि छामें हैं।।
'लाल बलबीर' दासी खासी सुखरासी लै लै,
नूतन गुलाब सार अंग चरचामें हैं।
झीने सुर गामैं मन मोद सरसामैं केती,
फूल फूल फूलन के चौंर लै ढुरामें हैं।।

(5)

फूलन सिंगार सुख सार धार अङ्गन में,
फूल फूल नाचैं प्रिया प्रीतम मगन में।

फलकारी सारी बर सोहति है प्यारी जू के,
प्रीतम बिहारी जू के पीतपट तन में॥
'लाल बलबीर' दासी सुखरासी पासी,
गावत सुधासी तान प्रीतम (की) परन में।
छिछि छम छिछि छम करत ढरत आवैं,
नूपुर ररत आवैं कोमल पदन में॥

(6)

ठुमकि ठुमकि नाचैं जुगल रसिकवर,
छबि सों छबीले अंस अंस कर धरैं हैं।
परम प्रवीन रसलीन हैं नवीन दोऊ,
दोऊ सुर माधुरे रँगीन राग ररैं हैं॥
'लाल बलबीर' मिलि नूपुर मँजीरा गाजैं,
पाछैं ललितादि दासी चौंर सिर ढरैं हैं।
मोद उर भरें चित हरें जित तित ढरें,
तित पग लाली तें गुलाली छिति करैं हैं॥



# साँझी के कवित्त

(1)

लाई फूल बीन सखी ललित लतान ही सौं,
हिये भाव भरी मन परम प्रवीनौं हैं।
चारौं ओर जोर कोर रची हैं रंगीली वर,
बूटा कौन कौन पै दिपत रंग भीनौं हैं॥
'लाल बलबीर' छिप चलौ तौ दिखाऊँ तुम्हैं,
साँझी में सुजान आज कैसौ काम कीनों हैं।
देख मन छीनो मेरो मोद है नवीनों उर,
सीस पै सजीलो राधा नाम लिख दीनों हैं॥

(2)

चुन चुन सुमन कलीन लै नवीन सख़ी,
धरत सुधार उर अति अनुराग है।
झूम रहीं ललित तमालन की लोनी लता,
छता भौंर गुंजै मोर डोलैं ताहि जाग है॥
'लाल बलबीर' दासी जगत जवाहर सी,
साँझी को सरस सुभ सर सौं सुहाग है।
देख चल चल आली सुखमा बिसाली आज,
कीरति किसोरी जू कें बन्यौ राधा बाग है॥

(3)

कारे केस कुटिल किलोल करैं कांधन लौं,
कुंडल कनक कान कलित हलैया के।

कैसे कजरारे कोरवारे नैन के कटाक्ष,
कामिनि करेजन कौं कतल करैया के॥
'लाल बलबीर' कंठ कोकिल सो गाजत है,
कहत कवित्त कल काम के जगैया के।
करन सजैया कड़े काछनी कछैया देख,
कोमल चरनकंज कुमर कन्हैया के॥

(4)

स्यामा सुकुमारी प्राणप्यारी श्रीविहारीजी की,
सुन्दरी सिरोमनि सकल लोक सिरताज।
बिपिन विहारिनी सकल हित कारिनी जू,
प्रीत उर धारिनी रहे हैं जस वृन्द गाज॥
'लाल बलबीर' जन जानियै अधीर बीर,
करुना निधान सुनिये जू टेर सुख साज।
ये ही मन आस राखो चेरी कर पास देखूँ,
जुगल बिलास ह्वै निकुंज पूरी मेरी राज॥

(5)

देख चलि आली री निराली दुति आज बलि,
राजत निकुंज छबि पुंज चहुँ ओर सों।
नवल किसोरी संग नवल किसोर वर,
हँसि हँसि बातें करैं प्रेम की हिलोर सों॥
'लाल बलबीर' दासी लैकर बजावैं बीन,
परम प्रवीन तान लै लै सुर जोर सों।
कंचन सिंगासन प्रकासन अनंत राजैं,
बैठे श्रीविहारी प्यारी मदन मरोर सों॥

(6)

कब वनरानी सुखदानी ये छबीली मोकौं,
नवल निकुंजन में नाचबौ सिखाबौगी।
झूलि झूलि जावौं गत लहन न पावौं तबै,
हेर कर बोदर लै लंक पै लगावौगी॥
'लाल बलबीर' दासी त्यारी सुखरासी पासी,
महामन्त्र ही कौं निज कर्न में जनावौगी।
हिये सचु पावौं मुसिक्यावौगी निहार माल,
लैकर प्रसादी मोर कंठ पहिरावौगी॥

(7)

कीरति लली के संग कानन करत केलि,
कुमर किसोर कान्ह रूप उजियारे जी।
काछनी जरी की कटि किंकिनी कनक गाजैं,
कौस्तुभ मनी के कर्न कुंडल सुढारे जी॥
'लाल बलबीर' कल कोमल किलोल करैं,
काँधन लौं केस मनौं झूमैं नाग कारे जी।
कबधौं करौगे कृपा करुनानिधान आन,
कुमर किसोरी मिल येहो नैन तारे जी॥

**छप्पय**

(8)

सजत सीस सुभ पेच रतनमय क्रीट विरज्जैं।
सुन्दर गोल कपोल श्रवन ताटंक सुसज्जैं॥

नासा भाल विलोकि दसन दामिनि दुति लज्जैं।
गल राजैं मोतीन माल (मधुर) पग नूपुर बज्जैं॥
ये बिनै लाल बलबीर की, कृपा दृष्टि कर कर श्रवन।
यहि छबि सों मो उर बसौ सदाँ छैल राधारमन॥

## होरी के कवित्त

(1)

खेलत हैं फाग अनुराग सों लड़ैती लाल,
गावैं मुख राग नोंनी मदन उछाल की।
केसर अतर घोर राखे हैं गुलाब नीर,
भरि पिचकारी छाँड़ैं चलन उताल की॥
'लाल बलबीर' जू पै घालत अबीर मुठी,
अति ही अनूठी बहु रंगन रसाल की।
ढँकी दुति माल छई कुंडल बिसाल लाली,
मोर के मुकुट पर गरद गुलाल की॥

(2)

लीने संग गोरी वृषभान की किसोरी सुनी,
साँकरी की खोरी धूम माची नन्दलाल की।
कनक कमोरी रंग केसरिया रंग घोरी,
भरि चितचोरी चली मदन उछाल की॥
'लाल बलबीर' जू पै घालैं रंग झोरी धुंध,
माची चहुँ ओरी छैल भूले सुध ख्याल की।
ढँकी दुति माल छई कुंडल बिसाल लाली,
मोर के मुकुट पर गरद गुलाल की॥

(3)

भ्रमत गुपाल लाल बाँधि गोल ग्वाल बाल,
भरि भरि पिचकारी छाँड़ै धार नीर की।
भीजि गई गोरी छैल कहै हँसि होरी होरी,
खेलौ चितचोरी आय आगैं जू अहीर की॥
'लाल बलबीर' लाल मसकैं उरोज गाल,
घालत गुलाल चित सकल अधीर की।
नीर की झरन अनुराग की भरन अङ्ग अङ्गन
दिपत ओप सरस अबीर की॥

नख सिख जुगल विनोद कौ, कियौ सतक संपूर।
रहौ लाल बलबीर सिर, कृष्ण अली पदधूर॥4॥

निधि बिधि ग्रह निसकरहि लह, सम्मत श्री सुखकन्द।
माघ सुक्ल तिथि पर भ्रगुर, रच वृन्दावन चन्द॥5॥



# फुटकर कवित्त
## (अभिसारिका)

(1)

मोतिन के गजरे सजाये हार हीरन के,
मनिन जटित गरैं राजैं गुलीबन्द है।
ओढ़ि नील सारी बनवारी पै सिधारी प्यारी,
रैंनि अंधयारी रूप दिपत अमन्द हैं॥
देखि देखि कहैं 'बलबीर' सबै आपस में,
सुरी है कि परी है छलावा है कि छन्द है।
पर्‌यौ प्रेमफन्द उर बढ़्यौ है अनन्द वृन्द,
इन्दुमा दमा है सुखमा है किधौं चंद है॥

(2)

कर जात सोलह सिंगारन बिहारी पास,
अचक अचक मन्द मन्द पग धर जात।
धर जात जित कौं सरोज से मयंक मुखी,
तित बन बीथिन मलिन्द वृन्द भर जात॥
भर जात सहज सुगंधन सों सर्व वन,
तबै 'बलबीर' चीर बदन सों ढर जात।
ढर जात सौतिन कौ गरब गुमान सबै,
चंद हू समेत चान्दनी कौ मन्द कर जात॥

(3)

छैल ब्रजचन्द सों मिलन सज चन्दमुखी,
छोड़ कुल कान बान नेह घर-वर तें।
जोबन जवाहर की जंगी जेब जगमगात,
जौहर जबर आन पर्‍यौ पंच सर तें॥
'लाल बलबीर' लौनी लफै लचकीली लंक,
लोट लोट जायं कच कुचन जबर तें।
हर तें लगौ है नेह डर ते डरै न बाल,
भेंटन छबीली चली सामरे सुघर तें॥

(4)

कारी सीस सारी साज कारे ही सँवार बार,
कारी भाल बेंदी सजी सुखमा अपारी है।
कारी बंक भृकुटी पिनाक सी दिपत बर,
कारे नैन कज्जल की रेख लगे प्यारी है॥
'लाल बलबीर' कारी कंचुकी उरोजन पै,
कारे घांघरे की लखी घूमन घुमारी है।
कारी निसि कारी घटा काम की सताई बाम,
छोड़ि धाम काम कान्ह कारे पै सिधारी है॥

(5)

सारी सेत जरी सम्हारी सीस जारीदार,
चारौं ओर चाँदने की किरन सम्हारी है।
सेत अंग अतर लगाय मोतिया कौ बेस,
सेत घनसार घिस भाल खौर धारी है॥

सेत बलबीर अङ्ग मोतिन के आभूषण,
सेत हार हीरन के आभा उजियारी है।
सेत चन्द्रमा की चाँदनी कौं लखि चन्दमुखी,
मंद मंद प्यारे व्रजचन्द पै सिधारी है॥

(6)

सुन्दर सुजान के मिलन कौं सरोज नैनी,
सारी सीस धारी प्यारी जरी की सुहाई है
जेवर जवाहर के जगमगात अङ्गन में,
अङ्गन निहार हेम लतिका लजाई है॥
'लाल बलबीर' उठैं मदन तरंग अङ्ग,
उरज उतंगन पै कंचुकी कसाई है।
चंद चाँदनी कौ कर मन्द मन्द चन्द्रमुखी,
निज मुखचन्द की जुन्हाई में सिधाई है॥

(7)

छाती है सौरभ समूह व्रज वीथिन में,
अचक अचक मन्द मन्द चली जाती है।
जाती है न आन तीय पास मन मोहन के,
रूप की रंगीली छबि हेर हरसाती है॥
साती हैं न कोऊ मदमाती 'बलबीर' आती,
मैंन की मरोरन में झूम अँगराती है।
राती है अनूप सारी सीस आभा भई भारी,
होत जात मग में बनात सी बिछाती है॥

(8)

साजे हैं सिंगार गरैं हीरन के हार चारु,
झूमकी झमकि रही देखौ कान बाला तें।
चंचल चपल चटकीले नैन मैन भरे,
छैल के रिझावन कौं एक एक झाला तें॥
'लाल बलबीर' जरी चीर अङ्ग जगमगात,
करत उजेरी रैन जोबन उजाला तें।
मद भरी बाला रूप दिपत निराला आई,
लैन मन माला छैल प्यारे नन्दलाला तें॥



# स्वप्न के कवित्त

(1)

कोऊ ना निवारै पीर कासों जा कहैं री बीर,
कुबिजा हमारौ प्रान प्यारौ बिरमायौ है।
ऐसी बद जाती काती छाती में लगाती नहिं,
भेजत सँगाती नैन नीर ढरकायौ है॥
'लाल बलबीर' आयौ सुपन सुजान कान्ह,
बाँसुरी बजाय गाय दरस दिखायौ है।
हँसि मुसिक्यायौ अङ्ग अङ्ग सों लगायौ जौलौं,
तौलौं ही बजर मारे गजर बजायौ है॥

(2)

काल सुपने में कान्ह बाँसुरी बजाई तामें,
ऐसी तान गाई लै लै सब ही कौ नाम री।
गाम री बिसार्‍यौ औ बिसार्‍यौ गृह काम सबै,
गई बनराज में निहारी सुख धाम री॥
'लाल बलबीर' जौलौं मुरग बजरमारे,
कूक कै नसाई नींद कियौ कूट काम री।
कितें गई बाम कितैं वन कौ अराम देख,
सूनी परी धाम कितैं गये घनस्याम री॥

(3)

सोवत में आज लख्यौ आनंद अनूप एक,
दीनी परकम्मा सुपने में व्रज वन की।
बिधि के संजोग जाय पहुँच्यौ तहाँई जहाँ,
हरि गुन गान करैं भीर रसिकन की॥
'लाल बलबीर' व्रजराज जू के अङ्ग संग,
बैठी सिरताज राज चौधेहू भुवन की।
आरती उतारैं कोऊ सीस चौंर ढारैं बाँकी,
सूरत निहारी प्यारी राधिका रमन की॥

(4)

सोवत में आयौ मनमोहन सुजान कान्ह,
बाँसुरी कौ राग मेरे कानन भलौ गयौ।
जोलौं रूप माधुरी निहारन कौं आई तौलौं,
जाने व्रजराज प्यारौ कित में चलौ गयौ॥
'लाल बलबीर' चौंकि जाग परी चकित ह्वै,
सांमरे बियोग नैंन नीर तन लौ गयौ।
झूठौ सुख सुपने को पायौ ज्यौं न पायौ सखी,
हाय हाय मेरौ मन नाहक छलौ गयौ॥

(5)

आये मथुरा कौं री बिसार मन मोहन जू,
सुनिकैं भनक तन भई अति राजी री॥

अङ्ग अङ्ग आभूषन धारे नव रत्नन के,
चूँदरी सुरंगी पचरंगी सीस साजी री॥
'लाल बलबीर' छबि निरखि सिहाने नैन,
आयौ नहीं बैन पीर मैन भूप गाजी री।
अङ्क भर जौलौं परजंक सुख लैन लागे,
तोलौं री निसंक नींद नैनन सों भाजी री॥

(6)

आज सपने में गई देखन सघन वन,
सामरौ लखौ री सीस धारैं मोर पँखियाँ।
हरषि हरषि हँसि हँसि उर आय लाग्यौ,
मैन उर जाग्यौ री उरोज कर रखियाँ॥
ता समै कौ सुख मुख बर्नत बनै न आली,
'लाल बलबीर' प्रतिपाली संग सखियाँ।
जौ लौं मैं उचक मुख चुंबन कपोल लागी,
तौलौं उरदागी भागी नींद छोड़ अँखियाँ॥

(7)

प्यारी सीस सारी है गुलाबी आबी जरी धारी,
प्यारे सीस चीरा पचरँगिया सुहायौ है।
प्यारी कुच कंचुकी सुहावनी धनुषधारी,
प्यारे जू कौ पटका हरित मन भायौ है॥
प्यारी जू कौ लहँगा लहरिया लहलहात,
प्यारे पीतपट कटि ही सों लपटायौ है।

प्यारी पीउ सुखराशी हेर बलबीर दासी,
प्यारी प्रान ही को छबि सीस पद नायौ है॥

(8)

प्यारी के चरन मांहि जावक की रेख राजैं,
प्यारे पद हीना छबि छीनत प्रवाल की।
प्यारी जू के पायजेब बिछिया अनूठो साजैं,
प्यारे जू के नूपुर की धुन एक ताल की॥
'लाल बलबीर' रस रास में रसीले छैल,
नाचत जुगल मम अखियाँ निहाल की।
मैंन रति बाल की हू वारौं कोटि प्रीति आली,
लीजिये निहार छबि राधिका गुपाल की॥



# श्रीकृष्ण के कवित्त

(1)

छोटे से चरन मांहि नूपुर की घोर होय,
रेसमी जरी की कटि काछनी कसी रहै।
उर वनमाल गज मुक्तमाल गुंजमाल,
वीरी मुख लाल जू के ललित लसी रहै॥
'लाल बलबीर' चटकीले मटकीले नैन,
वदन निहार छकि सरद ससी रहै।
ऐसी छबि माधुरी सलौनी अङ्ग अङ्गन की,
एहो व्रजराज मेरे दृगन बसी रहै॥

(2)

लालन कों पालने झुलावत जसोदा रानी,
मुदित मुदिन देख देख छबि मनियाँ।
छोटे से चरन छोटे छोटे से गुलफ गोल,
छोटे से नितम्ब छोटी छोटी सी भुजनियाँ॥
'लाल बलबीर' छोटी गरैं गज मुक्तमाल,
लोचन विसाल भाल केसर लसनियाँ।
छोटे मुख चन्द सों गोविन्द मन्द मन्द हँसैं,
छोटे से अधर छोटी दूध की दतुरियाँ॥

(3)

छोटे से चरन तामें नूपुर झनक होत,
मन्द मन्द मानौ धुनि बाजत तमुरियाँ।

कबहूँ मधुर मुख तोतरें सुनावैं बैन,
कबहूँ नचत छैल भाज जात दुरियाँ।
'लाल बलबीर' लाल करते अनेक ख्याल,
देख उर नन्दरानी मोद भर पुरियाँ।
अचक अचक झूम झूम पग धरैं भूमि,
मटकैं सरोज नैंन लटकैं लटुरियाँ॥

(4)

इन्दु से बदन पर मीन से दृगन पर,
बिज्जु से दसन छबि दृगन खगी रहै।
मन्द मुसिक्यान पर बाँसुरी की तान पर,
पट फहरान पर मो मति ठगी रहैं॥
अधरन लाल पर कंठ मनिमाल पर,
'लाल बलबीर' उर जोत सी जगी रहै।
मुक्त से नखन पर कंज से चरन पर,
सामरे ललन! मोरी लगन लगी रहै॥

(5)

आनँद करैया एहो भैया बलराम जू के,
धेनु के चरैया वन बाँसुरी बजैया हो।
असुर दलैया भूमि भार के हरैया सुर,
मुनिन रिझैया आप नन्द के ललैया हौ॥
व्रज के रखैया हो रिझैया गोप गोपिन के,
माखन चखैया लाल जसुधा के छैया हौ।
'लाल बलबीर' झलकैया सिर मोर पखा,
ग्वाल हू लसैया संग ख्यालन खिलैया हौ॥

(6)

लोचन विसाल बैन बोलत रसाल गरैं,
मुक्त मनि माला रूप जक्त उजिआला री।
पीतपट वाला कर्न कुंडल विसाला व्रज,
बुही बैन बाला छैल अजब निराला री॥
डाल प्रेम जाला हाला करेंगे निहाला आली,
'लाल बलबीर' लाल प्रान रखवाला री।
भई मैं बिहाला बिन एरी वा गुपाला मेरे,
मार नैंन भाला गयौ कहाँ नन्दलाला री॥

(7)

प्रात उठ आई गोपी नन्द के सदन मांहि,
कह्यौ नँदरानी जू सों वचन हरखियाँ।
दीजिये दिखाय मुख सामरे सलौने जू कौ,
बाढ़ै उतसाह उर लेहिं छबि लखियाँ॥
बोली हरखाय माय भोर भयौ लाड़ले जू,
लीजिये निहार द्वार ठाड़ी सबै सखियाँ।
'लाल बलबीर' गेह ससि सो प्रकास उठ्यौ,
उठे व्रजचन्द मुखचन्द खोल अँखिया॥

(8)

बंसी कौ बजैया है गवैया मीठी तानन कौ,
माखन मलाई दधि गोरस खवैया है।
झुनर मुनर पग नूपुर बजैया हँसि,
हँसि मात आँगन में निरत करैया है॥

'लाल बलबीर' जू चरैया गाय बच्छन कौ,
गोपी गोप ग्वाल उर मोद उपजैया है।
बिस्व कौ रचैया है रखैया दास दीनन कौ,
दानव असुर कंस वंस कौ नसैया है॥

(9)

माता जू सों हँसि कर कहत कन्हैया लाल,
माखन औ मिसरी री मोहि अति भावै है।
और देत मेवा पकवान पूआ पापरी कौं,
सेव री लठोर गूँझा नाहीं रुचि आवै है॥
'लाल बलबीर' जू के तोतरे बचन सुनि,
दौर हँसि लाड़ले कौ कंठ सों लगावै है।
हिये सुख पावै मुसिक्यावै छबि हेर हेर,
बेर बेर लै लै मुख माँहि सों खवावै है॥

(10)

चीरा चटकीला राजै लाल के नरंगी सीस,
चंद्रिका सिखी के नीके नीके लै सजाये हैं।
कंचन जटित कंठ हीरन के हार राजैं,
संग लै सँगाती छैल कानन ते धाये हैं॥
दास कहैं ठाढ़ी नारी निरखैं अटारी चढ़ी,
जलज झराय गीत आनंद के गाये हैं।
आरती करत नन्दरानी हरषानी आज,
गैयन चराय नन्दलाल घर आये हैं॥

(11)

केसर तिलक सीस केसी के किरीट राजैं,
चलत दिनेस छैल कानन तें धाये हैं।
काछनी जरी की कटि किंकिनी कनक राजैं,
जलज के हार कंठ सखन सजाये हैं॥
नीके राग गाते हरषाते संग गायन के,
दास नर नारी लखि आनंद अघाये हैं।
आरती करत नन्दरानी हरषानी आज,
गैयन चराय नन्दलाल घर आये हैं॥

(12)

माथे पै मुकुट राजै कानन कुंडल विराजै,
नासिका बुलाखि जाकी आँख अनियारी हैं।
मुख में तमोल चाबैं मन्द मुसिक्यात आवैं,
लटक चलन हेर सुध बुध हारी हैं॥
गायन के पाछैं पाछैं मुरली बजावैं आछैं,
पीत पट काछैं जाकी छबि लगै प्यारी हैं।
'लाल बलबीर' आली देख रेख री उताली,
आवैं वनमाली छैल बाँकड़े बिहारी हैं॥



# अधर अष्टक

(1)

केर दल सदक छिरक घनसारन तें,
खस की कनात सीरे नीर छिटकाती हैं।
चन्दन चहल कर कंचन सजाये थार,
चन्दन अतर तन चीरन सजाती है॥
जलज के दलन की चित्रित रची हैं सेज,
राधा कृष्ण राजैं कांति ससि की लजाती है।
'दास कहैं' ठाढ़ी सखी आनँद निहार रहीं,
जेठ की जलाका की न तहाँ गत आती है॥

(2)

सीरे सीरे नीरन की ललित तलाई तहाँ,
घिस घनसार कंज दल गारियत है।
खिरकी हजारी तहाँ खस की कनात डारी,
कंचन की झारी धर नीर ढारियत है॥
जलज के हार हिये साजे तर संदल के,
चन्दनी सरस तन चीर धारियत है।
कदली के दलन की सेज रची दास कहैं,
राधा कृष्ण राजैं जेठ त्रास टारियत है॥

(3)

चली नन्दलाला के दरस हेत कंज नैनी,
चरन धरत धरा लाली रंग ढर जात।

सारी नील राजैं सीस जरी की किनारी दार,
घन की तड़ित की झलक हेर दर जात॥
'दास कहैं' कण्ठ चार हीरन के हार साजैं,
अंगन निहारि कें अंग नारि रर जात।
चली जात अलिन कतारे संग गंध हेत,
आनन निकाई तें निकाई चन्द हर जात॥

(4)

सकल सिंगार साज नन्दलालजी के काज,
चली केलि ग्रेह अङ्ग अङ्ग हरषाती है।
नैन अनियारे कारे नासा लख कीर हारे,
दसन झलक हेर तड़ित सकाती है॥
'दास कहैं' सीस तें निकस लट नागिनी सी,
गंडन के तीर ही लहर लहराती है।
आती है झलक चढ़ी अङ्गन अनंग जी की,
नीकी कांति हेर नारि रति सी लजाती है॥

(5)

नैंक ही निहारें ते चटाक चित हरैं लेत,
करैं लेत दासी कहा करता कला की है।
ताकी है न ऐसी आली ऐ निहार राजैं,
नथनी सहित कांति जलज झलाकी है॥
'दास कहैं' धीरन के धीरन डिगैया लाज,
काजन नसैया दैया करत चलाकी है।
छाली हैं अचल रस लै लै नैन आनन के,
कैसी ये अदां की नासा नन्द के लला की है॥

# दावानल लीला के कवित्त

(1)

काली नाथ करकैं सनाथ नाथ आये तीर,
देख नन्दराय सखा रानी हरषाई है।
धाय धाय लाल कहैं छाती ते लगाय लीनी,
कीनी आज ललन नरायन सहाई है॥
दास निसि दंड गई कीजिये अनंद यहाँ,
डेरा कर दीने नैन नींद घिर आई है।
अर्द्ध निसि आई खल करी खलताई धाई,
जान कान कानन लै अगन लगाई है॥

(2)

लागी लागी कहैं नर नारी आग जागी जाहे,
हेरत दिसान ताकी त्रास तें तचै गये।
कैसी करैं कहाँ जाय कासों कहैं हाय हाय,
धाय कही लाल याकी लाह ते लचै गये॥
दास कही कान्ह सीख कीजिये सकल कान,
लीजिये दृगन ढाँक याही तें कचै गये।
करुना निधान कान्ह जानि कें जनन हानि,
सीघ्र कर तान कें चटाक ही अचै गये॥

(3)

लै लै खा संग करै नारिन तें जग ऐसे,
नये नये ढंग लाल कौनें ये सिखाये हैं।
सीधे नन्दराय रानी ऐसी ना अनीत ठानी,
छांड़िये अयानी रीति नगर हँसाये हैं॥
दास कहैं कंसराय जानै ना अयाने ये रे,
तेरे छल छन्द जेरे चलैं ना चलाये हैं।
दान दीजै दान दीजै कैसे दान ज्ञान कीजे,
साँची कहि दीजे लला कानें ये लगाये हैं॥

(4)

दृगन निहार हारे खंजन जलज अलि,
नासिका निहार कीर कानन सिधारे हैं।
दसन निहार हारे हीरा कर दंग डारे,
अधर निहार छैल लाल नग हारे हैं॥
अंगन निहारें तें हरारे किये जलधर,
आनन निहारे तें निसाकर लजारे हैं।
दास कहैं आनँद के कंद नँदनन्दन के,
चरन निहार कंज केते गार डारे हैं॥



# काली के कवित्त

(1)

दह कर गरल दहन चल गर धर,
जल धस अड़कर लड़त नगन सन।
गरज गरज कर तरजत सन सन,
लड़त लड़त अहि रहत सथल तन॥
नथ कर ततक्षन नरतत सर चढ़,
गरजत सरल हरस लख जन गन।
चढ़कर गगन अजर जल जन ढर,
दस कह जय जय हरि धन धन॥

## गिरिवर

(2)

गरज गरज घन अड़त तरज कर,
गगन डरत जन थर थर थर थर।
तड़त तड़त तड़ ड़ ड़ ड़ ड़ ड़ ड़ ड़,
सर सन चलन जलन कर झर झर॥
सदन सदन कढ़ चलत अचक नर,
गह गह चरन सरन रख रख हर।
करतल करजन खन तर गर वर,
हरषत सजन लषत लल अन कर॥

(3)

द्रगन चलत गत सरन थकत चट,
झलकन झलक अलक लल अन कर।
रदन अरन तक हलन चलन लल,
हसन दसन लख जलज सकल टर॥
गल झलकत अत रतन जटित हर,
कनक कड़न कर अधक धरन धर।
जघन सघन कट कछन कछत अत,
चरन धरन अघ हरन रटन नर॥

## कृष्ण

(1)

आई एक दक्षनी सुलक्षनी निहार प्यारे,
जाके रूप आगें रूप रत कौ रती कौ है।
कारी सटकारी बेनी लहर लहर करैं,
मानौ जू फनीस सुधा पियत ससी कौ है॥
'लाल बलबीर' झूम झूम पग धरे भूमि,
लूम लूम आवै मान मलत करी कौ है।
रूप रमनी कौ हेर सुखमा घनी कौ जुग,
जंघ पट नीकौ जु कछौटा कामिनी कौ है॥

(2)

सीस सीस फूल छबि दिपत अतूल मानौ,
नभ में प्रकास फैलौ सरद ससी कौ है।

नवल कपोल माहिं राजत है तिल मानो,
सोहत सरोज सेज पूत गंडकी कौ है॥
'लाल बलबीर' रतनारे नैन अनियारे,
देख सर सर जाल रत के पती कौ है।
रूप रमनी को हेर सुखमा घनी कौ जुग,
जंघ पट नीकौ जू कछौटा कामिनी कौ है॥

(3)

मोहन के संग में उमंग भरी प्यारी बाल,
राति सुख लूट प्रात बात करै गोता की।
चतुरन संग चतुराई ना चलाई चलै,
हमसों छिपाव कर बनै मत कोताकी॥
'लाल बलबीर' जू कौ नेह ना दुरायौ दुरै,
साँची जिन कहै रूप सागर भरौ ताकी।
उन्नत उरोजन पै नखत प्रतक्ष मानो,
गद्दर अनारन पै चोंच लगी तोता की॥

(4)

आई बन कुंज तें प्रभात उठि इन्दुमुखी,
कहाँ चली जात गात चञ्चल अकोता सी।
अधरन पीक लीक दरसै कपोलन पै,
ढीली भई बैनी पाट रेसम गुहोता की॥
'लाल बलबीर' जू सों लगन लगाय नैन,
काहें कों दुरावत है नेहन भरोता की।
उन्नत उरोजन पै नखत प्रतक्ष मानो,
**गद्दर अनारन पै चोंच लगी तोता की॥**

(5)

सीसफूल वन्दनी करनफूल बाली पत्ते,
झूमर झमंक रही बैना बाल भाल पै।
बेसर नवीन में बुलाख झूम झोटा लेत,
घूम रहे झूमका अनूप जुग गाल पै॥
'लाल बलबीर' पचलरी गुलीबन्द हार,
हँसली हमेल गरैं हियरा बहाल पै।
जौसन बिसाल बांह कंगन बराहडाल,
बाजूबन्द साज बाल चली नन्दलाल पै॥

(6)

कड़े छड़े साँठ पायजेब जेब देती पग,
झाँझन झनंकैं धुनि छाई यति ताल पै।
बिछिया समार पग पानि छल संकरीन,
झनझनात किंकिनियाँ दामिन बिसाल पै॥
'लाल बलबीर' कर आरसी अँगूठी छल्ला,
पहोंची गुही है बर मखतूल जाल पै।
जौसन बिसाल कर कंगन बराहडाल,
बाजूबन्द साज बाल चली नन्दलाल पै॥

## प्रवत्स्यत् पतिका

(1)

जाछिन तें चलबे की चरचा चलाई तुम,
ताछिन तें हिये माहिं अमित उदासी मैं।

तुम तौ सुजान नहिं जानत हिये की हानि,
कीजै ना पयान जू फँसाय नेह फाँसी मैं॥
'लाल बलबीर' धरूँ कौन बिधि धीर बाढ़ी,
विरहा की पीर ल्यौ बचाय जान दासी मैं।
एहो सुखरासी वृन्दाविपिन निवासी,
न तौ प्रान तो बसाऔ मेरे आपनी खवासी मैं॥

## स्वयं दूती

(1)

सास गई मायके नन्द ससुरारैं गई,
द्यौरानी जिठानी लरकीयौ ग्रेह नयारौ है।
बालम बिदेस कछू भेज्यौ ना सन्देस बड़ौ,
येही है अँदेस मन्त्र कौन लै विचारौ है॥
'लाल बलबीर' आप सांझ समैं जावौ जिन,
कानन में देखौ त्रास पंचानन भारौ है।
कीजै यहाँ सैन बड़े चैन में बितावौ रैन,
बसिये बटोही सुनौ बचन हमारौ है॥

(2)

कदम कनेर केर कंज कमरख हेर,
झूम झूम झूमत कतार बाँध केरे हैं।
बेल हैं बिजौरे हैं सुबेरे बड़हर बेस,
बन्ना बर बेत हैं बिही हैं री बहेरे हैं॥
'लाल बलबीर' लौनी लता हैं लवंगन की,
लफंत लखौट हैं लसीले री लखेरे हैं।

सोच मति कीजै री सलौनी ये सयानी बाल,
सासुरैं तिहारैं बन बाग बहुतेरे हैं॥

## वर्तमान गुप्ता

(1)

आई मैं भरन नीर आली या कालिन्दी तीर,
बानर बिकट फौज ऐसी तौ न चीनी में।
कीनी ना कछू री ये गरज आये कूक दै दै,
ताछिन खरीरी बीर ह्वै गई अधीनी मैं॥
'लाल बलबीर' आये नन्द के रँगीले छैल,
आय अकुलाय कोटि जौहर तें छीनी मैं।
भागन बचाई या बचाई मोहि समारे नें,
याई डर माई याकी जेट भरि लीनी मैं॥

(2)

लखत कहा है बीर चकी झकी उझकी सी,
एक तें प्रवीन बात मेरी सुनि लीजिये।
एक व्रजबाला गई मार नैन भाला गिरे,
भूमि नन्दलाला कौ उपाय कछू कीजिये॥
'लाल बलबीर' बार बार मैं उठाय हारी,
चेतत न सामरौ हमारौ तन छीजिये।
जौं लौं भरि अङ्क मैं रही हौं लिपटाय धाय,
तौलौं जाय जसुदा सों बेगि कहि दीजिये॥

# मन: शिक्षा

(1)

येता या कलाम में लिखा है उस मालिक ने,
इस में उजर नहीं तेता पास आवैगा।
याते हो अचिंत सब चिंत को बिसार दीजै,
भजिये अनंत को अनंत फल पावैगा॥
'लाल बलबीर' क्यों अधीन फिरें मुलकों में,
मुल्क का मालिक मकां पै ही पहुँचावैगा।
वुही काम आवै तेरे फंद को नसावै,
जो वा नजर बिलन्द से तू लगन लगावैगा॥

(2)

छाँड़ दे जहाँ की आस कीजै व्रज ही का बास,
पुजैं सब आस दिल रंज को नसावैगा।
नन्द का रंगीला गरबीला वो सुजान कान्ह,
कदी तौ पियारा रस आनँद दिखावैगा॥
'लाल बलबीर' ऐसा चार दस लोकन में,
और है न दूजा उर मोद उपजावैगा।
वुही काम आवै तेरे फंद को नसावै,
जो वा जर बिलन्द से तू लगन लगावैगा॥

(3)

बार बार प्यारे मैं तो तेरे भूलने की सीख,
प्रीति सों सिखाऊँ नेक मान सुख पावैगा।

उससें जरूर जो तू करेगा मुहब्बत को,
तौ पै जन्म जन्मन की तापना नसावैगा॥
'लाल बलबीर' चित लाइये जरूर प्यारे,
ऐसा समै बेर बेर फेर तें न पावैगा।
वुही काम आवै तेरे फंद को नसावै,
जो वा नजर बिलन्द से तू लगन लगावैगा॥

(4)

चाहै कहौ राम राम चाहे रघुबीर कहौ,
चाहै मधुसूदन गुपाल गिरधारी जी।
चाहै ओंकार निरंकार निरविकार कहौ,
चाहै व्रजगोपिन के प्राण हितकारी जी॥
चाहै नन्दनन्द सिर निर्त्त किये कालीदह,
चाहै कहौ पूतनानिकन्द बनवारी जी।
चाहै 'बलबीर' कृष्ण कृष्ण कहौ बार बार,
चाहै व्रजराज कहौ बांकड़े बिहारी जी॥

(5)

पंडित भये तौ कहा सास्तर पुरान पढ़ै,
जो पै वेद हू कौ मथ माखन निकारौ ना।
धनद भये तौ कहा लाखन किरोर पाये,
जो पै लै गरीबन कौ दारिद बिदारौ ना॥
'लाल बलबीर' सूरवीर जो भये तौ कहा,
बखत परे पै मित्र कारज सुधारौ ना।
जोगी भये जती भये तपी भये त्यागी भये,
धूर भये जो पै राधा नाम कौं उचारौं ना॥

(6)

मिथ्या जग बाद के विषादन में स्वाद मान,
छाँड़ि कें सुपंथ कौं कुपंथ मग जावै है।
सार बिसराई जासों होय न भलाई देख,
पापन की पोट जोर सीस पै धरावै है॥
'लाल बलबीर' पायौ मानस जनम हाय,
तौऊ तें रँगीले मति नैक ना उपावै है।
लाज हू न आवै धिरकार तेरे जीवन कौं,
बैठि ना निकुंजन में राधा गुन गावै है॥

(7)

तू तौ मन बौरा भयौ डोलत है दौरा दौरा,
ये जग लबार बन्यौ कारज नसायगौ।
अजहूँ तू सोच मति पोच कौं बिसार दीजै,
कठिन परे पै काज कोई नहिं आयगौ॥
'लाल बलबीर' जबै घेरैं जम के सपूत,
बेस अवधूतपनौ तेरौ लै बिलायगौ।
जस रहि जाय त्रास पास हू न आय कदी,
सदां हुलसाय जौ पै राधा गुन गायगौ॥

(8)

छाया कर साधुन की संगत में बार बार,
सदां पद पंकज में सीस कौं नवाया कर।
न्हाया कर प्यारे मारतंड तनया में जाय,
रज कौं लगाय अंग अंग हुलसाया कर॥

पाया कर प्रभु के प्रसाद कौं प्रसन्न ह्वै कें,
श्री वनराज जू की परिक्रमा जाया कर।
लाया कर ध्यान बलबीर मग्न ह्वै कैं नित,
बैठि कें निकुंजन में राधा गुन गाया कर॥

(9)

मानुस जनम पायौ बास वनराज जू कौ,
चतुर कहाय सीस साधुन कौं नायौ ना।
धनी हू कहायौ धन दीयौ श्रीगुपालजू ने,
दान करिबे कौं कर ऊँचौ लै उठायौ ना॥
'लाल बलबीर' छाय रह्यौ जग जालन में,
ऐरे मतिहीन तोय नैक सोच आयौ ना।
जोई काम आयौ सोई सोई बिसरायौ हाय,
बैठि कें निकुंजन में राधा गुन गायौ ना॥

(10)

केतिक दिना में यह बानक बन्यौ है आन,
एरे गुनमान बिनै सुन लीजै सुखधाम।
और चरचा बेकामें जनम बितामें कामें,
एक हू न आमें आमें गामें जो हरी कौ नाम॥
'लाल बलबीर' पामें जामें जो अरामैं कीजै,
बुही मित्र कामें जामें सुखी होय आठौं जाम।
बुही बसुधा में आमें सुघड़ कहामें भूल,
मन ना डुलामें सदां गामैं गुन स्यामा स्याम॥

(11)

जाके काम आयौ ताकौ नाम बिसरायौ वृथां,
जनम गमायौ जग देख भयौ गैला है।
झूँठे फर फंदन के धंधे में लगोई रहै,
अजहुँ समार सार छोड़ अब फैला है॥
'लाल बलबीर' धारे भूषन अनेक चीर,
येतौ रे अधीर रहै भीतर तें मैला है।
त्याग जग सैला राधेस्याम भज गैला तन,
निपट निकाम देख चाम ही का थैला है॥

(12)

मौंन गहि लीजै बाद कूर सों न कीजै जासों,
तन मन छीजै होय जक्त ये खिसाना है।
जान कैं अजान होय रहना जहान बीच,
आप दिल हाल जाय कौन कों सुनाना है॥
'लाल बलबीर' ध्यान धरना हरी का जाने,
सारे ही जहांन को दिलाया आब दाना है।
सोच मन दाना जग फन्द में न आना छिन,
मुलक बिराना होय नाजुक जमाना है॥

(13)

बात बिन रोस ठानै सब ही सों डर मानै,
सास्त्र कौं न जानै ताके संगत न छीजिये।
आलस में चूर पर निंदा भरपूर आये,
समौ परै दूर ताकैं रंग में न भीजिये॥

'लाल बलबीर' मित्र द्रोही कृतघनी क्रूर,
खसिया लबारन की बात ना पतीजिये।
रसिक प्रवीनन सों बिनती हमारी ये ही,
एतिन सों भूलि ना सुजान प्रीति कीजिये॥

(14)

मानस जनम समौ पाय कें मिलौ है तोय,
जाकौं तौ सुजान ग्यान मन में बिचारबौ।
चौरासी जौनिन में जौन तें निकासी गयौ,
अब तौ अजान कछू दया उर धारबौ॥
'लाल बलबीर' बन्यौ चाहै बड़ौ सूर बीर,
सूरबीर है तौ तन द्रोह दर डारबौ।
दीन के सतावन में मिलै ना बड़ाई तोय,
जीतबौ कै हारबौ गरीबन कौ मारबौ॥

(15)

स्याम नाम कहें ते अहिल्या रिषि नारि तरी,
सजकैं सिंगार पास पति के सिधाई ये।
स्याम नाम लेत ही छुड़ायौ गजराज हाल,
भारत में अंडन की जा करी सहाई ये॥
स्याम स्याम स्याम कही अजामिल तार दियौ,
देख भक्ति सिबरी बैकुण्ठ कौं पठाई ये।
'लाल बलबीर' धीर धरिकें सुजान मन,
राधेस्याम स्यामा स्याम स्याम गुन गाइये॥

(16)

मो मन मतंग संग रहत कुढंगन के,
मद में मदंध याहि कौन विधि मोरौगे।
राति दिन आठौं जाम कामन के परौ फंद,
है न सतसंग प्रीति रीति नीत जोरौगे॥
'लाल बलबीर' छिन ज्ञान के लगै न तीर,
प्रेम रूपी बारिध में कैसी बिधि बोरौगे।
एहो ब्रजराज मेरे पाप गढ़ कौ न ओर,
लंका है तो नाहिं ताहि डंका देत तोरौगे॥

(17)

बिटप भलौ है जो फलौ है फल फूलन सों,
जाकी छाँहि बैठिकें बड़ो ही सुख पाय है।
नेह जो भलौ है आदि अंत लौ निबाह होय,
देह जो भलौ है पर कारज में धाय है॥
कूप जो भलौ है मीठो सीतल अथाह नीर,
रूप जो भलौ है हेर सब ही सिराय है।
सुख जो भलौ है बलबीर सरबत्र होय,
मुख जो भलौ है श्रीराधा गुन गाय है॥

(18)

मित्र तौ वही है जो बिपति में सहाय करै,
पुत्र तौ वही है कुल धरम चलाय है।
नारि तौ वही है पति सेवा में मगन रहै,
कार्य तौ वही है देह पालन कराय है॥

ज्ञान तौ वही है 'बलबीर' जो गुरु ने दियौ,
ध्यान तौ वही है ब्रजराज कौ धराय़ है।
सुख तौ वही है जन ही कौं सरबत्र होय,
मुख तौ वही है श्रीराधा गुन गाय है॥

(19)

राग तौ वही है जामें राधिका कौ नाम होय,
बाग तौ वही है फल फूल दरसावै है।
बाज तौ वही है रन देख कें न भाजै लाजै,
राज तौ वही है जाकी राज सुख पावै है॥
'लाल बलबीर' भ्रात वुही जो न छाँड़ै साथ,
तात तौ वह है लै सुपंथ कौ सिखावै है।
बात तौ वही है सुनि सब कौं आनंद होय,
हाथ तौ वही है हरि कारज में आवै है॥

(20)

जाना है न तूनैं ब्रजराज को रंगीली छैल,
देख धन धामन कौं हो रहा अजाना है।
माना है अपन झूँठे तात मात भ्रातन कौं,
साथी है न कोऊ जान क्यों बनै अजाना है॥
आना है न एकौ काम आय हैं हरी का नाम,
'लाल बलबीर' ध्यान वाही का धराना है।
राना है न तोसा तू अजाना भया नाहक में,
चेत रे अचेत पास मालिक के जाना है॥

(21)

काहैं कौं फिरत नर भटकत ठौर ठौर,
चतुर प्रवीन सीख एती चित लाउ रे।
चौरासी जन्म तें सिरोमन मनुष्य देह,
तामें तौ रसीले ध्यान धनी कौ धराउ रे॥
'लाल बलबीर' अबै चेतन कौ औसर है,
बनै क्यौं अचेत चेत जड़ता बहाउ रे।
सील उर लाउ काम क्रोध ही नसाउ सदां,
बैठि कें निकुंजन में राधा गुन गाउ रे॥

(22)

कर लै जतन ऐसो धर लै हरी कौ ध्यान,
टरलै कुपंथ सों अगारी काम आवैगौ।
कायर कपूत कूर करै क्यौं कुटिलताई,
कपटी कठोर तू पिछारी पछितावैगौ॥
भनै 'बलबीर' जू अधीर होय जैहै जबै,
बंधैगौ जंजीर सों सवाई मार खावैगौ।
जंगी जमराज सों जरूर न जुरैगौ जंग,
जालिम सों जोर बिना कौन लै बचावैगौ॥

(23)

आये कौन काज कौल करिकें कृपाल जू सों,
ताकौं बिसराय कें कुपंथ माहिं धाते हौ।
जन्म जन्म जन्मन के पाप तन धोयबे कौं,
सो तो लै न खोये और पातक लगाते हो॥

'लाल बलबीर' चेत काहे कौं अचेत बनै,
हीरा सौ जनम पाय नाहक बिताते हौ।
सील उर लाते नहीं राधे गुन गाते नहीं,
जीवना कितेक या पै जूना भये जाते हौ॥

(24)

लाखन तुरंग ये गयंद गरबीले गोल,
जानि कें अमोल से बड़प्पन जताते हौ।
मेरौ धन मेरौ धाम मेरौ देस मेरौ नाम,
मेरौ सब काम देख देख कें उम्हाते हौ॥
'लाल बलबीर' संग कोऊ ना चलैंगे बीर,
अंत कौ सुजान वृथा कटक बुवाते हौ।
सील उर लाते नहीं राधा गुन गाते नहीं,
जीवना कितैक जापै जूना भये जाते हौ॥

(25)

देख दस मास तेरौ उदर निवास कियौ,
तहाँ सब दीयौ लै लगाई नैक ढील ना।
पाहन में पौहमि पताल हू में पानिन में,
सब में दिवैया सदां जामें मान हील ना॥
'लाल बलबीर' याते वाही कौ भरोसौ राख,
ना तौ लूट लैहैं जम के समान भीलना।
ढील ना करै रे अब कील ना बनै तू भूल,
राधेस्याम बोल मन माटी के मटीलना॥

(26)

मीठे बैन बोलौं साधु संतन के संग डोलौ,
करिकैं ढिठाई उर काऊ कौ सु छील ना।
कठिन पंथ आवै ताकूँ कौन लै लँघावै तबै,
पीछैं पछितावैं जबै चलौ जाय मील ना॥
'लाल बलबीर' न्याव साहिब केरे गौ जैसी,
करै सो भरैगो तीजै होयगौ उकील ना।
ढील ना करे रे अब कील ना बनै तू भूल,
राधेस्याम बोल मन माटी के मटीलना॥

(27)

पापन के फंदन में ऐसौ लवलीन भयौ,
आनन्द के कन्दन को नाम नहीं आनौ है।
झूठे फर फंदन कौं नीकैं हुलसाय सुने,
सांच कहै कोऊ ताहि कहत दिवानौ है॥
साधु गुरु विप्रन कौं देख मुख फेर जाय,
कंचनी कुलंगन कौं हेर हरषानौ है।
भनै 'बलबीर' चेत अजहूँ अचेत चित,
राधेस्याम बोल नहीं जमपुर कौ जानौं है॥

(28)

बालापन बालन के खेल में गमाय दियो,
तरूनई छाई तिय रंग में भुलाना है।
बृद्ध बैस भई तौ कहन लाग्यौ हाय मर्यौ,
नाती सुत कहैं मोर कुल कौ लजाना है॥

खैंच पग तोय देख पौरी मांहिं डारि दियौ,
तौ भी ब्रजराज जी सों चित ना लगाना है।
भनै 'बलबीर' चेत अजहूँ अचेत चित,
राधेस्याम बोल नहीं जमपुर कौ जाना है॥

(29)

कौल कर आयौ तें न गायौ गुन वा मद कौ,
आमद कौं देख कहै हौं हू सूर जानी मैं।
काहू कौं खसूटैं लूटै त्रिपति न क्यों हू होय,
होय न गुजारौ मोर येती राजधानी में॥
'लाल बलबीर' चेत अजहूँ समार प्यारे,
राधेस्याम बोल धर्‌यौ कहा आनाकानी में।
देह मुरझानी माया होयगी बिरानी आयु,
ऐसें चली जाय जैंसे नाव जाय पानी में॥

(30)

छाँड़ि जग बाद के विषादन कौं ऐरे मन,
स्वाद है कहा रे जग भ्रमना भ्रमन में।
कीजै सतसंग तासों होय मन तम भंग,
होयगी उमंग छिन छिन अलीगन में॥
'लाल बलबीर' दासी भाव सों खवासी मांहिं,
राखौ सुखरासी जू के नेह चरनन में।
बिहरौ पुलिन में पतन माहिं सैन करौ,
राधा राधा रटौ बास करौ वृन्दावन में॥

(31)

आयै हौ अवनि पै करार कर बालम सों,
किये ना भजन भूल रह्यौ पाय ज्वानी में।
होकर मदंध रति रंग में रंग्यौ प्रवीन,
काहे मति हीन अबै लीन भयौ रानी में॥
भनै 'बलबीर' चेत अजहूँ समार लीजै,
स्वर्ग नर्क काम मोक्ष चार बात बानी में।
देह कुमिलाई माया होयगो पराई आयु,
ऐसें चली जाय जैसे नाव जाय़ पानी में॥

(32)

कीने हैं जतन बहु प्रकार याही के हेत,
जुग परियंत तोहि जीवन की आसा है।
मेरौ सुत मेरी बाम मेरौ धन मेरौ धाम,
मेरौ निज गाम यह मेरौ निज बासा है॥
माया के लपैटा में भूलानौं बहकानौ जान,
जबहीं लौं सात गात तब ही लौं स्वासाँ है।
त्याग 'बलबीर' आसा रटौ हरि नाम खासा,
पानी में बतासा तैसा तन का तमासा है॥

(33)

भूल निज कर्मन कौं गहत कुकर्मन कौं,
कर्म कौं निहार नित खाय मद्य मासा है।
तात मात भ्राता सुत दारा परिवार प्यारे,
झूठै परपंच जान माया की भुलासा है॥

चतुर सुजान काहे निपट अजान बने,
पाप कौं कमावै दिन चार की न आसा है।
त्याग 'बलबीर' आसा रटौ हरि नाम खासा,
पानी में बतासा तैसा तन का तमासा है॥

(34)

लख ललयन यह जरत अनल लसन,
जर कर करत गरल कर छरकन।
लड़त लड़त छल करत झणक झण,
तन धर कर गरधर चढ़ ततक्षण॥
नद कर ललन नचत नग सर चढ़,
दस लख हरषत सकल सजन तन।
चढ़ चढ़ गगन अजर जस कर अस,
जयति जयति जय धन धन धन धन॥

(35)

सखन सहित हरि चल गहन दधि,
तकत तकत चल सदन सदन कर।
झझक झझक कर चरन अचक धर,
लषत न नर सर हतन ललन घर॥
सध दध गहत झटक ललयन कर,
चषत खलत घट ढरत धरन धर।
दस कह यह गत करत सकल घर,
सजन हरष कह धन धन धन हर॥

(36)

दरसत तड़त लजत लख तत छन,
लख लख जन गन तन तन हरषत।
हरसत रहस रहस जस कह कह,
गह गह झजकर नच गन करसत॥
कर सत नखन तरन झलकत हत,
सजत सजल लल जल जन झरसत।
झरसत कल कल दस कह अर जद,
हर कर चरन हरन अघ दरसत॥

(37)

दरसत हरत सकल जग कल हन,
जन कर करसत ततक्षन हरसत।
हरसत रटत रसिक जन जस कर,
हरषन लगन जतन कर करसत॥
करसत लगन अजर जस लह कर,
दह कर अजस सरस जस सरसत।
सरसत लघत जगत कर दस जद,
हर कर चरन हरन अघ दरसत॥

(38)

कर हर लगन सकल अघ हर हर,
हरक हरक हर असन रटत नर।
नर तन धर धर सकल खल दलन,
धरत रहत हर जन हरि जस धर॥

धर कर सरल नचत जद गर धर,
अचक अचक धर चरन लचक हर।
हरसन कहत सखन अह ललयन,
टरत न द्रग यह दरस अधक कर॥

(39)

प्रात उठि आई केलि मंदिर तें इन्दुमुखी,
झप झप जात आँख आलस भरोता की।
हिये हरषात सकुचात जमुहात जात,
ऐंठ रहीं अलकैं अनूप इत्र पोता की॥
'लाल बलबीर' ये कपोलन की पीक लीक,
दुरैना दुराई छबि छाई है अकोता की।
उन्नत उरोजन पै नखत प्रतक्ष मानौ,
गद्दर अनार पै लगी है चोंच तोता की॥

(40)

आई रस लूटि कें छबीले सों छबीली बाल,
साँचौ कहौ हाल बात कीजिये न गोता की।
मींड रह सारी औ बिथुर रहे बार माल,
टूट रहीं उर तें प्रसूनन अकोता की॥
'लाल बलबीर' ये लजौहैं अरसौं हैं नैन,
चुगली करत दोऊ प्रगट असोता की।
उन्नत उरोजन पै नखत प्रतक्ष मानौ,
गद्दर अनार पै लगी है चोंच तोता की॥

(41)

आये हौ कहाँ ते औ कहावत हौ कौन आप,
जहाँ फरफन्द लाल चलै ना चलायौ है।
लूट लूट खायौ दधि गोपिन कौ कानन में,
ऐसौई यहाँ पै आन ऊधम उठायौ है॥
'लाल बलबीर' कान दै दै ना सुनौ जी कान,
लता फल पुष्पन में राधा धुन छायौ है।
व्रज वृषभान कौ सुता है वृषभान संग,
राधे जू कौ वृन्दावन वेदन में गायौ है॥

(42)

आये ग्वाल बाल दौर धाये बलराम जू पै,
रोवत सकल बैन ऐसें कह भाखौ है।
'लाल बलबीर' लाल आपने भवन ही में,
खेलत खिलौना एक माट फोर नाखौ है॥
ताछिन तें सांटी लै रिसानी ना अघानी माय,
बदन मलीन लाल माखन न चाखौ है।
गैयन चरैया सब ही कौ हुलसैया भैया,
सामरौ कन्हैया मैया नें बांध राखौ है॥

(43)

ग्वालन कौं संग लै गयौ री धँस गेह मेरे,
टेर लीये केकी गन मर्कट अपारी री।
खाये दधि माखन लुटाये फैलाये आय,
फोर डारे बासन लै किये ढेर द्वारी री॥

'लाल बलबीर' भलौ जायौ री सपूत पूत,
खोल दिये धेनु बच्छ बन कौं हंकारी री।
हारीं हम व्रज के न बास कों करैंगी दैया,
कहाँ लौं सहैंगी याहि देंगी अब गारी री॥

(44)

पूजे कुल देवी देव सुकृत अनेक कीनें,
याही के प्रताप सुत बृद्ध बैस पायौ री।
नव लख धेनु मेरे अपर अनेक राजैं,
दूध दही माखन कौ कौन सौ घटायौ री॥
'लाल बलबीर' बीर भूलना विलम कीजै,
दूनौ भर लीजै री इतेक जितौ खायौ री।
दोऊ कर जोर नन्दरानी कहैं गोपिन्न तें,
गारी मति दीजौं मो गरीबनी कौ जायौ री॥

(45)

जा छिन ते परी कान ता छिन तें तजी कान,
लोक वेद हू की ज्ञान स्यान सबै बन्द की।
ऐसी धुन छाई गाई नई रागनी जमाई लेत,
सब कौ चुराय मन बानी प्रेम फन्द की॥
'लाल बलबीर' माई चलौ वनराज जू में,
कीजै आज झाँकी बाँकी आनंद के कन्द की।
छन्द सों भरी हैं ये करन फरफन्द लागीं,
बाजि रही बाँसुरिया प्यारे व्रजचन्द की॥

(46)

राधे के जनम दिन बाजत बधाई द्वार,
नाचि नाचि गोप लै लुटावैं पकवान हैं।
ठाड़े सूत मागध औ बन्दीजन गान करै,
हिये हरषाय कुल करत बखान हैं॥
'लाल बलबीर' नृप सबैं सनमान किये,
जाचक अजाच किये दिये बहु दान हैं।
चढ़े नभ आन सुर सुमन झरावैं कहैं,
धन्य वृषभान रानी धन्य वृषभान हैं॥

(47)

जन्म सुनि लालन कौ धाये ब्रज गोपी ग्वाल,
लै लै दूध गोरस कों नन्द ग्रेह चाल की।
मोर के पखौआ सीस केसर तिलक भाल,
तैसी छबि छाई गरैं गुंजन की माल की॥
'लाल बलबीर' लै बजावत अनेक बाजे,
इन्द्र घन गाजे धुनि मुरली विसाल की।
गावत बधाये अङ्ग अङ्ग हुलसाये कहैं,
नन्द के अनन्द भये जै कन्हैया लाल की॥

(48)

एहो प्रान प्यारी मुखचन्द उजियारी तेरी,
जाऊँ बलिहारी नैंक हेरौ ओर मोरी जू।
छांड़ौ मान बानि गुन खानि ये सुजान प्यारी,
हँसि मुसिक्याऔ लेत हियरा हिलोरी जू॥

कहैं 'बलबीर' मन माखन ते कोमल है,
वृथां कौं रँगीली चित करौना कठोरी जू।
मान बिनै मोरी कहूँ दोऊ कर जोरी मोहि,
रहै आस तोरी वृषभान की किसोरी जू॥

(49)

फूलन के सदन छिरकि घनसारन तें,
फूलन के परदे परे हैं द्वार द्वारी में।
फूलन की चांदनी चन्दोबा चारु फूलन के,
फूलन के छत्र लगे फूल फूल डारी में॥
फूलन के आभूषण साजे अङ्ग अङ्गन में,
दोऊ 'बलबीर' छैल फूले हैं बहारी में।
फूलीं सखी चारौं ओर ढोरें चौरं फूलन के,
राधिकारमन बैठे फूले फूलवारी में॥

(50)

फूलन की झालरैं बितान तने फूलन के,
फूलन के परदे कपाट द्वार द्वारी में।
फूलन की माला उर साजें फूलन के,
फूलमई भूमि भई अधिक बहारी में॥
फूलन के गोखा औ झरोखा मोखा फूलन के,
फूले अलि गूँज रहे फूल फूल क्यारी में।
'लाल बलबीर' छबि नैनन निहार आज,
राधिका बिहारी राजैं फूलकुंज प्यारी में॥



# मनहर सर्वगुरु

(1)

कीकै काजै आयौ छै तू ईठाने ऐ म्हारे प्यारे,
झूंठी झूंठी बानी काढ़ौ जीया नें क्यौं छोलौ जी।
लारे ना जासी जी कोई माई भाई जाती साती,
छांड़ौ ईसों नेहा गेहा ही की गाठी खोलौ जी॥
स्वामी के पैयां जा लागे ऊठै सारी माया भागे,
संसारी तें सूता जागो चाहें जीठे ठोलौ जी।
बंसी माहिं बोलै बीरे गावैं लाला धीरे धीरे,
राधे स्यामा राधे स्यामा थें बी बीरा बोलो जी॥

(2)

चालैं चालैं आली हाली जी ठैं छैला ठाड़ैं खाली,
कारे कारे नैना तीके तीखे तीखे राजैं छैं।
ज्ञानी ध्यानी राजारानी तीकें ही चेरे जी हेरे,
हेरे जी के अंगे केते चन्दाजी से लाजैं छैं॥
दास जी की है कै रैयो ई देही के लाहे लैये,
नारंगी जंगाली लाले लीले चीरा साजैं छैं।
नन्दा जी के लाला रंगी राधाजी के संगी संगी,
नाचैं ताता थैया थैया नीकी तानैं गाजैं छैं॥

(3)

आई छूँ म्हैं लैबा काजैं थाकैं काजैं एजी छैला,
ऊठैं ठाड़ी म्हैला माई रानी गैला हेरैं छैं।
खावा नैं कठौ छै थाकूं घी कौं लौंदा मथानी तें,
मीठा होबा काजैं उमै चीनी बीनी गेरै छैं॥
लाला बोले बीरे थारी पैयाँ लागूँ नाहीं त्यागूँ,
जाऊँ आली खाली ठाली कीको नैना फेरै छैं।
नन्दाजू कौ लाला ठाला छांड़ै एजी ग्वाल बाला,
चालौ म्हारे लारे थाकूँ थारी माता टेरैं छैं॥



# प्रेम पचासा

(1)

सेष महेस रमेस जू की नित ही प्रति हैं पद पंकज आसा।
नारद सारद सूर सुता वृषभान सुता जू कर्‌यौ निज दासा॥
है 'बलबीर' की टेर यही कर दीजै कृपा वनराज निवासा।
श्रीगुरुदेव कृपा करिये कहुँ गोपिका स्याम कौ प्रेम पचासा॥

(2)

तुम दीन दयाल कहावत हौं कछु दीनन की सुधि लैबौ करौ।
झलकाय के रूप सुधाधर सो हमैं जान चकोर चितैबौ करौ॥
'बलबीर' जु पाय सरूप भलौ हँसि हेर सदां दरसैबौ करौ।
तुम लैबौ करौ मन भावै सोई मुख माधुरी तान सुनैबौ करौ॥

(3)

सिर मोरपखा बनमाल गरैं श्रुति कुंडल कौं झलकैबौ करौ।
कटि पीतपटी लिपटी कर में लकुटी मुख बैन बजैबौ करौ॥
'बलबीर' जू या छबि सौं नित ही प्रति लाल हमैं दरसैबौ करौ।
तुम लैबौ करौ मन भावै सोई मुख माधुरी तान सुनैबौ करौ॥

(4)

जा दिन ते ब्रजराज लला छबि आलिये नैन निहारिये री।
अरी ता दिन सौं गृह काज औ लोक की लाज सबै लै बिसारिये री॥
'बलबीर' जू कासों कहा कहिये तन की सुधि नाहिं सँभारिये री।
मनमोहन की मुसिक्यान के ऊपर कोटि पतिव्रत बारिये री॥

(5)

आवत गाय चराय लला घर ग्वालन संग निहारिये री।
चख चंचल चारु चलावत हैं मधुरे सुर तान उचारिये री॥
'बलबीर' जू मोहि लियौ जियरा उर काहू की संक न धारिये री।
मनमोहन की मुसिक्यान के ऊपर कोटि पतिव्रत वारिये री॥

(6)

जेतिक कौल किये मनमोहन तेतिक में नहिं एक भये हैं।
सास रिसानी रहै सतरानी जिठानी कड़े मुख बैन कहे हैं॥
त्यौं 'बलबीर' लगे नहिं अंक निसंक कलंकन अंग दहे हैं।
प्रानपियारे तिहारे लियें गुरु लोगन के उपहास सहे हैं॥

(7)

मुसिक्यान के बान लगे जब तें तबतें उर धीर धरावै नहीं।
'बलबीर' उपाय न एक बनै कोऊ धीर दै पीर मिटावै नहीं॥
दृग दीन मलीन बिलोकि बिना बिरहा निधि थाह कौं पावैं नहीं।
अब नेह की नाव में बैठ सुजान सनेह सों पार लगावै नहीं॥

(8)

मुसिक्याय कें मो मन मोहि लियौ तब तें गृह काज सुहावै नहीं।
'बलबीर' दोऊ कर जोर कहैं बिनती हमरी चित लावै नहीं॥
यह माधुरी मूरत एहो सुजान कभू हँस हेर दिखावै नहीं।
अंखियाँ यह सामरे रंग रंगों रंग दूसरौ और चढ़ावै नहीं॥

(9)

तुम प्रीति करी हमसों हठ ठान पे प्रीति की रीति निभायौ करौ।
मुसिक्याय के मो तन हेर सदां मुख माधुरी तान सुनायौ करौ॥

'बलबीर' ये सांझ सकारैं कभू इन बीथिन में ह्वै जायौ करौ।
बस कैं मनमोहन एक ही गामन एतो न त्रास दिखायौ करौ॥

(10)

जा दिन तें छबि तेरी लखी निसि बासर ध्यान तुम्हारौ रहै है।
जैसे चकोर मयंक हि हेरत आन न और सों काज लहै है॥
चातक स्वाति की बूंद चहै नहिं सागर कूप कौ नीर गहै है।
त्यौं 'बलबीर' बसी छबि मोहन देखे बिना बिरहागि दहै है॥

(11)

यह दीन मलीन रहै नित ही छिन एक घरी नहिं सोवती हैं।
फड़कै अति रूप चुगे हित जे अकुलाय दसों दिसि जोवती हैं॥
'बलबीर' जू कासों कहा कहिये नित आंसुन सों तन धोवती हैं।
सुन प्रानपियारे तिहारे निहारे बिना अखियाँ यह रोवती हैं॥

(12)

जैसें कुरंग लग्यौ चित बीन में प्रानहिं देत न बैन बिसारै।
जैसें पतंग चहे नित दीप चकोर निसंक मयंक निहारै॥
तैसें हि आय बसी छबिमाधुरी लोक की लाज नहीं उर धारै।
प्रानपियारे तिहारे निहारे बिना दृग धीर न धारैं हमारै॥

(13)

तब तें सजनी छबि मोहन की यह नैनन आय अरी सो अरी।
तब ते बदनाम भई ब्रज में गुरु लोग चबाई करी सो करी॥
उर काहू की कान न आनत है ग्रह सास जिठानी लरी सो लरी।
तजि संक निसंक भई 'बलबीर' गोविन्द के फंद परी सो परी॥

(14)

सिख काकौं सुनावै सयानी भटू तुम सों वह बात कही सो कही।
हम नीत अनीत न जानत हैं इक प्रेम की रीति गही सो गही॥
'बलबीर' सुजान के रंग रँगी कुल कान की बात गई सो गई।
हमें और के काम सों काम कहा नन्दलाल की दासी भई सो भई॥

(15)

मटकी लै गई जमुना जल कौं मनमोहन छाँह ठड़ौ बट की।
धर झारी सिधारी विहारी कही सुकमारी सुजात कहाँ सटकी॥
मुख चन्द सो देहु दिखाय हहा 'बलबीर' गुपाल यही हठ की।
अटकी छबि ताही समैं मो हृदै चट ही पट मोहनी सी पटकी॥

(16)

पटकी कुलकान तबै सजनी छबि देखत ही नँद के नट की।
नट की उर धीर तबै सटकी लट झूम कपोलन पै लटकी॥
लटकी गजमुक्त की माल गरैं 'बलबीर' भनै कटि पै अटकी।
अटकी श्रुति तान गुमान भरी चट ही पट मोहनी सी पटकी॥

(17)

जा दिन तें चितचोर लख्यौ सखी वा दिन तें उर धीर धरौंना।
वा मुसिक्याय कैं तान सुनाय कैं बांसुरी में कछु डारि कें टौना॥
ता दिन तें व्रज बीथिन में 'बलबीर' भ्रमी न मिल्यौ बो सलौना।
देहु बताय कहाँ वह कान्ह जसोमति लालन नन्द डिठौना॥

(18)

आली गई जमुना जल लैन लख्यौ वट के तट नन्द दुलारौ।
गाय कें तान बजाय कें बैन लियौ तबही छल चित्त हमारौ॥

ता छिन तें भई ऐसी दसा 'बलबीर' टरै नहिं नैंनन टारौ।
देहु दिखाय दयाकर मोहि जसोमति लालन नन्द दुलारौ॥

(19)

जब तें हम प्रीति करी तब तें गृह कारज नाहिं सुहावत हैं।
'बलबीर' ये ध्यान तुम्हारौ रहै बिन देखे जिया अकुलावत हैं॥
हम और न जानत प्यारे लला नित प्रीति की रीति निभावत हैं।
हमकौं नहिं कंठ लगावत हैं हंस औरन ते बतरावत हैं॥

(20)

मोहन मोहनी डारि दई मन मोहती बार पै बारन लाई।
पंकज हेत भ्रमैं जिमि भौंर तिहीं बिध मोर न चित्त थिराई॥
दुस्तर रोग बियोग जग्यौ उर सोक के सिंधु की थाह न पाई।
'बलबीर' भनै अब होत कहा दई हाय सुजान कूँ पीर न आई॥

(21)

ज्यौं ज्यौं मो भाल लिखी करतार नें त्यौं त्यौं भई यह दोस है काकौ।
कासों कहा कहिये जिय की यह प्रीति की रीति को पंथ है बाँकौ॥
क्यौं दृग दीन मलीन रहौ 'बलबीर' क्यौं रोइ बढ़ावत साकौ।
साँच भई जग की कहनावत अंत के तंत पै जाकौ सो ताकौ॥

(22)

प्रीति करी तुमनें हठ ठान पै प्रीति की रीति निभाइये जू।
दृग दीन मलीन बिलोके बिना मुख चन्द लला दरसाइये जू॥
पलकैं न लगैं पल देखे बिना पल ही जुग लौं बिसराइये जू।
जिय चातक जान अहो 'बलबीर' सुधा सम तान सुनाइये जू॥

(23)

जब तें हरि हेर पियारे लला मन मोहि लियौ करिकैं चतुराई।
आवत हे नित मेरे लियै अब प्रीति की रीति सबै बिसराई॥
कौन सी चूक परी हम सौं 'बलबीर' सुजान सु देहु जताई।
दीजिये आय दिखाय अहो मुख चन्द हरौ तन की विकलाई॥

(24)

जा दिन तें मोहि त्याग गये मनमोहन सोहन लाल पियारे।
ता दिन तें बिरहा तन दाहत होत सहायक कौन हमारे॥
रावरो रूप बिलोके बिना 'बलबीर' नहीं उर धीरज धारे।
दीजिये आय दिखाय अहो मुखचन्द बड़ी-बड़ी आँखिन बारे॥

(25)

प्रीति लगाय अहो बलबीर अबै केहि फंद सलोनौ परौ।
नहि बैन कह्यौ तिनसों कबहूँ जिनसों हूँ अधीन सुहोनौ परौ॥
कासूँ कहा कहिये जिय की दिन रैन सदां मग जोनौ परौ।
तुमरे फंसि फन्द में प्यारे लला निज अश्रुन सों मुख धोनो परौ॥

(26)

तुम गाइ जु तान बजाइ जो बाँसुरी मो सुर कान सलोनौं परौ।
गई टूट सबै कुल कान की बान सुजान मो ओर चितौनौं परौ॥
जब सों नहिं देत दिखाई जिया तरसै तेहिं ते मग जोनौं परौ।
'बलबीर' पियारे तिहारे लिये निज अश्रुन सों मुख धोनौं परौ॥

(27)

मुसिक्याय कें मो मन मोहि लियौ तब प्रीति कौ बीज सु बोनौ पर्यौ।
अब भूलि न आवत मेरी गली बिन देखें जिया तरसौनौ पर्यौ॥

'बलबीर' जू ये जिय जानत हैं लख काहे हमैं हरषौनो पर्यौ।
तुमरे फँसि फन्द में प्यारे लला निज अश्रुन सों मुख धोनौं पर्यौ॥

(28)

मोहन मोहनी डारि गयौ कहि जात भयौ उर राखि भरोसौ।
ता दिन तें नहिं आयो कहाँ छ्यौ जाय कोऊ जग छैल न तोसौं॥
कासौं कहौं गति कौन लखै 'बलबीर' लिख्यौ निज भाल में दोसौ।
आस बंधाई निरास करी अब बैठि रही मन मार मसोसौ॥

(29)

गाय कें तान बजाय कें बांसुरी मो सिर मोहनी दीन चलाई।
प्रीति करी पहिलैं हठ ठानि अबै तुम प्रीति की रीति नसाई॥
हाय दई सो बिसार दई 'बलबीर' कहा तुमरे जिय आई।
साँच भई जग की कहनावत ऊँची दुकान की फीकी मिठाई॥

(30)

प्रीति करी हम जान सुजान बिचार जेही निभ जाइ सदाई।
हास सह्यो गुरु लोगन कौ सिर पै बदनामी की पोट धराई॥
काहे लला मुख मोर चले 'बलबीर' यही उर सोच सवाई।
साँच भई जग की कहनावत ऊँची दुकान की फीकी मिठाई॥

(31)

लै रसिया रस भाजि गये तुम जानत हौ नहिं पीर पराई।
प्रीति कहा अनरीति करी तुम प्रीति की रीति सबै बिसराई॥
त्यौं 'बलबीर' लिखी भई भाल की सोच किये अब होत कहाई।
साँच भई जग की कहनावत ऊँची दुकान की फीकी मिठाई॥

(32)

टेढ़ी सी पाग मराल सी चाल बिसाल सी मूरति आन समाई।
नैंनन सैंनन बैंनन में 'बलबीर' लियौ मम चित्त चुराई॥
त्यागि गये हमकौं ललना मग हेरत हेरत आँख पिराई।
साँच भई जग की कहनावत ऊँची दुकान की फीकी मिठाई॥

(33)

वा दिन मैं जमुना तट पै वो लख्यौ हतौ गाय चरावन हारौ।
ता दिन तें उर धीर गई तन पीर जगी गृह काज बिसारौ॥
त्यौं 'बलबीर' कहा करिये जिय तैं न टरै छिन एकहु टारौ।
ताछिन तें अँखियान हमारी बस्यौ बु बड़ी बड़ी आँखिन बारौ॥

## कवित्त

(34)

काहे कौं करी ही प्रीति आपनै रँगीले छैल,
जौ पै कदी दया दृष्टि मेरी ओर लावै ना।
मार नैन बान जानै छिपै हो कहाँ सुजान,
कहाँ जाय ढूँढ़ै लै गुमान कहीं पावै ना॥
'लाल बलबीर' आप ऐसी तौ न कीजै लाल,
तेरे बिन देखैं उर धीरज धरावै ना।
काहे कौं सतावै सोक तन कौ नसावै नहीं,
कदी तौ सुजान आन दरस दिखावै ना॥

(35)

देखौ मेरी ओर कहूँ दोऊ कर जोर लगी,
तुमहीं सों डोर नैक दया दृष्टि लाया कर।

तुमहीं सों यारी करी लोक लाज टारी छैल,
सुन्दर बिहारी उर मोद उपजाया कर॥
'लाल बलबीर' ढरै नैंनन सों नीर बिना,
देखें हैं अधीर ताप तन की नसाया कर।
गाया कर राग रागिनीन कौं रँगीले छैल,
कदी तो सुजान आन दरस दिखाया कर॥

(36)

झलक दिखाय बंक भृकुटी तनाय तीर,
नैंनन चलाय धाय उर में समायगौ।
कासों कहुँ जाय कोऊ पीर कौं न जानैं हाय,
हिये अकुलाय तन विरहानल छायगौ॥
देत हैं जराय याकौ कीजिये जतन आय,
'लाल बलबीर' तौ बिलोकत सिरायगौ।
हँसि मुसिक्याय मोहि कण्ठ सों लगाय,
मनमोहन सुजान तेरो जस रहि जायगौ॥

(37)

जादिन तें तेरी लखी हेरन हँसन लाल,
तादिन तें नाहि दिल धीरज धराईये।
रसिया रसीले छैल त्यागिये न नेह गैल,
छांड़ अनरीति सीख एती चित्त लाईये॥
दास कहैं हेरत हिराने दृग राह हाय,
दीजै तज संक लीजै अंक तें लगाईये।
आना जाना देखना दिखाना तक छांड़ दीना,
येरे असनाव तेरी कैसी आसनाई ये॥

(38)

लगन लगाय अब रहे कहाँ छाय जाय,
हीयो अकुलाय धीर कैसे कैं धराय गौ।
कछू ना सुहाये बिन देखै रह्यौई न जाय,
'लाल बलबीर' नीर नैनंन में छायगौ॥
मेरी ओर चाहि तेरौ कहा घटि जाय एती,
बिनें उर लायगौ तौ मोद उर छायगौ।
हँसि मुसिक्याय मोहि कण्ठ सों लगाय,
मन-मोहन सुजान तेरौ जस रहि जायगौ॥

(39)

जादिन तें हेर हँस गये लाल मेरी ओर,
तब तें बिसासी दृग हेरत हैं राहवा।
रावरी सलौनी लौनी सूरत बिलोके बिना,
कैंसे बलबीर उर धीरज धराहवा॥
धन्य उन भाग उर लागत हजार बार,
बिरह अगिन मम लागी तन दाहवा।
चोर चित्त गये मोर बोर विष वारिधि में,
आज लौं न आये मित्र वाहवा जी वाहवा॥

(40)

प्रीति करी प्रीतम सुजान गुनखान जौपै,
तौ पै ए अरज मेरी लीजै चित लाहवा।
'लाल बलबीर' उर पीर कूँ बिचार प्यारे,
भूलिकैं सुजान चित अन्त न लगाहवा॥

रैन दिन संग में उमंग रस रंग कीजै,
अङ्ग सों लगाय अंग बाढ़ै उतसाहवा।
सबै बिसराई ताप तन की नसाई धाई,
अंत रे सुजान तेरी जागी रहै बाहवा॥

(41)

अब तौ बदनाम भई आली ब्रज मण्डल में,
लाज गुरु लोगन की खो गई सुखो गई।
ननद जिठानी सतरानी इतरानी रहीं,
सासु कटु बात कहे सो गई सु सो गई॥
भनें बलबीर हम नीति ना अनीत जानें,
प्रेम रूपी बेलि यह बो गई सु बो गई।
सामरी सलौनी छबि कैसें के बिसारी जाय,
दासी मन मोहन की हो गई सु हो गई॥

(42)

आली हौं गई ही नीर लैन जमुना के तीर,
सामरौ बजाय रह्यौ बैन छाँह वट की।
सीस धर झारी ज्यौं सिधारी बनवारी आय,
दौर मुसिक्याय कही कहाँ जाय सटकी॥
भनै 'बलबीर' मुख माधुरे बचन सुनि,
ता समैं की सोभा आय नैंनन में अटकी।
भूली सुध धट की रही न राह औघट की,
बसी उर आन फहरान पीतपट की॥

(43)

रस के रसीले छैल अब क्यौं तजी है गैल,
छाँड़ सब सैल पग नेह मग दीजिये।
भने बलबीर दृग देखे बिन हैं अधीर,
बिरहा की पीर जगी आय सुधि लीजिये॥
बाँसुरी बजाय मुसिक्याय कें सुनाय तान,
संक तजि अंक लगि प्रेम मधु पीजिये।
नन्द के कुमार करजोर कहूँ बार-बार,
ऐसो ना मुरारि तें कठोर चित कीजिये॥

(44)

जादिन तें तेरी छबि लखी है सुजान कान्ह,
तादिन तें मोहि गृह कारज सुहावै ना।
राति दिना आठौ जाम रटूँ गुन रावरे ई,
निपट अधीर उर धीरज धरावै ना॥
'लाल बलबीर' उर जागी बिरहा की पीर,
लोचन चकोर मुख चन्द दरसावै ना।
मेरौ मन तेरे बस पर्यौ है पियारे लाल,
एहो ब्रजराज नेक मेरी गली आवै ना॥

(45)

मोहन करी है प्रीति रीति की निभावौ नीति,
त्यागि अनरीति कौ सनेह मग धाउ रे।
ज्यों चित कुरंग अलि पंकज चकोरन के,
बीन अरविन्द रवि ससि उर लाउ रे॥

जैसें बलबीर कीट चातक औ दीन घन,
तैसें मुसिकन माँहि मो मन लगाउ रे।
नन्द के कुमार कर जोर के हजार बार,
करूँ मनुहर प्यारे मेरी गली आउ रे॥

(46)

पायौ है सरूप तैं अनूप बिधना ने दियो,
कुण्डल अमोल तो कपोल पै हल्यौ करैं।
बोलि मृदुबानी मन छीनि लियौ ऐसी बिध,
उरध उसास स्वास स्वास पै चल्यौ करैं॥
नेह तज गेह तें सिधारे क्यौं पियारे लाल,
दृगन तें नीर हर बार ही ढल्यौ करैं।
भनै बलबीर कण्ठ लाग्यौ जाय सौतिन के,
एहो ब्रजराज हम हाथ ही मल्यौ करैं॥

(47)

जादिन तैं बिछुरे हमारे प्रान प्यारे तुम,
तादिन तें सेज मोहि सूली सी दिखाती है।
आय आय लागैं हिय बान पंचवान जू के,
नैनन सों नीरन की नदी भर जाती है॥
भनै बलबीर चित धीर है न व्यापी पीर,
निपट गयौ री निसि आई डर पाती है।
बिनती हमारी चित लाय सुनौ प्यारे लाल,
रावरे बिलोके बिना फटी जात छाती है॥

(48)

बदन मयंक बारौ भौंये धनु बंक बारौ,
केहरि सी लङ्क बारौ रूप उजियारौ है।
लोचन बिसाल बारौ गरैं मणि माल बारौ,
मत्त गज चाल बारौ जब सों निहारौ है॥
पीत पट बैन बारौ मधु भरी सैन बारौ,
लाल बलबीर प्यारौ टरत न टारौ है।
मोर के मुकुट बारौ टेढ़ी सी लकुट बारौ,
नन्द कौ दुलारौ सो हमारौ प्रान प्यारौ है॥

(49)

सामल बदन वारे कुन्द से दसन वारे,
माधुरी हँसन वारे रूप दरसाउ रे।
गैयन चरान वारे माखन के खान वारे,
बाँसुरी बजान वारे मीठी तान गाउ रे॥
'लाल बलबीर' जसुमति के दुलारे मेरी,
आंखिन के तारे तन तपत बुझाउ रे।
मो मन हरन वारे जादू सौ करन वारे,
नन्द के दुलारे प्यारे मेरी गली आउ रे॥

(50)

थर्थरात गात कछू कहत बनै न बात,
कैसी करूँ प्यारी मेरो जिया अकुलात है।
कछू ना सुहात पल पल जुग सम जात,
खरोहि हिरात छिन धीर ना धरात है॥

'लाल बलबीर' जात सोचत ही प्रात रात,
तीर ना दिखात सोक सिन्धु में डुबात है।
लीजौ गह हात दास जानिकैं अनाथ राधे,
मेटौ जग बाधे मेरी लाज तेरे हाथ हैं॥

(51)

ऊबत हौं डूबत हौं सोच के समुद्र माहिं,
कृपा करि मोकों यह संकट सों टार दैं।
ठाड़ौ दरबान में पुकारत हौं बार बार,
मोहन उदार नैक सीस उर धार दैं॥
'लाल बलबीर' कहूँ कासूँ जा हिये की पीर,
करुनानिधान नाम ही कौ पन पार दै।
जार दै सकल कलिमल कौं कृपानिधान,
हा हा नाथ मेरी भव भ्रमना निवार दै॥

(52)

मैं तौ दिन दूबरी परी हूँ आन तेरे द्वार,
और कहूँ कासौं सुनै बिनै मोरी री।
दीजै बनवास ये ही हिये में हुलास मेरी,
काटौ भव फाँस भई जात मत बौरी री॥
'लाल बलबीर' दासी घेरी जगलाल ब्याल,
बनै ना उपाय कछू करै बरजोरी री।
कुमरकिसोरी मोरी ओरी हेर येरी आज,
मोय तौ सदांई रहै एक आस तोरी री॥

(53)

सेन की नसाई लै मसाल कौं जराई नाथ,
धना की नसाई खेती हरी लै कराई है।
पायल बनाय कें नसाई ही तिलोचन की,
चौहान की नसाई तेग सार की दिलाई है।।
जहँ जहँ दासन पै त्रास पर्यौ दीनानाथ,
'लाल बलबीर' आप सबकी नसाई है।
संतन सहाई जदुराई मेरी टेर सुनौ,
मेरी बेर बेर आप काहे कौं लगाई है।।

(54)

कीनी ना अबेर प्रहलाद खंभ बांधे तात,
नरहरि तन धारी जाय दुष्ट मारौ है।
कीनी ना अबेर गज ग्राह तें छुड़ायौ नाथ,
बाहन बिसार निज पदहि सिधारौ है॥
कीनी ना अबेर जब पांडुबधू टेरी तोहि,
'लाल बलबीर' चीर अखै कर डारौ है।
कीनी ना अबेर जहाँ दासन कौं त्रास भये,
मेरी बेर बेर कहा आसरौ तिहारौ है॥



# कालिय वचन

(1)

पाय बल भारी मैं बिसारी सुधि रावरी जू,
अब तौ कृपाल कान्ह बिनै सुनि लीजिये।
टूटी जाय देह आप कीजिये सनेह कहूँ,
और जाय कासौं तासौं तन मन छीजिये॥
'लाल बलबीर' सब औगुन बिसार मेरी,
सुनियै पुकार नेंक कृपा दृष्टि कीजिये।
मैं तौ हूँ अनाथ तुम दीनन के नाथ हौ जू,
एहौ ब्रजनाथ मोहि जीवदान दीजिये॥

(2)

लखि कैं अनाथ मोहि करन सनाथ नाथ,
भली करी आपने बिचार दंड दीयौ है।
जानी न परी ही आप नर तन धार आये,
कपटी कुटिल मो कठोर घोर हीयौ है॥
'लाल बलबीर' मिटी मद की खुमारी छैल,
सुन्दर बिहारी तो दरस आज कीयौ है।
जोई आप दीयौ सोई सोई भेंट कीयौ नाथ,
विष का सुजान कान्ह मैंने कर लीयौ है॥

## उद्धव-गोपी संवाद

(1)

मोहन गवन सुन तवन लगी है तन,
धाय धाय चलीं अकुलाय घर घर से।
बावरी लौं बकत तकत ब्रज बीथिन कौं,
घायल सी ह्वै रहीं वियोग रोग सर से॥
'लाल बलबीर' होय रहे चहूँ ओर सोर,
दीन ह्वै पुकारैं री मिलाऔ कोऊ हरि से।
बरसैं हमारे नैन ऊँचे चढ़ कहैं बैन,
अब पति रथ की पताका हू न दरसै॥

(2)

पूरौ क्रूर अकरूर बैरी काहू जनम कौ,
सुन्दर सुजान कौं लिबाय गयौ घर से।
कासों कहैं जाय धाय कछू ना उपाय बनै,
हाय हाय माय ना बस्याय जाय हरि से॥
'लाल बलबीर' भये व्याकुल सरीर ढरै,
नैनन सों नीर बिरहा के मेघ बरसे।
चढ़िकें अटारी चित्रसारी नारी टेरत हैं,
अब पति रथ की पताका हू न दरसे॥

(3)

मोहन गवन कियौ तुम ना गमन कियौ,
प्यारे ब्रजराज बिन कहा सुख पावैगो।

जाके संग संग में अनेक रस रंग किये,
ता बिना रँगीले घोर बिरहा सतावैगो॥
'लाल बलबीर' बिन काहे कौं रह्यौ तें जीव,
फेर बजमारे मोहि लाजन लजावैगो।
कोटिन धृकार तेरे जीवन कौं जन्म हारे,
फेर बीतौ देह कौ सनेह छोड़ जावैगो॥

(4)

छांड गयौ हमकौ सुजान मन मोहन जू,
गोपिन बिसार जाय मथुरा बसावैगो।
गायन चरायबौ जू वन-वन जायबौ जू,
बाँसुरी बजायबौ जू कैसें मन भावैगो॥
'लाल बलबीर' बिन कैसे कै धरैंगी धीर,
फेर बजमारे मोहि लाजन लजावैगो।
कोटिन धृकार तेरे जीवन कौं जन्म हारे,
फेर बीती देह कौ सनेह छोड़ जावैगो॥

(5)

आयौ आयौ ऊधौ ये सखा री मनमोहन कौ,
सामरे सुजान कौ संदेसौ कछू लायौ है।
पूछौ पूछौ पूछौ री इकंत में पिया की बात,
भले भाग सों री आज सबै मिलि पायौ है॥
'लाल बलबीर' कब आमैंगे रंगीले छैल,
कुबिजा कलंकिनी नें कैसे बिरमायौ है।
कहा मन भायौ नेह हम सौं नसायौ हाय,
ऊधव पठायौ, प्रान प्यारौ क्यों न आयौ है॥

(6)

परम पुनीत तुम स्याम के सखा हौ ऊधौ,
साँची कहौ कथा ताके कहा मन भायौ है।
हम कौं उदासी छोड़ दासी की फँसी है फाँसी,
आवत है हाँसी भलौ सुकृत कमायौ है॥
'लाल बलबीर' गोप ग्वालन सौं गऊन सौं,
और तात मात हू सों नेह बिसरायौ है।
लपट लबार कान्ह कपटी अपार देखौ,
आप करै भोग जोग हमकौं पठायौ है॥

(7)

साँची कहौ ऊधौ मनमोहन सुजान जू कौं,
कबहूँ हमारी सुध आवै कै न आवती।
जा छिन तें मथुरा पयान कियौ प्यारे लाल,
ताछिन तें विरहा अनल तन तावती॥
'लाल बलबीर' कछु बनै ना उपाय हाय,
नायन मलीन महारानी जू कहावती।
जौ पै गह पावती तौ मार मार लातैं मैं,
वा कूबरी की कूबरौ करैजा कढ़वावती॥

(8)

ऊधव तू आयौ घनस्याम कौं न लायौ,
सौति कुबिजा हमारी जोग लिखि कैं पठावती।
कुलटा कलंकिनी कमीन मति हीन दीन,
पाय कैं प्रवीन पटरानी जू कहावती॥

'लाल बलबीर' ताकौं जौ पै गह पावती मैं,
तौ पै तौ घमंड ताकौ छिन में नसावती।
मार मार लातैं मुख पीट पीट थापन सों,
कूबरी को कूबरौ करैजा कढ़वावती॥

## परकीया-प्रीति

(1)

लोचन कहत रूप माधुरी निहार्‌यौ करौ,
तबै धीर धरौं कोटि भाँति सुख पाऊँ मैं।
कान कहैं कान्ह की कहानी सुनौं केलि मई,
सकुच सरीकनी सों भौन धसि जाऊँ मैं॥
'लाल बलबीर' कहै रसना हमारी प्यारी,
सुन्दर सुजान जू सौं हँसि बतराऊँ मैं।
अंग सों लगाऊँ अंग कहत अनंग भरे,
लाज कहै भूलि आंगुरीऊ न दिखाऊँ मैं॥



# विप्रलब्धा

(1)

सुन्दर सिंगार साज प्यारे के मिलन काज,
आई केलि मन्दिर लौं ससि की उजारी सी।
बारन के भार ना सम्हारै सुकुमारि लफ,
लफ लंक जाय जैसें चंपक की डारी सी॥
'लाल बलबीर' तहाँ पाये ना बिहारी लाल,
बिरहा अपार नें करी है देह कारी सी।
देख सुकुमारी सेज पै न बनवारी घूमि,
गिरी बेकरारी खाय काम की कटारी सी॥

(2)

आई अलबेली अलबेले सों मिलन काज,
जाकी छबि देखि कैं लजाय काम नारी सी।
नाजुक बदन नव जीवन उमंग भरी,
अंग हैं अनूप रूप साँचे की सुढारी सी।।
'लाल बलबीर' छबि कहाँ लौं बखानैं जाकी,
उपमा न पावती रही है मति हारी सी।
देख सुकुमारी सेज पै न बनवारी घूमि,
गिरी बेकरारी खाय काम की कटारी सी।।

(3)

मोहन मनोज मई मूरति दिखाय मोपै,
मंद मुसिक्याई मोहनी सी कर डारी री।

ताछिन तें खान की न पान की रही है सुधि,
कासों जाय कहौं पीर हरै जो हमारी री॥
'लाल बलबीर' बिन कछू ना सुहाय आली,
जैसे बिना नीर मीन अधिक दुखारी री।
एहो प्रान प्यारी अर्ज सुनिये हमारी मोहि,
दीजिये मिलाय मित्र सामरौ बिहारी री॥

(4)

जब सों निहारौ रूप बारौ नन्द कौ दुलाारौ,
तब तें हमारी कुल कान बानि सटकी।
मन्द मन्द आवन की पट फहरावन की,
ललित लफीली छबि माधुरी लकुट की॥
'लाल बलबीर' जू की बाँसुरी बजावन की,
दृगन मिलावन की भृकुटी बिकट की।
मन्द मुसिक्यावन की झीनैं सुर गावन की,
बसी छबि आन उर मोर के मुकट की॥

(5)

जा छिन तें लख्यौ कान्ह ता छिन तें गई कान,
सबै ज्ञान स्यान उर जानै लाभ हानै ना।
ननद जिठानी दिवरानी सास बार बार,
सिखावैं हजार सीख एक उर आनै ना॥
'लाल बलबीर' जू के दरस बिलोके बिना,
कैसे धरौं धीर जीउ कोऊ पीर जानै ना।
स्यानै ना करत कोऊ प्रानैं ना बचावै आली,
सामरे सुजान बिन मेरौ मन मानै ना॥

(6)

कल ना परत मोहि ललना विलोके बिन,
बिरहा अगिन में कहाँ लौ बीर जलना।
दलना कुटुम्ब लाज ढलना कुसंगन सों,
बसयौ उर आन मित्र नन्द जू कौ ललना॥
'लाल बलबीर' ढलना है जग जालन सौं,
और गृह काजन सों हमकौं उलझ ना।
छल ना करत तोसौं चलना जरूर जहाँ,
सांमरौ सुजान छैल झूल रह्यौ पलना॥

(7)

प्यारे के दरस बिन तरस रहे हैं नैन,
चैन है न रैन दिन नीर ढरकाऊँ मैं।
हितू ना हमारी जो निवारि हैं हिये की पीर,
बिरह बिथा की कथा कौन कौं सुनाऊँ मैं॥
'लाल बलबीर' बिन कछू ना सुहाय हाय,
बासर वियोग भरे कैसे कें बिताऊँ मैं।
तबै सुख पाऊँ ताप तन की नसाऊँ,
मनमोहन सुजान जू कौं कंठ सौं लगाऊँ मैं॥

(8)

मोहन के संग में उमंग भरी प्यारी बाल,
राति सुख लूटि प्रात बात करै गोता की।
चतुरन संग चतुराई ना चलाई चलै,
हम सों छिपाव करै बनै मति कोताकी॥

'लाल बलबीर' जू को नेह ना दुरायौ दुरै,
साँची किन कहै रूप सागर भरोता की।
उन्नत उरोजन पै न क्षत प्रतक्ष मानौ,
गद्दर अनार पै लगी है चोंच तोता की॥

(9)

प्यारी जू तिहारे पद पंकज की बलिहारी,
सदाँ ही बिहारी लाल मन ते न टारै हैं।
वे हरत कुसुम पराग तबै लागैं जबै हेर,
अलबेले पीत पट की सों झारै हैं॥
जावक बनाय चित्र सुखमा विचित्र हेर,
लूटत मयूर पिच्छ प्रान धन वारै हैं।
हित ध्रुव रस यह सबन तें दुर्लभ है,
रसिक सु बलबीर दासी उर धारै हैं॥

(10)

लोक की कान नहीं परलोक की औ गृह के तज काज भजौंगी।
रूप अनूप निहारे बिना बिरहाग की आग में कौ लौ दहौंगी॥
धार लई बलबीर यही उर प्रान पियारे के रंग रँगौगी।
चाहै कलंक लगौ सजनी मनमोहन मीत के अंक लगौंगी॥

(11)

आवत गाय चराय लला सँग ग्वाल लियै बन तें बनमाली।
गावत तान उमंग भरे मुख बाजत है धुन बैन रसाली॥
सासरु नन्द कौ त्रास इतै इत देखे बिना उर माहिं बिहाली।
या सुख कौं बलबीर अरी हम झाँकैं झरोकैं निकाली है जाली॥

(12)

लालन ग्वालन संग लियें जमुना तट पै बहु खेल रचावै।
बीन बजावै रिझावै कभू कबहूँ कोउ माधुरी तान सुनावै॥
आवै कोऊ जल के हित नारि तही गगरी महि माहिं लुढ़ावै।
जाइ सभीत रहैं बलबीर कोउ पनिया भर जान न पावै॥

(13)

अरुन कमल हू तें कोमल जुगल पद,
मानौ नभ मंडल में बिज्जु दरसाती है।
आँगुरी सुढार मति हारत निहार किधौं,
दाड़िम कलीन नख मोतिन की पाती है॥
सुन्दर सजीले गरबीले से गुलफ किधौं,
डावी रंभ खंभ के कपूर की सुहाती है।
धुजा औ पताका 'बलबीर' ये बिलोक लोक,
उपमा न पाती पाँती रंक सी दिखाती है॥

(14)

जानत हैं ब्रजबाल सबै हरि रोकत टोकत संक न लावै।
याही सभीत न जात बनै बिन देखे जिया नहिं धीर धरावै॥
लै कर में बँसुरी 'बलबीर' जबै मुख माधुरी तान सुनावै।
होत यही उतसाह तजैं ग्रह फंद गोबिन्दहि अंग लगावै॥

(15)

मोहन की रुचि माखन सें जननी उठि प्रातहि बुद्धि बिचारी।
लै दधि कौं मथि कें मन तें नवनीत पुनीत तेही सों निकारी॥

टेरत हैं मधुरे सुर सों उठि हो बलबीरन होत अबारी।
आलस दूर करौ मम लाल लखौं मुख चन्द जाऊँ बलिहारी॥

(16)

चाँदनी चन्द की मन्द भई औ कमोदनियाँ उर में सकुचाई।
दूर भयौ तम भानु उदै भयौ पंकज की दुति होत सवाई॥
कोइल कीर कपोत सबै द्रुम त्याग चले दस हू दिसि धाई।
जागो ही लाल खड़े तेरे ग्वाल अहो बलबीर तेरी बलि जाई॥

(17)

कंचन झारी भरी जमुना जल लै कर में मुख लाल कौ ध्वायौ।
कोमल चीर तैं पौंछि तबै मुसिक्याय कें एक डिठौना लगायौ॥
चूमि कपोल हृदै सौं लगाय तबै जननी एक बैन सुनायौ।
तेरे लिये पकवान अनेक धरे कर लेऊ जेही रुचि आयौ॥

(18)

माखन औ मिसरी जननी अरि मोकौं बहौत यही रुचि आयौ।
धौरी औ धूमरि की टटकी कर लैकर कंद दराय रलायौ॥
हेम कटोरन में धरि कैं हँसि थोरोई थोरो लला कौं पवायौ।
या सुख कौं बलबीर लखै जसुधा यहि कोविद सो ललचायौ॥

(19)

खेलत खेल खिलौना तें जननी लखिकैं उर मोद बढ़ावै।
नाच उठैं कबहूँ किलकाय कबौं मुख माधुरी तान सुनावै॥
जाकौं सुरासुर सिद्ध मुनीस महेश सदां उर ध्यान धरावै।
सो सिसु होय वहाँ व्रज में बलबीर जू नन्द कौ लाल कहावै॥

(20)

लाल गये गृह ग्वालन के छिपि कें जब ही दधि में कर नाये।
दृष्टि पर्यौ प्रतिबिंब जबै मणिखंभ सों दीन ह्वै बैन जताये॥
आयौ प्रथम्म करन्न मैं चोरी कौं आधो लै बांटि जितै मन भाये।
हर्ष उठी ब्रजबाल तबै बलबीर सकुच्चत दौर सिधाये॥

(21)

पूरन ब्रह्म अखंड अगोचर नैनन हीं मन माहिं बिचारी।
पुत्र कौ भाव जसोमति मानत ग्वाल हियें निज मित्र बिहारी॥
नंद जू जानत हैं जिय लालन गोपी लखैं निज प्रान अधारी।
मेरे लियैं गऊ लोक तज्यौ जिन लालसा पूरन कीजियै सारी॥

(22)

ग्वालिन लैन कमोरी गई गये लालन ग्वाल लियैं गृह ओरी।
माखन लै मथनी तैं मनोहर खान लागे हँसि कें मुख मोरी॥
भाज चले झिझके से सबै इतने ही में आय गई वह गोरी।
स्याम कौ रूप निहारत ही बलबीर प्रबीन हुती भई भोरी॥

(23)

एक कहैं मेरे घर आवै जो गुपाल प्यारौ,
तौ ले मनमोहन कौ माखन खवावौंगी।
एक कहै मेरे घर आवै जो सलोनी स्याम,
तौ लै निज आँगन में नांच ही नचावौंगी॥
एक कहै मेरे घर आवै ब्रजराज आज,
तौ पै वा छबीले जू कौं हृदै सों लगावौंगी।

एक कहै मेरे घर आवै बलबीर,
तौ मैं चूमि कै कपोल बैन माधुरै सुनावौंगी॥

## दान लीला

(24)

जावौगे लाल अबै कितकौं,
गृह कीन है आय बड़ी जु ढिठाई।
लै चलि हौं जसुदा के समीप,
लखौ निज लालन की चतुराई॥
बोले जबै हँसि कैं मनमोहन,
छूऔ नहीं दधि तेरी दुहाई।
खाय कै ग्वाल गये भजि हाल,
दियौ नहिं मो कर एकहु राई॥

(25)

माखन खावौं गुपाल तुम्हैं मन आवै,
इतैक भरी है कमोरी।
वो जो चली गृह लैन तबै मुसिक्याय कें,
लाल भजे बन खोरी॥
लै कर में नवनीत गुआलन,
लालन कों चितवै चहुँ ओरी।
क्यौं बलबीर गये तजि मोहि,
जसोमति लालन डार ठगौरी॥

(26)

लालन की छबि देखे बिना उर,
ग्वालन के नहिं धीर धराई।

कैसे मिलूँ ब्रजचन्द गोविन्द सों,
सोचत नन्द के मन्दिर आई॥
चन्दमुखी मृग लोचनि सुन्दरि,
बैन कह्यौ करिकें चतुराई।
तैं ब्रजराज बधू कहवाय भली,
बलबीर कौं सीख सिखाई॥

(27)

माखन खान सुजान सखान लै,
धाय चले हँसते वन खोरी।
सूनौ लख्यौ गृह जाय धँसे,
वह नीर कौं लैन गई हुती गोरी॥
द्वार उभै सिसु खेलत हैं,
तेहिं देखत भीर भगै मुख मोरी।
हेरत माखन खाय सबै बलबीर,
धरी हुती छीकैं कमोरी॥

(28)

ग्वालन लालन के कर में कर,
लै जसुधा के समीपहि लाई।
नैंक नहीं सिख देत गुपाल कौं,
जाय कें मो गृह धूम मचाई॥
माखन खाय लुटाय जबै दधि,
गोरस माट मही ढरकाई।
खोल दिये बछरा बलबीर भ्रमैं,
बन माहिं नहीं सुधि पाई॥

(29)

जावौ न भूल कहूँ ललना तुमकौं,
तुमरी जननी समुझावै।
ग्वारि गमारिन जानैं कहा,
परिया भर छाछ पै नाच नचावै॥
नौलख गाय दुहीअत आपनौ,
ताहू पै माखन चोर कहावै।
मानौ कही हमरी बलबीर हँसै,
पुरलोग पिता दुख पावै॥

(30)

माखन खाय दही ढरकाय मही,
छिरकाय ललान कौं र्वाये।
छीकेंन तोर खखोर सबे गृह,
बासन फोरिकैं ढेर लगाये॥
संग लियै ब्रजग्वाल गुपाल कौं,
दूसरौ खेल नहीं मन भाये।
क्रोध भई सुनिकैं जसुधा बलबीर,
तें मानिहै नाहिं सिखाये॥

(31)

मानत नाहिंन प्यारे लला निसि,
बासर भाँतिन सौं समझायौ।
मैं नहिं जाऊँ दई इनके घर,
झूँठौ हि आन कै नाम लगायौ॥

लागि रह्यौ कर ते मुख ते नवनीत,
ये स्याम दुरैना दुरायौ।
बैर परे 'बलबीर' सु ग्वाल री,
खाय मो आनन तैं लिपटायौ॥

(32)

बाल विनोद लला कौ निहार,
जसोमति के उर हर्ष बिसाला।
भक्तन के हित काज करैं नित ही,
प्रति प्रीति सों दीन दयाला॥
सेस सुरेस महेस कहैं कब,
लोचन सिद्धि करेंगे कृपाला।
देव चढ़े नभ सेव जनावैं,
सुनावहिं अस्तुति छन्द रसाला॥

(33)

जादिन तें लख्यौ छैल अहीर कौ,
ताछिन ते उर धीर न आनै।
वा मुसिक्यान पै मोहनी तान पै,
त्याग दई सगरी कुल कानै॥
कैसी करूँ गत कासों कहूँ,
'बलबीर' बिना मन मेरौ न मानै।
मोहि सबे जग सामरौ सूझत,
सामरे की गति सामरौ जानै॥

(34)

आली लख्यौं जमुना तट पै,
मनमोहन सोहनि गावत ताने।
मो सों कह्यौ हँसि कें ललना,
मृग लोचनी दीजिये गोरस दानै।
ताछिन तें बलबीर बसे दृग,
लोक कौं कान नहीं उर आनै।
मोहि सबै जग सामरौ सूझत,
सामरे की गति सामरौ जानै॥

## सोरठा

(35)

दासन के हित लाल, करत चरित रस रास नित।
दै दै दरस निहाल, करैं सराहैं जन हियै॥
कान्ह सखन तें कहत हँसि, एती सिख धर कान।
लै लै दधि नारी चली, लीजै इनतें दान॥



# दान लीला

(1)

लै लै दधि नारी चर्लीं छैल के दरस हेत,
हंसजा के तीर नन्दलाल धेनु चारैं हैं।
केते सखा संग संग खेलत अनेक रंग,
नाचत रँगीले किंकिनी की झनकारैं हैं॥
दास कहैं तैसें लतिकान चढ़े केकी कीर,
सरस सजीली रस तातैं तान ढारैं हैं।
चन्द गन हारे हेर हेर तन काँति दीह,
रचि रचि कंजन के हार गल धारैं हैं॥

(2)

देख देख नारी गिरीधारी कही सखन तें,
कारी लीली सारी ये घटा सी दरसाती हैं।
अङ्ग अङ्ग कंचन के अलिंकार साजे कल,
चीरन के तीर चंचला सी झलकाती हैं॥
दास कहैं गगरी सकल दधि धारे सीस,
घेरिये रँगीले धाय कहाँ ये सिधाती हैं॥
लीजै दधि दान जान दीजै ना सयान किये,
हियै हरषाती आज कैसी चली जाती हैं॥

(3)

घेरी जाय सखन अगारी तें सकल नारी,
चित्र की सी काढ़ी रहीं धीरज दरीजियै।
अधिक डरारी चित कहैं कहाँ गिरधारी,
कहा कर डारी यहाँ काकी सर्न लीजियै॥
दास कहैं नन्दलाल निकस लता तें हाल,
कही हरषाय धाय संग जिन कीजियै।
लीजियै जी राह चाह करियै सजीली एती,
तनक रँगीली आज दधि दान दीजियै॥

(4)

कैंसे कहैं कान्ह आन छाँड़िये सयान ऐसे,
कहा ये हठीलै जाल नये लै गिराये हैं।
छल कर कर घर घर दधि खाये केते,
तनक रँगीले तेरे हृदै ना अघाये हैं॥
दास कहैं छाँड़ अनरीति रीति लीजै छैल,
तेरे ये अजस लाल देस देस छाये हैं।
कंस जान लैहे दैहे नगर निकारौ हाल,
कहा नन्दलाल दान दधि के लगाये हैं॥

(5)

लै लै सखा संग करैं नारिन ते जंग ऐसे,
नये नये ढंग ये कहाँ ते सीख आये हैं।
सीधे नन्दराय रानी ऐसी ना अनीत ठानी,
छाँड़िये अजानी रीति नगर हँसाये हैं॥

दास कहैं कंसराय जाने ना अजानै ऐसे,
तेरे छल छन्द ये रे चलैं ना चलाये हैं।
दान दीजै दान दीजै कैसे दान ज्ञान कीजै,
साँची कहि दीजै कान्ह काने ये लगाये हैं॥

(6)

कहा कंस त्रास ताहि करैं जाय नास एक,
लागि है न साँस ऐसे केते ना निहारे हैं।
लरिका ही जानैं करनी ना चिन्हानैं त्रिना,
से री अघासे खल केत दल डारे हैं॥
दास कहैं कान्ह आन ताही ते लगाये दान,
कीये हैं हजार नारि कारज तिहारे हैं।
इन्द्र अहंकार गारे काली जल ते निकारे,
सात दिन-राति हाथ गिरि नख धारे हैं॥

(7)

धारे गिरिराज छैल नन्द जननी के काज,
नारिन तें नाहक ऐसान जिन कीजै जी।
घर घर खाय छाछ कही अनकही केती,
एती निज सही लेत दान तन छीजै जी॥
दास कहैं आन कान करत सियान जहाँ,
छाँड़िये अजान ज्ञान हृदै लै धरीजै जी॥
हठ जिन कीजै नैक दीनता गहीजै चित,
चाहै जी जितैक कान्ह दधि चाख लीजै जी॥

(8)

दीनताई ताकी जाकी छायौ लै रहत जेही,
ऐसे कै गगरी सीस ही तें जाय छीनी है।
टेरि कैं संगाती जाती नन्द के रँगीले लाल,
एक एक हरष हरष चाख लीनी है॥
दास कहैं ठाड़ी नारी लखैं चित्र कीसी काढ़ी,
नई रे कन्हाई ये ढिठाई आज कीनी है।
हृदै लाय लीनी हरि त्रियन निहाल कीनी,
डार नेह जाल लाल नेह तार दीनी है॥

(9)

धाई जित तित कहैं ललन गये री कित,
अँखियाँ निहारे जिन धीर ना धराई हैं।
कैसी करैं कहाँ जाय कासौं कहै हाय दैया,
करत सलाह चाह नन्द गेह आई हैं॥
दास कहैं जननी तैं ऐसे लैं जनाई जाय,
येरी नन्दरानी घर ललन कन्हाई हैं
दधि छीनं लीने चीर चीर तार कीनें,
ईडुरी सकल तिन दह लै गिराई हैं॥

(10)

एरी नन्दरानी छैल लाल की कहानी जान,
कानन रँगीले जाय रार तिन ठानी हैं।
सारी चीर डारी आंगी करी तार तारी छाती,
नखन की धारी हेर रीत ये अजानी है॥

दास कहैं नैक जननी न सीख देय ताय,
कासों कहैं जाय सहैं कैसे नित हानी हैं।
कहै दधि दानी देत लेत न सिलानी आज,
दीजै हंस आनी निज अंगन के दानी हैं॥

(11)

काहे इतरानी सतरानी ये अजानी नारि,
घातिन लगाय नख घात दरसाती हैं।
दस साल हीके निज नैक से कन्हाई लाल,
घेरा देत रहत सकल दिन राती हैं॥
दास कहैं तरुनि गयंदनी सी धाय धाय,
हेरती न निज तन आई इठलाती हैं।
नैक न लजाती हैं लगातीं आग नीर धाय,
रार ही जगातीं छिन घर ना रहातीं हैं॥

## दोहा

(12)

नैंन दरस के लालची, चित नहिं सदन थिराइ।
इतै नन्दरानी खिजैं, चालीं सकल लजाइ॥

(13)

छाई घर घर दान दधि के लगाये हरि,
ऐसें जिय जान नारि हिये हरसाई हैं।
करिकें सिंगार गरैं हीरन के हार चारु,
चादर जरी की अङ्ग अङ्गन सजाई हैं॥

दास कहैं रतन जटित ईंडुरी लै सीस,
धार धीर कैं दहैंड़ी अगैंड़ी सिधाई हैं।
राधा ललितादि लाई हेर तड़िता सबाई,
आनन कैं आगैं छटा ससि की लजाई हैं॥

(14)

ठाड़े श्री कालिन्दी तीर कान्ह लै सखा अहीर,
देख कहैं नारी दई कहा रचि दीनी री।
राजैं गिरिधारी छैल आज निज घेरैं गैल,
करि हैं जलि कहा जिय की न चीनी री॥
दास कहैं केती ये अजान आन कानन री,
जानकैं अकेली तिय करत अधीनी री।
केती कहैं आली कलि हाली छैल जाली जानैं,
सीस तें दहैंड़ी दधि की झटकि लीनी री॥

(15)

चलीं हट नारी करी गेह की तयारी धाय,
कही गिरिधारी नई रीति जिन कीजै जी।
सदन सिधाई कहा त्रास ने सताई यहाँ,
आइये सदाई हिय आनन्द धरीजै जी॥
दास कहैं कानन रखैया हित छैया छैल,
सांझ या सकारैं है निसंक राह लीजै जी।
छिन छिन छीजै देर कीजै जिन कंजनैनी,
हठ ना गहीजै आय दधि दान दीजै जी॥

(16)

करै अनरीति आय नई ये लगाई रीति,
काल ही तें कान्ह तेरे कहा जिय आइयै।
ऐसे ही जितेक चहै जी जितेक चाखि लीजै,
दधिदान की न लाल चरचा चलाइयै॥
दास कहैं कंस को ये राज है रँगीले छैल,
छाँड़ दीजै गैल रार नाहक जगाइयै।
चलै ना चलाई तेरी अकड़ नसाय जाय,
कानै ये लगाई ताके लिखै लै दिखाइयै॥

(17)

काके लिखै देखि हैं हठीली ये अजानी नारि,
देत हैं न दान रार नाहक जगाइयै।
छीन लीने चीर लै लतन अरुझाय दीनै,
सीस तें दहैंड़ी गहि धरनि गिराइयै॥
दास कहैं हनैं ताय जाय ततकाल धाय,
जाकी लै हजार चार सेखी लै जनाईयै।
दसानन दल डारे हिर्न्य हिरण्याक्ष गारे,
कहा कंस दीन जाकी चरचा चलाईयै॥

## दोहा

(18)

खलन दलन दलते रहै, निज दासन के काज।
जानत जान अजान नहिं, सदां सदां निज राज॥

(19)

सदां ही के राज राज साज ही के कीजै काज,
सिंहासन राज गाय चार तजि दीजियै।
केकी सिर सिखा ढार हीरन के क्रीट धार,
कंचन जलज ही के छत्र लै धरीजियै॥
दास कहैं त्यारी कही चलि हैं रँगीले छैल,
आगें डर कंस ताहि जायकैं हनीजियै।
कीजै जी इतैक लाल जबही चलैये गाल,
चाहे जो जितैक जाकैं आन दान लीजियै॥

(20)

जब लगि हौं त्यारे संग तब ही लगि जियै कंस,
राखि हैं न संस ताकी छार करि डारैंगे।
निज जन ही के काज रचत अनेक साज,
त्रासन की रास लैं अखण्ड दीह ढारैंगे॥
दास कहैं केते काज चरचा चलाई आज,
चढ़ैं जब गाज ताके अहंकार टारैंगे।
गाजैंगे इकत्र जग जस के नगाड़े दीह,
जा दिना सजीली ताके नगर सिधारैंगे॥

(21)

खाईये अघाय दही कही अनकही जेती,
करुणानिधान कान्ह कान जिन कीजियै।
रहिये सदां ही संग करिये अनेक रंग,
खेल रस रेल हिये आनन्द धरीजियै॥

दास कहैं नैंनन के तारे रहिये न न्यारे,
नैंक ना निहारे छिन छिन तन छीजियै।
कीजियै दया दयाल दीजैं घर जान हाल,
चाहे जी जितेंक लाल दधि दान लीजियै॥

(22)

दीजिये जिनस जेती साथ हैं तिहारे नारि,
खाली दधि ही कौं एक लैकें कहा कीजैजी।
लादैं लिये जात कित अति ही सयानी नित,
सकल दिनान ही के लेखा कर दीजैजी॥
दास कहैं दीजिये जताय ढिंग कहा लाल,
नाहक करत रार हेर चित्त खीजैजी।
गिरियाँ अनार दाख लादे कित खैला जात,
तिनकौं रँगीले कान्ह आन दान दीजैजी॥

(23)

गिरिया अनार दाख कहि डहकात कहा,
खैला कौं लदायकैं गयन्द गत जात नित।
दीजै जिन दान देंहैं लहैंगे सकल साज,
कहा रहीं गाज आज जायगीं सयानी कित॥
दास कहैं नारी ऐसी कीजै नहिं गिरधारी,
जानी जिय जानी ऐजी है गये सयाने चित।
नित नित करैं अनरीति कित सही जात,
कानन छलत रहैं नारि लाल जित तित॥

## दोहा

(24)

रिस कर लालन नें कही, देत न सीधें दान।
झटकैं हिय ते जलज लरि, करिहैं कहा अजान॥

(25)

झटकी जलज लरी अटकीं सकल नार,
तैने रे अजान कान्ह कहा आज कीने हैं।
हिये हरसात रिसियात निज आनन में,
धाय धाय लाल छैल अंक लाय लीने हैं॥
लेत रस अंग नैन दै दै कें सकल सेन,
जानी हिये सखा लाल ह्वै गये अधीने हैं।
दास जन दीनी हंक नारिन नें करी संक,
धाय खिसियाय गिरिधर छैल छीने हैं॥

(26)

कही रिसियाय लाल आन है अनंग जीकी,
तिनके सकल दंड नीकी रीति दैहैं जी।
सीधी ही के कहत जे गहत हठीली रीति,
करत अनीत नारि कैंसे नित सैहैं जी॥
दास नैंक देत ना खरी ही इतरात जात,
खरी ही खरी ये इठलाय कैं खिजैहैं जी।
आज कहाँ जैहैं जान जैहैं निज नीकी रीति,
एक एक दिन के सकल दान लैहैं जी॥

(27)

सखन तें कही लाल घेरिये जी राह लाल,
दीजिये न जान नारि दिये बिन दान के।
ठाड़े जाय जाय जित तित ही रँगीले धाय,
हरष हरष सटकीन कर तान के॥
दास कहैं कानन करत रस रेल खेल,
अति ही रसीले नित नित ही सियान के।
लाड़ली तें हँसि कर कही अंस कर धर,
लीजिये अनंग रस लता गृह आन के॥

(28)

चले हरषाते दोउ ललित लतान गेह,
कंजन सजीले सेज छैल दृष्टि आनी हैं।
करैं रस रेल केल आनन्दहि झेल झेल,
सिथिल ह्वै रही देह देह अरुझानी हैं॥
दास जित तित रंध्र झाँकत सयानी तहाँ,
निरख अलीन हू की अखियाँ सिरानी हैं।
नेह रस सानी कहै सरस कहानी रानी,
राधिकाजी राज आज नन्दलाल दानी हैं॥

(29)

ऐंसे रसदान कान्ह लीजिये सदां ही आन,
निरख निरख निज अखियाँ सिरात हैं।
लतागृह त्याग आये सखा दिसि दिसि छाये,
लै लै के रँगीले दधि गागरी तें खात हैं॥

दास कहैं नये नये खेल करैं रस रेल (लाल),
अति ही सजीले अङ्ग अङ्गन सिहात हैं।
धन्य यह नारी निज कर राखे गिरिधारी,
जा रस दरस हेत गिरा ललचात हैं॥

## दोहा

धनि यह कानन धन्य रज, धन्य धाय यह नारि।
इनके संग खेलत हरी, सकल जगत आधार॥30॥

चरण रेनुका इनन की, करि हैं सीघ्र सनाथ।
केहि दिन दासी कर गहैं, लैहें निज गन साथ॥31॥

(32)

छड्ड दे दिंगारे असी नन्द दे रँगीले छैल,
कीया तें हठीले साड़ी दहैंड़ी गहैंदा है।
नई नई कानन अनीत कान्ह करदां है,
किस्स के कहे ते दद्ध तान तें चहैंदा है॥
दास कहैं कंसजी के डर्र तें न डर्रदा है,
अर्रदां है कीया हथ्थ छतियाँ चलैंदा है।
अजस ही लैंदा निक्की रित्त ना चलैंदा कद्दी,
ऐंड़ी ऐंड़ी गल्लें कैंदा हथ्थ क्यों लगैंदा है॥

(33)

लगादां है इत्थे दान कानन दे नाल सांडा,
कीयी तें रँगीली ऐंड़ी ऐंड़ी ही रहैंदी है।
जेड़ी थारी गल्ले रल्ले निक्की हैं न छल्ले चल्ले,
हीयें हार हल्ले हीर नाहक रसैंदी है॥

कंस ही कहेंदी है जनेंदी है न कीयां धाय,
गल्ले ही चलेंदी अक्ख अँखियाँ तनैंदी है।
रार ही जगेंदी है अड़ेंदी है दिगादे नाल,
सीस की दहैंड़ी तैंन चंग्गा दद्ध दैंदी है॥

(34)

थारी लङ्गराई छैल चालसी न इट्ठे चिनी,
नई रे हठीला आज काई हाथ आसी जी।
छाँड़ दीजै गैला गैला काई काज ठाने रार,
छाड़सी न ये जी नई राज कनें जासी जी॥
दास कहैं थानैं लाल नीकी सिख देसी हाल,
धारसी न ऐयां तें घिरासी जी।
जननी खिस्यासी तात नन्द नें लजासी जान,
अैयां री तहां ते काँई दधि छैल खासीजी॥

(35)

काँई काज धेरे छै हठीला नारि कानन में,
गागरी नें हात घाल अंखियां ने तानें छै।
नट रे सजाय साज ला करो हलाई आज,
सथ्था नें रे टेर कें नई अनीति ठानें छै॥
दा स कहैं थारी थे अकल कि नां हरी आज,
कंस जी रा गैल दे चिनी न डर आनें छै।
छाने नार होसी लाल राजनें जनासी हाल,
अकड़ नसासी घर हीरा राज जानें छै॥

(36)

के ठाई चली ले नारि सीसेर गागर धार,
ऐई काछै केई आसे हातार ढाकीये चे।
केई कर नाय नाय रखल लगीले खाय,
सहल दहीर दान ये खाने लागीये चे॥
दास डांक कैने तीत करीचे कन्हाई लाल,
ऐई कथा सिथी जैये कंसेरे जनैये चे।
अकड़ नसैये तार राजेर धरैये दीले,
दीले नाई कटी रार केतोर जागीये चे॥

(37)

सकल कन्हाई दधि खायेचे ढालीये दीले,
येई काज तार नँद नन्देर डाकीये चे।
लरिर छांड़ा डांकेत कानन तें तेती करी,
छाड़ै नाइ ये की लाल के तार कांदीये चे॥
हजार कही ले कथा केई ना करीले कान,
दास केनें धीर धारी ये साज ताकिये चे।
सेई ठाई जैये राज कंसेर थाकियै छीले,
तेरखानेर खाल तार सिघ्रि धरीये चे॥

(38)

किसके कहे ते कान्ह करता अनीत एती,
टेढ़ी टेढ़ी आंखें कान्ह किस्तरैं दिखाता है।
जाता है न सीधा चला करता दलील ठाड़ा,
दिल की न जानी जाय सेखियाँ जनाता है॥

दास कहैं सिर से दहेड़ी छीन लीनी दद्ध,
हँस्स हँस्स खाता लै लै सखन खिलाता है।
नैंक ना लजाता छैल सीधा चला आता उर,
किसी न खाता नारि सीने से लगाता है॥

(39)

चाहिये न ऐसी करनी सलाह नन्दलाल,
रासते चलत नारियाँ से जंग ठाना है।
चित ललचाना खाना दधि जरा चाख लीजै,
दहेंड़ी छिपाना जान कर ये अजाना है॥
दास कहैं आना जाना सदां का रहाना यहाँ,
ह्वै कर सयाना दान किसतरैं लगाना हैं।
कान्हा इठलाना छांड़ दीजिये सहा ना जाय,
नित्त का खिजाना राज कंस का न जाना है॥

## सवैया

(40)

सिर की गगरी छीन लई कस कंसाराय कर जाय जनें हैं।
घेरत नार नन्द कर लरिका नीक जान तेहिं ठाँई घिरै हैं॥
डगर जात काहे इठलैये दास कहैं छल तहीं नसै है।
दधि का छैल चहै है इहि गति तेहिं कर नेक छाच नहिं दै है॥

(41)

नीकी न लागत यह गति कान्हर काहे लाल करत लरकैयाँ।
कंसराय का राज न जानसि नन्दलाल कां हाल घिरैयाँ॥

दास कहैं केहिं सीख लीन असा नारिन कां तेहि लगै खिजैयाँ।
जद लग गाल चलैं अति नीकैं तद लग राज न जाय जनैयाँ॥

## कवित्त

(42)

आली रस रास लाल लाड़ली नचत संग,
अचक चरण लच धरनि धरत हैं।
ताताथेई ताताथेई कर गत लेत देत,
झनन झनन कल झांझन करत हैं॥
दास कहैं देखरी रँगीली रस नेह सानी,
सरस रसीली तान रसना ररत हैं।
एक एक ही निहारैं दृष्टि छिनक न टारैं,
केते रति नाहक की चाहन दरत हैं॥

(43)

नाचत हरस हँस लाड़ली ललन संग,
कैसे रसरेलन के खेलन करत हैं।
चलन अदां की ताकी ऐसी नाहिं झांकी आली,
तरुण गयंदनि की गति ही गरत हैं।।
दास कहैं जित जित धरत चरण कंज,
तित लाल रंग के कलस से ढरत हैं।
एक एक ही निहारैं दृष्टि छिनक न टारैं,
केते रति नाहक की चाहन दरत हैं।।

(44)

देख री सहेली रंगरेली हेली आन नैंक,
इनके निहारें री अनंग रति लाजैं हैं।
कंचन जटित नग खचित सजीले कल,
कैसे ये रंगीले अंग अलंकार साजैं हैं॥
दास कहैं दासी खासी लै लै हित रासी साज,
सारंगी सितारन रँगीली तान गाजैं हैं।
अंस कर घालें करें हेर न निहालें कैसे,
हीरन तखत श्रीलड़ैती लाल राजैं हैं॥

(45)

केती सखी कली रंगरेली लै लतान ही तें,
रचत रँगीले हार इनहीं के काजै हैं।
केती चीर चाँद चाँदनी से लै चटकदार,
चिन चिन चार जरीदार अंग साजै हैं॥
दास कहैं केती घिस चन्दन जही के सार,
आनन लगाय हरषाय जस गाजै हैं।
अंस कर घालें करें हेर न निहालें आज,
हीरन तखत श्रीलड़ैती लाल राजै हैं॥



# कालीदह के कवित्त

(1)

जै जै कीरति लाड़ली, जै नँदनँदन अधार।
जै जै आनन्दकन्दनी, दास आस हिय सार॥
कालीदह लीला ललित, की लागी चित आस।
जन अघ टारन लाड़ली, रचि दीजै हित रास॥

(2)

देख धरा त्रास हित रास ऋषि नारद जी,
खल दल नास हित सीघ्र ही सिधाये हैं।
कंस सिर नाय हरषाय निज आसन दें,
केते दिन गये आज दरस दिखाये हैं॥
दास चित कहि तें अधीर हैं रंगीले छैल,
सांची कह दीजै कहा संकट सताये हैं।
हा हा नाथ दीजिये सलाहजी सनाथ कीजै,
हलधर कृष्ण लाल काल से दिखाये हैं॥

(3)

कागा से तृणा से खेला से सहस्र हनें गये,
खेलत ही धेनुका त्रिणाकौं लै नसाये हैं।
छिन छिन घरी घरी रैन दिन कल नाहिं,
कासों कहैं जाय दीह संकट सताये हैं॥

दास कहैं त्यारे लै दरस ते हरष तन,
करुणानिधान जस देस देस छाये हैं।
हा हा नाथ दीजिये सलाह जी सनाथ कीजै,
हलधर कृष्ण लाल काल से दिखाये हैं॥

(4)

केतिक हैं काज राज ताही ते रहे जी आज,
लिखि खत आज हलकारे हाथ दैना जी।
नन्द जी से कह देना सत लिख कंज दह
काल ततकाल नहीं दिये तें टलैना जी॥
दास कहैं सांची ये सलाह चित लाह लीजै,
ऐसी चरचा के ताके धीरज रहैना जी।
जहाँ रहे कालीजी कराली जी गरल घाली,
तहाँ जाय लाल हाल जीवत रहैना जी॥

(5)

टेर हलकारे कही नन्द के सदन जारे,
देना ये जनाये सत लाख कंज चाय हैं।
कालीदह हीके नीके लगे हित हीके काज,
कहीं कंस जीनें काल सीघ्र ही लदाय हैं॥
दास कहैं लिख खत दीना जित हीना जान,
जीना जन चाईयें तें देर ना लगाय हैं।
आय हैं न काल काल आये हैं सकल हाल,
कृष्ण हलधर तेरे धायकैं घिराय हैं॥

(6)

लैकें सात चिठी ईठी चरचा इ कीठी जाय,
दई नन्दजी के हाथ देखत लजाये हैं।
टेर के संगाती जाती नारी नर कहैं हाय,
कहा ये अखण्ड आज सीस त्रास छाये हैं॥
दास कहैं कैसी करें काकी जा सरन लहैं,
ऐसी अर रहे राज कहा जिय छाये हैं।
खेलत ही कान्ह आये हँसि हँसि के जनाये,
कहाँ तै ये आये तात कहा कर लाये हैं॥

(7)

कंस के सिखाये आये लाये एक चिठी लाल,
कहा कहैं हाल जिय कहत लजाइयै।
काली दह कंज काल चाहिए सतक हाल,
कीजिये न देरी सीघ्र सकल लदाइयै॥
दास कहैं कैसी करैं जतन रंगीले कान्ह,
कठिन कराल सीस त्रास रास छाइयै।
नीकैं जिन दैहैं जाय जैहै जिय सांची जान,
हलधर कृष्ण तेरे आय कें घिराइयै॥

(8)

कंस त्रास हीते गिरें संसै के सकल सिंधु,
ललन कहे तें चित धीरज धराये हैं।
टेर टेर सखा संग खेलत अनेक रंग,
गेंद लै रँगीले कर कानन सिधाये हैं॥

दास कहैं जाके ध्यान करै सनकादिक से,
नेह राग राचे ये अहीरन सँग छाये हैं।
अति ही सजीली दरसात लतिकान छटा,
नेह की घटा सहित कालीदह आये हैं॥

(9)

कीजै जिन संक चित रहिये असंक त्रास,
राखि है न अंक निज इष्ट हितकारी हैं।
रहैं सदा संग करैं खलन तें जंग तिरणा से,
ही (जी) अधारे कागासेन के संहारी हैं॥
दास कहैं तेई सीस काली के लदाय कंज,
नासै जन रंग कंस अहकार गारी हैं।
करुणा निधान कान्ह करि हैं सकल काज,
राख लैहैं लाज सरैं कारज हजारी हैं॥

(10)

खेलत हँसत गेंद खेलन रँगीले छैल,
धाय कें चलात ताक ताक घात कीनी हैं।
आई कर कान्ह के दरण अहंकार कंस,
दीन दीनता हरन डार दह दीनी हैं॥
दास कहैं सखा तैंने करी ये कहा रे लाल,
दीजै ताय लाय धाय अंक गहि लीनी हैं।
कहा कान्ह कीनी जान कैं गिराय दीनी निज,
जरीदार तारन ते गसत रंगीनी हैं॥

(11)

दीजै छाँड़ लंक रे असंक यार नाहक तें,
एक गेंद ही के काज एती रिस ठानै है।
लीजै गिन चार नैंक धीर हिये धार गिर,
गई तेन ऐहैं नैन ताही हेत तानै हैं॥
दास कहैं त्यारे काज कीने हैं हजार आज,
नैक चीज ही के काज साँति जी न आनै हैं।
ऐसे खिसियाने चित नैक न लजाने हने,
धेनुका अघा से कहा तैंने नहिं जानै हैं॥

(12)

सखन रिस्याने जाने नन्द के रँगीले छैल,
चढ़ें तरु ताल देत कछनी कसाय कें।
कंस अहंकार गारी काली जल तें निकारी,
दीन अघटारी हिय अति सरसाय कें॥
दास कहैं जाके ध्यान करैं सनकादिक से,
नारद से रिषि रहे जग जस छाय कें।
नर तन आय कें धराय जन हेत चेत,
गिरे हैं कालिन्दी दह कृष्ण लाल धाय कें॥

(13)

देते हैं न गेंद सीख देत है हजार आन,
तेरे ये सयान चित्त एक ना धरै हैं जी।
देख लई चाल ख्याल करत हजार लाल,
लैहें ततकाल यदि जान घर दैहैं जी॥

दास जरीतारन की नगन हजारन की,
ऐसे नित हानि कान्ह कैंसे जान सैहें जी।
सत्त ही जनैहें चित नैंक न लजैं हैं धाय,
नहीं रे रंगीले नन्दजी तें जाय कैहें जी॥

(14)

गिरे नन्दलाल धाय देख कहैं हाय हाय,
सकल संगाती छैल कहा जिय लाये हैं।
गेंद ही के काज राज जान निज दई कान्ह,
ऐसे ये अखंड आज त्रास लै दिखाये हैं॥
दास कहैं दरसन हेत है अधीर रहे,
जैसे झष जल हीन तैंसे दरसाये हैं।
अधिक लजाय कर हाय नैंन जल धारा,
चले हराय जन नन्द गेह धाये हैं॥

(15)

इतै नन्दरानी याद लालन की आनी दीह,
देर री लगानी आज छाकन नहीं कीनी है।
चली धाय गेह लेह देह अति ही सनेह,
तहाँ एक नारी लै तड़ाक छींक दीनी है॥
दास कहैं गई थहराय अति ही लजाय,
निकरी अजिर चित्त अधिक अधीनी है।
कहा रचि दीनी दई गति हीन चीनी जाय,
आज हाय कंस की अधिक त्रास चीनी है॥

(16)

लालन के देखन चले हैं नन्दराय रानी,
अधिक हिरानी संग कानन सिधाये हैं।
तित तें संगाती दरसाय कहै हाय हाय,
रहे नैन जल छाय अधिक डराये हैं॥
दास गिरे कान्ह जान कालीदह गेंद हान,
ताछिन तें नैंक नहीं दरस दिखाये हैं।
टिनकत सीघ्र आये जगह जनाये तिन,
जननी जनक गिरे धरन लजाये हैं॥

(17)

आये घर नन्द नारि देखी हैं अनन्द नहीं,
कही कहा छन्द आज ह्वै रही अधीनी है।
लालन की छाक हेत चाली ही सदन धाय,
ताहि छिन नारि नें तड़ाक छींक दीनी है॥
दास कहैं कैसी करैं हाय हाय एजी राज,
कही ऐसी ही अकाज राह निज चीनी है।
कहा रचि दीनी चित्त धीरज गही ना जाय,
देखन ललन राह कानन की लीनी है॥

(18)

धाये जन जित तित कहैं लाल गिरे कित,
सकल सँगाती दरसाय ठाँह दीने है।
त्राहि त्राहि त्राहि राय रानी ये लगाई टेर,
गिरे हैं धरनि चित अधिक अधीने हैं॥

दास कहैं कान्ह त्रास जराये दिखाय आन,
दरस तिहारे नहीं धक निज जीने हैं।
सीने दरकत जात धीर ना धरात छिन,
हाय कैसी करैं आय दई घेर लीने हैं॥

(19)

गिरन चले हैं जल जन के सहित रानी,
कर गहि राखे जन ऐसी जिन कीजिये।
कान्ह ही के संग जान सकल संगातिन की,
ये जी सिरताज यह सांची जान लीजिये॥
दास जानै कहा लिख दीनी करता लिलाट,
देखिये दिखाई छिन धीरज धरीजिये।
कीजे निज इष्ट ध्यान हरै जे कलेस आन,
ये ही है सयान नहीं यहै तन छीजिये॥

(20)

व्याकुल विलोक तात मात ब्रजवासी राम,
बेन सुखधाम अमी सींचत जिवाये हैं।
आवत हैं कान्ह गुण खान नाथ काली हाली,
कंस मद भंजन कौं दह में सिधाये हैं॥
'लाल बलबीर' बीरताई कौं बिलोकि देखौ,
बकी वका वत्सासुर तिननि नसाये हैं।
केते उर आये स्याम सब लै दराये तुमै,
देखतहिं तर देव स्वर्ग कौं पठाये हैं॥

(21)

बूड़ी सुत सोक के अथाह सिन्धु नन्दरानी,
मोह वश ह्वै कैं तन सुध बिसराइयै।
आवौ प्रान प्यारे पास नैनन के तारे कृष्ण,
हलधर वारे मेरे ऐसे कै सुनाइयै॥
माखन मधुर धौरी धूमर कौ काढ़ राखौ,
नैक नैक चाखौ देखौ कैसो सुखदाईयै।
देर ना लगाइये सिधाइये सदन ओर,
लाल लाल लाल कहि टेर क्यौं लगाईयै॥

(22)

उरग की नारी बनवारी वेंनु धारी जू कौं,
चकित अपारी मुख चन्द्र कौं निहार ही।
कौन कौं पठायौ भरमायौ यहाँ आयौ हाय,
नाग विष ही तै जल उमग्यौ अपार ही॥
'लाल बलबीर' धीर कैसै मन राखैं माय,
उनकौं रिझाय घर क्यौं नहीं सिधार ही।
जाग जैहैं कंत बलवन्त है अनन्त तन,
ये कही छिनक में करैगौ जार छार ही॥

(23)

कंस कौ पठायौ यहाँ आयौ हौं कमल लैन,
दीजिये जगाय नाग कैसौ बलकारी है।
तापै लदवाय पहुँचाय हौं नृपति द्वार,
कीजिये न बार मन ये ही मैं बिचारी है॥

'लाल बलबीर' तोहि देखि कैं लगत मोहि,
हठ छाँड़ दीजै सीख साँची ये हमारी है।
देह सुकमारी क्यौं करैगो जार छारी तू ही,
लीजिये जगाय जो मरन मन धारी है॥

(24)

गरब अहारी बनवारी श्रीविहारी लाल,
अति ही बिसाल वपु ही कौं बिसतारौ है।
टूटन लगोहै अंग सबै मद भयौ भंग,
जान्यौ मन ये ही अवतार ब्रज धारौ है॥
'लाल बलबीर' ह्वै अधीर दीह बाढ़ी पीर,
सरन सरन हौं जू दीन ह्वै पुकारौ है।
गायौ ना सम्हारौ लघु कीयौ ततकाल प्यारौ,
करुणा के सिंधु कौ विरद पन पारौ है॥

(25)

तबै बनवारी यह पूँछ दाब दई गोरी,
चौंक्यौ उर भारी ज्यौं गरुड़ रिपु आयौ है।
देख्यौ दृग बाल क्रोध छै गयौ बिसाल मुख,
छाँड़त है ज्वाल हरि अंग लिपटायौ है॥
'लाल बलबीर' की निहार छबि नारी कहैं,
हाय मन कहाँ ते मरन ये सिधायौ है।
अति हरषायौ काली कहत गरज हाली,
मो सम न कोऊ जग ही पै गर्ब छायौ है॥

(26)

येही टेर सुनी गजराज की रँगीले छैल,
गरुड़ विसार नंगे पाइन सिधारौ है।
येही टेर सुनी द्रौपदी जू की सभा के मध्य,
दुष्ट मद गार्‌यौ चीर अरबै कर डारौ है॥
येही टेर सुनी लाखा ग्रेह ते निकारे जन,
बलबीर ऐसो बेनु जात ना सहारौ है।
लघु तन धारौ नाग कियौ है सुखारौ,
नाथ कूद चढ़े सीस ताके नच्यौ प्रान प्यारौ है॥

(27)

देख कैं दरस मन हरष बढ़ायौ नाग,
दीन ह्वै दयाल जू सों वचन सुनायौ है।
कपटी कुटिल क्रूर काइर हौं दीनानाथ,
तुम्हरौ न भेद स्वामी वेद हू ने पायौ है॥
जे पद परसि सुरसरिता पुनीत भई,
तीनलोक पावन सु जाकौ जस छायौ है।
कृपा सो धरौ मो सीस पातक नसाई ईस,
संभ्रम भगायौ दास अभय जू करायौ है॥

(28)

उतै नन्दरानी बिलखानी मुरझानी कहै,
अहो बलराम स्याम अजहूँ न आमें हैं।
जीवन वृथाई सुखदान कान्ह बिनु जान,
कोऊ गुन खान नहीं दरस करामें हैं॥

'लाल बलबीर' बिन कैसें मैं धरूँगी धीर,
विरहा अनल आन अधिक जरामें हैं।
काहे कल पामैं सुख पामैं ये कहाँ सुजान,
निपट अजान प्रान निकर न जामें हैं॥

(29)

सुनि दीन बानी सुखदानी रिझानी मति,
अभय हेत काली सीस चरन धराये हैं।
कंस ने मँगाये हम आये हैं सरोज लैन,
तीन कोटि ताके पर पिष्ठ पै लदाये हैं॥
'लाल बलबीर' चले ब्रज सुखदाई छैल,
लीनौं उचकाय दास अति हुलसाये हैं।
नागन की नारी करैं विनती अपारी नाथ,
बिन ही प्रयास आप दरस दिखाये हैं॥

(30)

बोले बलराम स्याम आवत हैं सुखधाम,
काहे कौं बिराम मात होत मन माहीं री।
काल हू कौ काल खल दल कौं विहाल करैं,
चौदहू भुवन के वो आप निज साही री॥
'लाल बलबीर' दास दीनन रखैया कोटि,
कंटक दरैया उन्हैं नैंक डर नाहीं री।
जहाँ परै काज सुख साज राज लाज हेत,
कोप करि गाज छैल तितही कौं जाहीं री॥

(31)

जानि कैं उदासी ब्रजबासी सुखरासी छैल,
फन चढ़ि नाग के यमुना तट आये हैं।
देख नर नारी बनवारी श्रीबिहारी जू कौं,
जाय जाय नन्दरानी कौं सुनाये हैं॥
'लाल बलबीर' लाये कमल लदाय लाल,
सुनत ही बैन मन अति हुलसाये हैं।
ग्रीष्म के भान के तचाये प्यास ने सताये,
व्याकुल मरत मनौं लघु लै पिवाये हैं॥

(32)

आये तीर कान्ह सुखदान मनमोहन जू,
कमल धराय बेन कह्यौ ये नबीनौ है।
जावो निज लोक सोक मन तें बिसार दीजै,
करौ सुख साज जोई भावै रंग भीनौ है॥
कह्यौ 'बलबीर' जू सों त्रास है गरुड़ जू कौ,
पाइन परै तौ आन कीनौं सीस चीनौ है।
अभय पद दीनौ डर दीन जान छीनौं नाथ,
कीनों हौं सनाथ पद बन्दि चल दीनों है॥

(33)

नाचै लाल काली की फनाली पै निराली भाँति,
मधुर मधुर सुर बाँसुरी बजावहीं।
देख ख्याल ख्याली वनमाली के उताली देव,
नभ में ते जै जै कर पुष्प बरसावहीं॥

'लाल बलबीर' ब्रजबासी सुखरासी जू कौं,
कोऊ जल माँह तीर ठाड़े ललचावहीं।
अति अतुरावैं ज्यौं तुरावैं गाय बच्छ हेत,
मिलै सुखरास तन त्रास जबै जावहीं॥

(34)

तीर कान्ह आये हुलसाये ब्रजबासी सबै,
दौर तात मात लाल अङ्क लिपटाये हैं।
ता समैं कौ सुख मुख वरन्यौ न जाय कछु,
मरत ही मानौ प्राण फेर उर आये हैं॥
'लाल बलबीर' कही जलज धरे हैं तीर,
कंस ने मँगाये अबहू न पहुँचाये हैं।
आज जौ न जैहै कालि सैना साज ऐहै,
एती सुन नन्दराय धाये सकट लदाये हैं॥

(35)

दीने हैं सकट लाद कोटि दधि माखन के,
घर भर अहीरन काँधे धरवाये हैं।
तीन कोटि कमल दिये हैं काली तीर धरे,
चाहे चितै लीजै लिख पत्र कौं गहाये हैं॥
भनै बलबीर सब गोप नन्दराय जू नें,
संग में सिखाय दीनैं ताई कौं पेठाये हैं।
बोले हँसि स्याम कियौ काम कैऔ कंस जू सौं,
नाम कौं जनैयौ सुन मथुरा सिधाये हैं॥

(36)

चलै हरषाय सबै आये वृन्दावन दीयौ,
पाय नन्द सिरो पाय सबन दिखायौ है।
भये कंस राजी भाजी ब्रज की सकल त्रास,
निरभै करैंगे बास संभ्रम नसायौ है॥
भनै बलबीर उते राज मुरझाय जाय,
दावानल ही सों निज मंत्र लै जनायौ है।
कालीदह आये गोपवृन्द सबै छाये तहाँ,
दीजिये जराय जाय दाव भलौ पायौ है॥

(37)

पहुँचे जा द्वारे हलकारे सों सुनाई बात,
जाय कही कंस जू सों सीघ्र उठि धायौ है।
देखत ही फूल सब सुध बुध भूल गयौ,
उठ्यौ उर भूल ज्ञान ध्यान बिसरायौ है॥
भनै बलबीर सोच पोच मति केती फेरि,
भीतर कौं जाय पहरामन कौं लायौ है।
उर झुँझलाय मुख करत मधुर बात,
नन्द जू सरस यह कारज बनायौ है॥

(38)

चल्यौ हरषाय खलराज की रजाइस लै,
निज करतूत आज कंस कौं दिखाइयै।
जार करूँ छार तहाँ लाऊँ ना अबार होय,
सब ही सुधार नैक दृष्टि पर जाइयै॥

भनै बलबीर धायौ है कर अधीर सबै,
भीर ब्रजवासिन की एक ठाँह पाइयै।
देर न लगाई क्रूर क्रूरता दिखाई जहाँ,
सौवत है तहाँ जाय अगिन लगाइयै॥

(39)

प्रगटी प्रचण्ड वन दावानल चहूँ ओर,
पवन झकझोरन तैं दौरत ही आवै है।
साखा द्रुम बेलिन में रह्यौ मचि कोलाहल,
खग मृग जीव बहु जंतुन जरावै है॥
जागे ब्रजबासी छाई अमित उदासी उर,
हेरत दिसान राह कित हूँ न पावै है।
त्राहि त्राहि बलबीर टारौ यह पीर नाथ,
कीजिये सनाथ त्रास सह्यौ नहीं जावै है॥

(40)

खोले नैन भये चैन बोले हँसि सबै बैन,
काल सों कराल ज्वाल कित में बिलाई है।
जान्यौ न परत ख्याल छैल नन्दलाल जू कौ,
ब्रजप्रतिपाल ये बड़ेई सुखदाई है॥
'लाल बलबीर' जाय नाथ्यौ जी पताल नाग,
तीन कोटि कंज लायौ तापै लदवाई है।
करत सहाई ब्रजजन पै सदांई यह,
पूर्ण अवतार हितसार लियौ आई है॥

(41)

टेर व्रजवासिन की सुनी सुखरासी छैल,
कीजै न उदासी सबै आँख मूँद लीजै जी।
करत सहाई बुही लेंगे सुधि आइ दौर,
बड़े बलकारी ध्यान उनहीं कौ कीजै जी॥
सबै बलबीर धारौ धीर आवैगी न नीर,
भूल हू न कोऊ मन नैंक न डरीजै जी।
सुन्दर सुजान कान्ह गये कर पान जान,
काहू नहिं पाई फेर कही खोल लीजै जी॥

(42)

रहे दिन राति प्रात होत ब्रजबासी सबै,
सहित गुपाल निज सदन सिधाये हैं।
करै नव खेल रसरेल बलबीर लाल,
निरख निहाल जन त्रास कौं भुलाये हैं॥
कब कंस कज माँग कब जल नाथे नाग,
कब वन लागी आग कब गये आये हैं।
माखन कौं खात मुसिक्यात सुखधाम स्याम,
माँग तात मातन के लोचन अघाये हैं॥



# अघासुर लीला

(1)

ग्वालन के संग छैल बन में चरावैं बच्छ,
स्वच्छ जल देख यमुना कौं सुख पावहीं।
कोऊ घेर लावै कोऊ टेर दै बुलावै कोऊ,
अङ्गन सिरावै तृण हरित चरावहीं॥
'लाल बलबीर' जू कौं कोऊ द्रुम बेलीं रंग,
रेली अति हित सों दिखावहीं।
कोऊ हरषावहीं सुनावहीं रंगीली तान,
मान भरी तान कान्ह बाँसुरी बजावहीं॥

(2)

बदन समाने सबै अघा ने अकोरे ओठ,
दसहू दिसा में छायौ अन्धकार भारौ है।
बोले अकुलाय ग्वाल कहाँ गये नन्दलाल,
कठिन कराल जाल जात ना सम्हारौ है॥
'लाल बलबीर' चौंके खलन दलैया सुन,
भक्तन सहैया तन दुगुनौ समारौ है।
गयौ ना संघारौ फारयौ मुख बीच प्यारौ,
फट्यौ दसम दुआरौ स्वाँस रोक मार डारौ है॥

(3)

अघासुर आयौ खल कंस कौ पठायौ,
भूमि ते अकास लग बदन पसारौ हैं।

जान लई कान्ह याके कीजै तन ही की हानि,
लैकै ग्वाल बच्छ छैल तित ही सिधारौ है॥
'लाल बलबीर' जू की जानें कौन माया दीह,
सकल सँघाती मग सुखद निहारौ है।
मोद मन धारौ धन चरेगौ हमारौ तृन,
हरित हरित जहाँ निपजत भारौ है॥

(4)

बाहर निकारे ग्वाल जानिकैं बिहाल लाल,
निरख भये निहाल सबै हरषायौ है।
धन धन कान्ह सुखदान प्रान प्रीतम जू,
धन्य पितु मात जिन ऐसौ सुत जायौ है॥
'लाल बलबीर' खल गिर्‍यौ पछार डारयौ,
काल ते कराल जिन त्रास लै दिखायौ है।
बोले हँसि स्याम सुखधाम तुम मित्र मेरे,
तुम्हरी कृपा तें अघासुर मरि पायौ है॥

(5)

मित्रन के संग वन भोजन करत स्याम,
पावैं सुखधाम छाक छीन छीन कर सैं।
खाटे मीठे रोचक सलोने पकवान बहु,
अति ही सुहौने लौने बेर बेर परसैं॥
'लाल बलबीर' जी क़ौ निरख बिलास हास,
अमरपुरी के सब देव वृन्द तरसैं।
जै जै नन्दलाल ग्वाल बाल मिल खैलौ ख्याल,
सदाँ ही कृपाल वर पुष्प झर बरसैं॥

(6)

जान चतुराई चतुरानन की व्रजराई,
ग्वाल बच्छ हीके तन आपनैं बनाये हैं।
रूप गुन बैस सबै वैसे रंग रेख भेख,
बोलन हँसन विहँसन सम छाये हैं॥
'लाल बलबीर' विधि करी है ढिठाई दीह,
तदपि विचार दास कीये मन भाये हैं।
बोलि कैं सँगाती कह्यौ साँझ नियराती,
सबै मण्डली सिहाती छैल सदन सिधाये हैं॥

(7)

भोजन करत बन ग्वाल बच्छ चोरे बिधि,
'लाल बलबीर' जू की माया भरमाये हैं।
कैसौ भगवान खाय झूटन अहीर आन,
कौन है सुजान मन भेद नहीं पाये हैं॥
प्रथम गो नन्द दूजै गोपन के बाल वृन्द,
लै कै छल छन्दन सों लोक कौं सिधाये हैं।
सबई जान जैहैं तौ पै ये बुलाय लैहैं ऐसे,
करत विचार माया सैन में सुबाये हैं॥

## दोहा

(8)

घर घर श्रीगोपाल जू, ग्वाल बच्छ धर देह।
खेलत जननी जनक मन, दिन दिन बढ़यौ सनेह॥

(9)

आयौ चतुरानन विचार व्रज छैहैं त्रास,
देखे बच्छ-ग्वाल नन्दलाल जू चरामें हैं।
चौंक गयौ लोक तहाँ सोवत ही पायै सबै,
धायौ पुनि दौर दृष्टि वैसे ही लखामें हैं॥
'लाल बलबीर' जू की माया भरमायौ मन,
अति अकुलायौ कहे हाय सत्त कामें हैं।
पामै है न सारदा महेस सनकादि भेद,
छिन में चहैं तौ ब्रह्माण्ड कौं बनामें हैं॥

(10)

डोल्यौ बिधि बरस न पायौ भेद लालन कौ,
करुनानिधान जन जान मुसिक्याये हैं।
दीनों जब ज्ञान धर ध्यान कौं विचार रह्यौ,
ग्वाल बच्छ जल भुज चत्र दरसाये हैं॥
'लाल बलबीर' जू सों हाय मैं विरोध कीनौं,
ऐसो मति हीनौं छल स्वामी कौं दिखाये हैं।
कपटी कुमति कुटिल क्रूर कायर कपूत हौं मैं,
दीनबन्धु राखि लीजै सीस पद नाये हैं॥

(11)

करी है ढिठाई अनजाने त्रिभुवन राई,
माया में भुलानौ ना प्रताप वर चीनौ मैं।
बनि है न मुख मौरै चूक परी आन भौरें,
देवन के देव हाय घोर त्रास दीनौ मैं॥

'लाल बलबीर' दास आपनौ ही सुखरास,
राखौ निज पास बुद्धि दीजै मति हीनौ में।
मेरे यह औगुन बिचारिये न येहो नाथ,
कीजिये सनाथ बिधि तुम्हरौ ही कीनौ में॥

(12)

जान बिधि दीन दीनबन्धु श्रीबिहारी लाल,
निज हस्त कंज ताके सीस पै धरायौ है।
परयौ है चरन जाय गहक लीयौ उठाय,
मन्द मुसिक्याय मन संसै कौं मिटायौ है॥
'लाल बलबीर' जू की अस्तुति करन लाग्यौ,
जै जै करुनानिधान जक्त जस छायौ है।
कौन भेद जानै त्यारी माया में भुलाने सबै,
सर्व ब्रह्मांड नाथ आपकौ बनायौ है॥

(13)

धन्न ब्रजबासी प्रेम किये बस अविनासी,
इन ही के संग बन बच्छ लै चरावौ जी।
धन्न दिन आज निज राज कौ दरस पायौ,
ये जू महाराज चाह चित की पुजावौ जी॥
लोक ना सुहाई रखौ चरनन लाइ बिनैं,
सुनौ सुखदाई विध और प्रघटावौ जी।
खग मृग रेनु तृन द्रुम लता एहो नाथ,
चाहै सो बना दौ मोहि ब्रज में बसावौ जी॥

(14)

सुन विध बानी सुखदानी श्रीबिहारीलाल,
कौंन कौं बनावौं हँसि वचन सुनायौ है।
व्रज परदक्षिणा दै आवौ निज लोक जावौ,
महा प्रेम ही सों दीन सीत माँग पायौ है॥
'लाल बलबीर' उर दीन्यौ पहिराय हार,
सुखमा अपार हेर हेर हरषायौ है।
आयसु कौं जाय जाय ग्वाल बच्छ दीने लाय,
सीस पद नाये निज धाम कौं सिधायौ है॥

(15)

प्रथम ही पूतना सु आई ग्राम गोकुल में,
अस्तन गरल लेप कीनौ छल भारी है।
चीर खूब साजे हैं नवीन अंग आभूषन,
तैसी बन आई कोऊ गोप की कुमारी है॥
'लाल बलबीर' धाई नन्द के सदन माँहि,
यसुधा नें आदर दै निकट बैठारी है।
नजर बचाय कुच दीनौं मुख लालन के,
खेंचत ही क्षीर प्रान खैंच मार डारी है॥

(16)

कागासुर कुमति कुटिल आयौ गोकुल कौं,
बैठ्यौ जाय नन्द जू के धाम पै सड़ाक दै।
पालने में झूलतौ निहारयौ लाल सूधारौ सौ,
हरष चढ़ाय आय उतर्‌यौ झड़ाक दै॥

क्रोधातुर होय खल आयौ पास पालने के,
चोंच गहि कान्ह थाप मारी है तड़ाक दै।
मोर मुख तोर पर फेंक नभ माहिं दीनौं,
परयौ जाय कंस की कचैरी में पड़ाक दै॥

(17)

लावैं हैं नारद मुनि सेषजी से इन ही कौ,
नित प्रति ही सों उर ध्यान कौं अगाधे जू।
ढावैं है मद काम क्रोध के सु जालन कौं,
ज्ञान की कमानन सों काटत सु बाधे जू॥
भनै 'बलबीर' कह्यौ सुनौ यह धाय सजन,
प्रिया जू कौ जस है तू गाय मुख राधे जू।
छाँड़ दै सबै जू जग फन्दन के धन्दहि तू,
हिये व्रजचन्द हित रह्यौ करौ राधे जू।।

## सवैया

(18)

लावैं है नारद सेस जी से इनकौं नित प्रीति सों ध्यान अगाधे।
ढावैं काम औ क्रोध के जालन ज्ञान कमान सों काटत बाधे॥
त्यौं बलबीर कह्यौ सुन धाय सुजान प्रिया जस है सुख साधे।
छाँड़ सबै जग फन्दन के धन्द हिये ब्रजचन्द रटौ कर राधे॥

## दोहा

(19)

लावै हैं नारद मुनी, शेषजी से नित ध्यान।
ढावै हैं मद काम औ, क्रोध जाल कौं ज्ञान॥

# बहरालापिका

(1)

काहे में बनिक कौं नफा है कौन बेचै पान,
कौन वियोगन कौं अमित झरसाय हैं।
तम कौ हरैया साँझ हेरत बटोई कहा,
नारी पति पुन्य किति बटेरी कहाय हैं॥
कब लौं न छोड़ें भूमि धनी कौं दमंकै घन,
कहा सिर धारे स्याम सिन्धु कौं लँघाय हैं।
'लाल बलबीर' अर्थ उत्तर वरन मध्य,
अति ही सजीलौ रस सार हेर पाय हैं॥

## अंतरालापिका छप्पय

(1)

चन्द हि नीके लगत कहा है सजन धार चित।
कहा निरख आनन्द रहत है चकई के नित॥
काके आगैं रहत छैल नँदनन्द अधीने।
कीरति लली सखीन रास किनके सँग कीने॥
कहा धनी सिख देत हैं, अरे कीर यह रीति दृढ़।
दास अर्थ एकत्र कह, निसि दिन राधा कृष्ण रट॥

## छप्पय शरद

(2)

अमल अवनि आकास कमल पर अलिगन गुजैं।
अमल विटप फल फूल सजल बेलिन की कुंजै॥
अमल नदी कर नीर मुदित मन मीन कलोलैं।
भनै लाल बलबीर चकी चकवा सन बोलैं॥
दमदमात दस हौं दिसा, मनौ बिछायत फरद की।
चमचमात प्यारी लखौ, अमल चांदनी सरद की॥

## हिंडोरा

(3)

वाणिक कौ वित्त कौड़ी पैसा औ रुपैया मित्र,
बिन सों करत बिवहार लग नित्त हैं।
सूरन कौ वित्त तेगा बरछी धनुष तीर,
तिन ही लै जाये छैल करै रन जित्त है॥
संतन कौ बित्त बलबीर बर राधा नाम,
तिनहीं सौं आठौं याम लग्यौ रहै चित्त है।
दोहा छप्पै चौपाई अरिल्ल औ सवैया आदि,
कविन कौ वित्त हित जानियै कवित्त है॥

(4)

झूमत हिंडोरे अङ्ग स्याम रंग गोरे दोऊ,
प्रेम रंग बोरे संग सखी ही झुलावै हैं।
गावत मलार रस सार झनकार चारू,
सीतल सुगंधित समीर धीर धावैं हैं॥

उड़त दुकूल बाढ़ी सुखमा अतूल छैल,
अंग अंग फूल हेर हेर सचु पावै हैं।
रमक बढ़ावैं सुख सिन्धु में बुड़ावै नैंन,
आगें बलबीर दासी मुकर दिखावै हैं॥

(5)

मंजुल मनीन के जड़ाऊ खंभ राजैं चारु,
रंग रंग दामिनी लगाई मखतूलैं हैं।
कंचन की चौकी पर चमंक चहूँघाँ बिछे,
किरन किनारीदार जरी के दुकूलैं हैं॥
'लाल बलबीर' दासी झोंटा दैंई हरै हरै,
हेरतु छबीली छबि अंग अंग फूलैं हैं।
सावन सलूनौं पूनौं दूनौं रंग देख आली,
राधा वनमाली री हिडोरे झूम झूलैं हैं॥

(6)

सब सुखरासी वृन्दाविपिन विलासी छैल,
घर घरवासी तुम जानौं पास दूर की।
करुनानिधान गुनखान सामरे सुजान,
चतुर अगार सुधि लेते रहे कूर की॥
'लाल बलबीर' दास जानकैं खवासी माहिं,
राखौ निज पासी आँख प्यासी बर नूर की।
गरजी विचारै कौं तो अरजी कियै ही बनै,
माननी न माननी ये मरजी हुजूर की॥

(7)

कमल कमीन मीन पानी में अधीन रहे,
दीन किये भँमर कुरंग वन ढारे हैं।
गारे हैं गुमान सर्व खंजन खवास की ये,
जीये जो न जीये फिरे भ्रमत बिचारे हैं॥
'लाल बलबीर' बीर चंचल चलाक भरे,
अरे रहैं स्याम मन प्रेम फंद डारे हैं।
ऐसे मतवारे करैं वार पर वार प्यारी,
लोचन तिहारे कैधौं मैन सर भारे हैं॥



# ब्रह्मचारी लीला के कवित्त

(1)

प्यारी के दरस की चटक भई चित माँहि,
रसिक बिहारी ग्वाल मंडली बिसारी है।
कैसे मिलूँ जाय कहा कीजिये उपाय धाय,
काँख दाबि पोथी खौर केसर समारी है॥
'लाल बलबीर' कर लई माला झोरी कोरी,
सुरख बनात बर अंसन पै धारी है।
कारे सटकारे किये केस यूथ छिटकारे,
गहवर सिधारौ छैल बन्यौ ब्रह्मचारी है॥

(2)

मंडल मनीन मध्य नाचत जुगल छैल,
गावत रसीली तान विविध अनन्द की।
सखी लै बजामें कर सारंगी मँजीरा बीना,
सरस नवीना रंग भीने सुर छन्द की॥
'लाल बलबीर' चलै सीतल समीर धीर,
चमचमात चाँदनी चहूँधा चारु चन्द की।
देख चल आली नैन कीजिये निहाली कैसी,
लीजिये निहार झांकी राधिका गोबिन्द की॥

(3)

आई सखी चार रहीं रूप कौं निहार मन,
करत बिचार कोई ये तौ सिद्ध भारी है।
सीस कौं नवाय गई प्यार जू के पास धाय,
कही हरषाय सुनौ बैन हितकारी है॥
'लाल बलबीर' आई देखिके बाबा के बाग,
पंडित प्रवीन जू बड़ोई तेजधारी है।
भूत औ भविष्य वर्तमान कौं बतावैं आयौ,
चलौ जू कुमर दूधाधारी ब्रह्मचारी है॥

(4)

दूध लै अधौटा भर भाजन रलाये कन्द,
बांटकर एला वर तामधि मिलाई हैं।
ललिता विसाखा इन्दुलेखा तुंगविद्या चित्रा,
चंपलता रंगदेवी सुदेवी सुहाई हैं॥
'लाल बलबीर' जू सहित यूथ यूथेश्वरी,
गावात हँसत गहवर कौं सिधाई हैं।
देखि प्रान प्यारी ब्रह्मचारी यौं उचारी कौन,
दामनी सी दमक घटासी घन आई हैं॥

(5)

अब क्यौं गही है मौन आपनै सुजान एती,
औरन के आगे बहु बार बतराये हैं।
आई हैं दरस हेत कीजिये हरस मन,
समदृष्टि तुमकौं पुरानन में गाये हैं॥

'लाल बलबीर' सुनि प्यारी के बचन बर,
प्रेम के रचन भरे मन्द मुसिक्याये हैं।
जान परी त्यारे जू प्रवीन यूथ संग सखी,
मेरी यह सिद्धता उड़ावन कौं आये हैं॥

(6)

आई वृषभान की कुमरि दरसन हेत,
पंडित प्रवीन जिन क्रोध उर धारौ जी।
बढिहैं तिहारौ मान करैं सनमान सबै,
निज सील व्रत ताकौं चित ते न टारौ जी॥
'लाल बलबीर' आप गुन कौ प्रकास कीजै,
जैसो मचि रह्यौ सोर नगरी तिहारौ जी।
धरी दूध दोनी आगी चरचा करन लागीं,
कछू ब्रह्मचारी आप मुख तें उचारौ जी॥

(7)

बूझौ मन भाई चित लालसा भई है कहा,
पति परिवार भूरि भाग दरसैं हैं जी।
बोली तुंगविद्या वर विद्या तुम पाई कहाँ,
कौन गुरुदेव कौन नगर रहैं हैं जी॥
'लाल बलबीर' अजू देस है तिहारौ कौन,
हाँसी जिन मानौ बात हित की कहैं हैं जी।
साँची कहि दीजै ब्रह्मचारी हितकारी आप,
चौप है अपारी मन सुनन चहैं हैं जी॥

(८)

पूरन गुरु हैं विद्या नगर रहत सदाँ,
पाई तिनके प्रसाद अति अधिकामैं हैं।
कानन है देस गिरि बसत रहत सदाँ,
तहाँ ही निवास कर कर सुख पामैं हैं॥
'लाल बलबीर' रच रचिकैं रँगीले छन्द,
काम की कलान कौं रसीले मुख गामैं हैं।
और पढ़ी जोतिष सामुद्रिक की विद्या अंग,
जैसौ होय लक्षण सु प्रघट जनामैं हैं॥

## दोहा

विद्या बोली कहौ रिषि, आगम लख यह नीति।
श्रीराधे नन्दलाल की, कैसी निभिहै प्रीति॥9॥

(10)

ये तौ सुकमारी राधे परम उदार वर,
कान्ह छैल लपट लबार चोर भारे हैं।
को हैं दस चार लोक ओक में मुकुट मनि,
नन्दलाल जू से दूजैं रूप उजियारे हैं॥
आपसी सहस्र गई दर्स माधुरी के हेत,
वृन्दावन रास रच्यौ यमुना किनारे हैं।
हम तौ न देख्यौ निज कानन सुनी है बात,
तुम सब ही के वह नैननि के तारे हैं॥

(11)

ललिता कहत कहौ राजसुता लक्षण जू,
कहा विधना नें बर भाल लिख दीनौ है।
सुभग सुहाग भाग दरसै अपार मोहि,
रोम रोम सुख जू परम रंग भीनौ है॥
सर्व लोक वनितागन चूड़ामनि ह्वै हैं ये जू,
'लाल बलबीर' नीकौ मतौ लखि लीनौ है।
प्रीतम सुजान जू सों ह्वै है चित मान कछू,
अति ही उदार मन कोमल नवीनौ है॥

## सोरठा

गाय चरावत ग्वाल, आये गहवर के निकट।
बैठे देखे लाल, कपट रूप धरि तियन में॥12॥

(13)

दैकें बिलगैयाँ गैयाँ छोड़िकें हमारे पास,
क्यौं रे छैल नन्द के जू देख्यौ छली भारी है।
वन वन ढूँढ़त फिरत तोहि हे सुजान,
आप करे जारी ख्वारी करत हमारी है॥
'लाल बलबीर' ऐसी चाहिये न तोहि स्वाँग,
नृपति कहाय बहुरुपिया कौ रूप धारी है।
भोरी ब्रजनारी लाई गोरस बिचारी यहाँ,
सिद्धई पुजावै बन बैठौ ब्रह्मचारी है॥

(14)

भाजि चले लाल गिरी फेंट तें मुरलि हाल,
लई ललिता जू दई प्यारी जू कौं धाईयै।
बनैं ब्रह्मचारी अब नट ह्वै कैं नाचौ लाल,
लाड़िली बबा कौ बर सुजस सुनाईयै॥
'लाल बलबीर' नटवर भेष धार नाचै,
जै जै वृषभान जू की तान लै जनाईयै।
रीझिकैं किसोरी चित चोरी भोरी,
स्वामिनी जू नीलमनि माल लाल कंठ पहिराईयै॥

(15)

खेलत हँसत विलसत सुख नाना भाँति,
सखिन समूह संग राजै हितकारी जू।
प्यारी के दृगन ल़ाल लाल नैन लाड़ली जू,
बसत सदां ही छबि छिनक न टारी जू॥
'लाल बलबीर' रचैं कौतुक नवीन नित,
करत छद्म नये नये रूपधारी जू।
दोऊ रूप-बाग के मधुप हैं सनेही वर,
दोऊ ब्रजचन्द वृन्दाबिपिन बिहारी जू॥



# मनिहारी लीला

(1)

बनि बनवारी मनिहारी रूप उजियारी,
गई वृषभान की दुआरी हरषामनी।
चुरी नीलमनि को सुमन की हरनहारी,
लाल पीत वारी दमकत मनौं दामिनी॥
'लाल बलबीर' आई तकि राज की दुआरी,
लीजिये बुलाय सुकमारि कोऊ भामिनी।
कीरति कुमारी कह्यौ ललिता तैं बेगि जा री,
. लाइयै लिवा री आज टेरै कोऊ कामिनी॥

(2)

ललिता ललक आय मन्द मुसिक्याय कही,
घर घर काहे कौं फिरति देत भाँमरी।
परम सलौनी गजगौनी मन की हरोनी,
कुमरि बुलाई तोहि चलि राजधाम री॥
'लाल बलबीर' सुनि धाई मुसिक्याई मन,
धन्य यह घरी छिन धन्य यह जाम री।
पूजै सुभ काम होय चित कौं आराम देखि,
स्याम के चरन में नवायौ सीस सामरी॥

(3)

आ री बैठि जा री सुसिता री मनहारी प्यारी,
अति सुकुमारी किधौं राज की कुमारी है।
रूप उजियारी वर विधना सुधारी लगै,
साँचे की सी ढारी तोसी और न निहारी है॥
'लाल बलबीर' पट मोहनी सी डारी कछू,
होत ना सम्हारी चित टरत न टारी है।
नाम तौ कहा री दीजै सजनी जना री गाम,
बसत कहाँ री उर लालसा हमारी है॥

(4)

मोहि जिन कीजिये खिलौना बलिहारी त्यागी,
जाऊँ सुकुमारी जू गरीब चुरिहारी हौं।
फिरत फिरत मग साँझ होय गई मोकौं,
नैक नगरी में नाहिं किनहूँ हँकारी हौं॥
'लाल बलबीर' देह थाकी गति साँची कहूँ,
तकत तकत आई राज की दुआरी हौं।
परम उदारी हित सारी एहो प्रान प्यारी,
सामरी मो नाम नन्दगाम रैन हारी हौं॥

(5)

एरी चुरिहारी सुकुमारी खोल के दिखारी री,
कौन कौन बंदनी नवीन तें सजाई है।
एती सुन बानी सुखसानी हरषानी मन,
**काम ते सुघर पोट मौंहि दरसाई है॥**

केती नीलमनि केती पन्नई पिरौजी लाल,
'लाल बलबीर' रंग रंगन सजाई है।
जो जो मन भाई छबि छाई सुखदाई सो सो,
सामरी सजीली स्यामा जू कौं पहिराई है॥

(6)

देखत सुघर कर स्यामा कौं सनाथ भई,
अति सुख दई अंग अंग न समाई जू।
रूप सिंधु ही में मन-मीन लहरान लाग्यौ,
फूले करकंज भरे नैन जल छाई जू॥
'लाल बलबीर' अंग अंगन अधीर भई,
सामरी प्रवीन यह उकत बनाई जू।
आप कर लायक अहो नवीन लाड़ली जू,
चूरी चटकीली तौ सदन भूलि आई जू॥

(7)

छूवत ही हाथ मन हाथ सों चलो है छूट,
प्रेम की घुमेरन सौं सुधि लै बिसारी है।
बोलि कही प्यारी ललिता री याहि देखौ आय,
भयौ है कहा री किधौं रोग की दबारी है॥
'लाल बलबीर' लखौ अंग अंग सुकुमारी,
फैंट में प्रबीन बर मुरली निहारी है।
हँसे देत तारी ये तौ छैल धूत भारी प्यारी,
है न मनहारी बनवारी ये खिलारी है॥

(8)

दौरिकैं लड़ैती जू नें लीने भर अंक लाल,
रचौ ऐसें ख्याल चित आवे नैंक कानैं ना।
कबहुँ मनिहारी बीनवारी पानवारी बनौ,
कबहुँ सुनारी सो रहै छदम छानै ना॥
'लाल बलबीर' ऐसी कीजिये न आप प्यारे,
नैनन के तारे ये मिटत तुम बानै ना।
कैसी करूँ प्यारी सुकुमारी रूप उजियारी,
आपके बिलोके बिन मेरौ मन मानै ना॥



# जोगी लीला

(1)

जोगी बन आये मन भोगी मनमोहन जू,
सींगीनाद हाथ भस्म धारी देह कारी पै।
ओढ़ि मृगछाला लाला रूप दरसे बिसाला,
मुद्रा कान डाला सो सनेह चौंप भारी पै॥
'लाल बलबीर' बरसाने के डगर वीर,
जादू सो करत है नवीन ब्रजनारी पै।
अलख अलख कर झूमत झुकत डोलै,
दई आय टेर वृषभान की दुआरी पै॥

(2)

लाड़ली निहार कें विचार कही ललिता सों,
देख देख या की गति मेरौ मन भरमैं।
चंचल रसीले चल चलत चहूँधा जाय,
जहाँ तहाँ नारिन रिझावत है घर में॥
'लाल बलबीर' बाज दुष्ट ये झरत भृष्ट,
ऐसौ तौ सयानी नहीं योगिन के धरमें।
लीजिये बुलाय धाय देखरी सयानी जाय,
पूछिये चलाय बात जाकी उर मरमें॥

(3)

जे तौ जोगीराज तुम राज सुता लाड़िली जू,
घट बढ़ मो सों मुख कैसे कही जाईहैं।
लाऊँ मैं लिवाय जाय आप ही कृपा करिकैं,
पूछिये सुजान अजू जो जो मन आईहैं॥
'लाल बलबीर' मुख सुखमा निहार याकी,
कोटिन अनंगन की दुति गश खाईहैं।
देख सुख पाईहैं रिझाई हैं नगर नारि,
जो पै अलबेली पुर बाबा के बसाई हैं॥

(4)

लीयौ है बुलाय जोगी बैठौ है संमुख आय,
हिये हरषाय मनौ रंक निधि पाइयै।
सींगी कौं बजाइये जू गाइये रसीलौ राग,
एहो नाथ आज राज सुता कौं रिझाइयै॥
'लाल बलबीर' बिधि दियौ है अनूप रूप,
तैसोई प्रघट निजगुण कौं दिखाइयै।
दैहैं वृषभानपुर बास सुखरास तुम्हैं,
अलख लड़ैती नौनीकुटी हू छवाइयै॥

(5)

होठ धर सींगी कौं बजाई सुखदाई छैल,
रीझि वृषभान लली माल पहराई जू।
कौन मनोरथ सीं परम अवधूत भये,
अलख पुरुष सों न प्रीति लख पाई जू॥

'लाल बलबीर' कहा भासत अनीति ऐसी,
योगिन की रीति राज सुता कठिनाई जू।
खेल सौ दिखाई तुमैं परे ना लजाई हम,
गुरु की कृपा तें गहौं हस्त सुखदाई जू॥

(6)

हाथ का परै हैं जोग ध्यान सुनौ सुन्नसान्न,
कारौ गोरौ सेत ताकौ रंग द्यो बताई जू।
सब ही उन्हीं के रंग व्यापक हैं अंग अंग,
चार दस लोक में उन्हीं की सक्ति छाई जू॥
'लाल बलबीर' कौन देखें हैं आकास फूल,
ऐसे ही अलख की न लखी रेखताई जू।
भली ये चलाई तुम चरचा रँगीली सुन,
ऐसे कूटबाद पग छिन ना उठाई जू॥

(7)

छोड़ौ हम वाद जू विषाद मति कीजै मन,
कहा हेत आपनै कठिन जोग लीनौं जी।
कौन देस कुल वर रावल प्रकास करौ,
एही उर सरस संदेह परवीनौ जी॥
'लाल बलबीर' निज देस है रंगीलौ कुल,
परम पवित्र जू विदित रंग भीनौं जी।
सर्व सुख सर्व प्राणी निर्भें ही बसत जहाँ,
तहाँ गुरु ज्ञान सौं फिरत मन दीनौं जी॥

प्यारी त्यारे दरस की, उठत चटपटी आय।
लाज वार कौं प्रेम निध, सीघ्रहि देत बहाय॥8॥

(9)

यह तौ सकल सुख देखौं व्रजमण्डल न,
और ब्रह्ममण्डल में कितहूँ निहारे जू।
सुनत बचन वर प्रेम के रचन भरे,
भूले हैं छद्‌म राधे नाम लै उचारे जू॥
'लाल बलबीर' हेर हँसी ब्रजनारि बिन,
रसिक बिहारी महामन्त्र कौ उघारे जू।
दौर उर धारे लाज काजन विसार छैल,
ऐसे ही रचत सदाँ रहौ प्रान प्यारे जू॥

(10)

स्वांग सजौ सामरे सजीलौ जोग फागुन कौं,
देख रूप ताकौ छकी कीरति दुलारी जू।
बोली तुम रावल जी बसत कहाँ हौ,
घर कैसें धरें धीर निज तात महतारी जू॥
'लाल बलबीर' कौंन तीरथ करें हैं आप,
काकौ करौ जाप को तिहारौ हितकारी जू।
तेज तपधारी अंग अंग चातुरी अपारी,
सींगी कों बजाय तुम मोहीं ब्रजनारी जू॥

(11)

सुनो हो सयानी निज मन की कहानी,
हम जोगी ब्रह्मज्ञानी तिन हीं के रंग भीने हैं।

चीने हैं पुरुष आदि छोड़ जग के विषाद,
वाद में न स्वाद बास कानन के लीने हैं॥
'लाल बलबीर' दीने क्रोध ईरिसा बिसार,
भाव-भक्ति राख रहैं श्रद्धा चित चीने हैं।
राज की कुमारी सुकुमार तुम जावौ ग्रेह,
खीजैं पितु मात क्यौं बिलम्ब बन कीने हैं॥

(12)

बरसानें बास सुखरास करौ रावल जी,
फागुन मास दूध दही सुख भारीहै।
काल ही चलेंगे होरी खेलन सकल मिल,
नंदीसुर के गाम ससुरारि वाँ हमारी है॥
'लाल बलबीर' ब्रजपति कौ सजीलौ पूत,
रूप गुन बैस सब मिलत तिहारी है।
बाँसुरी बजाय वुहू गावत रसीलौ राग,
तूम हू सरस कर सींगीनाद धारी है॥

(13)

तुमैं उनै वेलि प्रीति उपजै अपार बिधि,
रचे एकसार जोरी सरस समारी है।
अङ्ग अङ्ग तुमरै भभूत सुभ सोभित है,
उन भाल केसर की खौर बरधारी है॥
बाघम्बर धार तुम सोभित अपार उन,
पीताम्बर धारण की चौंप उर भारी है।
तुम सींगी नाद करि हरौ मन सब ही कौ,
बाँसुरी बजाय उन मोहीं ब्रजनारी है॥

(14)

तुम कौं छकन अति रावल अमल की है,
उनकौं छकन रूप ही की अति भारी जी।
तुम कौं है प्यारौ जोग एजी सुखकारी भारौ,
उनकै सदां जी गऊ धन सुखकारी जी॥
'लाल बलबीर' ज्ञान रीति में प्रवीन तुम,
वे हू रस रीति में निपुण वर भारी जी।
दोऊ सुकुमार सङ्ग एक ही विराजै जबै,
सब ही के नैंन सुख लूटैंगे अपारी जी॥

(15)

तुमकौं जू नीकी गिरि कन्दरा लगे हैं अति,
उनकौं जू हेत वृन्दा विपुन सों भारौ है।
तुम हौ गुरु के लाल लाड़ले रसिक बह,
व्रजपति जू कौ छैल प्रानन ते प्यारौ है॥
'लाल बलबीर' सींगी नाद कौं बजावौं तुम,
सुनन कौ नेह मन अति ही हमारौ है।
भयौ सुख भारौ भूले छद्‌म सहारौ लाल,
बार बार राधे राधे नाम लै उचारौ है॥

(16)

देखि यह कौतुक अलौकिक अनूप नारि,
प्यारी कौं जनाय सैन हँसी मुख मोरी जू।
महामन्त्र ही कौ भेद जानै नहीं और कोऊ,
बिन गरबीले अरी स्याम चितचोरी जू॥

'लाल बलबीर' मन जानी जान लीने हम,
भाज चलै छैल कहौ होरी आज होरी जू।
लागी है बलैयाँ लैन धन धन छल ऐन,
घेरन कौं चाह भई चितैं चहूँ ओरी जू॥

(17)

मोहन रसिकराय बनि कै चितैरी दुई,
भानपुर फेरी नई युक्ति उपजाइयै।
लीजियै बुलाय रिझवार कोऊ ग्रेह मेरी,
देख कर कारीगरी चित्र लिखवाइयै॥
'लाल बलबीर' झाँकती सी फिरै द्वार द्वारी,
जाकी ओर ताकी ताकी मति लै चुराइयै।
देखि कैं अनूप रंगरूप सुता भूप कीसी,
अति हुलसी सी बहु भीर संग धाइयै॥

(18)

बूझत फिरत कौन कौन रिझवार प्यार,
करिकें बताय दीजै कोऊ सुकुमारी जू।
चित्र हैं विचित्र मो पै परम पवित्र चित,
करिके इकत्र नैक देखौ हितकारी जू॥
'लाल बलबीर' जब जानौं कर कारीगरी,
कैसी ढार ढरी छबि परम उजारी जू।
बोली हंसि नारि मन सांमरी तै धीरधारी,
है री रिझवारी वृषभान की दुलारी जू॥

(19)

पायौ मैं पता जू दीजै तुम ही बता जू,
देख चंपकलता तैं कह्यौ बैन हरषाइयै।
प्यारी सों मिलावौ याके चित्र जू दिखावौ,
नई सामरी सजीली ये चितैरी आज आइयै॥
'लाल बलबीर' चली सङ्ग सब भीर तन,
ढाँपत है चीर जी अधिक सकुचाइयै।
कह्यौ हंस नारी राज द्वार में गमारी जिन,
कीजिये विचारी री निसंक ह्वै सिधाइयै॥

(20)

हों तौ हौं गमारी नहीं जानौं राज रीति येरी,
जान निज चेरी मोकौं आप ही निभाइयै।
किसब कहारी रूपवारी लाज भारी बोर,
अमिल समाज विधना ने तू बनाइयै॥
'लाल बलबीर' जाइ प्यारी के लगाइ पाय,
सुनो जी कुँवरि ये चितेरी नई जाइयै।
कैसे चित्र लाई प्रिया कह्यौ मुसिक्याई,
अरी सामरी सलौनी लौनी हमकौं दिखाइयै॥

(21)

दीयौ है निकार चित्र परम पवित्र तामें,
जाना द्रुम बेली झूम रहीं सुखदानी हैं।
राजत चकोर मोर सारौ पिक पंत जोर,
तिनकी सरस सोहे सुखमा निमानी हैं॥

'लाल बलबीर' ताके मध्य कमनीय भौन,
मनिन जटित राजै काम रति रानी हैं।
देख सुखदानी ताकी रचना निमानी मन,
समझ समझ मन्द मन्द मुसिक्यानी हैं॥

(22)

कहत चितेरी सुनो राजसुता बिनै मेरी,
विद्या बहुतेरी चित चहौ सो दिखाऊँगी।
सप्तदीप चार धाम कहौ व्रजमंडल कौं,
चहौ जो पै चौधहू भुवन लिख लाऊँगी॥
'लाल बलबीर' सनमान मन मान पाय,
मैं हू गुनमान आन जान ना छिपाऊँगी।
परम उदार सुकुमार राज की कुमारी,
तुमसौं दुराय जाय कौनै दरसाऊँगी॥

(23)

सब ही प्रकास गुन नागरी उजागरी तें,
देख छबि आगरी कौं प्रीत अधिकाइयै।
नैन तौ फिरत चहुँ ओर चकडौर तोर,
थीरता हू मन की न नैंक लख पाइयै॥
'लाल बलबीर' सुकुमार राज की कुमारि,
आई हौं सहारौ तक आप ना उठाइयै।
कीने विधना ने डहडहे कजरारे भारे,
दुरैं ना दुराये जामें मेरी का खुटाइयै॥

(24)

दई है कसीदा वर कंचुकी निकार तामें,
बूटा रंग रेल बेल सुभग सुहाईयै।
काकरेजी सारी सुखकारी लै विचित्र भारी,
तैसी ही सजीली स्यामा जू कौं पहिराईयै॥
'लाल बलबीर' कर देखत किसोरी गोरी,
मुकर दिखावै अली अति छबि छाईयै।
धन्न तू चितेरी तेरी बुद्धि है घनेरी येरी,
कंचुकी अनूप साज़ मन मिल लाईयै॥

(25)

गुनन छिपाये जू फिरत हौं सुजान प्यारी,
काकौं दरसा री कोऊ मिलती न पैहैं जी।
कछू निज गाँसी सी खुली है सुखरासी खासी,
करिहैं कृपा तौ लै सरस दरसैहैं जी॥
मेरौ चित्त कोमल अधिक परचौ सनेह,
टहल बनाये करौं साथ जो रखैहैं जी।
मन पलटे ते मन पाइये बिदित जग,
मोकौ ना समझ प्यारी आप समझै हैं जी॥

(26)

चित्र की लिखन वर विद्या है कठिन वीर,
बहुरि कसीदा रचि कहाँ सीख आई है।
बड़े ही कष्ट सों यह आई है सुजान प्यारी,
नीरस न राचैं हित जान दरसाई है॥

रसमई भूमि ब्रजमंडल की येतौ सर्व,
'लाल बलबीर' है निसंक सरसाई है।
कौन देस ही तें आई बसिये सदांई यहाँ,
वहाँ की न भूल अब चरचा चलाई है॥

(27)

सुनौ जी कुमरि मम देस लोग लंपट हैं,
जानकैं सलोनी कूँ कुदृष्टि सौं तकाई जू।
और ऋतु जौं लौं बचे अपनै सुभाव सील,
मधुरितु प्रेम खेलै यामें ना बसाई जू॥
'लाल बलबीर' समौ पाय भगी भागन तें,
यातैं सिरमौर चित्त रहै ना थिराई जू।
यहाँ मैं लखाई प्रीति-रीति गरुताई तातैं,
राजसुता आपकी सरन दीन आई जू॥

(28)

भली करी वीर भज छुटी गुनखान जान,
सदांई सजीली री सरस प्रीति सरि हैं।
तो सी सुकुमारी उजियारी बिन पीउ प्यारी,
कैसें गुनवारी वे हिये में धीर धरि हैं॥
द्रव्य कों लै जैहौंगी कमाइ बहु राज साज,
यातैं मनभामन अधिक मोद भरि हैं।
जान सतमती कौं अनन्त बलबीर धीर,
सहज सजीलौ मो चरन सेवा करि हैं॥

(29)

तोसी ही के सत सों थमौ है भूमि आसमान,
सदां कुलवंती कौ दरस बर कीजै री।
दूजै कर कारीगरी देखन की चाह खरी,
अनोखी ढार ढरी चित तित ही ढरीजै री॥
'लाल बलबीर' बीर लीजै अनगिन धन,
भूलहू न पाय अब कितहू कौं दीजै री।
जो जो मन आवै सोई पावै प्रीति रीति नित,
जिन सकुचावै मन भायौ करि लीजैरी॥

(30)

सुनत उदार बैन सुखद अपार भई,
मन्द मुसिक्याय कही अब हौं न जाइ हैं।
अति सुकुमार वृषभान की कुमारि त्यारी,
छोड़ मनुहार चित कहाँ ललचाइ हैं॥
'लाल बलबीर' भई बातन के माँझ साँझ,
लै चली कुमर निज भवन दिखाइ हैं।
खान पान मान ही सों सुन री सजीली तोहि,
सब बिधि ही सों बीर सुखद कराइ हैं॥

(31)

देखो कर चित्र मेरे पवन विचित्र प्यारी,
तुमैं सुकुमारी जू चिङ्कर बर भारी हैं।
जुगल सरूप कौ दियौ है हँसि हर हाथ,
नवल निकुंजन की सोभा सुखकरी हैं॥

'लाल बलबीर' किये षोडश सिंगार राधे,
मुकर दिखावैं केती सखी हितकारी हैं।
रतन जटित बैठी चौकी पै किसोरी गोरी,
ठाड़े कर जोरैं आगें रसिकबिहारी हैं॥

(32)

देखकैं जुगल चित्र परम पवित्र भई,
सब री चकितमई लिखौ कहा साज है।
गोप हूँ तें गोप रस अस कस जान सकै,
जान लई हम यह छदंम कौ काज है॥
'लाल बलबीर' नख सिख तें निहार छबि,
इनतें तौं चातुरी की चातुरी हू भाज है।
दै दै हँसे तारी नारी रसिकबिहारी यह,
का की सीख धारी तुमैं रंचक न लाज है॥

(33)

लाज कौ है कहा काज तापै आय परौ गाज,
काज तौ सकल अनुराग तें सरत हैं।
दरसन चाह उतसाह होता आठौं जाम,
और सों न काम चित्त भामरें भरत हैं॥
धवल महल कौं विलोक वर सुख होत,
मनस लता जू आये इतकौं ढरत हैं।
कुमर किसोरी चित चोरी गोरी भोरी जू के,
रसना रसीली जस माधुरे ररत हैं॥

# पंजाबी कवित्त

(1)

सांडे नाल नेहा लाय नन्ददा रंगीला छैल,
छड्डु गया मुथ्यरा नुं कुछ ना सुहांदा है।
कुव्वरी दे नाल आप मौजनुं मनामदा है,
साडे कौ लौं लिख लिख जोग दे पठांदा है॥
'लाल बलबीर' उधौ खबर न लेंदा साडी,
करदा अनीत साडे चित्त नुं जलांदा है।
माखन ना खाँदा असी चीरना चुरांदा अब्ब,
नीद ना दिखांदा प्यारा इथें क्यों न आंदा है॥

(2)

बांस्सुरी बजांमदा हैं भ्रकुटी नचामदा है,
नैन नुं चलामदां है चित्तनुं चुरांदा है।
नाम ले बुलामदां है रूप दरसामदा है,
सीने से लगामदा है मोद उपजामदा है॥
बल्लबीर गामदा है दध्धनुं छिनामदा है,
ग्वालों नूं हिलामदा है सब्ब नू खिलांदा है।
हिये हरषामदा है गल्लें ये सुनाबदा है,
औरां नूं खिलामदां है दूना भर पांदा है॥

(3)

छड्डुदे गुमानी साडी बैयां के नू फड्डुदा है,
साडे नाल तेंडी मल्लो मल्लीनां सुहादीं है।
'लाल बलबीर' कानूं अख्खियां तमामदां है,
हुंदा बदनाम क्या बड़ाई हथ्थ आंदी है॥
वृन्दावनचन्द विच्च साडा दान लग्गादा हे,
ऐंडी ऐंडी मैंनूं छड्डु किथ्थे चली जांदी है।
भन्न सिठ्ठु गगरी नूं तैनुं क्या कर दीं मेंडा,
दे दे दान सांडे नाल गल्लें क्यों बनांदी है।।

(4)

ग्वालों नुं सथ्थ ले चरांदा नन्द जू दी गाय,
जम्मना तीर कानुं बांस्सुरी बजांदा है।
खांदा है लुट्ट लट्ट दुद्ध दद्ध माखन नुं,
भंजदा है गगरी नूं अक्षियां तनादा है॥
मल्लो मल्ली रोकदा है ढोकदा हमारी दिगाँ,
'लाल बलबीर' खोय कंसे दान खांदा है।
आंदा है मुख्खनुं सुनांदा जेडी जेडी गल्लें,
और नूं नसांदा राज्ज अप्पना जनांदा है॥

(5)

आदे हो न कदी साडी गल्ली बिच्च प्यारेलाल,
औरांदे डेरे सनम बार बार जादें है।
गांदे हो न मिट्ठी तान बास्सुरी बजांदे कद्दी,
औरांनूं सजन कीयां सीने लिप्पटांटे है॥

खांदे हौ न दध्ध बल्लबीर साडी गागरी से,
औरांदी छाछ जाय हरदम चुरांदे हौ।
पांदे हौ न हुंदी बदनाम ब्रज्ज थाडे नाल,
साडे नाल कींयां लाल दीद नां दिखांदे हौ॥

(6)

थाडे नाल जिस्स दिंन्न नेंक हस्स दीत्ती लाल,
तिस्स दिन्न सेती सस्स ऐंडी सी दिखांदी हैं।
इनांदी लगन लग्गी नन्द दे रंगीले सथ्थ,
हँस्स हँस्स नारियाँ से खिसियां करांदी हैं॥
दास कहैं कीयां हाय जीयां जी इना दे नाल,
गल्ले कढ़ कढ़ साडे जियां नें जलांदी हैं।
आंदी जिया सांडे नाल कढ़ चल्ले थाडे नाल,
नाहिं कलकोंदी हैं खिजेंदी हैं खिजांदी हैं॥

(7)

थाडे नाल नेहा लाये लीत्ता है रंगीले छैल,
असीनाल कियां तेंन निक्की तान गांदा है।
छड्डु दित्ती तेंडे नाल कांठा जे जगत्त कीती,
कीती क्या अनीत असी डेरे नहीं आंदा हे॥
दास कहें करदां है जेडी जेडी चित्त आंदी,
दिख्खदी हैं तेंडी जेडी जेडो तें दिखांदां है।
हिय हषांदा है न सीने से लगांदा कद्दी,
सांडे नाल कीयां तेंन दीद दरसांदा है॥

(४)

टेरदा है थाडे नाल नंददा रँगीला छैल,
चल्ल सांडे नाल ऐंड्डी कियां हेंदी है।
किना नें अकल्ल थाड्डी हाय हर लीत्ती,
लालजी के सथ्थ कियां रित्त ना चहेंदी है॥
दास सिक्ष दित्तियां हजार असी थाड़े नाल,
कियां ना गहैंदी असी अक्षदे रिसैंदी है।
रिति ना चहैंदी रिसैंदी ही रहैंदी कदी,
हँस्स नदी लालन के कंठ से लगेंदी है॥



# जैपुरिया कवित्त

(1)

कैयां नें करी सी लंगराई लाल थारे लारें,
अैयां तें रसीली अँखियां नें नीर ढाले छै।
अैयां ना रहैगी रीत करैं छें अनीत जैयां,
दीया रस थानें ईने हलाहल घाले छै॥
दास कहैं थारे हित हीकी सीख देसी थाने,
जाने ना जिया नें तें इंसां इनें टाले छै।
चाल चाल गैलडी थें कैयां नें अड़ी छैं येयां,
लाड़ले कन्हियां कनैं कैंयां तेंन चाले छै॥

(2)

कैयां नें करे छै जो तें इठै नें अकेली हेली,
ईयां तें न जानें छै इठांने जी तहाँ ने छै।
लारे नैं चले न कैयां सेजा रस लीजै दीजै,
काई काज गै लडी जियां नें रिस ठानें छै॥
दास चित लालसा घनी छै थारे देखबा की,
दीजै जी दरस कांई अखियाँ नें ताने छै।
टेरे छैं जी थाने ये संकेत ने रँगीली लाल,
लालजी रे जिया की चिनीन रीति जानें छै॥

(3)

जावा नें न देसी मथुरा नें दध बेचवाने,
थारो री कन्हाई रस में री विष घोरे छै।
म्हारौ दान लागे छै जी इठाने तिहारी सूंह,
वर जो न मानें म्हारी वैयां ने मरोरै छै॥
'लाल बलबीर' लारें इसां ही हठीला ग्वाल,
करें बरजोरी मो त्यारीं लर तोरे छै।
चोली नें टटोलै छैल घूंघट नैं खोलै छै जी,
मीठा मीठा बोले म्हारी गागरी नें फोरै छै॥

(4)

थारो भाग मोटो थारे म्हैला नै पधारे लाल,
रोंके मति ईंकौं नैंक भीतर नें आवा दे।
कोट कोट प्रानई की सूरत पें वा़रूं छू जी,
म्हारी अँखियां नें ईका दरस कावा दे॥
'लाल बलबीर' थारौ कांई घटजासी बाल,
मदन गुपाल जू नें मुंसौ तौ लगावा दे।
कैयां रोकै गैलणी थे कान प्रान प्यारी जू नें,
चिनी सी मलाई दध गोरस नें खावा दे॥

(5)

बन बन हेरूँ छूं जी थारा लीये थारी सूँह,
कैयां नैं करूंजी थे तौ किठे हूं न पावौ छौ।
म्हारौ नेह थांसों लग गयौ है रँगीला लाल,
थेतौ कदी म्हारी ओर नजर न लावौ छौ॥

'लाल बलबीर' सारा ब्रज बदनाम भई,
ईकी ईसों प्रीत प्रीत रीत ना निभावौ छौ।
एती सीख लाजौ मुख मीठी तान गाजौ लाल,
कैयां ना गुपाल प्यारा म्हारी गली आवौ छौ॥

(6)

जावा दरे लाल मथुरा नें दधि बेचवा नें,
कैयां तें हठीले म्हारी डागरी नै रोकौ छौ।
काल लौ न दीनौ छौ दही रौ दान इठे किनूँ,
किने जे लगायौ छै जगाती आपको कौ छौ॥
'लाल बलबीर' राज कंस कौं न जानौ थानें,
ऊनें बंधवासी हाल लाल आप जौ कौ छौ।
गाया नें चरावौ चोली कैयां हाथ घालौ छौ जी,
होसी ना भलाई ईमें सब ही कौं टोकौ छौ॥

(7)

नन्दा जू की रानी थारो लाला चन्दा मांगें कोना,
कैयां नें करौ छै म्हारे लारें लारें डोलै छै।
पानी आंनें जासी उठें गैलां रोकें ठाड़ौ होसी,
कांकरी नें मारे म्हारो घूंघटा नें खोलै छै॥
'लाल बलबीर' ऊंकी पैयां नें परौं छू तौबी,
ऐसौ छै हटीला म्हारी चोली नैं टटोलै छै।
म्हैला नें चालौजी एजी म्हारे लारे म्हारी प्यारी,
हा हा खासी अै जी थारी मीठा मीठा बोलै छै॥

(४)

कांई वह म्हारी लाल माठली लई छै थानें,
कांकरी नें हाय काई बार बार घालौ छौ।
कैयां नें मुरारी दधि लूट लूट खावौ छौ जी,
थारें कांई टोटो आप जसुधा रौ लालौ छौ॥
'लाल बलबीर' लाल राज जहाँ थारौ न थी,
राज जहां कंस नों छै ऊंके उर सालौ छौ।
नन्दजी रा छैया म्हारा मारग नें मूक दोजी,
सूं काम काजें ललन बैयां तम झालौ छौ॥



# बंगाली कवित्त

(1)

बाड़ी ने गोईले काल कौन्हाई अमार ये गो,
कौपाटे खुलैये कानां सेखाने बौसैयेचे।
माखोन दौहीर घोल भालौ भालौ आसे सेई,
तेई तेई मौंने अैये सेई सेई खैयेचे॥
'लाल बलबीर' अमी दौरजा तें ढाँके छीलैं,
आँवरे वाड़ी ते तुमी कोथा काज अैयेचे।
सेखानें लौजैये चोख झूमेर तौकैये नीले,
मोन्द मुसिक्याई आमार मौंने ले पौलैयेचे॥

(2)

दौध लिये जाई मथुरा देर पौथुर आमी,
नोन्देर कोन्हाई आगु बांसुरी बौजैयेचे।
डांक नींले ग्वाल सेई आय आय भीत कोरी,
दान दिये जाई आमेराई नाई पैयेचे॥
कोई कोरे नाय नाय सेई से निकार खाय,
भांड के भगाय ओई ठांई से पौलयैचे।
'लाल बौलबीर' बोंन मांह कांन तीत कौरी,
केनों धीर धोरी आमार सो कुल लुटैयेचे॥

(3)

जोदी ते गोइले मोधुबन के कन्हाई लाल,
तोदी ते आमार चोख बारिके ढोलीयेचे।

बाडी ना सुहाई किछू काज नांहीं मोने आई,
बिरहा आगुन आमार गाये के जौलीयेचे॥
'लाल बौलबीर' प्रीत सकल बिसार दीले,
ओ काजैं आमी तौ लोक लाजैर गौलीयेचे।
ओई ठांई जैये तुमी कोथा ये डौकेये दीले,
एक बार कृपा कोरी ब्रजे के पौलीयेचे॥

(4)

दौध लिये जाई आमी गोपी जो ने साथ नीले,
मथुरा के बिक्रीकर तुमी केंनों धोरीचे।
आमार भांड छांड नीले केनों लाल कौन्हाईजी,
पौतुरते केनों तुमी आमी तीत कोरीचे॥
बांका हुयै डांडा कानां साथ नीले ग्वाल बाला,
छांड़ दे आमी के आमीकांदा कांदी मोरीचे।
कोरीचे पुकार जाई नंद जू के बोधवाई,
कंसा जू के राज कांना कैनों नाइ डोरीचे॥

(5)

कौरी ब्रजबास सकल आस सिद्ध होएगो,
बार बार होरी होरी होरी गान गैयेचे।
जम्नां जौलेपान कोरी ध्यान धौरी नित्तानन्दे,
मांग मांग मादकुरी सेई ठाँई खैयेचे॥
वृन्दाबोने पोरीक्रमा मुदित मुदित दीले,
गोविन्द गोपीनाथ दौरसन जैयेचे।
'लाल बौलबीर' थाके आई खाने मुजैये जोदी,
केमोने निकुंज बोने रोज सिर लैयेचे॥

# चीर हरण

(1)

सकल गोपीर मोने एईमोने हुये गेलौ,
केखाने दोरस लाल कोन्हाई हो जैयेचे।
सकाल एकत्त हुये जम्ना चांन कोरी कोरी,
घोटी भोर जोल गोबिन्द पूजा के कोरैयेचे॥
'लाल बौलबीर' मोने जेखाने धोरीबे धीर,
सेवा कोर कोर आई सान बर लैयेचे।
धोन्न धोन्न जनम सुफल हुयबै जेखाने,
ते खाने आमी तो कृष्णचन्द पोती पैयेचे॥

(2)

बाड़ी येतो कुल जुटे यमुना चान कोरिबे केनो,
वीने नोवीने ब्रजवाला सौवी साजीले।
गाए ते खुसैये चीरघाट तोट घोर दीले,
कालिन्दी तें डुबा दील लोक लाजु तोजीले॥
'लाल बौलबीर' स्याम प्रेमेर तेमोन गुन हुय्ये,
सकल मोनें तेमोने काम विथा गाजीले।
भूखोन बसन काना सकल इकत्र कोरी,
कुले ते कोरैये लाला सेखाने ते भाजीले॥

(3)

भूखन बोसोन कांनां कौदम तें ढांक दीले,
ओइ पोर चौट लाला तेखा ने लुकैयेचे।
सेषाने गाच्छेर शोभा कोई मोन हुए गैलो,
ताकोरे बिलोके ते बसंत हुलौं जयैंचे॥
अन्नेक करैये गोपी जोल ते डौडेये गेलो,
घाटेर तौ कैये बस्त्र ओखां ने नपैयेचे।
'लाल बलबीर' गाय सीत ते सतेये गैलो,
सेई समे कृष्ण कृष्ण कृष्ण कै डकैयेचे॥

(4)

एदीके ओदीके ताके कापुड़ न पैये तोदी,
माने ते लजैये जौदी जल मद्धे गैयेचे।
कंपत सकल गाय मोन ते विचार् कोरी,
एमोन के आसे बृजे वस्त्र के हरैयेचे॥
'लाल बौलबीर' सत्त कौरे आमी चीन नीले,
एखानेते नंदेर कन्हाई लै पलैयेचे।
आधीने सकल बाला दोऊ कौर जोर नीले,
सेई समैं कृष्ण कृष्ण कृष्ण कै डकैयेचे॥

(5)

कदम बोसेये कान्हा बाँसुरी बजाई तोदी,
जोदीर गोपीर मोने धीरोजे धौरैयेचे।
सकल जुटैये बाला एई कथा डाके छीले,
आमार कापुड़ देत सीत तें सतैयेचे॥

'लाल बौलबीर' दया एखानें करोना तुमी,
जले ते उड़ैये दुई दंड के वितैयेचे।
दुखिरा पुकार कौरी दया नहीं आनों हरी,
लज्जाते मरिजे वस्त्र एखाने न पैयेचे॥

(6)

एखाने बोले कान्हाई वस्त्र आमी कोथा पाई,
मिथ्या कथा डाके तुमी लज्जाओ न पेयेचे।
आमी तौ गाछेर बोसे मोने ते मोगोन हय्ये,
तुमी तौ आमाके केंना डाकती बनैयेचे॥
'लाल बौलबीर' तुमी मनेते विचार कौरी,
तुमादेर वस्त्र आमार कोथा काज अैयेचे।
एदीके ओदीके तुमी चोखेते तकैये लेन,
आमी तौ ना नीले केऊ बाँदुर ले जैयेचे॥

(7)

कापुड़ आमार देन एखानें कौन्हाई लाल,
चोखेते तकैये लेन गाछे ते टोंगैयेचे।
दीबे नानीं तुमी आमी मथुरा पुकार कोरी,
नृपत सुनीबे हाल तुमा के बीधैयेचे॥
'लाल बौलबीर' ब्रजे एईमोन नित कोरी,
सकल गरूर एके बारे ते नोसैयेचे।
आमार न दोस कछू आगु ते डकैये दीले,
तेई मोन काज कोरी सेई मोन पैयेचे॥

(8)

गालागाली केनो करीओ कार ग्वालीर तुमी,
एई कोथा डाक कोरे केनो वस्तु अैयेचे।
मथुरा पुकार कोरे सीघ्र ही पलैये जैये,
के काजे उड़ैये आमी आगु से बुझैयेचे॥
'लाल बौलबीर' आमार के काज तुमार काछे,
कापुड़ जुटैये से तुमार ठांड लैयेचे।
एई ठांई अैये गान आधीने डकैये जौदी,
सकल गाछे ते वस्त्र तौदी तुमी पैयेचे॥

(9)

कापुड़ तुमा के आमी एई खाने दीबे जोदी,
जोल ते उड़ैये तुमी एई हाई अयैचे।
आमार कलंक नेम सिद्ध हये गैलो लाल,
दुइ कर जोर जोर एमोने डकैयेचे॥
जेमोने तुमार कोथा एकटी आमी पारवो नाई,
'लाल बौलबीर' सत्त कथा ये जौनेयेचे।
गोरुरे नसैये दासी भाव लै जौनैये गाय,
आय आय गाछेर ताले सीस पोद नैयेचे॥

(10)

जोल ते पोलेये गाछे तौले जा उड़ैये बाला,
एई कथा डाके छीले आमी तुमी दासी लाल।
येमोने कन्हाई छैल सुन मोने हुलसाय,
कापुड़ औ अलंकार सकल लै दीले हाल॥

सुफल कौरीलै चोख आमी तुमी प्रान पोति,
से कथा बुझैये कौदी ऐस कोरीबे गुपाल।
'लाल बौलबीर' डाके सकल धरीबे धीर,
होरी मोने पीर कोरी सरद निसा के बाल॥

## दोहा

कृष्ण कृष्ण कह कृष्ण कह, हरे कृष्ण कह बाल।
बाड़ी के गवनी सकल, उर धर गिरधर लाल॥11॥

कृष्ण रसामृत को स्तवन, करौ सजन मिल पान।
जेहिं राखेगे कंठ रीझैं, स्याम सुजान॥12॥

## चार बोलियों में कवित्त

(13)

वृन्दावने डाके कानु आमा के तुमाके एगो,
फूले बाड़ी मोधू काछैं भ्रमी विंद भृंग दे।
मंकी ऐंडी आर प्रेंटीलेस बाई प्लेस मूव,
पीकौक ऐंगिल बर्ड सिंग बाई सिंग दे॥
बाँसुरी बजामदा सुनामदा है तीखी तान,
'लाल बलबीर' ये कहाँदा ब्रजकिंग दे।
देखो चल त्यारी व्रजराज कौ मुखारविन्द,
आज नन्दनन्द राग गावत उमंग दे॥

(14)

देख तेरी शान दिल माइल हुआ है मेरा,
गजब इलाही चश्म जुल्म गुजारैं हैं।

जोदी तें आमार मोन बाड़ी काछे थाके नाहीं,
जेठा कर्त्ता गिन्नीं करि कोथा न बिचारे हैं॥
जिन्नो से कहेंदी जो सुनेंदी मो दिलेंदी पीर,
खिल्लियाँ करेंदी औ बजेंदी गाल सारैं हैं।
'लाल बलबीर' प्यारे पैयां पर जासी लाल,
कैंयाँ ना गुपाल म्हारी गली नें सिधारैं हैं॥

(15)

छड्डु दे गुमानी साडे दिलोंदी न जानी पीर,
करै क्यौं धिगानी कानुंदिगां चली जादी बाल।
अमार भीड़ नीले कैनों नन्देर कौन्हाई लाल,
माखन दहीर घोल दान कोदी दीले ग्वाल॥
'लाल बौलबीर' थानैं कैंयाँ समझासी लाल,
गुलचा लगासी गाल हाल छांडसी गुपाल।
कंस पै पुकारें बाल तोकूँ बंधवावें हाल,
करैं हैं कुचाल तो घमंड कौं मिटावें हाल॥

(16)

जर्दी तें निहारी लाल तर्दी तैं न धीर धारी,
तेखानेते हरी हरी गान के करैयेचे।
गाछे गाछे तोले एई कथा डाँके छीले,
के खाने दरस लाल कान्हाई दिखैयेचे॥
दास कही जेठा करता गिन्नी जन तीतकोरी,
केई कोरी चेरोंण ना आगारे उड़ैयेचे।
जेई ठाई जैये सीघ्र लालन लखैये लदी,
आनँद अधैये गाय गाय के लगैयेचे॥

## अथ पावस

(17)

चालो ये गो माई बाने कैसी हरियाली छाई,
कोयल डाकाई भालौ भालौ गान गैयेचे।
स्याम घटा छाई पौन चलत सवाई आई
भोनें बौलबीर मोर सोर के सुनैयेचे॥
दादुर सवाई टेर चात्रक लगाई सुन,
मौंने हुलसाई घोरे रह्यौ नाहिं जैयेचे।
व्रजई के वाई वाडी काज सोवी विसराई,
राधिका कौन्हाई जू के झूलण झुलयेचे॥

(18)

कारे कारे बदरा झमंक झूम झूम आये,
छोटी छोटी बूंदन से बार बरसैयेचे।
जमुना के तीर जैये पैये दर्स लालौन के,
गोपिन मिलैये राग मलार के गैयेचे॥
कोइल कूकैये सोर दादुर मचैये दैये,
झींगुर झिंगैये मोर सोर के सुनैयेचे।
भौंने बौलबीर मौने मांहि हुलसैये जोदी,
राधिका कौन्हाई जू के झूलण झुलैयेचे॥

(19)

जोदी से सिधैये मोधुबन के पियारे कान्ह,
दौरसन पैये घोन धूम धूम अैयेचे।
कदम गाछीले थाके कोइलीया कूक कोरी,

धीर धारे कई जोदी पीउ पीउ गैयेचे॥
झींगुर झिंगारौ मोर सोर कौरी भारी बोने,
दादुर पुकारी बौकी गगौन उड़ैयेचे।
'लाल बौलबीर' प्राण प्यारे नहीं अैये तौदी,
में नकेड़ कैये आपु तीर ना चलैयेचे॥

(20)

आमार कथा बूझे तुमी कैये कोर जोर आमी,
जुगनू डकैये दैये आगुण उड़ैये ना।
दादुर पलैये दैये आगे जाय जाय वास कोरी,
झींगुर पठैये मारे सोर के सुनैये ना॥
'लाल बौलबीर बदरा के समझैये दैये,
बघूमड़ न अैये बारि बूँदें झर लैये ना।
चात्रक ना गैये गान कोईल सुनैये चपलान,
चमकैये जोदी लाल बाड़ी अैये ना॥

## अंग्रेजी कवित्त

(21)

आफ्टर एलॉन्ग टैम आई मैट विद यू,
दिल भर जरा तौ दीद अपना दिखाइये।
कम हियर माई डियर सिट ऑन दिस,
मकां पै जरा तौ आप सीधी निगाह लाइये॥
व्हाट आई डिड सिन इस्टील टू दी विद यू,
मेरा दिल हाल सुनो अपना सुनाइये।
फॉर डू दी सॉरी एन्ड फ्रॉम दी ब्रैस्ट हग मी,
'लाल बलबीर' स्याम दिल को रिझाइये॥

## दोहा

मेरे तौ कुल पुज्ज तू, श्री वुषभान कुमारि।
जग दुख हरनी राधिके, आयौ तेरे द्वार ॥22॥

(23)

स्यामा स्याम नाम सों न काम राखै एकौ,
जाम रसना रसीली कूट वादन कौ भावनी।
साधुन की संगत की रंगत न जानै मति,
कुटिल कुढंगन में रहत हुलासनी॥
'लाल बलबीर' प्रेम पंथ कौं बिसार सार,
गहत कुसार सुभ कारज बिनासनी।
पातक अगाधा की ये दीन सुख साधा तुही,
हरो मेरी बाधा राधा वृन्दावन बासनी॥

(24)

पातकी हौ घातकी न सेवा तात मात की मैं,
भ्रात की न जात की कराई कुल हासनी।
क्रूर हों कपूत हौं कलंकी हौं कुचाली हौं मैं,
करत कुकर्मन भई है बुद्धि नां सनी॥
'लाल बलबीर' बड़ो लम्पट लवार हौं मैं,
लालची हौं लेवे मत धन कौं हुलासनी।
पातक अगाधा कीये दीन सुखसाधा तुही,
हरौ मेरी बाधा राधा वृन्दावन बासनी॥

(25)

मोहन की प्यारी वृषभान की दुलारी साधु,
संत रखवारी भव भीरन बिनासनी।
संपत दिवैया कोट कंटक दरैया सदां,
आनन्द करैया पूजौ जन मन आसनी॥
'लाल बलबीर' आयौ आस कर तेरी वीर,
व्यापी भव पीर कौं मिटा दे सुखरासनी।
पातक अगाधा कीये दीन सुख साधा तुही,
हरो मेरी बाधा राधा वृन्दावन बासनी॥

(26)

काके द्वारा जाऊँ काकूँ बिनती सुनाऊँ वृथां,
जनम गमाऊँ क्यौं कराऊँ जग हासनी।
तेरो ही कहाऊँ तोय छोड़ कहाँ अन्त जाऊँ,
सीस पद नाऊँ तू है सदां सुख रासनी॥
'लाल बलबीर' नेति नेति गुनगाऊँ मन, ,
मानी निधि पाऊँ तू पूजैया जन आसनी।
पातक अगाधा कीये दीन सुख साधा तुही,
हरो मेरी बाधा राधा वृन्दावन बासनी॥

(27)

दीन हौं दुखी हौं अपराधी झूटवादी हौं मैं,
पर धन पाइबे की रहै नित आसनी।
कामी हौं कुटिल हौं कमीन मति हीन हौं मैं,
रंक हौं रिनी हौं तू कटैया रिन फाँसनी॥

'लाल बलबीर' क्रूर कायर कपूत हौं मैं,
लंपट लबार लालची हौं सुखरासनी।
पातक अगाधा कीये दीन सुख साधा तुही,
हरो मेरी बाधा राधा वृन्दावन बासनी॥

(28)

कोऊ कहै मोहि सदां बल है भावनी जू कौ,
भाषत अनूप बानी बिमल बिकासनी।
कोऊ कहै मोहि सदां बल मात काली जू,
कौ कारज करत जन खलन बिनासनी।।
कोऊ कहै मोहि सदां बल रहै गंग जू कौ,
भोजन करत अघ पूजै जन आसनी।
'लाल बलबीर' कौं भरोसौ रहै येही सदां,
मेरे कुल पुज्ज राधे वृन्दावन बासनी।।

(29)

दीन दुख हरनी तू वेदन में वरनी तू,
आनन्द की करनी दरनी यम फाँसनी।
दास जन तारन तू सोक गन गारन तू,
दुष्ट दल मारन पूजैया जन आसनी॥
बलबीर करता तू घट घट बरता तू,
सुभ काज सरता तू हरता हिरासनी।
सदां सुखरासनी तू संपति प्रकासनी मो,
पातक बिनास राधे वृन्दावन बासनी॥

(30)

कोमल विमल पद कंज मद गंजन हैं,
नखन प्रकास आभा उरगन हासनी।
सोहै नील सारी सीस जरी की किनारी ताकी,
छबि कौं बिलोकि घन दामिनी हिरासनी॥
'लाल बलबीर' लख बदन उदोत जोत,
सरद सुधा-धर की प्रभा की बिनासनी।
सदाँ सुखरासनी तू संपति प्रकासनी तू,
हरौ मेरी बाधा राधा वृन्दाबन बासनी॥

लंपट क्रूर कुढंग हौं, कपटी कुटिल कठोर।
जन सुख साधा राधिका, हरिये कंटक मोर॥31॥



# चीर हरण

## मान पच्चीसी

### (सखी वचन)

कारी जीरी बस रहो, कहें कटेरी बैन।
सीतल चीनी में बड़ी, किसमिस स्याम मिलैन॥1॥

## पसारट बन्ध

### (प्यारी वचन)

(2)

बेलगिरी करैं अभिलाषे उन सौतिन सों,
रीत मो मन दुखात जानत अनारी हैं।
किसमिस रहे चाह आयकैं करत लीला,
थोतेई खिजावैं वुही नारीअल प्यारी हैं॥
'लाल बलबीर' रार करौ री बृथां क्यौं आप,
बरस हजार लौंन मानूँ सीख त्यारी हैं।
सौंफ मन दीनों मैं तो धनियों न जानी बात,
प्रीति करी छार छार छबीलो बिहारी है॥

### (सखी वचन)

(3)

चाह रहै तेरी तू चिराइ तौ न रैहै रस,
चिरौंजी न बातें बिन चीतौ कर कारे कौं।

कारी मिरच रही दिपत अलसी सी आज,
हूजै ना कठोर अब लाख रूप वारे कौं॥
'लाल बलबीर' हस ना हसो सुपारौ प्रीति,
तजिये न निमिष सुपारी नैंन तारे कौं।
रार जिन कीजै री बहेरै री तिहारी बाट,
जाय फल लीजे सौंफ दीजै मन प्यारे कौं॥

(4)

पीपर न कीजै मान अजमान मेरी कही,
कटेरी कहै तू बैन कायफल लावैगी।
कहा चूक कीनी कान कस्तूरी रिसाय रही,
काऊ की न मानें खैर पीछैं पछितावैगी॥
'लाल बलबीर' सों करोरी ऐस राई हर,
दीजै ना रिस्याई वच मुरैठी कहावैगी।
सहित हुलास सों सु पैदा करौ रस सिंदूर,
है मुलाकात तोरी मैन फल लावैगी॥

## गहने बन्ध

### (प्यारी वचन)

(1)

लटकन चाल दिखा सजन छल्ली ना दिल्ल,
डार नेह जाल अंग आरसी लगाते हैं।
अंग जरे याते सतलरी हीन एक छिन,
हेर हेर हार गई ग्रेह नहीं आते हैं॥

दास कहैं झाँझन किया हैं तन नाहक ये,
छन छन करै चित्त नित्त दरसाते हैं।
संकरीन नैंक हँस लीने अंग लाय कान्हां,
कड़े हेर ह्वै हैं छड़ै रीति ये दिखाते हैं॥

## परचूनी बन्ध

(1)

बेसन रहत सूजी कहा तोर परी बान,
मैं दासी तेरी री भली हैं न चूर दाई तैं।
प्रीति कौं विदारिये न आखर करैगी चाह,
सामरे सों खारी बैन कहौ ना चिताई तैं॥
'लाल बलबीर' जू सों नेह नवनीत यही,
चून रस जोऔ मार्ग हींगुर सजाई तैं।
सक्कर खोरी तें मत सूक्ष तेल होरी अब,
रसिकौ मंगा री दान सुन्दर कन्हाई तैं॥

## वस्त्र बन्ध

(1)

कहा पेच परौ बाल जामां सुख लीजै हाल,
मोर चाह जिही सुख देखौ तु ये बाल सों।
करिये रजाई चल बादौ कर आई पट,
काहे कौं लगाई रत चुगो ले हुलास सों॥

'लाल बलबीर' गमछाप कहा रहो मुख,
आँसुन सों धोती सुख हैं न यह चाल सों।
अंगरखी लाय सदां ना फितर री तें,
कमरी न राखौ प्रीत पगरी गुपाल सों॥

## पुष्प बन्ध

(1)

कदम धरैन कुन्द बैठी है कहाँ ते वीर,
लै कनेर माधुरी है काहे इतुराई तें।
केतकी कहीरी तें मो तिया की न मानी बात,
सौन जुही तेने हाय मोगरा पराई तें॥
हार सिंगार लटकन न नथ डार उर माल,
तीय धार लज्जावंती ह्वै रिस्याई तें।
'लाल बलबीर' पिया बाँसोर चमेली राख,
सेवती न मान ही में के बड़ाई पाई तें॥

## वृक्ष बन्ध

(1)

नारंगी री प्रीतम सों यही तौ अनार पन,
मिट्ठा तें न बोल मन खट्टा कर दीना है।
मोरछली मत नहीं पीपर रिस्याय तुही,
कमरख प्रीत वेर नाहिंक में कीना है॥
'लाल बलबीर' वर आमन विलोक बीर,
जामन न देती देह काहे पापरी ना है।

तार कर दीनां हाय सेवती भई ना सदां,
अमली रही तौ ये वियोग फल लीना॥

(2)

अरनी असोक प्रीति खिरनी लगाई नीम,
गोंदीखी कहा आगूलरी सुखदाई तें।
अमली अनारन तू रहै लालखोट कहा,
करी लंगराई कचनार क्यौं रिसाई तें॥
'लाल बलबीर' वधौं बनां रस रूप डोर,
ऊही परस खडार करी महुआई तें।
पापरीअ सीसों हेर कीजै अब तून बेर,
लीजै जा सरस रस कुमर कन्हाई तें॥

(3)

बना घर आये कचनार पापरी न धाय,
कहा करतूत कायो हरसौं अनारी तें।
बेर बेर कहौ तू न कीजै बरसों री रार,
कदम धरेन सीखी रुषनों री भारी तें॥
'लाल बलबीर' जात जामन बहीरी बीर,
सहज निहार कें बचाय काम आरी तें।
सरस सरूप पाय सेवती न पीयै धाय,
कीजै भुज मेल केल सांमरे बिहारी तें॥

## तरकारी बन्ध

(1)

बेगुन भई री बाल काकरी अजानीमत,
चौंरही गुमान कर के मत तिहारी की।

मैथी री न पास चूक काहै कौं परन देती,
तू वासों बिगार गत करी है अनारी की॥
'लाल बलबीर' मिल सूआसों अनन्द कीजै,
पालक पै लूट रस जोबन उजारी की।
तोरही मनाय बेर कीजै ना सिधाय अरी,
आऊ हर पीर ना री सामरे बिहारी की॥

## व्यंजन बन्ध

(2)

कहा भात है उदार खीचड़ी क्यौं बैठी मन,
ऐसा गहौ तू मूँग कहाँ जा जा गमाई तें।
कढ़ी हौ कठोर फुल्का है वृथां झाल कीयै,
उठौ मरकीली पीसै मई रस पाई तें॥
'लाल बलबीर' जू की असि करन पूरी री,
लिपटो रस लीजै दै अङ्ग सुखदाई तें।
कैसो ये अचार मुरब्बा सों करारौ तुम,
हेरी न पिया की गति प्रीत दर आई तें॥

(3)

दरस दिखा जा खजलाल से न भूल रस,
इमरती जातस घेवर सों रिसाई तें।
दही देह तूनें उनुकीती क्या गुनांह प्यारी,
लखा जे इंदर से नहीं वृथा कुमलाई तें॥

कौंठा मिसरी सूं बतासे बड़ी तू आंटि करी,
'लाल बलबीर' पूरी पैज कर आई तें।
मोद कछु पैयोगी सिराय तौ फलौरी ऊही,
ठौरस जलेबी जाय पागिये कन्हाई तें॥

## वस्त्र बन्ध

(1)

कौन मिस रूठी आज री आली पीतंबर तें,
पीत दर आई गुल बदन रिसारी तें।
फुलालैन ललना न हूजै पापलेन अबै,
लगा छतियाँ सों कीजै गर्दस किनारी तें॥
'लाल बलबीर' वृथाँ तास बादलाई आप,
अकिर न छोड़ बना तन लै निहारी तें।
ऐसा ठनगन खीनखाप कर दीना मन,
प्रेम पगौ टारौ धन लै हंस बिहारी तें॥

(2)

कहौ जीन मानौं उर असलस रहौ मान,
ऐसी ठनगन धन कहा ये विचारी तें।
हैन अचकला कान तापल्लू की तूरी आन,
तोसी तू अडोरिया रिसानियां हूँ भारी तें॥
'लाल बलबीर' तनजेब है अतूल हेर,
गाढ़ौ हेत राखौ मीठा बैन कह प्यारी तें।
नैनसुख लीजै सैन कीजै बनातन संग,
गई धूप छाया रस ल्हैरिया बिहारी तें॥

## रंग बन्ध

(1)

सुरमई तेरी बुध पीत सोसनी ही रही,
अबै काकरैजी देत हेर हर ताली है।
कासनी सुनैरी क्यों न सब जीया जानत हौ,
रार क्यों जंगाली जामनी में नूरिसाली है॥
'लाल बलबीर' चंदनी में री पिया जू संग,
किसमिसी जुमर्दी की फाकताई घाली है।
सर्वती मनामें हियै सर्दई अलीलै नेंक,
हरो-तन मैन पीर सामरो बिहाली है॥

(2)

तोती सी पढ़ाऊँ तें मोतिया की न मानै सीख,
पीत में नरंगी नाफिरी री असमानी है।
कैसे सवतालूं आप रोज ही अर कपूरी,
हरी संदलीली जामनी में रिस ठानी है॥
पीछैं पछिताई आ गुलाबी पिया जू कौं सर्व-
ती में तू बसंती फाकताई सुख हानी है।
'लाल बलबीर' कौं हवासी ना हुलासी कान,
तू सी किरमिची नहीं स्याम पीर जानी है॥

(3)

लाल तें नरंगी जहाँ काकरेरी येरी आय,
नाहिं कर सीली आज रार तें जगाली री।

सर्दई अली लै रस हरितन त्रास काहै,
कासनी रँगीली देत हेर हरताली री॥
दास देख चन्दनी निसारी ना सिधानी रानी,
आनंद के सरिआतें नाहिं कर साली री।
तासंग दलीली हान नीकी सिख सिखासी जान,
राह अगरई चाल हँसत सिहाली री॥

## बासन बन्ध

(1)

तवा तन वाकौ वृथां हैन अचकला पीयु,
करोरी कहो ना बैन हारी समझारी री।
लोटा दिया पीको हरी कोने तो अकल सारी,
करछूई हीन तसलाई रिसभारी री॥
पलटा कहां कौ रिस कौन सी कढ़ाई आज,
अरके बीर अबेला दया उर धारी री।
अंगिलास अवरात पीयौ प्रेम प्यालौ,
मेटो विथा रस बलबीर है बिहारी री॥

## दशावतार बन्ध

(1)

चल ब्रजचन्द जू पै बिनती करत तेरी,
नाहक अटक छिप रही सुखमा री तें।
वामन की पीर हेर हेरत वराह तेरी,
ता परसराम ती हौ लाल मन धारी तें॥

'लाल बलबीर' धन रह री अबोध कछू,
जानत नहिं ये मांहि भरी रिस भारी तें।
कीजिये अराम तें अमोहन न हूजै बाम,
न्है कलंक लचकीली पीय संग प्यारी तें॥

## वृक्ष बन्ध

(1)

अरऩी अनारन तें खिरनी सरस रस,
तेसी दृग नारअल़ चीड़ ना निहारी हैं।
केंत केंत हारीकर हींस हींस ताल देत,
दास हिय साल कचनार कहा धारी हैं॥
करी लंगराई अंक ठैरती नरंगी रेंन,
ऐंसे हडर तेंरी रीत अनारस कारी है।
हार सिंगार चन्द निंद तकर छैल तकनेर,
चल चल केलि कीजै ललन खिलारी हैं॥

## चार सौंज बन्ध

(1)

प्यारे कर छुई तू टोकरी भई री बाल,
लोटा मनमोहन जू थाली सब तेरी है।
घोरो विष तैंने निज हाथ सों बिगारो काम,
अबै करहात देख सस की उजेरी है॥
'लाल बलबीर' तूती निपट .अजान हैरी,
चिरी बिन बातें मत बिधना सकेरी है।

पीपर पयान कीजै जामन बिलोक छीजै,
बेर जिन कीजै सीख भली मान मेरी है॥

## शहर बन्ध

(1)

प्यारो तोहि छोड़ नाग यारी कहूँ भूल प्यारी,
होत उर मोद सदां सूरत निहारे तें।
तें का सीख मानी री अजानी पट नाहीं खोले,
दिली की न जानी उर मान पून भारे तें॥
'लाल बलबीर' अलवर सों बिहार कीजै,
ग्वालिअर छोड़ मिल रूप उजिआरे तें।
हाथरस लीजै कोल करके ना दगाह कीजै,
काबल गुमान कर बैठी प्रान प्यारे तें॥

## गहने बन्ध

(1)

वारी वैस ही तें आप झुमका ह्वै रही बाल,
कड़े मत बोलै बैन रूप उजिआरे तें।
पायल यूं तेरे री जेहरसों न कीजै रार,
हार गई मैं तो पोंहची न मान टारे तें॥
'लाल बलबीर' हंसली जै उर लाय रीह,
मेलमें है बेसर सडार क्रोध कारे तें।
विछीयाऊ से जरी निसंक लीजै अंक भर,
बंक पंन छोड़ सांठ लीजै मन प्यारे तें॥

## पक्षी बन्ध सवैया

(1)

लाल मनाय रहें तुम कौं अब, तूती अजान न मानत है री।
सारस काकी लगी सजनी तुम, मैंना की बान अजहूँ न तजै री॥
मोर सिखा वन मान अबै, बकवाद तजौ हंस उत्तर दै री।
कोयल अैसी है या व्रज में, बलबीर पपैया सों मानकरै री॥

## सोरठा

सुनत सखी के बैंन, हरष चली तिय पीय पै।
मिले कुंज सुख दैंन, मैंन खेल खेलन लगे॥2॥

## दोहा

कृष्ण अली की कृपा तें, भयौ हजारा पूर।
रहौ लालबलबीर सिर, रसिक चरन की धूर॥3॥

सम्बत रिषि चतुराने, ग्रह सब राधा ध्यान।
मृगसिर सुकला द्वादसी, पूरन सतक सुजान॥4॥

(5)

बाबा बनखंडी महादेव जग जाहर हैं,
ब्यास जू कौ घेरौ सो अनूप छबि छायौ है।
चारों ओर सदन बने हैं लाल लाड़ली के,
चन्द ते दुचन्द तेज ऐसौ दरसायौ है॥
सदाँ व्रजवासी रूप माधुरी निहारौ करैं,
और सौं न काम स्यामा स्याम गुन गायौ है।

'लाल बलबीर' नाम लै लै सब टेरत हैं,
राधिका कृपा तें बास वृन्दाबन पायौ है॥

## दोहा

दियौ किसोरी लाड़ली, श्रीवृन्दावन बास।
जैसें ही ब्रजजन सबै, करौ कृपा सुखरास॥6॥

विदित वैस हैं चार जुग, विधि निज रचे सरीर।
रामलाल कौ सुवन हौं, नाम लालबलबीर॥7॥

॥ इति श्रीवृन्दावन वासी बलबीर कृत हजारा संपूर्णम्॥
॥ इति शुभ सं॰ 1950॥



आवत गाय चराय लला सँग ग्वाल लिये बन तें ब[illegible]माली।
गावत तान उमंग भरे मुख बाजत है धुन बैन [illegible]साली॥



महादेवी ज्ञानकेन्द्र
नई दिल्ली-110049



मूल्य : 180/-